10. Dādū Mahāvidyālaya, Jaipur , n° 14 b (dated 1796)

<u>Gunaganjanāmā</u> by Jagannāth , p. 1-216

hundred four

DMV 15B

गुणरंजनामा . पं

जगतनाथ

1796 AD

श्री रामजी सति ॥ श्री सत्य मोदाइ दयाल जी सत्य ॥ अथ पुस्त मुनंगजनमोति लिप्पतं ॥ नमसकार बंदनं आरा ॥ रर
दाइ नमो नमो निरंजनं ॥ नमस्कार गुरदेव तः ॥१॥ बंदन अब साधवा ॥ परनाम पारगत ॥१॥ नमसकारं नाराइनं ॥
परणां प्रभु रपादिकः ॥ बंदनं विज्ञनं नामं ॥ आदि सिध साधिकः ॥२॥ नमस्कारं जगनाथं ॥ परनामं जगत गुर
॥ आदेस परम सिधं नं ॥ बंदन अब साधिकः ॥३॥ देव देवं नमस्कारं ॥ नमसकारं गुरु रूपं ॥ जनम सजनम
सकारं ॥ नमस्कारं नत बंदनं ॥४॥ निराकारं नमो देवं ॥ गुरु चरन नमत कथितं ॥ साध सबे पुवी नंत
नं जगजीवन अविगत कीते ॥५॥ साषी ॥ कबीर पर्णपति गुरगो बंदकौ ॥ बंदन जन न
व मोइ ॥ दंडवत परनाम तिनि ॥ नमो गु आगे दोइ ॥६॥ सतगुर सिर जन दास न
नु ॥ कहि कबीर परनाम ॥ नमसकार डंडवत सदा ॥ आहनिसि आठौ जाम ॥७॥
चैन छिपि परणा ग्रस्त ॥ सतगुर कौ सिर नाइ सरणो सेइ सब संतके ॥ सद गति
गाइ ॥८॥ जन कबीर सब बंदना ॥ करि दिरि मगत बसेष ॥ सिर जे सिर जन दास के ॥ मुष ...
नी सेष ॥९॥ सिजदा पूरे पीर कौ ॥ गुर ...दिइ मोत ॥ रज वे जे जगवंत के ॥ सरब आत म जु नीत ॥१०॥
पूरे जन गुर पीर कौ ॥ बंदन सिजदा कीने ॥ कबीर अल्लह राम मो ॥ ध्यान मष पल पति लीन ॥११॥ श्लोक ॥ पर
ब्रह्म परापरं सोम मदेव निरंजनं ॥ निराकारं निरमलं ॥ नमस्काइ बंदनं ॥१२॥ निरंजनं निराकारं सरब

देव सिरोमणं ॥ दाइत सप्रणपतं ॥ नम सा बाक मणं ॥१३॥ प्रेम सपीति मुदितं ॥ देत भाव समन्वितं
सर्व प्रकार समुथ सप ॥ दाइत सप नमसकृतं ॥१४॥ साषी ॥ परम पुरष कौ दंडवत ॥ मन नम न सा सो दी
इ ॥ कहि जग जीवन दे दसं ॥ साधन कौ करि सो छि ॥१५॥ नमो नमो गुरदेव कौ ॥ जी बिला ए नि दी दि
जगनाथ हरि साध तिनि ॥ नमस्कार करि बंदि ॥१६॥ श्लोक ॥ परमात्मा सात्र विगत्य ॥ निर्लेप ब्रह्म न
रंजनं ॥ पद्मेश कस्त गुर ॥ नमो नमो तस्य बंदनं ॥१७॥ साषी ॥ अंतर जामी आतमा ॥ जगनाथ जग
ईस ॥ सोपद अजष लषाइ दै ॥ ता गुर चरन नमि सीस ॥१८॥ नैन तिमर ...कबा ...दे ॥ गुर बति अ
जन अग्नि ॥ जगनाथ निष्कल करै ॥ बंदन जनपद मं जि ॥१९॥ अधन निश्रम जन अंजइ ॥ हष्टि नि
रूपली होइ ॥ नमो नमो जगनाथ जन ॥ गुर बिन कै रैन को ॥२०॥ श्लोक ॥ अज्ञानं तिमरां धस्य
ज्ञानांजन सलाकया ॥ चक्षु रुन्मीलितं येन ॥ तस्मै श्री गुरवे नमः ॥२१॥ अखंड मंडलाकारं ॥ व्या
प्तं येन चराचरं ॥ तत्पदं दर्सितं जेन ॥ तस्मै श्री गुरवे नमः ॥२२॥ साषी ॥ थिर अगम अगाध कसबे ॥ नि
राकार निरक्षम ॥ सो दरसावे हिलमदी ॥ ता गुर कौ परनाम ॥२३॥ श्लोक ॥ गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु
गुरु देव महेश्वरं ॥ ऐकार पंपरमो गुरु ॥ गुरु देव निरंजनं ॥२४॥ गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु ॥ गुरु देव महे
श्वरं ॥ गुरु रेक परब्रह्म ॥ तस्मै श्री गुरवे नमः ॥२५॥ साषी ॥ को सकल पनाथ तहर ॥ सतगुर

गु.गं.
२

मांई साध ॥ मन बचन क्रम इनकौं सदा ॥ करि जगनाथ अराध ॥२६॥ हरि प्रणपति गुर री कहै ॥ गुरबंद
न सुष रांम ॥ जगनाथ हरि गुर षुसी ॥ करि जन पर कांम ॥२७॥ गुरबंदन गत पाप ह्वै ॥ जन नमि
यें निरदोष ॥ जगन्नाथ परनांम हरि ॥ प्राणपति उत्म मोष ॥२८॥ इति श्री गुर हरि जन नमस्कार ॥ सा
षी ॥ कबीर सतगुर सूवां नकौं सु ... ॥ सोधी सई इनदाति ॥ हरिजी सबानकौं दिहै ॥ हरिजन सई मेजाति
॥१॥ सगो ह्मारे साध है ॥ सिर पर सिरजनहार ॥ दादू सतगुर सौ सगा ॥ दूजा धंध बिकार ॥२॥ परमेसु
र के पूरमगुर ॥ के परम सनेही साध ॥ इनके दरसन परसरांम ॥ कटैं कि अपराध ॥३॥ श्री गुर जन
जिहिं आदरहिं ॥ तिहिं हरि होहिं दयाल ॥ जे मिटि सौ निरभै रहे ॥ कलि बिषल गौन काल ॥४॥ सतगु
र सरनें सुधरे ॥ सगति संत सदाइ ॥ राम कृपाय मकर मिटे ॥ जामण मरण नसाइ ॥५॥ कबीर सुरही
बजरंग प्रीति निरंतर कीन ॥ हरि गुर जन कृपा करें ॥ जन गुर हरि सौं लीन ॥६॥ हे हां ता पर लोकके १
प्रीति साध गुर रांम ॥ आनंदे तन जगनाथ जन ॥ हरि बिन सकल अकांम ॥७॥ देतन गुर को गुर बिनां
संत निबिनो सनेह ॥ परमेस्वर बिन प्रीति जो ॥ जांमण मर्ण संदेह ॥८॥ गति पद पाय गुरदेवते ॥ मंडाय
दई साध ॥ जगनाथ हरि हेत सौं ॥ मिटै सब मिट अपराध ॥९॥ दोस्त दिल मांहे बसै ॥ प्यारी ता सौं जो राम
र ॥ जगनाथ गुर साध सिरि ॥ और सकल सौं तोरि ॥१०॥ सजन मिरजनहार सौं ॥ सजनाई सिरता ॥ २

सा ॥ जगनाथ गुर साध बिन ॥ कीयें करत अकाज ॥११॥ जे मन हि सिर ऊपरि सतगुर सूं क्षा ॥ हिरदै हरि
का नांउं ॥ सकल साध जगदीस का ॥ तिन परि बलि बलि जाउं ॥१२॥ जगजीवन जे ते हूं ॥ जे हांनि र
जन नांम ॥ गुर कौं सीस नवाइ करि ॥ सेवि साध भजि रांम ॥१३॥ सरक्षा अंतकै सुरति सौं ॥ अविगत सें
वक्रम ... ॥ कहि जगजीवन देह तें ॥ पूजे तो गुर साध ॥१४॥ गुर हरि साध समां न नहि ॥ इनि मांहि कोइ
देव ॥ यह पर लोक इहैं संधे ॥ कीयें जिनकी सेव ॥१५॥ सेवा कीयें जास की ... ॥ सब
सोधे नांहि न कहूं ॥ गुर हरि जन बिन आन ॥१६॥ इति ॥ र ॥ ४४ ॥ अथ गुर महिमा ... ॥ गुर
बिन बिन ज्ञान न ऊपजै ॥ गुर बिन रहन सोइ ॥ गुर बिन ज्ञानी नूं पाइए ॥ कोटि करै जे कोइ ॥१॥ गुर बिन बा
ट न पाइए ॥ गुर बिन सरै न कांम ॥ गुर बिन सबद उपजै ॥ गुर बिन मिलै न रांम ॥२॥ गुर समान द
ता नहीं ॥ गुर समान नहि देव ॥ गुर कृपा तें पाइए ॥ मोहन अलष अभेव ॥३॥ गुर तरवर ...
ल ॥ ... फल समान ॥ ... ॥ सोजी सो जन जांन ॥४॥ फल ... ॥ सोज
मिटै न पास ॥ गुर तजि मो ... कौं भजै ॥ सो निह चै नरक निवास ॥५॥ ... गुर तै पै अ
छि की ... ॥ सोजी गुर सिर ऊपरें ॥ ... ॥६॥ ... गुर ... सब ...
जो होइ ॥ सो जां ... ॥ ... कोइ ॥७॥ जगनाथ गुर दरसतें ॥ कि गण पाप कटि

गुरु०
मांहिं जियऊं आरवन बाणइ ॥ यम जुरगु से मांहि ॥८॥ गुरदक्षिणा फल अधिका है ॥ तीरथ तें श्रुत
गाथ ॥ परसे चेतनि सिवमो ॥ अहिनामी जगनाथ ॥९॥ जैसैं गुरदहि सिख अनुसरै ॥ तैसें सिधि होइ ॥
जगनाथ जन निकट जू ॥ रहे हरि होम सहजू रि ॥१०॥ गुर दाता सत संग सुष ॥ राम महि मिलवै सोइ
॥ दीपक बिन बस्ती नहीं ॥ बस्ती दीपक होइ ॥११॥ गुर कृपा बिन पाइए ॥ राम नाम निज सार ॥
जगनाथ जन गुरदेव की ॥ बलि बलि बारंबार ॥१२॥ परसे जौं दे वाति ॥ सतगुर भेटत होइ ॥ ज
न्ह जन मन सुष संग्या ॥ मादिव के दरि सोइ ॥१३॥ चंदन तें चंदन भया ॥ हीरे ही रा होइ ॥ ग्यान
गुरतें गुर भया ॥ बूझे बिरला कोइ ॥१४॥ जस प्रगट तें भव राभया ॥ जी घट कहां नजाइ ॥ मथिम जल
गंगा मिल्या ॥ सरिषा न यासु भाइ ॥१५॥ आप सरीषे करि लीये ॥ आप तिलषा या भेव ॥ धूप दीप दि
तत्र आरती ॥ नमो नमो गुरदेव ॥१६॥ है है सस नारी भइक ॥ जो पजन कै होइ ॥ महिमां गुर गोबिंद की ॥ तज
न बर है कोइ ॥१७॥ सतगुर महिमां अनंत है ॥ रसन न होत बषांन ॥ जगनाथ समनां हिनै ॥ हसर
बन भाषांन ॥१८॥ कबीर सतगुर की महिमा अनंत ॥ अनंत कीया उपगार ॥ लोचन अनंत उघारि
या ॥ अनंत दिषावनहार ॥१९॥ इति ॥ च ॥ छ ॥ गुरगामि प्राप्ति ॥ सरधा धो रुप है गुरगामि ॥ ग्यान बबेक
सोइ ॥ जगनाथ गुरगामि तें ॥ अनभय निरभय होइ ॥१॥ आकरषत पको कडी ॥ संकर तसर कन ला

र ॥ रामदास गुरगामि तें ॥ आवत जांन अपार ॥२॥ मैं जसक्ति संगम एक कै ॥ टीडी चलत हिं अपार ॥ जग
नाथ गुरगामि बडु ॥ आवेह बुधि विचार ॥३॥ शबद सक्ति जं सिद हरि कहि ॥ बहु बिधि बस्त मंगाइ ॥ जग
नाथ गुरगामि है ॥ सुधि बबेक युन आइ ॥४॥ जो आवे पबिलावे ॥ गुरगामि आनंद होइ ॥ कहि जग
जीवन देह तें ॥ पलटि बेदे ही होइ ॥५॥ गुरगामि तें गोबिंद मिले ॥ साधु हु पाअ नि होइ ॥ जगनाथ
जुग बंदना ॥ अंत कहर न दिकोइ ॥६॥ मुक्ति भुक्ति संसार तें ॥ गुरगामि सों जन होइ ॥ जगा तिकरै भ
गवंत की ॥ अहिनिसि सुमिरे सोइ ॥७॥ साधि सिद्ध परसि रहै ॥ गुरगामि तें जगनाथ ॥ आम कहै ग
मिनां हिनै ॥ सोइ हरि पकरै हाथ ॥८॥ जाको पार न आवई ॥ नेति नेति कहि बेद ॥ जगनाथ ता बस
का ॥ गुरगामि पाइ भेद ॥९॥ भ्रम भेद सब मिटै ॥ पानी निरमल होइ ॥ गुरगामि निजपछि थे
नई ॥ जगनाथ पति सोइ ॥१०॥ जो कछु चित में चिंतवे ॥ पूरे परम सोइ ॥ जगनाथ गुरगामि तें ॥ सब सि
धि कारय होइ ॥११॥ इति ॥ धा ॥ छ ॥ गुरग्यान अंग ॥ कबीर पीछै लागा जाइ था ॥ लोक बेद के सा
थ ॥ आगे तें सतगुर मिल्या ॥ दीपक दीया हाथि ॥१॥ कबीर दीपक दीया तेल भरि ॥ बाती दई अघट
॥ पूरा कीया बिसाहनां ॥ बहुरि न आऊं हट ॥२॥ जब ही कर दीपक दीया ॥ तब सब सूझन लागा ॥ ग्यो
कहि गुर ग्यान तें ॥ रामदास तज न जागा ॥३॥ ग्यान दीप सतगुर दयो ॥ सूझन लागे मग ॥ सीधे मारग

गु.ग०

मा लिपि॥ ऊबट चलत दिंन अब्ब॥५॥ लोइ पुन मैं है सूके फेन ही॥ जे नित्र गादी पन जोइ॥ जगनाथ गुर ग्यांन बि

म रिदै तुजास न होइ॥६॥ रैनि तिमर तब ही मिटै॥ सूरज प्रगट थाइ॥ जगनाथ गुर ग्यांन सों॥ घ

ट्रि अंधेर मिटाइ॥७॥ घटि अंधेर सो ज्यादि का॥ उपजे ग्यांन प्रकास॥ जगनाथ थर अनी जथा॥ सू

रज उदै तुजास॥८॥ चंद कगोटस चांदिनो॥ दीवे सब ब्रह्मंड॥ जगनाथ थे ग्यांन गुर॥ उदै तुजा रोषिंड॥

॥९॥ कबीर ग्यांन प्रकास्या गुर मिल्या॥ सो जिनि बीसरि जाइ॥ जब गोबिंद कृपा करी॥ तब गुर भी

लया आइ॥१०॥ कबीर गुर के ग्यांन सों॥ परगट अंतरि जोति॥ आतम मिलि परमातमा॥ मिटै बलि

बता छोति॥११॥ दादू नैंन न देषे नैंन को॥ अंतर भी कछु नांहि॥ सतगुर दिस्टि प्यान करि दीया॥

असे पर समिलि सांहि॥१२॥ घटि घटि रांम रतन है॥ दादू लखे न कोइ॥ सतगुर सबदौ पाइया॥ सहदै

ही गमि होइ॥१३॥ सब जीव को मन गयो॥ मन को बिरला कोइ॥ दादू गुर के ग्यांन सू॥ साई सन मुष है॥

आ॥१४॥ तेसल सतगुर ग्यांन बतायो॥ जो तै मिलि परांम॥ सिष सयांनां होइ जो॥ नामि रहे इ दिकां म॥१५

॥१६॥ गुर दीनें जिय ग्यांन भी॥ साई अबिद्या हरि॥ अरथ बिचार हि अहि निसा॥ अमर थू करहिंस

शि॥१७॥ अमा अमम गया न लो खुरो॥ सा चफू र वप्र निधाप॥ सूजन लागो सब कछू॥ सतगुर के प्रताप॥१८॥

ही॥ उपजे गुर के ग्यांन सों॥ मन में मिटि ढवेराग॥ पहरे पूरब पुन्य तें॥ जगनाथ बड भाग॥१९॥ समितास

गम १ ४

गु. ग० सं०

न संतो षै मतै॥ बुधि बिबेक धकु निधि ध्यांन॥ सुन सुन्यां रज जगनाथ गुर॥ उपजत गुर के ग्यांन॥२०॥ प

यां ही न सादां न जास॥ गुर के ग्यांन न लहंत॥ जगनाथ प्रकृति समृति सब॥ साध सकल कहंत॥२१॥

इति॥ प॥२१॥ सतगुर बिमुष ग्यांन॥ कबीर चौसठ दीवा जोइ करि॥ चौदह चंदा मांहि॥ ति

हिं घरि कैसो चांदिनो॥ जिहिं गुर गोबिंद नांहि॥१॥ निस अंधियारी कारणै॥ चौरासी लष चंद॥ गुर बिन अति उ

दै भ्रम॥ तऊ दृष्टि नहीं मंद॥२॥ इक लष चंदा आंणि घरि॥ सूरज कोटि मिलाइ॥ दादू गुर गोबिंद बिन

तौभी तिमर न जाइ॥३॥ अनेक चंद उदै करै॥ असंष सूर प्रकास॥ एक निरंजन नांउ बिन॥ दादू न

हीं उजास॥४॥ जे सब चंद उगावै॥ सूरज चढै इक सार॥ पते चांदिणे नांव का॥ गुर बिन घोर अंधार॥५

कोटि कोटि प्रगट करै॥ रोम रोम ससि सूर॥ जैसल अंतरि एक बिन॥ तिमर न होवे दूर॥६॥ सषि रू

पी बसुधा करै॥ रवि रूपी आकास॥ जैसल गुर के ग्यांन बिन॥ नहीं तिमर का नास॥७॥ अनेक चंद्रमा

क गावै॥ सूरज उदै अपार॥ जैसल सतगुर रांम बिन॥ तऊ न मिटै अंधार॥८॥ सबरूप बड जिमि सपति

करि आगोद अस्यास॥ जगनाथ गुर ग्यांन बिन॥ अंतरि न दीउ जास॥९॥ बेद बचन गुर देव के॥ ग्यां

न पाइ हिरदे स॥ जगनाथ अनि नांउ ले॥ ता उजास सम ले स॥१०॥ नव लष तारा गगन कृपा॥ लष दीव घ

ब जाति॥ जगनाथ चंद बिनां॥ तऊ अंधेरी राति॥११॥ जगनाथ ज्यूं रासि बिनां॥ तारयां तिमर न जाइ॥ पै

स्व

अनषोधि गुर ग्यांन बिन ॥ अरि अंधेर अधिकाइ ॥ ४ ॥ महा तिग्यांते ता दीइ ॥ ग्यार अगार बाति ॥ जैमल ए ते
बांटिऐं ॥ गुर बिन काली राति ॥ ३ ॥ सतगुर शबद बबेक बिन ॥ संजम रह्या न जाइ ॥ दाइ ग्यांन बिचार ब
न बिषै सहा दल षाइ ॥ ४ ॥ घरि घरि घटि कोल कु चले ॥ अमी महारस जाइ ॥ दाइ गुर के ग्यांन बिन ॥ बिषै
हलाहल षाइ ॥ ५ ॥ अमर अन गुर ग्यांन सों ॥ कैते इहि कलि मांहि ॥ दाइ गुर के ग्यांन बिन ॥ बहुते मरि म
रि जांहि ॥ ६ ॥ ओषद षाइ न पथ्य रहै ॥ बिषम ब्याधि क्यूं जाइ ॥ दाइ रोगी बापुरा ॥ दोस बेद कौं लाइ ॥ ७ ॥ बे
द बिथा कहै देषि करि ॥ रोगी रहै रिसाइ ॥ मन मांहे लीयें रहै ॥ दाइ ब्याधि न जाइ ॥ ८ ॥ दाइ बेद बिचा
रा क्या करै ॥ रोगी रहै न साच ॥ षाटा मीठा चरपरा ॥ मांगै मेरा बाच ॥ ९ ॥ कबीर सतगुर ग्यांन बिन ॥ धोष
ा कन जाइ ॥ ग्यांन तु ग्यांन अनेक सों ॥ संसो सूं दहनिसि षाइ ॥ १० ॥ कबीर संसे षाया सकल जुग ॥ संसा कि
नहूं न लह्या ॥ जे बेधे गुर अषिरां ॥ तिनि संसा चुनि चुनि षाया ॥ ११ ॥ जगनाथ गुर ग्यांन का ॥ जब तरि है तब अ
स बस्त बिसारी जाइ ॥ निकट आतमा पास ॥ १२ ॥ इति ॥ ६ ॥ २५ ॥ सति अ सति गुर सिष पारष ॥ ० ॥ कबीर
सतिगुर सा सही ॥ खुमरै ज्यूं मिलि सेसु ॥ सु जे पांम ब्रह सम सव ॥ ज्यांनै अमम अलेष ॥ १ ॥ दाइ सतगुर अैस
की जिण ॥ रांम रसि माता ॥ पारि उतारै पल कमै ॥ दरसन का दाता ॥ २ ॥ देवै किरका दरद का ॥ टूटा जोडै
तार ॥ दाइ सांधे सुरति कौं ॥ सो गुर पीर हमार ॥ ३ ॥ गुर सोई जो ग्यांन गुर ॥ काछ बाच निकलंक ॥ जग

नाथ जगदी सरस ॥ दीनराव अरु रंक ॥ ४ ॥ गुर गुरे है बहु अंतरा ॥ जगनाथ पिछांन ॥ एक एक धामेवैं क
हैं ॥ एक आंन की आंन ॥ ५ ॥ ता गुर कौं का कीजिए ॥ हरि बिन दिढवै आंन ॥ जगनाथ सो गुर भला ॥ जग
तं वसजन बषांन ॥ ६ ॥ ग्यांन गुरू को एक है ॥ भेष गुरू बहुतानि ॥ जगनाथ कहां सिंघ छानि ॥ कहं स
लघ बरांनि ॥ ७ ॥ नांम अक्षर गुर बहुत हैं ॥ पुरन गरन पदेस ॥ करत बिता को एक है ॥ जगनाथ कहं
देस ॥ ८ ॥ बिद्या गुर ते बहुत हैं ॥ दह्न गुर नहीं पार ॥ जगनाथ जीवन मुक्ति ॥ सो डुल्लिभ संसार ॥ ९ ॥
गु सागु मांन नमन मनमद्दी ॥ गुर सोई जगनाथ ॥ सारथांन सनमुष सदा ॥ सो सिष सतगुर साथ ॥ १० ॥ क
बीर सा गुर मिल्या न सिष सनस्या ॥ लालचि चित्या मासु ॥ इन संस फिछार मैं ॥ चढि पाथर की नाव ॥ ११ ॥ जैम
ल आपण बहिया जात है ॥ ओरन कूं कहै आव ॥ गुर सिष हूं कै देषमां ॥ लेइ समजरणी नाव ॥ १२ ॥ अ
पलद्दी समकै नहीं ॥ सो क्या सुलकावै मोहि ॥ जैमल सो गुर सोधि लै ॥ पार गहावै तोहि ॥ १३ ॥ जैमल गुल
ज्या आपद्दी ॥ सो क्या सुलकावै ॥ साचे गुर कौं सोधि लै ॥ जं संसा च बंधावे ॥ १४ ॥ जैमल जो गुर पारगत सिष प्रा ॥ सो काहै
गहि साथ ॥ बह्या जाइ संसार मैं ॥ तिनू सौं कैसा साथ ॥ १५ ॥ कबीर जाका गुर है अंधला ॥ चेला है जाचंध ॥ अंधे अं
धा ठेलिया ॥ दन्यूं कूप पडंत ॥ १६ ॥ अंधे अंधा मिलि चले ॥ दाइ बंधि कतार ॥ कूप पडे हम देषतां ॥ अंधे अंधा ल
र ॥ १७ ॥ गुर अपंगा पग पंथ बिन ॥ सिष सूनाषा का चार ॥ दाइ षेष टनार बिन ॥ कांग तते गोपार ॥ १८ ॥ दाइ संसा जिव क

गुं०पं०१

॥ सिष साषा का साल ॥ इनं कों बारी पड़ी ॥ देगा कछू न सवाल ॥ १९ ॥ दादू माया मांहें दें का हि करि ॥ फिरि माया में दीन
॥ जो कछु न समझे नहीं ॥ एकों कांजन कीन्ह ॥ २० ॥ आत्म ल्यांवे आप सों ॥ साहिब सेती नेह ॥ दादू कों निपजे नहीं
इन तें सिरि छिल्या खि ॥ २१ ॥ सबदी ॥ गुर षांक छुलावे सिष कों भावे ॥ कदे न होइ निरोगं ॥ नीबनां व बिन का बंध
म कटई ॥ टी छूटु मैं तिरोगं ॥ २२ ॥ सुल मा टी षांवे मनि सुदावे ॥ माइ छिनावे पोषं ॥ मन की आव रिस कु छिदावे
इन्हं के सिरि दोषं ॥ २३ ॥ साषी ॥ जे मल निंद का पी गुर की जिए ॥ सब तें वे परवांह ॥ कांमस ह्रप केता फिरै ॥ तिन
कै संगि न जाह ॥ २४ ॥ गुर पाया सब कों कहैं ॥ आया नहीं बबेक ॥ जे मल सो गुर जिमि करै ॥ जो न बतावे एक ॥ २
५ ॥ अकलि वंत सो सबनि का ॥ पीर परम गुर दास ॥ शबद बतावे सुरति दे ॥ कहि जगजीवन दास ॥ २६ ॥ सा
चा गुर हीं सेवि ये ॥ अमि मिटावै आंन ॥ आप सरीषा लेइ करि ॥ दे आत्म मिजमांन ॥ २७ ॥ बीघई ॥ गुर गरवा
मत वादी सिष ॥ निरलोभी अ संताप मकरे ॥ मन दीक्ष की गई रोइन ॥ जगनाथ जगदीस पराइन ॥ २८ ॥
साषी ॥ दादू कहै सो गुरू ॥ किस कों मन का ॥ मादि न मीटे आन ॥ नव बतावे निमिला ॥ सो गुर साधु सुजांन ॥ २९ ॥
इति सपूर्ण ॥ ग ॥ २४४ ॥ सुमरन नांम चिंतावनी अंग ॥ साषी ॥ कबीर कहता जात हों ॥ सुनता है सब कोइ ॥ राम
कहें भल होइगा ॥ नहीं तरि भला न होइ ॥ १ ॥ कबीर कहे में कथि गया ॥ कथि गया ब्रह्म महेस ॥ राम नाम तत राम
सार है ॥ सब काहू उपदेस ॥ २ ॥ भगति भजन हरि नांम है ॥ दूजा दुख अपार ॥ मनसा बाचा क्रमना ॥ कबीर ६

सतगुरे सिष वच ग्रं०

सुमरन सार ॥ ३ ॥ कबीर सुमरन सार है ॥ और सकल जंजाल ॥ आदि अंति सब सोधिया ॥ दूजा देषौं काल ॥ ४
एके अषर पीव का ॥ सोई सति करि जांणि ॥ रांम नांम सतिगुरि कह्या ॥ दादू सो परवांणि ॥ ५ ॥ पहली स
हैं नड तीरसन ॥ छूटी ये छिरि देषाइ ॥ चतुर दसी चिंत न भया ॥ तब रांम रीम ल्यो लाइ ॥ ६ ॥ दादू नीका नांउ
है ॥ हरि हिरदै न बिसारि ॥ मूरति मन मांहै बसै ॥ सासैं सासैं संभारि ॥ ७ ॥ सास सास संभारतां ॥ इक दिन
मलिहै आइ ॥ सुमरन पैंडा सहज का ॥ सतगुरि दिया दिषाइ ॥ ८ ॥ हंस समुद्र नासु हरे ॥ हरि सरि करि रिषि स
रांम ॥ छुरि घरि मरि सिरि न्ह फिरो ॥ उर धरि गिरधर नांम ॥ ९ ॥ मन जो गी मृग ओ गाजि म ॥ उर हे धु हरि नांम
छुटि सिन्नि षामं मातो ॥ सांम णा मु रषि बिरांम ॥ १० ॥ यम करि मुद लर हरि सुरु स्यो ॥ इ हिध रहरि चिंत लाइ
विषे ह षापर हरि अंजो ॥ नर हरि कै गुन गाइ ॥ ११ ॥ पद हरि यांन हि औरकी ॥ हूं करि गाव हि सो धि
पांहन नाव च हाइ जिहि ॥ की मैं पार प योधि ॥ १२ ॥ पतवारी माला पकरि ॥ अवर न कछु उपाव ॥ नरि
संसार पयोधि कों ॥ हरि नांवे करि नाव ॥ १३ ॥ मन यो सदंस हू की मलो ॥ घट सत माला पोइ ॥ जगनाथ म
न सुरति मैं ॥ राति दिवस जपि सोइ ॥ १४ ॥ जगनाथ अकर न भे ॥ सत यारि कदास सारि ॥ रंकर टनिधन
सूं सदा ॥ मनिर सनां न बिसारि ॥ १५ ॥ एक निरंजन सुमरिए ॥ दोइ अक्षिर उर माधि ॥ स्वास सुमरनी अव
निसा ॥ जगनाथ गुर साषि ॥ १६ ॥ दोइ अक्षिर बिसरै नहीं ॥ सुष परम नांउ रस्वास ॥ जगनाथ गा गीर दे ॥ रोम

गुं.ग.
ज

रटनिश्च्यासु ॥१७॥ दादू सिरजनहारके ॥ केते नांउं अनंत ॥ चिति आवै सो लीजिये ॥ यूं साधू सुमरैं संत
॥१८॥ दादू जिनि निज नाम पैंहम कौं दीया अंत बिसैं बैंना ॥ दो ॥ जे आवै जो सांणसिरि ॥ सो है नांउं संबा हि
॥१९॥ नांउं सकल संतिस रूप दे ॥ लघु दीरघ नहिं कोइ ॥ जगन्नाथ जिहि नाम हित ॥ तिहि दिह रिप रघट
होइ ॥२०॥ बाजी द राम के नाम कौं ॥ बिसरि जो हिजिनि मूरि ॥ छाया रोवै हस्तकी ॥ पापे ताप कोइ रि
॥२१॥ सासु सासु सुमरन करै ॥ जपै जुगत गुर जाप ॥ जगन्नाथ संसार को ॥ कोलन ब्यापै ताप ॥२२॥ प्राण वसै
लखु विरांम कहि ॥ मन पवनां सु बिरांम ॥ दादू सुरति सु बिरांम हि ॥ ब्रह्म छंना बिरांम ॥२३॥ दादू कहा
तां सुबतां राम कहि ॥ लेतां देतां राम ॥ षातां पीतां राम कहि ॥ आत्म कंवल बिश्राम ॥२४॥ सास सास सद रिदै
रकहै ॥ सास गास कहि राम ॥ घट घट बिसरैं नदी ॥ जगन्नाथ निज नांम ॥२५॥ निल पल हि घरी घरी ॥ गुन
गोबिंद कै ॥ काल जाप जैतें निकमि दे ॥ सुमरन सेरी पाइ ॥२६॥ पलक पलक परमात्मां ॥ सास सास सुध हो
इ ॥ पल पल मांहे परम गुर ॥ जगन्नाथ जपि सोइ ॥२७॥ सबदी ॥ षिण षिण मे षालिक मंजे ॥ घड़ी घड़ी
सानां मी ॥ जन जगन्नाथ मह रत साधै ॥ सुमरै अंतरजांमी ॥२८॥ साषी ॥ पहर पहर मैं प्रान पति ॥ रांम रटै
दिन राति ॥ जगन्नाथ याटे कसौं ॥ परसे प्रीतम जाति ॥२९॥ नांम लगे चरचा करैं ॥ चुप तौ चितवन रांम
जगन्नाथ चलतां कहै ॥ अस्थिर बैठा ही जु कांम ॥३०॥ सबदी ॥ लेतां देतां कथा करंतां ॥ चुप तौ चितवन मंन

गाइ

प

राम
ग

ही ॥ हरि दिन सास सुसास संतोषा ॥ हरि हरि बिसरि न जांही ॥३१॥ बैठां जांपं षेपुलंतां ॥ सूतां सुमरन कीजे
॥ खातां पीतां नांम नाथ का ॥ सदा संतो षा लीजै ॥३२॥ साषी ॥ नांम कम बंदि ठर षिण ॥ गुर मषि लाइ रहे ते
॥ सास सगि राम नवी सरै ॥ दर दादू दा नित्त ॥३३॥ सूतां ही सुमरन करै ॥ जगपें जो निष्कांम ॥ बैठां कंभां नांम ले
॥ कहि जगन्नाथ नंदास ॥३४॥ सूतां बैठां चालतां ॥ भेद बतांरे कोइ ॥ ग्यांनी सुमरन रांम का ॥ सदा अषंडित
होइ ॥३५॥ सबदी ॥ सूतां पीछे सुरति निरति सौं ॥ बालक पय रस पीवै ॥ असैं अंतरि ल्या निनां उं रत ॥ आत्म
जुगि जुगि जीवै ॥३६॥ साषी ॥ यह पूजा सेवा यहै ॥ सदा निरंतर लीन ॥ प्रीति करै हरि नाउं सौं ॥ जल सैं
मीन ॥३७॥ सबदी ॥ मारग मालै तो सै जसुवंतां ॥ वौके ज्यां रस पीजै ॥ नांम ल्यौ याहे सेना राइया ॥ सो नांम कौं
इन लीजे ॥३८॥ साषी ॥ नांम ल्यौ सै नर बोलई ॥ पसु बुलाये आइ ॥ जगन्नाथ हरि हेत सौं ॥ बोलं लेम कत आइ
॥३९॥ नांम लिये बिसहर फिरै ॥ हाथी आवै हाथ ॥ हरि निरषि गुर बासा ॥ कहां जाइ जगन्नाथ ॥४०॥ अंजल
पै सै हथ मे ॥ जपंगे मेरे तोन ॥ असैं आत्म रांम सौं ॥ मन दृढ गसाधै कौन ॥४१॥ दादू रांम नांम मैं पै सि करि ॥ रांम
नांम ल्यौ लाइ ॥ यह जुक्त तह यह लोक मैं ॥ अनंत काहे कौ जाइ ॥४२॥ परम सने ही परम गुर ॥ सासें सास संभार
॥ तांकी हरियां कौ सदा ॥ सांधी मोद मुरारि ॥४३॥ सांई अपने सौं सुमरिये ॥ यहु मीष यहु मंत ॥ जा दिन तेरो को
नहीं ॥ ता दिन हे सगा संत ॥४४॥ दसनर समुष नासिका ॥ श्रवन नयन सिर यार ॥ जो लौं अंग साजि हे ॥ तो लौं गो

ग

ग

रा

ग

पुं०१०

बंदगा॥४४॥ जैसें प्रतिबिंब चंद को॥ चंचल जल मद्धि दीस॥ ऐसें सो जीव मनजांनि मनि॥ अगम अथ
अगाद्धीस॥४५॥ अगम नाथ घन बीजते॥ हिमेग्रा द्वितन अंग॥ देह अछत करि ली जिए॥ मन नुयोग
सतसंग॥४६॥ हिस बिरां नां हरि घर॥ इहां हे हिन छोइ॥ रीति हाथ निजु आहि जिनि॥ हरि सो ही सो इ
॥४७॥ हरि सो ही राहा थते॥ जिहिं नरि मास्यो जग॥ दीन भयो पर हार नें॥ गढो पंको हि पग॥४८॥ तब
हीं तेरी ओदजा॥ या वर आ या रा सि॥ जे मनु हरि का नांउ बिन॥ पडे काल की पासि॥४९॥ जे मनु
सबे हिहाडा पाधरा॥ जबु हरि हिरदा मांहि॥ लागे मनिर भे नां र सप॥ केते घसि घसि जांहि॥५०॥ रा
का हरि धन रंक जन॥ संचि सुषी कि न होइ॥ बिलसत बधत अनंत सो॥ तसकर हरे न कोइ॥५१॥
प्यारा तीन लोक में॥ जाके हिरदय राम॥ जे मनु हरि का नांउ बिन॥ सब ङ निर्यांछे कांम॥५२॥ राम कहे सो हिबडु
॥ कुलतार या सपूत॥ जग जीवन हरि नांम जे॥ सो माथे मारिक पूत॥५३॥ दाहु सो ई सें सब मले॥ बुरा नकहि
ए कोइ॥ सारे मांहे बुरा॥ जिस घट िनांउ न होइ॥५४॥ दाहु पीव का नांउ ले॥ तो रु मिटे सिर साल॥ घडी म
हर चाल नां॥ कैसी आवे काल्हि॥५५॥ दाहु ऐसे मद्धि गे मो लक॥ एक सास जे जाइ॥ चवदह लोक सम
न सो॥ काहे रेत मिलाइ॥ सोई सास सुजांन नर॥ साई सेती लाइ॥ करि साद्धा सिर जन हार सों॥ जे मद्धि गे मो
लि बिका इ॥५६॥ प्यारो पीव आपणो॥ हरि बिन और न कोइ॥ एसब स्वार थ के सगे॥ मिले सयांने लोइ॥५७॥

सुत बित बनिता बाल ही॥ जी वत ही संग॥ ता दिन तेरो को नहीं॥ ज बद्धि पंषी स्यो देग॥५८॥ एसब न करजब
मए॥ अंत का लि की बार॥ दाहु दुन में को नहीं॥ बिप्रि बटां व नहार॥५९॥ प्रथम सुलि षरती धरहि॥ दुखि सु
मरे वृ हिरांम॥ पहिलै हीं कि न लीजिए॥ पीछे जासें कांम॥६०॥ नैन बैन रस मांथु को॥ सब दङ्ग सुबैन नकों
नि॥ मुष ऋपरि जब मुस ही॥ यम जा लिम नें स्यां नि॥६१॥ हाथी साथी कोन के॥ का के गह अस गांउ॥ सो षीब
रियां आई है॥ छाडो हरि को नांउ॥६२॥ हाथी साथी है दस्या॥ एसंगी हि न चारि॥ हरि सुमरन बिन जाहि जिनि
जन मनु छाउ हारि॥६३॥ समझि देषि साची यह॥ मां नि हमारी बात॥ बंध कुटंब परिवार हरि॥ हरि माता हरि
तात॥६४॥ बासुरि निशा सब घरी पल॥ धन ब निता की चीत॥ सकल बिश्व है अबुध नी॥ ता हि न सुमर हि मंपत॥६५॥
नी को गके सब देमें॥ सब ही अर थ बिचार॥ मन जिए पूर्ने बुखके को॥ तन जिए बिषै बिकार॥६६॥ मनुष जनम कै सो ता
तैं मणो॥ मनुषो न एक बार॥ हरि मन नजा नें कही॥ सो तें मनुषो गंवार॥६७॥ मासा स गी न कुल सग॥ सम मय कु
संसार॥ परसरांम इ सजी वका॥ सम मा नसि जै नहार॥६८॥ हरि सो सु मेंन हरि कथा॥ सा सों नांही कांम॥ सु मो च
है हरि के गुन नि॥ सो सरो स मिरांम॥६९॥ जंन मन न पर माप सों॥ होत जु परब न ले न॥ इम जो मनु हरि सों रहे॥ लेबे
मुक्ति सुषचैन॥७०॥ गुंन सदेह जरि होत घसि॥ त व मं मि त हरि नांम॥ ऐसो ड ले य पाइ को॥ कं बि सरे सुष धा
म॥७१॥ जो दिन जाए ति बन जाए॥ बा मां र हे नि त्र ब॥ कम च जांन न हिं दी जिय हि॥ हरि सुमरन बिन सब॥७२॥

हरिसुमरकौं हाथकरि ॥ ओलड्ंतो दिपरांन ॥ महत्र न बड़ारस्यों पाइए ॥ इदैंग गोइमैदांम ॥ ११ ॥ रांचहिकोंन

ड़ामेनम्रब ॥ सेजसजनदेतोर ॥ तुनिपीछेपछितादिमनि ॥ निसनिघटैंअवऐंओर ॥ १४ ॥ कादलीफलहइ

अैनहीं ॥ सतीनबकुरिसिंगार ॥ जनगोपालजगदीसभजि ॥ देहनबारंबार ॥ १५ ॥ मनिषजनममरिक्वहि

क्षितन ॥ मद्यातरबथिरसास ॥ साधसंगमतिहरिभक्तिसुष ॥ इहनमसाधदास ॥ १६ ॥ मनषजनमबड़

मोलिनम ॥ हरिबिजिवांधजुगोंमि ॥ अजनदीनमवदध्यपरस्यो ॥ कंपावेमिद्धिकांगि ॥ १७ ॥ नरमाराइनुप

इके ॥ नारांइनमक्तिलीन ॥ तेधभियाजगिआइकारि ॥ जनमसुफलजिनिकीन ॥ १८ ॥ इतिसंपूरणं

॥ ररर ॥ सुमरनमनामहिमांमहा० ॥ सोरठा ॥ आतमसोंध्योलेइ ॥ बीयहनारांइणनरगोंपापतणीउण

गेह ॥ नवकड़ नाइ अंजेनहीं ॥ १ ॥ चौपई ॥ संघमरोलिमगमुडि चालो ॥ रेणिपुलिजिमआंयामरणि ॥ अम

बिक्रमरेजं जलघरां ॥ ततरांमनांमअघपापघणि ॥ २ ॥ सबदी ॥ संघमलास्योबनखंमं ॥ जंबकपड़आ

गणं ॥ ऊसबिहिकापुणसुमरनां ॥ पापकघासअजल्यणं ॥ ३ ॥ साषी ॥ सदजसंघकीगरजकरि ॥ जंप

रूपंक्तियरो दि ॥ जगनाथरांमनांमसों ॥ करमसुकेहारदांहि ॥ ४ ॥ करमनांमअपिमोरकें ॥ नेंकनरदेन

जीक ॥ जगनाथछुनिसुनतहे ॥ उरतहिंजांहितजीक ॥ ५ ॥ सूरतिमरमणिराजमिधि ॥ सजलसमीर

को आइ ॥ हरिचिंतामणिचिंतनां ॥ इमचिंताबहिजाइ ॥ ६ ॥ पापपुलांरोपिंडनें ॥ जबजनफीरीलाग

मांनज़ंमोरहिदेखिकें ॥ मोदसौंदिसिनाग ॥ ७ ॥ ऐकेनांमअनंतरो ॥ पालेपापब्रखंड ॥ जंसतिलजेहोज्वालनल

॥ कोडि दरौंबणखंड ॥ ८ ॥ दाइसांईकौंसंभालतां ॥ कोटिबिघनटलिजांहि ॥ राइमांनबसंदरा ॥ केतेकाठजलाहि

॥ ९ ॥ रांमनांमकेलेतही ॥ करमसुरदेनकोइ ॥ मांनजंपवततेंदई ॥ पंषीअिगएलोइ ॥ १० ॥ रांमनांमरसनांलियो

॥ कियोक्रमकोनास ॥ मांनज्ञचिनगोअगनिकी ॥ परीपुरानेंघास ॥ ११ ॥ पापकीपरबततजिते ॥ लीयोरंचहरिनां

ऊं ॥ जेसेंचिनगीअगनिकी ॥ जोरेसगरोगांउं ॥ १२ ॥ कबीरमनिषादेहलगि ॥ सोषडुधावततपाप ॥ तेमवहीजेछिन

कमें ॥ जपतांजगपतिजाप ॥ १३ ॥ कबीरपहलीबुराकमाइ ॥ बांधीबिषकीपोट ॥ कोटिक्रमफिलपलकमें ॥ जब

आपाहरिकीओट ॥ १४ ॥ कबीरकोटिक्रमपेलेपलकमें ॥ जेरंचकआवेनांउं ॥ अनेकजुगजोपुनिकरे ॥ नहीरांम

बिनगांउं ॥ १५ ॥ लघदीर्घअघनरकरै ॥ आंनजततिनिनहिंजांहि ॥ कबीरकेवलनांमसों ॥ तनछिनसकलबिलां

हि ॥ १६ ॥ एकमहूरतमनरहे ॥ नांमनिरंजनपास ॥ दाइतबहीदेषतां ॥ सकलक्रमकानास ॥ १७ ॥ सहेजैंहीसबदो

इगए ॥ रांमजीकानास ॥ दादूरांमसंभालतां ॥ कटेक्रमकेपास ॥ १८ ॥ जंसंतूसांईसुमरिहे ॥ मनमहिंसंकनआनि

॥ अगनिसुमत्रतिजरावई ॥ औरेंतुनजकिजानि ॥ १९ ॥ सुमनेलगिजमवाणजन ॥ करेअघनिकानास ॥ जबह

पापनिरमूलतब ॥ परमेसुरपरकास ॥ २० ॥ हरिहरिकहेहोरेनहीं ॥ बिसरिनसासेसास ॥ पापनितेंपरतषि

महीं ॥ निरअगिजनरेदास ॥ २१ ॥ पापसकलबलिदांनसुन ॥ बादनपदहरिनांम ॥ जंसमानवोछतिरही

गुं०ग०
१०

अथ लघै ग्रेंव हरि रांम ॥२२॥ काकर मु जो हरि नांव मैं ॥ अधनि दस्स संभाष्य ॥ पापी पाप हि कर्नी कौं ॥ नहिं
पोरिस जगनाथ ॥२३॥ पंछी बिद्रु रस्त्रं धै अघ ॥ हरि हरि नांम समस्याल ॥ जगनाथ जुगजुग मनि के ॥ लेत न ही
नतन काल ॥२४॥ कबीर हरि के नांम सौं ॥ पाप न ताप रहाइ ॥ दाह बिथ्या शेष जल लै ॥ सुमरन ही मि
टि जाइ ॥२५॥ रांम नांम मनि ज ओषदी ॥ सतगुरि बिताइ ॥ ओषद षाइ रुपछि रहे ॥ बष नांबे दन जाइ ॥ दई
२६॥ रांम नांम निज ओषदी ॥ कोटि कोटि बिकार ॥ बिषम ब्याधि तें ऊबरे ॥ काया कंचन सार ॥२७॥ रांम नां
बिन जगत में ॥ ओषद दूसी न कोइ ॥ जगनाथ मन निश्चि दे रे ॥ तन अजरावर होइ ॥२८॥ बिथ्या कर्म कं क
टई ॥ ओषद निज हरि नांम ॥ जगनाथ जन जतन सौं ॥ लेत दे हे बिसरांम ॥२९॥ इहि ओषद तें संतम
ब ॥ अबेत नु धारी देह ॥ कोई कुपछ का फेर है ॥ मही न ओषद याह ॥३०॥ पछ पाली राषे नहीं ॥ ओमा
वै मो षाइ ॥ तो ओषद गुण नां करे ॥ बष मांहि थान जाइ ॥३१॥ भाव भगति सत सील सब ॥ दया धिमो प
छ लेह ॥ तो अमर ओषदी गुण करे ॥ बष मांनु धरै देह ॥३२॥ अमर जड़ी पांने पड़ी ॥ सो सूंघी सतें जां
णि ॥ बष नां बिस हर स्यां लड़े ॥ न्योल जड़ी के पांणि ॥३३॥ जे डंक ल्यो सर्प का ॥ ता थें न हरि न जांग
बिस पालत बषनां कंने ॥ नाराइण को नांउ ॥३४॥ रोग रवैं जि हि औषदी ॥ रोगी षाइ न सोइ ॥ तो कै राम
सें जगनाथ जन ॥ देह निरोगी होइ ॥३५॥ रोग जाइ ओषद करी ॥ मिट बिथ्या बिस्तार ॥ जगनाथ ज १०

ग दी रुका ॥ नांम सु मीव करार ॥३६॥ अमली काट जो अंचवै ॥ त्यां मसो इ सुष षांणि ॥ करि अरुगु गाढ
रि हरि भजै ॥ जो अरुगुण गुण जांणि ॥३७॥ रांम रसांइण पी जिए ॥ साध संगति मैं आइ ॥ सकल मिटे अघ ज
न मकु ॥ इहि बिधि ताप न जाइ ॥३८॥ इहि बिधि ताप तन की हरे ॥ नांव अमोलिक एह ॥ राइ मच्छ गु न रांम
का ॥ पार न पावै तेह ॥३९॥ दाइ निमष न न्यारा कीजिए ॥ अंतर लै हरि नांम ॥ कोटि पतित पावन भए
केवल कहतां रांम ॥४०॥ अक्षम अजामेल जाइ कुहां ॥ जमने लीं घर रोरि ॥ मांस न राइन लेत ही ॥ छु
ली कुंकि की पोरि ॥४१॥ चोपई ॥ अधुर अंत अजामिल ली थें ॥ नांम न राइन बचन बिष्या में ॥ सोकल सु
त हित जगनाथ लब ॥ यम कंप जा कारिस के न घात ॥४२॥ साषी ॥ अजामेल मैं तनधरे ॥ ली थे नराइन नांम
तिसु घम जन पता पतें ॥ परे न यम के दाम ॥४३॥ गनिका क स्यो त्र्यपां न करि ॥ सुवा पढ़ावै रांम ॥ मछ लम
मी सुर को कहि ॥ सत्संगई तिहि धांम ॥४४॥ को जांबै कलि अग्या है कें ॥ की ये कितेक पाप ॥ गनिका बल
बिग्रान चहि ॥ देष जु नांमु यु ताप ॥४५॥ जगनाथ जो हरि भजै ॥ पाप जो मिज न कोइ ॥ बेसु द्वनि सा झिले
सो कसदि भि दि होइ ॥४६॥ कंचन मी चलन अधम ॥ सुमरे देत लगाइ ॥ कालकी लो गो न काहिमां ॥ चरन बिर्दै
जाइ ॥४७॥ भूरी कटारी आरसी ॥ अंतर रही न रेष ॥ यागत दी कंचन भए ॥ पारस मिथि बिसेष ॥४८॥ नाम रहे
के नांउ पर ॥ बिरबेर बलिहार ॥ कहैं कहां लौं कोटि इक ॥ पतित अएस न पार ॥४९॥ अगानि नमांव अपार है

गु०प०
११

॥पतितनिकंदन हि पार॥जगनाथ पांवन अपार॥निज संतनि की ल्वार॥५०॥अग्रदास हरि भगति बि
न॥निर्मल नाही काहि॥कोटी क्षेत्र जरी॥को दे देत गाहि॥५१॥परसा मेली देह को॥मलखेंद
न को नीर॥मन मंजन को हरि भजन॥प्रगट प्रेम की सीर॥५२॥श्लोक॥दाइ राम नाम मंजन हत्वा
मनांन सद्य शुचि तः॥तन मन आत्मा निर्मलं॥पंच नू पाप गतः॥५३॥साषी॥सरीर सरोवर राम अ
ल॥मांहि संजम सार॥दाइ सहजै सब गया॥मन के मैल विकार॥५४॥श्लोक॥शा हुत तप मई जी
निग्रहं॥शुचलेमा या मन॥प्रम पुरष पुरातनं॥चिंमते सद्यातनः॥५५॥साषी॥सरजरि सुमिन नाम
की॥जगनाथ कलूनांहि॥जो जन सादे सो लहे॥लेम करत इन मांहि॥५६॥राम नांम मितु कलपतरु
॥कलि कल्यांन निवाश॥ता परसत अघ योअंपि तै॥तुलसी तुलसी दास॥५७॥नर नारी तिहुं कलि
के॥सब अधरेइ हि मंत॥सुने कहै देषै ली ये॥कहुं भिमि नांम अनंत॥५८॥नाम अनंत अनंत के॥आद
षसूष सब संत॥ए कअछिर तिन मांक को॥कहे सुने ता रंत॥५९॥राम नांम पद कहि कहे॥आदि साष
स लोक॥कलि जग जीव नांम की॥महिमा तीन्यूं लोक॥६०॥को कुंमिसरी हरि भजे॥अगन सुमिम
रीषाइ॥जे विसरी हरि नांव को॥बिसरी नाम षित्ताइ॥६१॥मनिषा देही जाल न हो॥अनि पंछी अ
वतार॥हत्ती हरि हरि कहै॥हंसं कहै गंवार॥६२॥नारायण को नांव ड़ै॥भं छांडी मलैदेहरा॥चोपई॥

राम
११

येवं गो थिपा॥जे दीतै हैवे॥६३॥टोटी टोटी मांगमां॥मा ता रोटी देह॥विजमति षाली मां पडे॥मां नुं
धणी का लेह॥६४॥कहो करीर जु प्रीति मों॥लीया अलष का नांउं॥मोह न मों नी बंदगी॥जा णा राख
लिजो नं॥६५॥सीरा सीरा करि जुध रुयो॥सुक्षि स्तो साच समेह॥संमर्थ पूरै कांम मां॥मां भं भिरं जु न
लेह॥६६॥साषी॥मोह न रोटी मांम की॥भि सरीर सदी गा॥जे साहरि का नां वेषे॥सत्र सीढ़ि सम
गा॥६७॥साषी॥पणि हारी की लेज सो॥पत्थर घसस्या जाइ॥योजी परा हरि हरि रटे॥तौ पाप क
टोर हूराइ॥६८॥अज बकरत मैं भर्म सब॥जो हरि जन के याप॥जगनाथ जीव की जल नि॥मिटै स
कल संताप॥६९॥विघन बंचै हरि नांव सो॥व्याधि हिकार हि लाइ॥ज्रे सा संर नां नांउं का॥सब ड
ष सदै जैं जाइ॥७०॥बार बार नित ने भंकरि॥सुमरि सु बारंबार॥अघमोचन हरि है जगन्ना
रि हैं सकल विकार॥७१॥अंतरजामी याद्दि करि॥जो नराइ ज मदीस॥देवा सद सेवा करै॥सोई सु
रनि को ईस॥७२॥पुरसे वग सुमरन करुं॥असुर दो हिभेमां ना॥जगनाथ अक्षीन वर॥साधु जन
सुषि गान॥७३॥चोपई॥प्रगट राम कहै जग जाने॥रसं वसु प्र मोसे सब षाने॥स्वासा सुमरन सुरषि
रे राषै॥कस्ना की रमि हि रिदै भाषै॥७४॥साषी॥सत युग सुमरन बाच की॥सह हरि गुनों जपास॥जु
गनाथ लषमांन सी॥कोटि गुनों थिर सा॥७५॥साषी अपनो मंन कहि॥जनम मणि कुस आइ॥जि दिं जो

१

ध्यौं सबजग भरे ॥ पिसन सुलायें पाइ ॥७६॥ प्रभु पांइ मिल रिस्न रिवसे ॥ जगन सुनि रंम दोइ ॥ जैसें दीप
कत शिलि मरु ॥ ताहि न कीये लोइ ॥७७॥ भीम मुणें जग दंत जस ॥ अंजन निल भावैतु ॥ पमक पं भर बंल
मे न गां ॥ हावो नहिं राषंत ॥७८॥ श्लोक ॥ निर्गुणं नाम मेमई ॥ रिदै भाव प्रवर्तनं ॥ भमकर्म कलिविषं
मायामोहं कं पित ॥ कारव ज्वाले सो चित ॥ भयं न कं यम कं कारं ॥ हरि विसु दिंस फुरं ॥ व्याह अविगति
शीमं ॥७९॥ साषी ॥ रांम नांम इक बाडिकें ॥ कोइ नह जेवैन ॥ छोद तिरत संगकाठके ॥ परत षि दैसुं ज
मैंन ॥८०॥ औसा यह बेन दी ॥ उरत ल गाण तीर ॥ बाजी द रांम की नांम यह ॥ जगि अहा अ दै बीरा ॥८१॥ बा
जीद बात मी की कहत ॥ करिकि न लेही कांन ॥ गुंन गावत गोविंद कै ॥ मिटि है श्रां वन जांन ॥८२॥ रांम क
है स ब सु ष ल है ॥ जियके मिटहि संताप ॥ अंमृत पीवें आत मां ॥ हारन कंपे काल ॥८३॥ दिरस्याक बल
मैं पें सि मारि ॥ धरे निं रंत रध्यांन ॥ तेहि छोने न्नगे मभी ॥ अपजै के वलज्ञांन ॥८४॥ मनि का करिक्षि सय
सके ॥ पीवें हरिगुन रत ॥ कवडं न भूलें रांम कौं ॥ तब सब मिटें कसत ॥८५॥ नाम लियें न वगह देही ॥
भजन करत जो जांहि ॥ जगनाप श्रजपा जपत ॥ सबही बिघन बिलाहिं ॥८६॥ नाम लिया तब सब कीया
॥ तीर्थ बत तप दांन ॥ संतोष कहे उम सांभ लौ ॥ सहजे है तप म ग पांन ॥८७॥ नांम लिया तिनि सब कीयु
जोग जप दांन हि ॥ जप तप तीरथ धरंम बत ॥ एक नांव बिन बाद ॥८८॥ योग जज्ञ बत दांन तप ॥ अंने

सुचि कर स्नांन ॥ नांम समां न न न्या इयों ॥ श्रीरन श्रवत समांन ॥८९॥ श्रच्दा सहरि गति कै ॥ पुंनि स
ब पासं गजां हिं ॥ ज्यं हस्ती के षोज में ॥ सब ही षोज समांहिं ॥९०॥ नांम कहें इक नांम सभि ॥ डलें नतीलें
कोइ ॥ सकल धर्म जा प्पा दिदे ॥ श्रधिक सब मिते सोइ ॥९१॥ दांम पुंन्यपा संग डेले ॥ श्ररदें म स ब श्रा च
र ॥ नांम कहै हरि नांम सभि ॥ नांहि न जग बिच हार ॥९२॥ ज्ञाह सि हं षीं जी व मैं ॥ डलाच क्षेदौ पि
ड ॥ नांम कहै हरि नांम सभि ॥ डरै न सब डं डांम ॥९३॥ श्रांन धर्म श्रन्न मा रिषी ॥ श्रन रुचि व्रत ति ष्व
त ॥ सद पार स्कं क क्षिक्षि ली यों ॥ श्रसी जन भगवंत ॥९४॥ चौपई ॥ जैसें जिय बिन काया सूं न
॥ नारि भरेक्ष निक सें लूंनी ॥ लूंण बिनां भोजन नहीं नीका ॥ मोद नहरि बिन सब धर्म फीका ॥९५॥
य ॥ साषी ॥ रांम नांम निज छाड़ि करि ॥ कीजहि श्रांन न धर्म ॥ जेऐ पार सबिन छोइ का ॥ कदे कटै न
हिं कर म ॥९६॥ पारस रूपी रांम है ॥ लोह सकल जिय जांनि ॥ उतिम मध्यम परसि करि ॥ न एकु कंच
क समां नि ॥९७॥ गंगा मांहें जल मिलें ॥ सो तो पावन होइ ॥ गंगा का का नीरसं ॥ पावन कहिए सोइ ॥९८॥ बे
द न करि बाद करै ॥ सबको ई नति जाइ ॥ देवल का की बंदनां ॥ कारलो डी लेराइ ॥९९॥ नांम की मोटी नाप क
मिलै सम दहि जाइ ॥ सरवर की जल नापि कां ॥ कौं कर सिमाइ ॥१००॥ सूरज का प्रकास सं ॥ सब कें सूके चंन
सूरज का की जोति मीं ॥ बोले श्रपनां नेंन ॥१०१॥ छाया बैसे रुछकी ॥ पंषी पंथी श्राइ ॥ सरवर छाया को की ॥ क

मु०प्र०
१५

हांबे सिवा जाइ॥२०२॥ चौपई॥ प्रबत मांहां पाथर लै करि॥ सब हीं को ईस रत्न चित धरि॥ प्रबत पाथर श्री पले
ए कीं॥ कही कहा न के वारे जाइ॥२०३॥ साषी॥ हस्ती रूप रिषे ते कुरि॥ भव को हांले राइ॥ हस्ती का क
पी विष परि॥ बैरे हे पर वाह॥२०४॥ भार अठार ह बिरष सब॥ मसिसो सीतल होइ॥ मसि सो न लषै कव
न सो॥ कहि समझावो कोइ॥२०५॥ जनम बिछुरा देश्र पर कौ॥ धर्म बांधव नां सार॥ और धर्म कि हि कां
मका॥ छूटे न ही बिकार॥२०६॥ चंदन सेती और बिरष का॥ अगप ल टे जाइ॥ चंदन चाहे कवन कौ॥
को की बास मिटाइ॥२०७॥ कपूर ले बिरष सौं कालप नां॥ उ षधा सिद न साइ॥ करा आनि के मांगि बां॥ क
ल प बिषिक न जाइ॥२०८॥ लोहा सो सो नां करै॥ श्री मा पारस अश्रा॥ पारस चाहे कवन कौं॥ जा में मक्ति अभ
गा॥२०९॥ चाही॥ अवर जीव की चिंता षोवे॥ सो च्यं ता मणि सारं॥ ते चिंता मणि चिंते का कौ॥ जो में मा
हा अपारं॥२१०॥ साषी॥ नाव रूप रै है मिं करि॥ सब को लिरे यपरांण॥ नाव नि रे जल कपरै॥ सो हरि साध
सुजांण॥२११॥ गोबिंद को धर म लेइ करि॥ बेमे हरि की दास॥ ता हि धर्म कौ दे षिके॥ करे साध की आस॥
२१२॥ धर्म ध्यांन गुर सो मल्या॥ आ मौ ते रे पार॥ गोता लो गी पांन कं॥ तो षोटा षेव न हार॥२१३॥ जि हि औषधि
दसं डु षट लै॥ व्याधि बिकार न साइ॥ धर्म ध्यांन गुर सो मल्या॥ कम जीव का जाइ॥२१४॥ बोषा बगो बैंब
रबार॥ नी सांगां संडु हरि॥ धर्म ध्यांन कि हि कांम का॥ हरि सें न ही हरि॥२१५॥ बाजी गर षेले कला॥ मलिषु

राम
१३

सी होइ दानार॥ तं धर्म ध्यांन गुर सो मल्या॥ जिं हिं री के कर तार॥२१६॥ साषी॥ हरि रा के की यह सहे नै एंगी
सी होइ दानार॥ हं धर्म ध्यांन गुर सो मल्या॥ जिं हिं री के कर तार॥२१७॥ कुबिध्या मिटे एक क
॥ छूटें सकल बिकार॥ कर्म कलप मांबि घन बुराई॥ व्यापै न ही लगार॥२१७॥ कुबिध्या मिटे एक क
रि जो नै॥ हज्जार हरि न आवे॥ हरि रा के की यह सहि नांगी॥ हरि बिन कछु न सुहावे॥२१८॥ साषी॥ दाहु
जुल निर्मला॥ हरि रिं गि रा ता होइ॥ का हे दाइ पा चिमेरे॥ पांणी सेती धोइ॥२१९॥ पर सागे गान्हाइ करि
॥ पतित नं पांवन करि सी हरि जन॥ सा षि सुरांगे मूव कोइ॥१२०॥ पपा सा सत ता सुपिने में॥ पीया अंख
अनेक॥ मोह तृष्णा सु मांगाई॥ मति तत्व बिना बबेक॥१२१॥ जब जाप्या निज देह में॥ सुपि नांमा याबि
जाइ॥ सालि जल पाइ हषा मिटी॥ तप ति गाई न मिल्याइ॥१२२॥ पारस सौं ली हा कनक॥ कार तन त्यागी ब
र॥ सो नां सौं लो हा कनक॥ होवै न हीं लगार॥१२३॥ पतिबरता की ब्रत गाहि॥ रहे साच के साथि
जोगी की कर कर मये॥ कछू न आवे हाथि॥१२४॥ नाग रटी का नाग कौ॥ और हि दियो न जाइ॥ बङ
मेलापक सो नृच हु॥ सुष पावे सुष षाइ॥१२५॥ सांनी बूझ तब बेक की॥ अनंत आ नक की आंन॥ कष
दार की ऐ गले॥ सुनि बेको यकोन॥१२६॥ तब ही पावे रूप रस॥ देषे अपनै नैंन॥ ना गुन रहै हरि नांउ
बिन॥ अनंत नदी चित ते चैन॥१२७॥ सीतल सर स सुगंध अति॥ नासा ले सुष पाइ॥ कष्टी नां ना फूल क
॥ बास दसौं दिसि जाइ॥१२८॥ साषी॥ ईसरा राम ति अत्नी रूप नी॥ जु ओ रै आइ न छीजै॥ के सब सौं रंत

पं०प्र०

ग्रं०प०
२४

ध सेनोंनकी जै॥ ज्यरिजै ने जी मीजे॥२१॥०॥ साषी॥ जे कोइ कर्णी संमभ्जिन॥ जपतप करै सु ग्राहि॥ ज्ञान
ध्यानसे नकीतै॥ भै नी मीनसु॥ ध्यज्ञ गमैं मैं लै॥ हारे सम ग्राहैं दाड्हि॥२२॥ चेतो सुषो॥ पैनी राषे पोनकें॥ षोनी कार दषोन॥ भै नी भौनसु
ध्यज्ञ गमैं मैं ल्ले॥ हारे सम घाहैं दाड्हि॥२३॥ साषी॥ नेम निरंजन नामका॥ प्रेम पलटिच द्विजा३॥ जगनाथ
महिरदै॥ तो भी ज्ञो मैं लोन॥२४॥ साषी॥ नेक निरंजन नाम का॥ प्रेम पलटि च हिंजा३॥ जगनाथ
ताजी सुकौ॥ कौन सकै थरमा३॥२५॥ इतिसं पूर्ण॥ ६॥ मूपप॥ सुमर्न सुकृत सत्त संग ग्रंथ॥ साषी॥
सत संगति तें कपजे॥ सुकृत सजन दोइ॥ जगनाथ पांदन सरे॥ जौ पश्र मदरि दोइ॥१॥ सुमर्न अरु
सुकृत करत॥ जबतब होत निहाल॥ जगनाथ प्रगट दरस॥ जीकृत बरजित काल॥२॥ रामनाम रस नांव
ले॥ देकबुद्ध दिनें साध॥ बांकी बूरियां गुछिचु ले॥ प्रदोइ सुकृत साथ॥३॥ जगन सुनी कौ ज्ञा मिबो॥ हरि
हित परम पमार॥ नरहसमी जानेन दौ॥ नातै सी बो मार॥४॥ नी कौ जन कौ ज्ञा मिबो॥ जे पैंजु जग प्रति आप॥
परस्ता परतें भले॥ ते सन्त संघ रस ताप॥५॥ जगमें सोई जीवनो॥ सुकृत सुमर्न ध्यान॥ जगनाथ के यज्ञ भली
मिले कर कोटी ग्यान॥६॥ परमार्थ बिन जीवनो॥ सबैन स्वार्थ कोइ॥ जगनाथ जहि ज्ञा जरी॥ मा बुमार है
होइ॥७॥ जो बांदे सो आप कौ॥ धरती कौं कछु नांहि॥ दासा करि दुम मतिसे दे॥ तीहि कदा परमांहि॥८॥ बां
नम सक्ति हरि ज्ञक्ति कौ॥ करतां बेर न लाव॥ आद सुअें सें जात है॥ जै लो है का नाव॥९॥ सो अबके करि सत

हरि कां मत जि॥ दस सत्त तजि के न्हा३॥ आसु न छा मिल प्रगार करि॥ लहू विसरि भाइ॥१०॥ न ले मन हरि सुध
रामु
२५

घरी॥ हरि गुपजे हरि आव॥ के गुपजे सत्त संग की॥ के देवे का चाव॥११॥ जन नसु कृत सत्त संग बिन॥ मनिषज
न्मदेनां हि॥ जे में अषार पंगुला॥ नदी जुगि मती मांहि॥१२॥ सुकृत ते साध मिले॥ जन मिलि सुमर्न सोइ॥
जगनाथ सुमरन कि ये॥ हरिजन हरि ही होइ॥१३॥ इतिसं पूर्ण॥१०॥ अंग५॥ हरिगुन नाम अगाध ताअंग॥
॥ साषी॥ जीव सब निबसै मके॥ अमर रमन में अंग॥ हरिगुन गावें अर्पं रुचि॥ तो पारि संषा अंग॥१॥ रे
मरो मर सनां अनंत॥ अनंत हि अनत उवार॥ तन बिराट गुन नाम के॥ नकोल धेन दीपार॥२॥ आवन
नैन अंचेर हन॥ रसनर हन नी चोन॥ संकर कि म करि कहि सकत॥ दे घन सुनन बिनां न॥३॥ जीसु सह
नम बजि युक रम॥ हरि सम दरि करि काइ॥ छवर सन नवचै रैबहत॥ प्रभु गुंन मध्य नजाइ॥४॥ जो दरे श्र
वेद रिमदै॥ पाज मार न गति लिहि॥ सुन आ व संषा चले॥ तक न मधा गछे हिं॥५॥ अनत दिते अत्रि
के अनत॥ मांन तरि मति व त॥ और न दी आ काश को॥ नाभि क दव ति हि संत॥६॥ नदी सकल जगजी
व मतु॥ सागर सो बैकुंठ॥ आठ पहर न रिबो करे॥ बंद न दी कडु घूंट॥७॥ मो क्षि पां न म सु आर सी॥ जीव
अह पुतिबिंब॥ अगिन सदैं आवें अगिनल॥ और नकै कछु तिव॥८॥ मोरषा॥ स्वां भि सार सं सारि॥ मांतु
लिये माचीचसे॥ गरेन पैले पारि॥ ब्रह्मादिक मुनि बज्ज थ कौ॥९॥ साषी॥ निरिले रूपा के सबे॥ लहे न के
दूपार॥ बष नांहे दहं नदी॥ बे की मति करतार॥१०॥ पहिपहि पा के पंभिसा॥ किन हं नपा ग पार॥ कथि ।
तिवन
२६

हरिगुरनांमसमरणाधर्मा०

ग्रं०११० कहि थाकेसुनिजनां॥दादूनांउ अपार॥२२॥साषी॥दादूनिगमसहिंसुमांबिचारिया॥तऊपारमआ
२५ वै॥तांथेंसेवगक्या करै॥सुमरनल्योलावे॥२३॥कहिकहिकेते थाकेदादू॥सुणिसुणिकहेक्या
लेइ॥लूंणमिलै गलिपांणियां॥तासनिचित्तसंदेश॥२४॥इतिसंपूरण॥२२॥चहु॥नांमपत्यवर
तअंग॥साषी॥एकहिंसाधेसबसधै॥सबसाधेसबजाइ॥जोजनसींचइमूलहैं॥सोफलफूल
अघाइ॥१॥दादूसींचेमूलकै॥सबसींच्याबिस्तार॥दादूसींचेमूलबिन॥बादिगईबेगारि॥२॥सब
आयरागसपएकमैं॥डालपांनफलफूल॥दादूपीछेक्यारह्या॥जबनिजपकड्यामूल॥३॥जग
नाथइकसांवकै॥सुक्तसबनरमूंति॥अरुसबआपपूरबकीए॥जांनोजेकरहूंति॥४॥सत
जपतपवरतजोगजगसाधन॥धर्मनेमसबकीया॥जगनाथमनुष्यरकरिएकमां॥जब
रामनाथकालीया॥५॥साषी॥कबीरएकैजांणियां॥तौजांण्यासबजांण॥जेवोएकनजांणियां॥तौसबहीं
जांणअजांण॥६॥पीछैएकसमरथकै॥सबैदसगुनशुंन॥कोटिनहैंदोकाजके॥एकैबमीबिहूंन॥७॥उ
रसीरघुबरअंकनिधि॥साधनिकासुनशुंने॥ओनिजनिधिकरमेंबस्त॥तौशुंनेसुंनपदसमुंन॥८॥प्रिथ
इकोपुरणोपिइको॥इकोअवरतपअबेषबोणि॥इकोपुरणोपिसगो॥पीछैशुंनपसुन्याइ॥९॥साषी॥जंज
गबैरीमीनकौ॥आपसहितबिनबारि॥एंउलसीइकरांमबिन॥गतिआपनीबिचारि॥१०॥सषी॥जगना राम २५

इतिसंपूर नांमनिर्वत०
थजनदमगषोज्या॥बेदकतेबसबाया॥साधसबदसिधांकीबांणी॥निजततबांतुंबतारण॥११॥
॥जोगिरिपरेदम येजुबिलेंबेचित॥रि सोंप्रांगोहिरदे॥जउ ग॥साषी॥ं मसिर ंगे ड्रं॥नांमनि॥१२॥नूरदे
दा उष्हिनि कहि॥ाडं बाड़ मिं सिरै दादू॥ का लबेबेतवे जीवि की ंपाविे तथैरमा॥१३॥॥ ाो ूमि सितत्रि हैर॥यदा
ति ाज ं॥१४॥ंड ध दिदतब डुबे॥ मक रा नर ज्गथ ना मा ज॥दे ंन स्ग्र मत ैरमा॥ ैहिंमेतिश्र सौती ैजी जौ॥१५॥ल
जीव बुषंसम मांई॥१६॥ हिना र नपसमग्र न जनमपे ंमजा यथ ग ना ज॥ह रांि का ंमचे सो न मषाछ॥र कारलग ुज सगर
ा ठा िछ पयक मु॥ का एिमरम व दादूजी॥१७॥ दूको िनज ेरे क चसो॥का नीमन वजी दादू॥सो ोदघ ुम बतांस रम॥ तो
ंसोब जनिरे॥ का लके कैहेरे ोि बे॥ोज सा न त ल मल ांंमो॥१८॥ दिधं ांें नो ने नाम स र॥ का ् मपीा वा छप ुक मु॥ ंहिना
से ग ा मि द जे सु ष िम रांब दिहिं ांम्य नये सणमब जी॥ ही न सें ंसके नर् ग स्व॥१९॥ ाख ज यमस मसंरे ोग॥पि ज ना ग
॥२०॥र पा अम ा॥दादूसत ही॥ नकोसा ंम ैंपीी श र मा शा कर त व जी ॥ य ील र क रा मा ह ो ंम ै ॥१८॥ दि ंामा न म ेला मां
चौपई॥बर॥१०॥ सिरोमनिराइ॥सकलसिरोमनिराइ॥जगनाथजपि॥बिनसंगेजगनाथजपि॥जगमेंजरानषाइ॥मुगमिसजीवनिसोसदा
दूततजिपंकादरषनमांनैं॥बेसिमरणीकासोचनकोई॥जगनाथसंसैबिनसुमनें॥निरसेकरतांसोदुखहोइ॥११॥
साषी॥जसनकालैमनसंगहै॥तऊमरैसोरांम॥जगनाथजीवतरहै॥तौसारैहरिकांम॥१२॥चाहिनकछुपर न
लोककी॥नांहिनरककैत्रास॥१३॥जगनाथजगदीसरत॥इनसौंबेपरवाह॥१४॥चौपई॥मुक्तिहैनबीबैकुंठा॥

गुंथा० मनमें ॥ नतौ अब अगति जांन मर कोइ ॥ जग नाथ जमदीस मो मले ॥ मिरसं सौ भिरखा सिक दोइ ॥२४॥ सा
२६ षी ॥ दादू मरणें कीं चल्या ॥ सजीवनि के साथि ॥ दादू लाहा मूल सौं ॥ इनसं आ ग हाथि ॥२५॥ इति संपू गोमझुरमें०
र्ण ॥२५॥ ४०७ ॥ हरिनाम भक्ति भरे सा केो० ॥ साषी ॥ मेहं रावे मह मदण ॥ तिमुरखुत न महेत ॥ मुकप
राक्र मित कव्वस्व ॥ अंतर घ रोमें अनंत ॥१॥ मा दिवंते सेव गावडो ॥ जौ मित धरम सुजांन ॥ रांम बांधि उन
रेउ दषि ॥ फां दिगगेो हनु मांन ॥२॥ स्वांमि धर्म सबतें बडो ॥ समकि जु आवे वोट ॥ पिता खुदारे आगणां ॥ सु
नदा है नव कोट ॥३॥ पिता पूत कौ कंनदी ॥ नरमिय रे जिमि कोइ ॥ परस रांम शूख देखकी ॥ सरभरे आ
रोइ सन ॥४॥ अलप मावकुमि मगति को ॥ जौ पै हिरदय होइ ॥ अंकर अ गुरी हालते ॥ बागन हैसे को इ ॥५॥
चौपई ॥ संकच कै बांण संधांण ॥ उदिया गिरमदी दीसै आंण ॥ धूसु चोले तो है षै सोइ ॥ हरि की सेवा मूफ
लन होइ ॥६॥ कबीर रांम नां मक रिबौं दडा ॥ बाही बीज अघाइ ॥ अंतका लिशूका परे ॥ निरफल तरुजा
जोइ ॥७॥ कबु कांम करू का जदै ॥ कछु लेद कछु देस ॥ का हुस्यां म साहिबजायो ॥ अंगतन बैंत सहद ॥८॥
मांगे कुष्ट की पात लि ॥ दुषपावे पल कोइ ॥ स्यांम देत बिनद रशिन जे ॥ तकै पु माली होइ ॥९॥ मह रा
वनि अंतरिन दी ॥ जिन्या स्यांम गुन गाइ ॥ अंबा स नि मि कसै वस्त ॥ कछु लो बा मर दाइ ॥१०॥ चाक राम
रभोन हिंराज के ॥ दोदी मांन तराज ॥ करनी बिन स्यांम दिकं थै ॥ तकै सका कोज ॥११॥ मायाम धिरदैदे रे २६

रुई बनो ले षो सौ पेजर चरषा तल आई प्राणपोन नमेप कार्ड दे
त्र
बिच बित लो या नजा

षनंदी ॥ जे जन हरि के मीत ॥ दाक नदे न च कोर कौं ॥ अगिन भषें आ सिपीति ॥१२॥ कबीर दौं बलिअप
नें रांम की ॥ जिनि दिह दी या प्रांन ॥ कासी त जि मगा हरि चले ॥ चितन भइ या अांन ॥१३॥ कासी त जि मग
हरि गया ॥ कबीर भरोसे रांम ॥ सै देही सौं ई मिल्या ॥ दादू पूरे कांम ॥१४॥ कबीर रांम नांम सं दिल मिली ॥ जम
हमपरी बिराइ ॥ मो हिभरोसा इष्ट का ॥ बंदा नरकि न जाइ ॥१५॥ गूढा ॥ कनक पुरी पति ता सरिप ॥ जास
नांम जे लेंदे हि ॥ अल सुत प्रीतम ता आसुत ॥ तिन हिं आस नहि दें दे हि ॥१६॥ धन रिप ता रिप ता सरिप ॥ ता पति
सौ चित लाइ ॥ का सिब सुत सुत राज की ॥ कसर चोट चुकाइ ॥१७॥ साषी ॥ नां वलीन के आतमां ॥ सहज
सुनां कै माइ ॥ हरि बदन मंजार कै ॥ ष्यांज बोम बित छाइ ॥१८॥ दादू अंमा नषै चिंत ॥ कहि सम फांकं तो हि
मो हि भरोसा रांम का ॥ बांका बाल न होइ ॥१९॥ दादू पषि का हू के नां मिले ॥ निंद कांमी निरपष साधु ॥
एक भरोसे रांम के ॥ खेले षेल अगाध ॥२०॥ इति संपूर्ण ॥४॥ ४२८ ॥ हरि प्राप्ति विश्विल अंग ॥ साषी ॥ चारि
स्ततें हरि मिले ॥ समभै मां निप तौ ति ॥ मी चक मेकर भूति तिलषि ॥ लषि छमू परगीरीति ॥१॥ मन तेंतन तेरस
न तें ॥ चारि चारि तजि दोइ ॥ गुर प्रसाद हरि लजन करि ॥ या ते प्रम संतोष ॥२॥ आसा आलस जो हपुनि ॥ त
जि अो जोंअ हि स्वास ॥ अंन पष्न तासौ मिल ॥ ता हिमन रोइ प्रकास ॥३॥ दासा चोरी बिरथ कैत ॥ आलस
चौथो बिभचार ॥ एअ सुमन तजि का हू के ॥ ता हिसै दो आचार ॥४॥ निंदा पारिक गोरता ॥ अरु मिथ्या तजै बै

पुं०गा० १७ न॥ अज्ञनगहैयरहितलीयैं॥ उचरैं नित हीं चैन॥५॥ परमिंदा जहां म्हकनर॥ षंदअपरहयसंग॥ परधनतें
लोइनरहत॥ मोहनपगपगगंग॥६॥ मोहममोहममनबसे॥ मदनमदमजिहिंअंग॥ मदनसदनसो
नांफिरै॥ अकलअकलकेसंग॥७॥ कोटि गंथ निमत हरे॥ बरगुरयदगपदेस॥ हरिसेंराचितवि
दढधरे॥ बाधे सकल कलेस॥८॥ सुमरन सेद कबीरकरि॥ कहनकियाभाषि॥ साचसंमरहिम्म
हि भिन्न॥ वस्तजतनकरिराषि॥९॥ कोई इक राषे साव धांन॥ चेतनि पहरे जागि॥ वस्तमबासम्में
षिसे॥ चोरनसकई लागि॥१०॥ दादू तौ हूं पावे पीव कों॥ हैं नांही दिल मांहि॥ जहां आपा तहां हरि नहीं
हरि तहां आपा नांहि॥११॥ दादू तौ हूं पावे पीव कों॥ जे जीवत मिरतक होइ॥ आप गवाएं पीव मिलै॥
जांनत है सब कोइ॥१२॥ दादू तौ हूं पावे पीव कौं॥ आपा कछू न जांणि॥ आपा जिसतें उपजे॥ सोई सद
त पिछांणि॥१३॥ दादू तौ हूं पावे पीव कौं॥ मैं मेरा सब षोइ॥ मैं मेरा सहजैं गया॥ तब निर्मल दरसन होइ
॥१४॥ मैं टै मन की बासनां॥ मेटै तब हरि राइ॥ जगनाथ इन्जा कहु॥ सके न तहां समाइ॥१५॥ ता रहि
मन सतगुन गुनैं॥ सीग मिल सुकरिगोंन॥ चले निरंतर पीया दिशि॥ तब बिरह मिल सुषदोंन॥१६॥ क
छ बासादिबनां मिलै॥ बिनहि चियरैं बसीठ॥ हरर फिटक रीज बहलगे॥ तब नरहरस मजीन॥१७॥ जो राम
षोलहि न्येनरकट॥ मूंदे हिता कपलक॥ मो देषे प्रतिब्यंब जल॥ षालिक मांहि षलक॥१८॥ मिटै १७

हरिप्राप्तिबिधि
लछिन०

हम मन की अटपटी॥ मीत रिवाह हरि दोइ॥ ऐसे जगमन सुजांन पिय॥ बैसें सनमुष होइ॥१९॥ जगमन चैंब
पिय पैमसों॥ ऐसैं हित चित लाव॥ सबै अटपटी हरि करि॥ सूधी बात न आव॥२०॥ माया दासी दास
जिय॥ पूरन केस हजि संजोग॥ नहिं बिअति हरि सें बफल॥ हरिफल जग महि बियोग॥२१॥ जड जैं देया
मांगा कैं॥ काल्हू तरागिरदंस॥ साध सुरति हरि कौं मिली॥ तोडि फोडि ब्रह्मंड॥२२॥ रमपी सों जुगिसु
गिजी सें॥ धुनिमें रहो समाइ॥ जियमहि यां पियपाइया॥ सहज समाधि लगाइ॥२३॥ इति मुपरण॥२
५॥ ॥ हरिसनमुष बिमुष लछिन०॥ साषी॥ मन मगा सारो हरिसमुष॥ बिमुषी दूक अबैक॥ स्या
बतिथा बे मोलबदु॥ बिषरयो आटनएक॥१॥ उपपाव नथमवतषरा॥ पराषी नमति दीन॥ मांषी जे
हरिते बिमुष॥ ते निस दे षियत दीन॥२॥ जौ हरि भजनत जुगा लतनि॥ नू ही त कुसलम जोति॥
भजन जोपलुषी चैबिनां॥ सोई पूरी हांणि॥३॥ बिपति दे जो मो मिरि सहे॥ सपति नहीं अभिमान॥ ईसरदा साबांनमें
संपति बिपति समान॥४॥ जीते जनजगनाथ जे॥ जपि जगपति जगि आइ॥ हारे नर हरि बिसरि ते॥ हथ्थ
अरनि उपजाइ॥५॥ सेवक मन सबही किये॥ जब हरि सनमुष होइ॥ बेद बिमर जत अनुसरे॥ जब बिमु
षनरसोइ॥६॥ हरिसनमुष समिसु निको॥ नहीं बिमुषस मिपाप॥ स्वांति नहीं संतोषसमि॥ तृष्णा सम नहि
ताप॥७॥ सबही तिथि क्रतिथियां॥ सबही बार कुबार॥ अकराज ब ही की लगी॥ नानक जब बिसराम

गुं०अ० २८

हरिसमुषमिमुषलाहि०

रजनहार॥८॥ हरिसमुष ब्यापेनदी॥ आरैसैं बिघनअनेक॥ बहुसलिमासाग मिलैं॥ हवनदीनअनदीने
क॥९॥ अनुजानैं नरतन बह्यो॥ किये किते उपगार॥ हरिजानैं सुषदोइमै॥ कोकहि सकै अपार॥१०
चोसुषी॥ दोतनदी हरिनांद बिन॥ मोतमत धरै कोइ॥ पीतबे सिधिधिपिरई॥ होतपरंगति होइ॥११॥
इतिसपूर्णी॥२६॥४६९॥ चितवन चिंतामणि॥ साषी॥ ब्याधी बिरही बैरहि धन॥ सेवगसाहिब संत॥ रिसी
रसिकजो चाकरी॥ एक्तु मोरैं नचंत॥१॥ नींदनिघटी तिजंजनां॥ कहिसम्मन कौ मांह॥ अधिक
मनेही दुजा रिसी॥ बिरषटके तपाह॥२॥ नींदभुरातनगेहमी॥ नादिउ कलन बिहात॥ चिंतादिषी
नवछह॥ कांकितककिफिरिआत॥३॥ आनपदहरसा वेचोघरी॥ जे सोवैं ते ओर॥ नैनोंमें पीतम बसे
॥भदी नींदकोठोर॥४॥ चिंतामनि चितमें बसे॥ जो चितवे सो देइ॥ अनगतराइ यूजन हठला॥ चितचित
दीलेइ॥५॥ कबीर चिंतातो हरिनांउकी॥ अवरस्च चिंतादास॥ जे कछु चितवै रामबिन॥ सोई कालक
पास॥६॥ अबिना सीपंक उचरन॥ रिदे रिधांकेजोद॥ हरिचिंतामनि सेवनां॥ केही चिंतमरांह॥७॥ द्वा
रचिंतामनि चिंतनां॥ चिंताचित की जाइ॥ चिंतामनि चितमें मिल्या॥ तहां साहर काल न आइ॥८॥ अमिम
पूर्णं॥२७॥४७७॥ बिरहकाअंग॥ दुषजनजतरयो सुहागतैं॥ कियोपजमपरमोन॥ अनहकेबूक तफिरै राम २८
॥सम्मनको घरकोन॥१॥ छोकनरो सतन रुनउग॥ धांवन भयो अकस्थ॥ सम्मन ससगुन के चले॥ परेबिर

हके हत्थ॥२॥ सरफा को इतनमी फिरी॥ कुदकिचढी अंबराइ॥ आलेधा बहु बिरहको॥ बहुरिजुआय
आइ॥३॥ सम्मन बरजिपपीहरा॥ पियकौ नांउ न लेइ॥ कोईक चुनि है बिरहनी॥ पीयकहत जिय
देइ॥४॥ जबजब मेरे चित रहै॥ प्रीतम प्रान आधार॥ उरतीषे करवत जसें॥ बिरहत बारंबार॥५॥ ब
रहतिडबका सनिकहे॥ जांनत है जगदीस॥ दाहमिसाह्दिब नहि दरिहे॥ बिरहाकरवतसीस॥६॥
बिरहाबासुर अवलो किय॥ नजरि न आवे चुष्ष॥ किसको कहि ए आपनां॥ अंतरगति का दुष्ष॥
७॥ कौंनसुनैं का सौं कहौं॥ जो जियउपजत बात॥ मेरे उर अंतरसषी॥ करवत आवत जात॥८॥ दोक
करकरवत लै॥ बिरहसयो सुतधार॥ सकही ये यहूक्रके रलौं॥ बिहरत बारंबार॥९॥ भुषसषे सज
नसाछोगो॥ दुषजुर होहमपास॥ तिदिपकौतो बिरहकी॥ षिनदाम्फ षिनमास॥१०॥ बिरह
कटारी तनफिरी॥ कितेक बचौंघाव॥ मूनी सेजनिदेषआपिय॥ बिरहै पाणोदाव॥११॥ तोही मा
ससरीरमहिं॥ रती न छोडयो राम॥ अबसो बिरहा स्वांनज्यौं॥ चावत अर्के हाड॥१२॥ रक्त मास सब भा
लि गया॥ हाम रहे अस चाम॥ सोपुनि त्यागो बिरहनी॥ जगाजीवन मजिरांम॥१३॥ मास गयें लो सोध
के॥ सबघा सो षुरहाम॥ अब बिरहा कक भयो॥ लागौ हाड चबांन॥१४॥ मेमेअंगसमोरिया॥ बिर
हमदीयाजांन॥ छाती सिचांमांही इके॥ लोगामांमसहिषांन॥१५॥ बिरहाकायाकरंकपरि॥ मितवुवि

मं०प०
२६

वैवैस्याइ॥ लोहू मा सम नता सतन॥ कहु सम्मन क्या षाइ॥२६॥ का मा षाइ सो षि करि॥ सबतन लोही मा

मा॥ दोहन षाई लोइ रणं॥ पिय देषण की प्यास॥२७॥ तन मन जो बन जारि कै॥ भस्म करी सब देह॥ सम्म

मुम्मे सो छि रहरा॥ अजहूँ हे टो रत षेह॥२८॥ उर अरु रन कै लो अस्त॥ सास षचू मि जिय सार॥ रूप

म तअहर॥ छि डुष अगनि॥ मन घन मारि लुहार॥२९॥ सम्मन हूँ की बिरह की॥ रही करे जे लागि॥ जे

ना लोहू का छिय॥ तेती निकसे आगि॥३०॥ रोम रोम मन नवे छिया॥ बेदन बिषम सरीर॥ सम्मन

घारू तो करो॥ पाक गोर ब्पी रा॥३१॥ जसां सतो नी सुरति ठबि॥ मदन बान ति हिं औन॥ अदसमंद कै

लके से परे॥ जदी घावत ही लोन॥३२॥ चौपई॥ को कू कमल सुन हर अकहा॥ बेलि हिं कली बुल

फरडहा॥ अबापत्र लंद लंद ज्यो हा॥ सषी देषरो बसं। त किसी दहा॥३३॥ साषी॥ तरकंट क अर्थ फारि

बिरह॥ सरगुर सो मस छाइ॥ को हि बि याधि बिरो ग मर्हि॥ पास सप सरी आइ॥३४॥ बोमकटाली कै

बिरो॥ न षि त्रफल घन पात॥ बिरही जन कै चष नि मर्हि॥ चितवत गडि गडि जात॥३५॥ बाजी दहे ष

ताड्यो मपर॥ पन षिन नहिं कीन॥ बिरह दग्ध आकास जो॥ तातैं फो हा दीन॥३६॥ दादुन सबबन न राम

दकिया॥ पन हिं मंत बिरोग॥ अपत निझ ज पला सं॥ फल्यो कहीं संजोग॥३७॥ बंदकै हंद क्या ग्या न २६

कै लो अजहू संजोग॥ रगत तां गप रगट भई॥ दादन मं पल बिरोग॥३८॥ आवपतं गमि सं कजरि॥ फ

रिफिरि रोटन लेव॥ जो ब साधत तो हि जोति की॥ सनमुष कैं जिय देह॥२९॥ बोका जिय राजु छन न॥ अ

दमंद पूरा देत॥ सनमुष ज्यों ति मसहिं सकत॥ वारि फेरि यं देत॥३०॥ मरिबे कों नपिरात है॥ मरत ड

रै सो मीच॥ इहै डुष्ष कबिराज कहि॥ मरियत बिरह कं मीच॥३१॥ उमरै रै पैमजु पात्मा॥ मेरो तन्न

ति मुल होइ॥ उमक निआन कूं मरि गइ॥ बिरह हमारे कोइ॥३२॥ तेरी जोति हि मन धरो॥ मन धरि हि

मुंपतंगा॥ आगुन सांई हिं मिल्यो॥ हि मिलि ते रैरंगा॥३३॥ पा तंग ग्रेट तम रे॥ बिछुरत मरे जो मीन स

नेह मरि मरि जिये॥ कहुं सयानी लीम॥३४॥ पेम बिया की महि मकै॥ सुने तक हि यकाहि॥ हंजा

नौ हूं जो मिहं॥ हंदी जोन तं आहि॥३५॥ जो मोहि बेदन बेदसु नि॥ लिषी न का ग द माहि॥ को इहैं हो

रहियो छियं॥ पच हित फो हे छि माहि॥३६॥ जाहि बेद घ रि आप णे॥ जों पै को इन को इ॥ डि निकुषल्ला

या नो न का॥ मुला कै रंग सोइ॥३७॥ बिरह बिथा अति कठिन तन॥ सुर मुनि स कहि न माषि॥ मं

ब छि रण बेकूपन॥ सो बो लत मम साषि॥३८॥ जो हो दो तो कहं कहु॥ रूपूछति हे काहि॥ पान आन

कै बसि यूरे॥ हो महूत दो ताहि॥३९॥ पी यकार नि प्पवै चंही॥ पियप्प बेपर दहा॥ हियडा बदी बाल रे

जस रो इरो छू हदा मह॥४०॥ के ते मट मं ककफ न मी॥ मोहन मिले न यां म॥ फुंडी तनि कैं मिसि फिरी

सीसप है क नितांम॥४१॥ तन कै ला यो य न रह्यो॥ जो मरे रे पिय पीय॥ अगम फिरी पिक रूप कै॥ दा

सुभ राजनामा · लि

जगरनाथ

1796 AD

hundred five

DMV 14B

p 19

पुं०प्र० १९

॥वैवै ... लो ह मासन तासत न॥ कडु सम्मन क्या थाइ॥१६॥ कामा घाइ सो धिकरि॥ सवत न लोही मा
स ... न घाइ लो इ रणा॥ पियुदे षण की प्यास॥१७॥ तन मन जो बन जारि कै॥ भस्म करी सब देह॥ सम्म
न ... वि रह रा॥ अजहूं हे टौ रत षेह॥१८॥ उर अंगार न कै लो अस्त॥ सास धवू नि जियु सार॥ हप
म ... त ... र नि ड षअ गानि॥ मन घन मारि लु सार॥१९॥ सम्मन तूं बी विरह की॥ रही करे जे लागि॥ जे
ता ... का ढिय॥ तुली त्रिक से आगि॥२०॥ रोम रोम तन वे धिया॥ वेद न वि षम सरीर॥ सम्मन
था ... ता करौ॥ घ कगीर क्षे पीर॥२१॥ जहां स लौ नी सुर ति ढबि॥ मदन बोन ति दिं ओ ना॥ अह मंदक
त ... से पर॥ जहीं घाव त हीं लोन॥२२॥ चोपई॥ क्यों कुकम पल सुन हर अकरा॥ बे लिदिं कली बुम
फ रहा॥ अंबा पत्र लंद लद जो रा॥ सषी दे म रौ व सं. त कि मी दा॥२३॥ साषी॥ तरकंट क अधफरि
विरह ... मरगुर सों सरु छाइ॥ को दि वि या धि वि शे ग म हिं॥ पाप संप सरी आइ॥२४॥ ओम कटा लीकै
विरे ... म षित्र फ लघ न पात॥ विरही जन के च ष नि म हिं॥ चित व त गहि गा डि जात॥२५॥ वाजी दबे ध
मा ... म पर॥ पन षित्र नहिं कीन॥ विरह दग्ध आकास जौ॥ तातें फो हा दीन॥२६॥ दादुन सबबन
द ... पन हिं मंत वि रोग॥ अपत नि हत जु पल्ला सहं॥ फल्यो कहीं संजोग॥२७॥ वेदकें हंडया ... न राम
॥के ला अज डु संजोग॥ रगत तांब पर गट भई॥ दादन मंयत वियोग॥२८॥ आइ पतंग निसं क जरि॥ फ ९९

रि ... रि मो ट न लेह॥ जौ ब साधतो हि जो ति की॥ सनमुष षीजिय देह॥२९॥ सोका जि घरा ड छन न॥ अ
ह मे ... पूरा देत॥ सनमुष क्यां नि म स हि स कत॥ वारि फेरि यं देत॥३०॥ मरि वे कों न पिरा तहे॥ मर तड
रै सो वी चा॥ इ है ड षक विरा ज कहि॥ मरियत विरह कु मीच॥३१॥ उग्र है रै पैं मुजु पी त्मा॥ मरौ तत्र
ति ... न हो इ॥ उम फ नि जान न जं मरि गाइ॥ विरह ह मारि कोइ॥३२॥ तेरी जो ति हि मन धरो॥ मनु धरि है
तं ... आपुन सांई उहि हि मिल्यो॥ उहि मिलि तू रेरंग॥३३॥ पातंग अेसट तमरे॥ विछुरत मरे जुमीन स
ने ... रि म रि जि वे॥ कहूं च या त्यो ली म॥३४॥ पेम विथा को स हि सके॥ सुने त कहि प का हि॥ हंजा
नौ ... निह्वं॥ हंदी जांन तं आहि॥३५॥ जो मो हि वे दन वे द सुनि॥ लिषी न का गद माहि॥ को इंहं हो
र ... ि यां॥ पचि हि त पावे हि ना हि॥३६॥ जा हि वे दघ रि आ परौ॥ जां णे कोइ न कोइ॥ जि नि ड षल्ला
या ... का॥ मूला क रे गा सोइ॥३७॥ विरह वि था अ ति कठिन तन॥ सुर ष नि सक हि न भा षि॥ म
हिरण ... रू पन॥ सो बो लत म म सा षि॥३८॥ जो हो हों तो कहूं कहु॥ न पूछत ति है कादि॥ पांन आन
कै ... सिपूरे॥ डों हं हत हैं नाहि॥३९॥ पीयु कारनि पपी हे च हो॥ पियु ण वे परदं ड॥ हियडा वे दी वाल र
जं ... पू हंदा मउ॥४०॥ केते मढं मं क फन मी॥ मोहन मि लि न सां म॥ ढंडी त निके मि सि फिरी
॥सी ... क तितो म॥४१॥ तन कै लात्यो युमर स॥ जी मरे रे पियु पी र॥ जगत फिरी पिक रूप के॥ स

ग्रं०प्र० २० व्र

षालें पैं यह जीव॥४२॥ हंसो सरोवर मौ नमन॥ सजन सुरति निफोरि॥ न्सनम कंटक बिरह को॥ लेतक
ढोरि कठोरि॥४३॥ मन नबिरहा नीरनिधि॥ मैं न समुत्ति हिं संग॥ सुष जिंहाज कहिंके चले॥ जामह
सुरति तरंग॥४४॥ सुष कंदन परिक्स्युवंन॥ अहमदद सैकि चाव॥ इहै जराजै रादद दे॥ औरजरे
वजराव॥४५॥ साध न ईसबलाइया॥ भरि सांवन मैं मंन॥ बिरह दसंतै बीजलि॥ धन धनजरै
रोकेत॥४६॥ पियबिन पत्रपलजुग भया॥ कहिनदिवस कूं जाइ॥ हाइ इ प्रियारांम बिन॥ का
लरूप सब षाइ॥४७॥ हाइ इस संसार मैं॥ मुक्त साइ षीन कोइ॥ पीव मिलन के कारनै॥ मैं जलबु
रयारोइ॥४८॥ मो को मिलैनेन मैं सुषी॥ कह कलू जीवन होइ॥ जिमि मुझ को घाइल कीया॥ मेरी दारू से
इ॥४९॥ म्स सच मो सम बिरह सन॥ ओ मि बुन्यो इक मूत॥ छामैं बनै न संग है॥ ज्यं ज्यं काल मांक के
पूत॥५०॥ कबीर बिरहा खुरहा॥ जिनि कहो॥ बिरहा है सुलतान॥ जिस घटि बिरह न संचरै॥
सो घट सदा मसान॥५१॥ जिस घट मैं बिरहा नहीं॥ सो घट चिता समांन॥ कहि जगसी नृ बिल्वक
॥ कसाक थे गुन ग्यांन॥५२॥ बिरहा कंहुय स राहिए॥ बिरहा ग्रमं दम्स॥ जेमल जो घट बिर
ह बिन॥ सो घट म कलशल॥५३॥ जेमल जा घटि बिरह न ऊपजे॥ पीव स्य प्रीति न होइ॥ सो घ
ट मुरदा मधि मंदे॥ जे सवतीरथ धोइ॥५४॥ जेमल जा घटि बिरहा ऊपजे॥ ता सिरि पूरे भाग॥ बिर राम २०

ह बिहूंणा प्रांणियां॥ जे साकत लोका ग॥५५॥ सीग बिरहा कूं तजे॥ बिरही जन जे होइ॥ जगजीवन
पीय मिलन को॥ तन मन त्यागे सोइ॥५६॥ जेमल बिरहा भूष है॥ नीदरा जे सा माहि॥ सब मृतक सो
इ जीवत॥ बिरहा जा घट मांहि॥५७॥ बिरहा मेरा मीत है॥ बिरहा बैरी नाहि॥ बिरहै कौं बैरी कहै॥ सो
दाद किस मांहि॥५८॥ सषी॥ बिरहा दीसत कीजिए॥ हरि स्यूं हित लाये॥ जेमल सूती आतमा हि॥ सो ब
रह जगावै॥५९॥ साषी॥ बिरहा बेगा लेमिले॥ सांला है जीधीर॥ दाद मन घाइल भया॥ सालै सकल
सरीर॥६०॥ बहु भेदां का दीघणां॥ अरबिजरी चमकंत॥ जह जह बिरह नि पाधरै॥ तहतह दूषी
रतफंत॥६१॥ लोह लांदन मन नग॥ बिरह अगनि कसजीव॥ इन दैनै न जं मदखुवे॥ संभुलि सि
स लिपाव॥६२॥ नैनकलम जुवति कुटिपर॥ कच मसि लहरी य॥ कोटि हदनित प्रति श्रवन
॥ उर तदिष्म न कौं पाव॥६३॥ जोह कोट अो भागम॥ अहमदनैन मराइ॥ अष्ट न छिरक त
माग पिपियब सैन आइ॥६४॥ अंतर न की दरिया भयो॥ प्यारे पीतम काजु॥ दारी है घो आइके॥ बिर
हू नैन निदांजु॥६५॥ बिरह पनंग तरमहि बिसै॥ ग्यांनमार ही जोइ॥ कहि जग जीवन मांजिते॥ कै
टि करे जो कोइ॥६६॥ कबीर बिरह भुवंगम तनि बिसै॥ मंत्र न लागे कोइ॥ रामबिलोगी ना जिवे॥ जिवे
त बोरा होइ॥६७॥ कबीर बिरह भुवंगम पैसि करि॥ किया कलेजे घाव॥ साधु अंग न मोरही॥ ज्यं भा

गु०जो० रैतंसघार॥६९॥ बिरहै बिसहरबिरहनीं॥ हसी जी एन दिंश्रा स॥ जगना एह हरि गारटी॥ मांहिन नि
२२ कहनि सा स॥६९॥ सा पम सी बाढ़ी लहरि॥ कें घाई ह गम्ह शि॥ मुषतें बैन मगचैरे॥ नैन रहे जल
पूरि॥७०॥ मैं मन निहारत निहमग॥ तन मन चित हरि लीन॥ नाको नांषी मोहनी॥ नांकोकाम
नकीन॥७१॥ चित चिहुंट्यो मंतु सौं॥ कहु न सुहावे ताहि॥ मैन कुंनी दन जी यसक॥ मपत मि
लन की चाहि॥७२॥ श्रघडि यांपम कसाइया॥ जेगी आंगी इघडि यांह॥ पारे पी तम कारणे॥ रे
इयो इरत डि यांह॥७३॥ बिरही जनको कौन सुष॥ कहि धों इहि कलिकाल॥ मैं नांग गलरं
३ गलो॥ बिन सुंदर सन मंदाल॥७४॥ बिरहनि कोउ घटै षिके॥ रैनि गई देरोइ॥ ति मिश्र सुर मिके
मर फक हि॥ सो सुकहत सब कोइ॥७५॥ कबीर सोई श्रंस सजुरणी॥ सोई लोक बिड़ाह॥ जिहे
मूएलो हीचवे॥ तीआ षो हैत हि यांह॥७६॥ बिट पडा रसु तते जरत॥ इततनि कसत्त षकोन॥ बि
रह सुमनि मोगरबस्त॥ करश्रावृत चष्यांन॥७७॥ सोरगा॥ हगडु मफारी श्रेंना॥ चित चलै प
वकजरे॥ परी श्रमनित रघेन॥ तौ रजु दरस इलकरै॥७८॥ साषी॥ रसन बदनी बिरह की॥ अंगणमण राम
श्रघटैबीर॥ कयाकाव कसरेजरहि॥ मैन कुंनि कसे मीरा॥७९॥ पलकांबसने दरिसन श्रसम॥ जलब २२
तनिस सुषचैन॥ गतनि सुं दरस्यांम विन॥ भएद्रिग बरनेन॥८०॥ सुमग छा ला हगमि नश्र सित॥ बिरह

पलकन लौये तोबसत्र्य
श्रेरधौरकादरमन नकरेश्र

रूपा
मुनते श्रो जेत
त्पाप्प

बिमू ति कल्पान॥ देश्रती तश्रात्मसती॥ हसैभी बन्नमावां न॥८२॥ कोमुषी॥ बसन बिमू ति द नाइकौ॥ रा
मनरहै गुंम गांन॥ दसन द्विषावृत जोंफिरे॥ नसमनता पश्र गवांन॥८३॥ साषी॥ पाती एउं चै पीयपै॥ पात क
पुरपहरांऊं॥ पाती पच्च चेसाइके॥ पाती हरि करांऊं॥८४॥ पियकार बियोग निवरे॥ सनि बांधी मगबा
लो॥ पेम कि रकटी नैन मे॥ नीदन परत अमाल॥८५॥ तलप सैन संकलप किय॥ तल पत नयांम बेद
ना॥ पलकन पल सो पलु लगै॥ श्रलप कलप समजात॥८६॥ नवमन्नत अ भीत मे॥ लगात सि अ सुष ही द
छिन बेली जगनाथ जग॥ बिरहनि सूषब नीर॥८७॥ श्री लक्षंमि श्रणाइ रे॥ श्रोली दोर श्रहद मद
के सजुणाबिछुरे॥ सदि की नींदन भू ष॥८८॥ श्ररेसा॥ बहुरमे बिछुरत बांम॥ सुमई बदेहरी॥ तजैमें सो
नन याम॥ इमर घर देहरी॥ करिए कौन उपाइ॥ सषी मिष देहरी॥ पियबिन यं अ रहोत॥ दिन दिन श्रवैसर
देहरी॥८९॥ साषी॥ सूवन घा सन जोगहरि॥ कछुन श्रावे चीत॥ जगजी वन अब तें किया॥ बिरहनि बि श्रजक
रहा भीत॥९०॥ इघटा इजाको नहीं॥ मोहिय श्रंतरि पार॥ जगनाथ तोस्वि रहि म॥ बिरहनि बिकल सर कुरगादी
नेन रा॥९१॥ सुंदरि नींदन छी एहुं॥ निगुन संश्रारि संश्रारि॥ मांभो पहिरे पेम के॥ गो बहुरमे बेसा रि॥९२॥ हुष
डुंनी दन जी यसुम॥ जब हिं नदेषु तुम॥ मोजो नीमै क्या किया॥ लागगदी लि मुकत॥९३॥ पलकन लागे
पी यबिन॥ जोमण मरण बसेष॥ मोमन इपुतरी चित्र की॥ रही एक टगदेष॥९४॥ सोरठा॥ मिलि मीलो

गं०मा० २२

मलियां ह ॥ वेकु पुडु बांफ फाणि लयां ॥ नैं णां अरनी दांह ॥ वैरु बिलू षै नी मला ॥ ९५ ॥ साषी ॥ कबीर यह
तन जारौं मसि करौं ॥ धूंवां जाइ स्वर्गि ॥ मति वै रांम दया करैं ॥ बरसि बुझावै अग्नि ॥ ९६ ॥ कबीर यह
तन जारौं मसि करौं ॥ कागद करूं रषरि मांगं ॥ लेवण सिकरौं करंक की ॥ लिषि लिषि रांम पठाउं ॥
९७ ॥ कबीर इस तन का दीवा करौं ॥ बाती मेल्हूं जीव ॥ लोही सींचौं तेल ज्यूं ॥ कब मुष देषूं पीव ॥
९८ ॥ आंषि त्या दिक बदे बिड्ढं ॥ जा हरि रसों मन लाइ ॥ दूर नैंन निकों नेंम यज्जा ॥ उन बिन कबु न सु
हाइ ॥ ९९ ॥ लोचन अंजन सदृसि कों ॥ सुरति मन कि साथ ॥ जो न हिनी जतन सजल ॥ पलक पंष दोऊ
माथ ॥ १०० ॥ का देन बरसि बुझाव हं ॥ सहा तप निधर देह ॥ बरियां चूक न चाहिए ॥ इक वेद स
अरस मेह ॥ १०१ ॥ बाजी दके दिह्र स जीय की ॥ जरन निनक व ह्नं जाइ ॥ जो लहूं दा पन पक रिदे ॥ अ
पुन हरि जी आइ ॥ १०२ ॥ बिरह सु लम्तु रंसाल इ ॥ सुमि सथी यक पुष आज ॥ जे करी लागी जीय कें
प्रिय कौं पर सन काज ॥ १०३ ॥ रस बजप तब ह वं मं मनि त ॥ चषि जो रत तब न मग ॥ सुजफुर कं मत
ब मिलन कौं ॥ कर पर सन कौं पुग्ग ॥ १०४ ॥ पग पर सन कौं करत पहि ॥ श्रवन सुनन कौं बैंन ॥ ज्झं दे
तें पेत ब मिलन कौं ॥ मुष देषन कौं नैंन ॥ १०५ ॥ श्रवन रत तब सुज सखुनि ॥ रसन रत तजपि सु राम २२
षा ॥ अरव राइ फुट हिंनयन ॥ देषन कौं पियसु षा ॥ १०६ ॥ प्रीतम तब समु षदरस कौं ॥ नयन बनिया

चिन नैंन ॥ मन सा बा चा कम मैं मो ॥ कब हूं नां हिन बैंन ॥ १०७ ॥ मैं न कूं ने हल माइ कै ॥ कहां र देषुम
ग्यन ॥ मेरे जिय मैं चुट पटी ॥ जब हिं न देषूं मिता ॥ १०८ ॥ सजु न फेरि म बाजु है ॥ प्रीतम र देष दे
रग ॥ पंष मि हार सदैं सषी ॥ बिरह मि पल टैं केस ॥ १०९ ॥ चोमुषा ॥ रसियां इहि दिसां न की ॥ रसि
या जाइ बहेदु ॥ कसियां मेरा कोरि आ ॥ न सियां मोल्ह बेश ॥ ११० ॥ बाल्ह बिछुरत दे सषी ॥ का
ल्हहु गी पछ ॥ आलम यम कि बस नइ ॥ सा लमर हीन दें ह ॥ १११ ॥ साषी ॥ सुहादिन कब हूं होइ ॥
है ॥ सुन र पि दर सु न होइ ॥ मद [illegible] सूद मत र रस मग ॥ देषन की हग दोइ ॥ ११२ ॥ साहिब सों अ
सांन है ॥ नाहि सयप मैं अ गा ॥ नांव देइ पेल न पिसन ॥ अरु सत गुर का संग ॥ ११३ ॥ सायर लहरी छोड़ि पं
मो मन है घणि यां ह ॥ केइ ब है नि र छियां ॥ केइ सां गु हियां ह ॥ ११४ ॥ ज्यूं मन मय सरे च ड्र दिसा ॥ त्यूं कर
पम रंन ॥ तो अल गां हीं सजणां ॥ का गे महरा कर ता ॥ ११५ ॥ सोरठा ॥ जे ती लग मन आ ह ॥ मनत नी पज्ज
चेत रै ॥ नूप देरा ग न छाइ ॥ बालहा बी छाड़ि यां न रणी ॥ ११६ ॥ चौपई ॥ म धदी पपांय न करि अंधां ॥ सात सु
ष दे षि केअं अं ॥ सो मो मे ष करौ मसारा ॥ जिहिं से षहिं मो हि मि लै पियारा ॥ ११७ ॥ साषी ॥ फाड़ि पटो ली
ध ज करौ ॥ कोब लड़ी पहिरां ॥ जिहिं जिहिं भेषां हरि मिलै ॥ सो सो भेष करांउं ॥ ११८ ॥ दाइ पीव जी देषे
मुफ कौं ॥ हं सी दे पूषी र ॥ हाल देषूं दे षत मिलै ॥ सो सुष पावै जीय ॥ ११९ ॥ छूमि संपहूणी ॥ सापट ॥ मिदहि बि बिरहै॰

गुं॰ अं॰ ल्यापण॥साषी॥ लेतम तेत मांनत नहीं॥ त्वहि रजहिर की पीय॥ पांम हितैं पीरी बपुनि॥ षरक्षिआ सहैं
२३ सीस॥१॥ तेतमंत वो षद नु कछु॥ गाहू लगत न हि ता हि॥ जा तम बेदन बिरह की॥ मुई करा हि
करा हि॥२॥ मारि मरहि जु पे मकि॥ देह मु फिर हि तन बीच॥ जिहिं घट बेदन बिरह की॥ ते कां जीव
हित बीच॥३॥ चाहि अा हिदी चार की॥ मोह रितु पै लुका हू जगमाथे केसी करी॥ दे तू कहा घ
टि जा हू॥४॥ हम की चतित्र आधारहै॥ उम न हि हंमिल मार॥ जम माथ युक्त मां मुत्ता॥ जन की दे दी
दार॥५॥ मद साषी हम से कि ते॥ तन कू कहा डि मिदा वे॥ सम माथ छित नए बिना॥ आ हि दुषी बे
तना हू॥ ६॥ मत तिदारे द मैं कौं॥ आध ररदी जिय आइ॥ कहू कहा अगया होम है॥ फिरि घट रेदी
कजाइ॥७॥ जे जीवत मृतक कारनैं॥ मतक रिनां षे आप॥ यूं दाइ कार ण राम के॥ बिरही करै बि
लाप॥८॥ मांतर सास नरे भि दिन॥ आदहया करि इन॥ जम्म तम्म की पीलियकु॥ तिन जो तोर
कुकिन॥९॥ सरक मांम की प्रीति की॥ मै सुनु जां मी महि॥ पहिले तांनें आपतन॥ पीछें मारत हू
रा॥१०॥ बांन बिवोगी मांन मह हि॥ कब हू स्वा तिम दी फू॥ चिंता की बो गांन मह हिं॥ चिन फिरै जे मो
हा॥११॥ बिरह बघूरा दिस घी॥ मन पीयर की याद॥ को जानें आंधी टकां॥ कहां कदाग हि जात॥१२ राम २३
१३॥ सोषी॥ बिरही हो इन चैन॥ जां नी मिम छु रदा म है॥ लेपे दिस अचर रैंन॥ जे जल बाकी माछल ।

॥१४॥ साषी॥ दाइ तल लपि तल्लपि बिरह बिमरै॥ करि करि बकुत बिलाप॥ बिरह अग्निमैं जलि गया
। पीव न पूछे बात॥१५॥ दाइ कहां जांमं कों न पेपु कारों॥ पीव न पूछे बात॥ पियु बिन चैंन नु आ
वई॥ कं भरों दिन रात॥१६॥ उरगी घम पाव मनैंन॥ अरुजिय मैं जड कात॥ पियु बिन तम मको
मीमिसति॥ क बहं न मिट तज माल॥१७॥ घट न घट तत न घटिया षेरही सुपियम घु चाह
॥ तन मकु तु स्वा मा घटि रही॥ घटा घटा वत ना हि॥१८॥ क्त मड घ मन कु छु मै मड ष॥ दे दम ई दु ष घ
नि॥ प्रां मो क बहं मो कृती॥ ला सुष सौ पहिचां नि॥१९॥ कबीर जदि का माइ जनामि या॥ कहुं न
पाया सुष्प॥ डाली डाली मै फिर्या॥ पातों पातों दुष्प॥२०॥ बकरी जे जयकारी घरी॥ बिरह कं साई हार
॥ हेली सो हेली मयो॥ जे हे कं यम मारा॥२१॥ कबीर दु षियाजन न मका॥ हरिन दिह की सारा बकु
बिलाप करि मां हि नै॥ दर सन बिमोकरार॥२२॥ वायमक्ष णा दु ष नी जब रा॥ सुष सो नां दी मे
ला॥ आठौ पहर अप्त दिष॥ जं रक का दी ते ल॥२३॥ सब को सुषिया देषिए॥ दुषिया मांदी को इ
॥ दुषिया दाइ दास है॥ अैन पर सन दिसोइ॥२४॥ दाइ साध दुषी संसार मैं॥ तुम बिन रह्या न
जाइ॥ औरों के आंनद है॥ सुष सौं रैं नि बिहाइ॥२५॥ बिरहा न योबि छा य मो॥ बोटन बिन्निबि
सोग॥ दुष मिरहा नेणा इंती॥ कन न हं मो युक्त यो गा॥२६॥ कि पी करे जा कां घरी॥ पियुम रति

ग्रं०१४० २४

कीडोर॥सासस्र्हे मी वनरहे॥मन बैरागी मोर॥२६॥पियबिन दियान बारिहे॥बरुअभियारै घ्रछ्य॥
करिभुजि यारौ हे सषी॥का कर देषे मुख्य॥२७॥चोबोला तारिंभ किन कलपरे॥अंबर अंगिन॥
मुहात॥ससि सीतलका कौं लगै॥ औंन कज्वालमई गात॥२८॥चोपई॥ जिम जबाहरबभिवन
लावा॥दीपक चंदक रोषे आवा॥उदित पुका सम हलअसमेरा॥बिरह मेटि सब कियाअंधेरा॥
२९॥साषी॥का देपरकविमहलमहि॥सुंदरि सजे सपगार॥जो सद मे जन राखई॥तो सबे सपगार अ॥
गार॥३०॥चोपई॥अमर सरूप सबै बनि आवा॥सुख संतको कि लगुन गावा॥सब हीरंग अग
सम भारी॥पियन मिलै तौ आछो धारी॥३१॥तन सिंगार मो रह सुष साज्या॥पेम प्रीति कहूमें की
लाजा॥सुंदरि सब सोभ सुंदरि॥पियन मिलै तौ जाइ सु तन जरि॥३२॥जा सरूप सम जगत कुंआन
ऐसी सुंदरि कोई न आनां॥को मनि को मक्कला अधिकाई॥पियन मिलै तौ का चतुराई॥३३
॥कोक कला कौं कारइ समां मां॥आ मन अोर अम्न माधत जाना॥मोती देम पेम करि सारा॥पियन मि
लै तौ भाषि सिंगारा॥३४॥चोमुषी॥का गर्द नोपद रौं सषी॥का गसदे उिय मोर॥का गरहे पर्दयो॥
नहीं॥का महि रहे कि सोर॥३५॥साषी॥कहो जागे धंधे कत हि॥पांगे दहि कि हिगोरा॥ह हे करोंन
तो हिमिलै॥याते बिपति न और॥३६॥नैनां अति आतुर भए॥धीरज धरत न मांहि॥कवाके अर

मन २४

दहलोंं॥अरिआं बहि हरिजांहिं॥३७॥नैनां धारन थंफई॥बिरह लुलाई आगि॥उमम न थे चोअ
पनौं॥इमति सहिं कि हिं लागि॥३८॥वजर्यरे बिजुजजरे॥हियो हिय लेदहा॥इतो न अंग हिंडछ्य
दे॥जिमोइ कं गनेह॥३९॥चोपई॥जे मा मन मेरा अधिकाई॥रोम रोम रचि रह्या लु प्राई॥ऐसा म
न पियकर जो होई॥तो दइं मद्हि बिछुरे कन कोई॥४०॥साषी॥जं मन मेरा तुफ सों॥यं जे ने राहे
दूतालालो हा यो मिलै॥संधि न लषई कोइ॥४१॥सोरठा॥पावस रितु की पीर॥बिरही जन जानत सबै॥
तेरू धरत न धीरा॥रक्त बिंद सम ऊपजे॥४२॥साषी॥कबीर करता रूप न ताग दी॥दरसन बिन दुष दीन॥
मात पिता यूं नां कर॥जे दरसि हम सौं कीन॥४३॥रिति आई आगम न थी॥बहुमन बिरह बेकोइ॥जगनां
एक्कागक हो॥कुवन देवा कि हि गोइ॥४४॥दहदिसि मिलै बादर उवे॥दादुर करई सोर॥सो वनमास बिहि
लापिय॥पापरहे का मोर॥४५॥घन घोर दसा दिसा॥आनि तुलां न मेह॥घगडम पंषी पुरमपर
सब निसंआरे गुदा॥४६॥पसु पंछिम दंछि ति कियाअपने अपने ऐनि॥तुम हिं कहौ का कलपरे॥
उलटि करज कि निमौन॥४७॥देड मो ज दीद्यारकी॥लेजन था की अत॥चाहगबोलहि चडंदेस
निसा अंधेरी कंत॥४८॥जहत दैन मंग नुहाव दे॥घरि घरि कंत मिलाप॥जग नाथअन पियषि
न बिरहनि करै बिलाप॥४९॥सोरठा॥अगहन अंग गावि सेष॥जयुत न छीन पछी बनि न॥अंरदम

म

गुं०रा० दसंग्रगुरि सिरे ष॥ अव छिगि बनत सब मिटि गई॥५०॥ चौबोला॥ अब लौं गान तकु छिन गए॥ तजन न दी
२५ मोमोह॥ कहहि जो इफ रपाइ हूं॥ पइ जो इपत्री मा ह॥५१॥ चावरहत ह हरि मिलन को॥ मूर
रिमेलहि बांहि॥ जुमबो हनो पहि मकबे॥ मम सूरति की नांहि॥५२॥ पेइं कब स्त्र बपी यज्ञ॥
दहीन दी डुषतोहि॥ मरीर दी जगमा पुनरि॥ लौ मी लगा तिन मोहि॥५३॥ साषी॥ बोइ सराज
सुजे गहर॥ तिया लि बतइ के काल॥ लिबि करि बडजरि जु मेटि दी॥ कबण लि चार ज माल
॥५४॥ प्यारे प्रीतम पीय जी॥ जो कब हें आवंत॥ ममर समीर स सोमपिक॥ ता सम पचादंत॥५
५॥ मन साकपडं चैमदी॥ पुनि गुपाल मति मंगा॥ बिन मछा थमि ना देति ये॥ बिराधि मी रमद
चंदा॥५६॥ करसु करीर नेपडं चई॥ पंच मिराथो चषि॥ तो स्यो वा हत मा फरहि॥ मन बुधिम रचो
नसा इरि॥५७॥ जिहि फल हत्य नञ्चरे॥ सति न मयगा तिन मूलि॥ रेम नयद लेबा वरे॥ तिय
हेमूलि॥५८॥ बहत्र मइ एक मुस्त्र मनें॥ तदी वेव सहिं न चिंत॥ दम है ओ चन मार जं॥ दी य
मरुकहिं मित॥५९॥ मज्ञ न बिन्ना संताप बडु॥ का रहि की जे इत्र॥ जाहि न त्रिय रानि का सदे॥
पैमल जाव हि किना॥६०॥ बाजी दब छत्र म बिदुरें॥ न इ बडु की देह॥ निमक सिगाय नहिं पांनया॥ सदे राम
लज्जां बन नेह॥६१॥ जांवे लाडिगम सहित्र॥ पंछी न हि परदेसा॥ लदां हरा चो रहिया॥ बडु मंत २५

पतहे स॥६२॥ सोषी॥ मन जमुमुग्ध करि प्रीत॥ मूरख स्रलिगुं जन फिरे॥ कबहु न हिर खिन्न सिचीत॥
मबर हि पहि बान ल ननदी॥६३॥ साषी॥ नांमुक रूप न रंग है॥ मोमु कप दैहो देस॥ मां जो बोज सपी
यूसों॥ कहूं हीरह सी रंग॥६४॥ चौपइ॥ ओगुन करी तो ओगुन रहे॥ ओगुन करे तो मोहि बिरहे॥ प
यूसमुग्ध न जो बन बारी॥ इहुं पवा रांमी चहमारी॥६५॥ साषी॥ कण्ण र पदहरि पसंगा के॥ मांविया बा
क्षिचे गार॥ दे चलि समन बिरह पी॥ हुडिपरिए संसार॥६६॥ पियबि छोगान महवरी॥ छत्ती नी य सो
कोइ छर मजि सचार लगि॥ घट छु हनि छहिं लाइ॥६७॥ हं जु कहु नहीं रेनि दिन॥ इ दे बस्त मो पीय
॥ उयतन बिरहा नल तबें॥ पियतन नवैरे नदीय॥६८॥ सरफा मदंदी क्षेरहा॥ आप पि मा इपि सा इ
॥ उम सफ्रु परबस हि हिरें॥ चुघ्य नलाइ पाइ॥६९॥ सी वहु महा रामार का॥ रितन न लगे उघ्य॥ पांच
न लोहत कैच लो॥ जो रस मांजे इघ्य॥७०॥ सोरठा॥ करव तडी कार मार॥ जै मिरि छी जै तो दहे॥ मो है
जो हो मार॥ क्षेदम बिहु डि॥ पां नणी॥७१॥ साषी॥ हेत न सुयतो कहत हो॥ बचन इ दे सति बुकौ॥ तेज
लमाइ सुजन तनो॥ ते सो लगि यौ उजं॥७२॥ मडु नमी सो का कहुं॥ हुडी कपट केसे स॥ बसि वे को मे रे
हिर्ये॥ मिलि वे को परदेश॥७३॥ काक हि पेक रतार सों॥ लगे कमे मो को न॥ जगनाथ या जमतें मे॥ ह म
आप कि हिं सोंना॥७४॥ सो न मस्र सम सुमहौ हिस बा॥ जन्न हरि दसें मदें हि॥ छिन नी के जगनाथ जनना॥ क

गुं०प० अषौं कर गहि हिलैं हि॥७५॥ यमरतन राणं हली च राणं॥ उसास छाजन छंत॥ हियोरैं णा मत्ता वहुरुं॥ फ्री
२६ टहदहि सिजें ता॥७६॥ पैंम सकुंदर कुलटपा॥ तामें वार न पार॥ विरह हि वोगी वूडतै॥ ग्या पु
न हो स अ्रमर॥७७॥ दुषदया रू छाति यां उपका॥ विरह न पलीता फाल्ला॥ श्याहिं स्त्रवां ज्ञवमिक
मती॥ झाली फूहि जमाल॥७८॥ चित चकमक कहुति यां पणर॥ विरह त्र्यग्रानि कफ गात॥
मैंस जलवरषत नहीं॥ तो विपुपरि जरि जात॥७९॥ जिमे कनर शरस घन घना॥ वनउप
वनसमार॥ अ्रद मदइ कडका विरह छन रा॥ रू नांल न चल षवार॥८०॥ रा॥ निहिव मकाशें द्रणा
पहर पलक का मांहि॥ रोवत रोवत मिलि विगया॥ दाह साहिव मांहि॥८१॥ हिरद हि वियोगी
मन मल्या॥ साँई का वेराग्या॥ सहज से तो घी पाड्या॥ दाह मोटे आग॥८२॥ मन मैं कहु कानन नु
जो॥ काहि कहुडु मवेन॥ उत्ती सुञ्चामि पिरम की॥ कित कितु कानेंम॥८३॥ दूतजन प्रसकुन नामिले
नेन गवायरो जागत जुग मिलैं॥ कि नां मिलैं॥ देषत के हा दीठ॥८४॥ सुपिनैं जो मोहि हरि मिल्या॥ कहे
न न पाई बान॥ नीद्र गाइ वियूवी वुट्या॥ रोवत पटकत हाथ॥८५॥ सोगै॥ सुपिनां दे सुरितांणा॥ ई
रूप यांणां हूहिरे॥ हैं काहि बोलि अंजाणां॥ मेल्हे नैं पूछा लिए॥८६॥ दसैम चारि प्रकार कै॥ दसमद्ध १ राम
धोत है तीन॥ श्रवन सुपिन अरूचि वमहि॥ प्रगट न होत प्रवीन॥८७॥ प्रगट न पावत पी एकौ॥ सुपिनै २८

देषति सोइ॥ हीये रावर मती जंरं॥ वैसे मन कुंजर होइ॥८८॥ सुपिनैं हूं मिज नाह कौं॥ निरषहिं सो धनि
वांम॥ मेरे तौ पिय विरह दुष॥ मींदत सोहग अंम॥८९॥ जूं सुपिनां मैं राकवा॥ रंजे परगट होइ प १
त्मनैं मां देषिप॥ तो डुष मांही कोइ॥९०॥ जामात हिरदे ही वसे॥ सो कंत वनें रांहा॥ पलक न मूं तूप १
त्मां॥ ते स्त्रमत वैरांहा॥९१॥ हूं जे कवहूं बीसरै॥ जागत सोवत मांहि॥ धीत्म जे सुडी कहें॥ तो मांजे
नाहिं तोहि॥९२॥ जूं स्त्रति चादे केउ की॥ मन हफली वनराइ॥ पूछउज मेती मकुनां॥ मै चित राषों ताइ
॥९३॥ झाल्ही सांईं सेहि देयो॥ वाके वणाथ्थ इयांहा॥ सजण को मिलिये नहीं॥ डरकन तनां कहियो हह॥९४॥
मषी॥ माला युंथि गुनन की॥ अंतरि मरि राषी॥ धीत्म कौ याये नहीं॥ इजे नहिं साषी॥९५॥ साषी॥ कव १
रथ्यं देसडे मनू नाजमी॥ संदेसी का हियांह॥ के हरि स्त्राया आजिसी॥ के हरिया मिमायांह॥९६॥ कवीर॥
मों चित निलहै नवीसरूं॥ उमद हरि हुरिणयांह॥ इहिं स्त्रमि श्री तूनाजिसी॥ जदित हिउ जमिलियांह
विरहवि लाप० ॥ डेइ तिंमपूरणा॥९८॥ इहुहा॥ छितविनो हहि हिकाण॥ चोबोला॥ पिय परदेश न जाइउम॥ वकजियस्त्र १ त
ववहीलेक॥ निवरक हीजिनि छाडिमो॥ षोरनि लोंडुष देक॥२॥ साषी॥ सुषदेउ षकान दैही॥ कहिकहै
गहमकि वात॥ लागत मेंन चरहूरटी॥ नेंक कहूं जो जात॥३॥ मकु न चलत न सिधि करहु॥ रहो मन हदे
समात॥ जीम काटि मो वंस करौ॥ पूंकि तन कहं जुजात॥४॥ श्रव राइ पियुगो नसुवि॥ श्ररवे रूदमन सबषचीम

पुं.ध्या.
२७
व

॥मांनहुं नैंन मनु दास सुखे॥ दरसन जयौं देंकी न्है॥४॥ पांनि पल्लक कछु सब रुनि का॥ जल स्रं मुख दिस
मैंन॥ पिय बिछुरत सुपै भीट कौ॥ होत संकल्प नेंन॥५॥ नैंन कछु भीत सरिप क निन्ल॥ तिलम दिहि बसे तु
पीव॥ तिलम हिं पिव दे खि है॥ तिलम हिं निक से जीव॥६॥ तुम बिछुरत छिन मरत हों॥ कां जी क
बिमतो हि॥ छवमर तिम मनमें बसत॥ तुदे हि जि वावत मोहि॥७॥ छवमर ति मोमन बसत॥ तौ य जर
हत सरीर॥ नदी तरंग छे प्पं जरै॥ रती न बंधे धी र॥८॥ अजुम षी पीय संकट त॥ पद प्फ टे दम
ज्यो न॥ पद अ स हियरे अर परी॥ पदल फटि दे को न॥९॥ कालिजु सकु न लाहिगो॥ को दल तदे स
वको इ॥ संइ यां अे सी रैंनि करि॥ कब हूं द्यौ मन दोइ॥१०॥ जव तें पिय जी गौं न कि या॥ पी री धर य
हु॥ पछि वारें तें बिरह रा॥ वारे है मे चौ अरा॥११॥ बिरह बिपुस तौ रिन धनी॥ बे गौ सो दहि वाइ॥ सम न
गा छवि न मांनु रे रहा॥ छुगाइ तें गाइ संगाय॥१२॥ बिरह ज्वाल में झूंपरी॥ पी तम की नौ गौंन॥ चित व
ट को वा वे रहू॥ आगि पेरे जंसलौ न॥१३॥ गगन न स बें अं बरा सहे हो॥ छाकि व क हो सुजांन॥ प्रिय
पियारे सुनि पथ्थ मि॥ अंचु रात न ओं कि प्रांन॥१४॥ अंचु र ग एछि जा इके॥ अब लजां निपिय मो ह
॥मन की गेल बि जाइ दै॥ मो सत्व बदि हैं लोहि॥१५॥ मो हन न निक से घारै के॥ इहं अंग नां ज्जनी वा
हि॥ सोच न सहिते बारसो॥ लयो करे आ कारि॥१६॥ पहिलें पें मच घाइ॥ सुकनि रासी आइ॥ पी

राम
पृ. २७

॥ पर गट द
छैं त न मन हत्य ले॥ पा या च मं का ल्याइ॥१७॥ माहिव सौं मिलि खेलते॥ होता प्रेम सनेह॥ दाइ प्रेम सने
मैं न देष ते॥ दाइ सु खि या दे ह॥१८॥ साहिव सौं मिलि खेल ते॥ होता प्रेम सनेह॥ दाइ प्रेम स ने
ह बिन॥ परी दुह ली दे ह॥१९॥ हरि हि रिहर मां वरि गया॥ मन प्यारी सुष चैं न॥ तुली सौं ह कि
टी लि पड॥ बारि क॥ नैं न बैं क॥२०॥ बहु मबि छुरत सुनि सषी॥ सु ध्या बुध्या रही न मूलि॥ मि
र या नैं नी सुष चंद मे॥ गाइ हो करी मूलि॥२१॥ हियो सु गा हि मरि ओ व इ॥ गौंन करत हे अ
जा॥ नैं न कल्ल स दोऊ भरि लिये॥ पिय दहि बदा बनका जा॥२२॥ सकु न गयन नै बिथो भासो॥ मां हिं सइ
जि बु घात॥ सम न सं सं किरो वत न दी॥ जन दि द्रोत कु म रात॥२३॥ पिय पनां शिफिरि यो रेतैं॥ बि
र कां बा नु अ स ते ज॥ पान प मक न को परी॥ मी घस लों सर सेज॥२४॥ संज नगु र चकु जा बल॥ माग
बिरह निसा न॥ ज त म न पीत म प गा धरी॥ इत इत नत ओ प रान॥२५॥ पीत म की पल चाइ करि॥ अ
ब ही बे गी आइ॥ मंदिर करि नांगा उसं॥ नहरी लिल घाइ॥२६॥ अब मन धीर अ नांध र त॥ बहु मकी गौ गो
ना अाइ धाइ मोहि लाग्गाई॥ पपो अपांन क सों न॥२७॥ मंदिर सुती म सां न मे॥ सेज सिंघ ढे पात॥ बाजी दव
हु म बिछु रै॥ परी बर घ बर सात॥२८॥ पिय बिन पल प बिल स इ॥ जुग सम बरि सो जात॥ चित वत तवा हत द
सी कौ॥ अह नि सि तिल लु बिहात॥२९॥ साषी संषी॥ मीयां मेला आव घरि॥ बा ही वसां लोड फु बें के सु कं में गाये

गुं०अं० २९

॥ मरां बिछोहे रोइ ॥४०॥ सबदी ॥ रांम बिछोहे बिरहनी ॥ फिरि मिलन न पावै ॥ दादू तलफै मीन ज्यूं ॥ तुझ
दया न आवै ॥४१॥ साषी ॥ तेरी तौ जांमै नहीं ॥ मैं मरनहीं तैं तोहि ॥ पलक पलक पर इन पीय बिन ॥ बिरहनी
बधि कै मोहि ॥४२॥ तन मन अरु जल मिलि बाहि दै ॥ कदत दादू तेज अस्थंत ॥ अब तन मक जल तें न जल
परले हो लबि उरंत ॥४३॥ बीछुरनां दौ संजुगां ॥ निमा सकै इक मक ॥ केदा धम केपद्धवा ॥ के भी
रयां के सुक ॥४४॥ अरियां नें नत लावजिम ॥ पछताविया सङ्ग डषा ॥ दूधै जीवपुल षपणैं ॥ तन जोबन
गो सुक ॥४५॥ भोवृतां कै बीछुरै ॥ ज्यूं कौ सकल सरीर ॥ बारूं पर नें नांसषी ॥ अरि अरि आवत नीर ॥
४६॥ सो कहियो कसु काइ गो ॥ दै धोकदा गंअीरा ॥ जहां तैं दौजअनें नरा ॥ अरि अरिल्या वृत नीर ॥
४७॥ तन अरकौपि यपर स बिन ॥ पलक धरत न दीधीर ॥ उर चित तन वहगाध मनतै ॥ सरस सजन
जल सीर ॥४८॥ भोवृहां कै बीछुरै ॥ दागप रचो अरदमंह ॥ दाधन जीवन पलकै वै ॥ सी चढ़ै सात सम
दा ॥४९॥ भांवृतां कै बीछुरै ॥ पलुपलु सुपची सांझि ॥ पर्पसणांनपुति रिहिसदो ॥ हकिरहै जिपजांमि ॥
॥ भांवृतां जिमि बीछुरइ ॥ बलि बिछुरइ सुपरांन ॥ पटंत रिल्लोक न दे सकौ ॥ कौटि मिल्लहिं अनि
॥५१॥ अबतें तुम सों बीछुरे ॥ मीमन कहूं न लगग ॥ सजुन अरति नांमिलै ॥ दहूपा मारा जगग ॥५२॥
दादू परदा पलक का ॥ एता अंतर होइ ॥ दादू बिरही रांम बिन ॥ क्यूं करि जीवै सोइ ॥५३॥ काजी

राम २९

मैं जीवनां ॥ बिन दरसन बेहाल ॥ दादू सोई जीवणां ॥ प्रगट परसन लाल ॥५४॥ दूहिंजगि जीवन सैं
लां ॥ जबतन माहि रदै रांम ॥ रांम बिनां जे जीवनां ॥ सो दादू बेकांम ॥५५॥ सम मन सुजन मीछरैं ॥ टक बढ
वे सोग ॥ सोइ रोबहिरे भिदिनां ॥ के सस्रधा दिसोग ॥५६॥ सजुनियां बिछुडं दियां ॥ कटण कसू न
हिदसु ॥ कंब ऊये सांरुधियां ॥ जांणिदहलां दहसु ॥५७॥ मन सी ती मौं दाषि कै ॥ तन हिया ये पिपु
गांकि ॥ मोमुष रसमांप कहीं ॥ कहां कहं इष मांज्रि ॥५८॥ मिन चलै श्रुषचै नलै ॥ अरिम रिअ्रा सतनै
नां ॥ जिनि बचन भिमन रायनी ॥ कहिन चलै सो बैनां ॥५९॥ सो रसा ॥ गायाजगा वन करये ॥ दिमाल
सांद्रातां हिये ॥ कर कीगरी कैरये ॥ जो तवृस्यां जीमी षया ॥६०॥ साषी ॥ सारि मरत जुगतें बिछुरि
॥ कावजुकै तन पीर ॥ प्रीतम कै न्यारे लये ॥ धरत प्रांनकंधीरा ॥६१॥ कबीर अंबरि कुंजं ऊरी
रयां ॥ सर जिम रेस बताला ॥ जिन तैं गोबिंद बिछुरे ॥ तिनके कौन हवाल ॥६२॥ सासु रिसुष नरैं न
सुष ॥ नांसु षपु पिनं नरमांहि ॥ कबीरा बिछुटया रांम सों ॥ नां सुष धूप न छांहि ॥६३॥ आगा फिरै जी दै म
षी ॥ तेमु षफेरया नांह ॥ नां तर कामो हिपर है रे ॥ इहि अरियो बनमांह ॥६४॥ अबतें पियइं परदे
री ॥ सै पर हरि लु बोलता ॥ षांनांपीनां षेलनां ॥ काजलतिल कंतबोल ॥६५॥ षेलषां नअरुपांन रस
॥ अबलौं ये सब कीना ॥ जग नागज न बिरहनी ॥ हरि बिन सकल पलीन ॥६६॥ चौबोला ॥ सूरति

ढो०मा० २६

देषूंपीयूकी ॥ ओ चंदन चरचांगं ॥ ताराचूर बिन हे सषी ॥ अंबर अंसम चदांग ॥ ५७ ॥ सषी ॥ तन
कद्दंदतापैं परे ॥ तातौ तेल मिराइ ॥ सो सषि चंदन पीयू बिना ॥ मारत मो हि जराइ ॥ ५८ ॥ पी
नबरला पतिभी छुरै ॥ के सर दत सरूप ॥ तते रे मद्दग पंदजं ॥ आयें आवे रूप ॥ ५९ ॥ सषी कटारी ब
रज्ज की ॥ मिच्चा दिन सालंति मांहि ॥ मजन मगु चंदन का धा छुरे ॥ ते कइ पइय बांहि ॥ ६० ॥ जब लग षिआ ल
तमित्त की ॥ पीरजु ठतत नव आगि ॥ जउं चूंनां कौ कंकरी ॥ जब छिड कै तब आगि ॥ ६१ ॥ त्रिती यकवं
लिमांहि कठि नता ॥ तितीकर ज्जुइ कठोर ॥ आंथिन चौफल आंवंतो ॥ यातें कढिन नओरा ॥ ६२ ॥ अं
षियन मिलीत रिआपनी ॥ कोटे मढी पचास ॥ सु मिसषियंक डुषनासइं ॥ सज्जन मौत दिपास ॥ ६३ ॥ अंघ
ताबिबो गवढी विथ्या ॥ सो दुष काहि कहंत ॥ छीमित्तजे सुमिरैं बिना ॥ सुमिरैं बिरद्द दहंत ॥ ६४ ॥ डषवज
गुलमनप ज्योउ दर ॥ गयौ ने दन गुरु हटि ॥ संम्रषियं नमे कव दि चलो ॥ आपनदी पचि फूटि ॥ ६५ ॥ एज
नुरअंतरि सालंतो ॥ दमंडमवी चिजुहार ॥ कौ इअगाम गुदेषंये ॥ आकि पर पहार ॥ ६६ ॥ एक गोरमअ
वौंपदर ॥ रत्ती न रदत्ती रेष ॥ अवूपल पलजुगसरअरिमई ॥ मित्तबिनां मुक्कलेष ॥ ६७ ॥ वेगो बिगो अ
बतो ॥ गिण लौ हपनमेह ॥ नांजानो अबकंतगर्य ॥ बूहिपीतम कौ नेह ॥ ६८ ॥ नगफ्फटै मारीम रै ॥ का २६
गौमयज्जरी ति ॥ धीम बिछुरें जीजिवे ॥ यकति नेहो की प्रीति ॥ ६९ ॥ सज्जन डुरजब हिरदैतें ॥ म ।

रयौ नपं केकज्ज ॥ पियबिछुरत पफटयौ न हीं ॥ अंसो निगर निलज्ज ॥ ७० ॥ मैं जांन्यौं पज्ज फटि है ॥ पियौ
दचलत अकलाइ ॥ अबहियरो अदर निअयौ ॥ संदे बिरह घनघाइ ॥ ७१ ॥ सज्जन हियरो बज्ज्र ओ
पियबिछुरन की बार ॥ बिछुरत ही बिहरयौ नहीं ॥ पेम लजांवन हार ॥ ७२ ॥ फिटहीयाफाटयौ नह
॥ कंहीवंधो कहि मोह ॥ पियावछुरत मारो रहयौ ॥ तो बेजरयो कलोह ॥ ७३ ॥ बज्रहियाफोटे नहीं ॥ मी
छुटि यांकरतार ॥ जयाजी वनभुसझीवकी ॥ कोई नवकैसार ॥ ७४ ॥ जेयाजीवन फाटे नहीं ॥ छाति य
पियकैनेह ॥ तो छिगयज्जीवन छिगजनम ॥ छिगयज्ज यंदीदेह ॥ ७५ ॥ फिटहि फिटरे फूटा हिया ॥ बे
रहन गयाविचारि ॥ कहिजयाजीवनदरदसर ॥ रामनकरयाघुकारि ॥ ७६ ॥ सोरठा ॥ सज्जनकहेंपाव
॥ सतचिरंजीजे कंहै ॥ मानिमी सूधअआव ॥ पियबिछुरंतांनोफुई ॥ ७७ ॥ गाथा ॥ जेणाबिणांन रजीवजिं
॥ घडीमधअंड्डचो ॥ मायेतै णबिणा कालो ॥ सांदीयाबज्जमेंघडि यं ॥ ७८ ॥ साषी ॥ इंजांण दीनौ जीकं ॥ वे
कलिज्जयेवमुष ॥ मरिमरिजियजियज्जबतिहं ॥ ताते मौजियलष ॥ ७९ ॥ रिसमनअमसज्जदीजियज्ज ॥ अं
नपरीत मसंग ॥ स्वेदसलिलदरपनदहन ॥ रजपदअचलपंग ॥ ८० ॥ घडीमहरतअवदसण ॥ ति
गाअधीरीअड ॥ सज्जणातणांसनेहका ॥ जुकछूलीयाभुलड्डा ॥ ८१ ॥ पेममसरोवरमांफपरि ॥ जि मिति
शिनकी तीरा मिलक मिमीनजेर मितरअंनौ ॥ नवमचजांन्यौं बीरा ॥ ८२ ॥ जौलौं जलमहियांरहइ ॥ मी

पुं०११०
३०

दूमखे २

न न लष मसु ज्ञांन ॥ अंतरगति श्रीमेरं गयो ॥ बिछुरत तनतें प्रांन ॥८३॥ कायाको सुष मन बल लष्यौ ॥ जब
कुषुप जतन आइ ॥ अैसें मयंत मिल्याप सुष ॥ बिछुरत जो मरी जाइ ॥८४॥ जाके मन में जो बिछ्या ॥ बीते
जौने मो इ ॥ समुफति मांहि मन बाफ हय ॥ जमतें जो दुष होइ ॥८५॥ जाइ पूछिति सघा फलहि ॥ ज्यों
सयारमि सज्ञाग ॥ कि सुज्ञांन जिहिं मार ही ॥ कै सुज्ञांन जिहिं त्याग ॥८६॥ बूझंत ज्ञांनि प्रिरही
मनुषी ॥ बिछुरत पिय मी पान ॥ श्री घमपा वसहेम रुति ॥ तिहूं होत निहिरस्यान ॥८७॥ श्रीमुर
मोहो सज्जु राग ॥ एक हजुं है गोछो हाहि यो तड़ बिलडां थयो ॥ जां रो त्याद बिरांठी लोह ॥८८॥ जोद
नतें तुम बीछुरे ॥ मित गुगिहि हो पिराइ ॥ केती रो घद्दहम करी ॥ तुम बिन पीरत जाइ ॥८९॥ मे
मन मन मन सायक जुती ॥ मिति प्रतिपर सो पाइ ॥ बिछुरन अंक जु बिह लिखे ॥ तासो कछु न बसा
इ ॥९०॥ केदी की जेगम ड़ी ॥ के ही की जेकत्यू ॥ जेहा सज्जन बिछुड़े ॥ ते हा चे टेन हत्या ॥९१॥
इतज गुमिलन मस्त्र रूपहे ॥ मिलि बिछुरे जिनि को इ ॥ समान बिछुरत पुनि मिलन ॥ कोजे
मेकनवदो इ ॥९२॥ बिछुरहि यां बिछुदघ राा ॥ ज्यों अंतराप डांहि ॥ नदी बिछुटा बाहला ॥
श्रीसरकेसी मिलो नाहि ॥९३॥ गयाजो सज्जन मिलहि ॥ कीजि फुनि मसी को रि ॥ मन न छूटें
दरसन नहीं ॥ ताते करत निहोरि ॥९४॥ गया प्या ॥ लक्षी पुराप पहौं है ॥ कालेम रे गुमनद्यो ॥

राम
३०

२

मिलाप

त्रातो ॥ सज्जन जणं नयु है ॥ करहुटें कत्य पायें स्रा ॥९५॥ साषी ॥ संपति बिपति जु अ्राद्दिन दिन ॥ परे संदेस
वकोइ ॥ कहें हरिवं सयें सलूदें ॥ जो मिंत न बिसो गाम होइ ॥९६॥ संपति बिपति दोक घडी ॥ नर देषो मिर
ताइ ॥ दिल्ली मूरख बांदि मैं परयो ॥ दियो परायो माइ ॥९७॥ सेक संपति पियमिलन ॥ बिछुरन बिपति बिये
इ ॥ संपति बिपति सुष्म कहे ॥ और कहौ कछु लोग ॥९८॥ कहा भयो जे धन गयो ॥ पिता बंधु सुत माइ ॥
ही त्यात नहीं जो मिये ॥ जब रांम रमा इन जाइ ॥९९॥ साहरि आपिम आपदा ॥ सा संपदा म संपि ॥ जिणि अ
यांहं बीसरे ॥ सुधा बुंका दे कंपि ॥१००॥ सब दिन सुष ही को करे ॥ कबहूं न छाडी चीत ॥ अंतिसि सिध
रेषांन खे ॥ तंकं कदावत मीत ॥१०१॥ निश बासुरि आगें पहर ॥ पल न क न बिसरत सुक्का ॥ जन्हां जंदने
नपसारि हूं ॥ तहं हंत दंदे पूंछुरुका ॥१०२॥ आमत नैं मानि बिरषिये ॥ सोवत हूं फुनि सोइ ॥ सज्जन की चि
तवनि सषी ॥ नेंजु मन प्यारी होइ ॥१०३॥ बज्ज स्मरति बज्जा बदन छबि ॥ निमष न बिसरत मोहि ॥ जबब
धनां मिलि लिवोर चो ॥ नवाफि रिदेषू तो हि ॥१०४॥ नैंन निमहि की पूतरी ॥ सज्जन लिषे चित लाइ ॥ प
लष्यौ पल पल करूं ॥ मति मूरति मिटि जाइ ॥१०५॥ बज्जा षिम बज्जा दिन सज्जा घरी ॥ बज्जा रंग बज्जा संग
पीव ॥ बज्जा चादनि बज्जा हिल मिलजनि ॥ कबहूं न बिसरहि जीव ॥१०६॥ अबला बदन न बचन सुष
देजग नाथ समीप ॥ पियपरहरि न्यारे भये ॥ जो निहि सायरि दीप ॥१०७॥ सज्जन बिछुरें रैनि दिन ॥ म

रतिरहतिहजरि॥म्रयसम्रनांकेनीरज्यं॥मेंनतिम्रागेहरि॥१८॥सकलसरीरसिराइयौ॥नैनां
हरिनसिराहिं॥येदुषदाधेजनमके॥तिसहीतिसकराहि॥१९॥मैंमनिहूबाजुदरीकौ॥ग्राम
मिलाासोसोहू॥कहिंपफितमतिसकेयोंमिटै॥पांनीप्यासोहोइ॥२०॥साहाजौसजनमिलै॥राषूके
गिलमाहू॥नवलनघरअखयोरज्यं॥मवक्रोमरज्यंसमाइ॥१११॥इतिसपूर्ण॥२०॥२६९॥सजन
गुनवरमिनविरहकाअं॥दादूगोबिंदकेगुनचीतिकरि॥नैनवेनपूगसीस॥जिनिमुषदीय
कोंमुकर॥ध्यांननोम्रूजगदीस॥११॥नमनमनसोंजसंवारिसब॥१२॥देषिसदाबीस॥सोसाहिब
सुमरेनहीं॥दादूसोनिहचीम्रा॥१३॥स्वारथबिनहरिसिरजिके॥सेवतसेवगहोइ॥जगन
णजलदारज्यं॥पारेमारेमोक्ष॥१४॥दादूसिरजनहारासबनिका॥ग्रेसाहेसंभ्रथा॥सोईसेवग
केरह्या॥जहांसकलपसारेहथ॥१५॥जेगनाथजगमांहिजे॥ग्रमग्रादरात्रताम॥तिनकेर
ह्याकपोषकौ॥परमेसुरपिनमात॥१६॥हरिषिमुम्रावहेरांनपङ्ग॥पांनीग्रेमोषेहाबदाबिस
रिजगनाथउबकुं॥नेकीनेंकफुनेदा॥१७॥गजबछकेमोदज्यूं॥मोहबिलमिगोपाल॥पांम
म्रष्टजगन्नाथजन॥पालकबेचतकाल॥१८॥दादूगोव्यंदकेगुणबजातहै॥कोईनजांणैजी
वाग्रपणीहफेम्रापप्याति॥जेकुछकीयापीव॥१९॥धनिधनिसाहिबहूबम्र॥कौनजम्रस्रप

मरीत॥सकललोकसिरिमांईयां॥केकरिदयाग्रतीत॥२०॥पीवम्रउवगुनबेलिहै॥पसरी
मोमुरमांहि॥मेहनीरसोंनितबहै॥कबहूंसूकैनांहि॥२१॥सजनउवगुंनवूलनलसमि
सुमरततनजरिजाइ॥एकोग्रोगुनमोलहै॥जिहिंमनिनपतिमुक्ताइ॥२२॥सजनगु
नचणपरमये॥हेतिरितिरित्यकेएि॥ग्रवगुनबिछेनसेपजरा॥ग्रकबिलतबोलेएि॥२३॥सोम
नसबितासतिलिसज्यं॥रोकेरहोनजाइ॥सजनगुनसागरबिनें॥कहोकहांसमाइ॥२४॥से
रग्रा॥पीवम्रउवगुनबान॥हिपेहमारेचुभिरहे॥निकसतनिकसहिंप्रान॥२५॥बामनहमजा
नेंनहीं॥२६॥साषी॥कबीरज्यूंज्यूंहरिगुनसांभलौं॥त्यूंत्यूंलागैतीर॥सांठीसांठीकरिपरेम
लकारस्यासरीर॥२७॥ज्यूंज्यूंहरिगुनसांभलौं॥त्यूंत्यूंलागैतीर॥लागेतैंलागेनहीं॥सांहनहारक
वीरा॥२८॥सजनम्राकतीवांनेलौं॥गुनरहियेभरपूरि॥कोल्यावेहनचंसज्यं॥मजबसजीवनिमूरि॥२९
इतिसंपूर्ण॥२९॥७०॥अथविरहपारिषलक्षिनकाअंग॥साषी॥षुधितबिरहगुनमपांनां॥पेमचाससुषहरिष
बजा॥मबतनहोतस्रजांन॥जिहिंघटिबिरहासंचरै॥१॥साषी॥जहांबिरहातहांग्रोरक्या॥षुधि
कुषिनांवेप्पांनां॥लोकबेदमारगतजे॥दादूएकेध्यांन॥२॥बिरहाग्रावैदूरिमिलै॥पूजग्राममसह
मांसा॥जगन्नाथबिरहाबिनां॥कोबांमुक्तपरोस॥३॥दादूजबबिरहाग्रावईसौं॥नबमीठालारांम

गु०ना० ९२ काया लागी कालज्यौं ॥ कहे रे लागे कौं म ॥४॥ बिरह ब्याप जब बिषलहरि लौं ॥ तनि मन निमांम निवास ॥
जगनाथ ता सीर बिन ॥ बिसरै नहीं बिलास ॥५॥ काल कूट तें कठिन है ॥ जिहिं ब्यापे यह साल ॥ य म
श्राये नीरें जरै ॥ बिरह का लवै कौ काल ॥६॥ बिरहा बपुरा श्राइ करि ॥ सो सूल जगावे जीव ॥ दादू श्र
मिल गाइ करै ॥ लेप ज्यौं चाखै पीव ॥७॥ बिरहा सरिषा मीत को ॥ जो हरि पद पैं श्राप ॥ जगनाथ जड ज
वकौं चेतनि करै मिलाप ॥८॥ बिरह बिचारा ले गया ॥ दादू हम कौं श्राइ ॥ जहां श्रगम श्रगोचर रं
मध्या ॥ तहां बिरह बिनां को जाइ ॥९॥ बिरह मूल हरि भक्ति कौ ॥ पत्र प्रीति गुन साष ॥ कहि जगजी
वन पक्षु पुष्प मरस ॥ फल बहु दीन रस दाष ॥१०॥ बिरह बड़ा सन मंत्र तरा ॥ जो मिलि ज बिरहा होइ ॥ जगमा
थग्यायेमा ॥ साषि साध सब कोइ ॥११॥ दादू इसक श्रलह की जाति है ॥ इसक श्रलह का रंग ॥ इश्र
का ॥ क श्रलह श्रोजूद है ॥ इसक श्रलह का श्रंग ॥१२॥ इति संपूर्ण २२ ८२६ बिरही पारिष पलछिन
०॥ सोरठा ॥ जिते सु बोले कोइ ॥ श्रग्या ॥ जे दे बिलकन फिरे ॥ जे दे चित लगाइ ॥ कहइ ष्ण कहि श्र
हे नही ॥१॥ साषी ॥ कहे बिरही श्रांन सब ॥ कहत बमोज दिंश्राधि ॥ प्रीति निरंतर पीय की ॥ मग्यैपि राम ९२
रोज निवाधि ॥२॥ कासौं कहिये की सुनै ॥ कहत सुनत घटि होइ ॥ तातें घट ही में रहे ॥ कहि घट
करैब कोइ ॥३॥ हरयो ह ह्रदे गद्देष्य ये त ॥ बिप्या न जांनी जाइ ॥ बिरही रे ज्यूं जरू षजरे ॥ जौ ब
बिरहपारिषलक्षि०

नेमें छंन घाइ ॥४॥ देह पियारी जीव कौं ॥ निश दिन सेवा मांहि ॥ दादू जीवण मरणी लौं ॥ कबहूं छा
छे मोहि ॥५॥ देह पियारी जीव कौं ॥ जीव पियारा देह ॥ दादू हरि रस पाइये ॥ जे श्रेसा होइ सनेह
॥६॥ बिरही जन के लाभि न भियां ॥ श्रुन कुन मेरे बीरा ॥ स्वामासी रामुष पिरा ॥ छिगनि बहन दे
कमीरा ॥७॥ तन पीतर की पूतिमा ॥ मन बन नयं पूछी जेम ॥ जगनाथ बिरहा जहै ॥ बूक तन श्रस
रन छेम ॥८॥ श्रातन में बिरहा बसे ॥ घनन स नेनक करेता ॥ जगनाथ जियुज कन हीं ॥ सास ॥ दादू हत स्न फें बिर
नुसास करेत ॥९॥ सब ही ॥ जिस घटि बिरहा राम का ॥ उस मीद न श्रावै ॥ दादू घाइल दरद बंद ॥ जागे श्ररु
हनी ॥१०॥ उस पीड जगावे ॥१०॥ सारा सूरा नींद भरि सब कोई सोवै ॥ दादू देषे दीदार कौं ॥ दादू श्रातम
रोगे ॥१२॥ साषी ॥ श्रति गति श्रातुर मिलन कौं ॥ जैसें जल बिन मीन ॥ सो देषे दीदार कौं ॥ जगनाथ बिरहे जि
लीन ॥१३॥ चौमुषी ॥ गिरहे जिन की कौपरी ॥ बिरहें मोषों मासा ॥ चिरहें जन जगनाथ वे ॥ थिरहें जि
न के सासा ॥१४॥ साषी ॥ जिस घटि इसक श्रलाह का ॥ तिस घटि लोही न मासा ॥ दादू जियरे जक नहीं न
सासके सो सें सासा ॥१५॥ रती रत्न न निकासे ॥ जो तन चीरें कोइ ॥ जो तन रत्न सब सों ॥ ति सतन रत्न ॥
दोइ ॥१६॥ जाके घटि श्रेसी बिथा ॥ बिरहा सरिषा मांहि ॥ बचा श्रस्त न देषिये ॥ रत्न मास कहि नाहि ॥
॥१७॥ बिरह बिथा कौं जांनिये ॥ मन सा बा चा सा च ॥ जगनाथ तनिं श्रस्त से ॥ जैसें गुडी मपाच ॥१८॥ मन की

रीयमर्‌नमनसासास ॥१८॥ जगजी

गुं०७० ग्रन्थ नांहिं नकलपनां ॥ तनकै रक्त न मास ॥ अस्थिरजन जग नाथ्यैंदे ॥ छूटिमली मतिराक ॥१९॥ जेम लसे
वन कां जाणियें ॥ बिरही जन की देह ॥ बिनदे षै जी वै नहीं ॥ छूटि मिली मृतिराक ॥ ॥२०॥ बिरही
ज्ञ बिरहणी ॥ पीव बिन थ्यै रे न धी ॥ २१ ॥ जल त्यागे मछली ॥ तन तजि प्राण तजै सरीर ॥२२॥ छूति संपूर्णी ॥
न कीया रिषा ॥ बोलत मीठे बैना ॥ निर्मल जन की आन मां ॥ मीन जिन के नैंना ॥२३॥ बाट तुम्हारी राम ॥ जिय
रज्ञा ॥२४॥ बिरह बीन तो ॥ साषी ॥ कबीर रज ज्ञात दिन न की जे वती ॥ ओं हौं वे ष्टी पालि ॥ जीम
लर से तु मह मिलन को ॥ मनि मांही बिसरां म ॥२॥ आंषडि यां झाबर नई ॥ रहट बहै निस याम ॥ पपी
डि यों छाले पडे ॥ दुःख संभालि संभालि ॥२॥ कबीर नै नांमी झर लाइ यां ॥ सायर जिम रेम कोज ॥ आदी
दां ज्यूं पिव पिव करे ॥ कब रू मिलहुगे राम ॥३॥ नहिं यां छड़ी लोइ णां ॥ मायर जिम रेक को ज ॥ आदी
पया रे दई ल गा ॥ सो रिशि बिरांणो बौ ला ॥४॥ आव पियारे स जनी ॥ आंवन पद्दी बाप ॥ नहीं तनें मग
वा इ दे ॥ पंथ निहारि निहार ॥५॥ नैं नों लागी झर रंभरी ॥ चेमन ही चित अंह ॥ बिन दरसन दी
आं न के ॥ इह आग ये छिन सह ॥६॥ नैंना अंतरि आवहूं ॥ निस दिन निरषूं तोहि ॥ कब हरि राम
दरसन दे हुगे ॥ सो दिन आवै मोहि ॥७॥ नैं नां हमारे बलि गया ॥ छिन छिन लोड़े तुझ ॥ नां हि
मिले न मैं सुषी ॥ ऐसी बेदन मुझ ॥८॥ कबीर बिरह अनल अंतर दहै ॥ आंन उपाव न कोइ ॥ हरि सूत

ठा पीत रिआस है ॥ तो तन सीतल होइ ॥९॥ संदेसा कहो हे सब कौ दें ॥ मां ही कहे न कोइ ॥ ऐसे कोइ मिलां
सहे ॥ वह बेगा है मो इ ॥१०॥ मन्ह कही हूं कहें न ही ॥ रे पंथि कह्यो मोहि ॥ मां या मुद्ध तनें न मम म
किम कहिस है यों मो हि ॥११॥ दाहृ रूनैं दरस देवे हा ॥ यक छिलद है नजाइ ॥ हम तुम्हि यां दी दार की
मिटर वां न दिषाइ ॥१२॥ मूये पीड पुकारता ॥ बेदन मिलि यां आइ ॥ दाहृ थोडी बात थी ॥ जो तु
क दरस दिषाइ ॥१३॥ दाहृ मैं भिषारी मंगता ॥ दरस मंदे हुं दयाल ॥ तुम दाता दुष भंजता ॥ मेरी
करहु संभाल ॥१४॥ अंतरयामि तुम सब जाणो ॥ मन को अंतर बास ॥ यह संगति को न छिपै रे ॥ लो
कौं न संगति विस बास ॥१५॥ तुम हरि हिर दे हेत सों ॥ पूरांटो परमां नंद ॥ दाहु देषे मैं नम रि ॥ न
जनम लेता है इ अनंद ॥१६॥ हंदे ते सा पकास करि ॥ अपणां आपदिषाइ ॥ दाहृ कौं दीदार दे ॥ बले
जो कौं बिछे बन लाइ ॥१७॥ जोर चक दीपक बरे ॥ उदे करे चकफेर ॥ दीमौं तन में केहु न तम ॥ तुम
हुं अछल तम अथेर ॥१८॥ परसौं न ही तुनि तको ॥ पारस नांहि न हाथ ॥ अंतकाल लो लेहु गो ॥ अंत
रगां भी ना थ ॥१९॥ हम कसि ये क्या होइ गा ॥ बिडद तुम्हारा जाइ ॥ पीछे हीं पछितां हुगे ॥ ताते प्रग
टो आइ ॥२०॥ साईं है रंग री सूका ॥ मुझे न कछु अमरा व ॥ बुरी सु अपने भाग की ॥ भली सु तुम्ह पसा
व ॥२१॥ मन तुम की मान्मू सदे ॥ कहि एक बात न जाइ ॥ बिन दरसन बाजीद कौ ॥ जनम अबिरथा जा

गं०म० ७॥२१॥ हूंतो देषहि मुझकौं ॥ हूं कं देषौं तोहि ॥ जिन नैनें मां हूं देषियै ॥ सो नैनें नौं देषो हि ॥ २२ ॥ पंषे
मृ४ मुषी ॥ लाकं य कृग नला लनी ॥ पाकं पीलम सो ३ ॥ जाऊं बलि नवलि लिवार नैं ॥ चाकें त्रिपति न
हो ३ ॥ २४ ॥ साषी ॥ बिरह बिथा क्यां पिल गी ॥ तादी पा सि नुकंति ॥ जां दे वल धंजपौं नबसि
गरजैम्र रसुरकैति ॥ २५ ॥ चौपई ॥ जोगी ग्रती सकल संसारी ॥ बड़ा विचित्र गये पछिह
री ॥ माया मोह की गोटि मरोरी ॥ जिनि बांधी सो जोनें छोरी ॥ २६ ॥ चौमुषी ॥ परम नम हिम
म्रातम्रो ॥ परेम नबिन ऊमपाइ ॥ परम नमनम नना मिलै ॥ पर मन यूकृ घरिश्राव ॥ २७ ॥
साषी ॥ नदे सादु की नारियूण ॥ सादहि ये निति सेतं ॥ श्रात्म नो मबो लावता ॥ ये नो इकों निधरंस
॥ २८ ॥ हरि कि हिहै करि ढूंढै ॥ धरि हृ दिल न दिदोष ॥ बहु नमन मिब स्ती करज ॥ कजे रउरमम यो
ष ॥ २९ ॥ चौमुषी ॥ आघड़ कें न दयालउम ॥ पोंच कृ अमृत राम ॥ लाव ज च्यो गिजगनाथ वलि ॥ माव
कृज्ञि मिल जि बांम ॥ ३० ॥ साषी ॥ दिल बासी दीदार दे ॥ मीरा खोलि किवाड़ ॥ चोन रिषे गौ क्या करै ॥ अ
बदू बाद हरिग्रार ॥ ३१ ॥ नदी हौइ तौ पेभियै ॥ संमदन पेभ्याइ ॥ ३२ ॥ जमला जोबन जात है ॥ चौमदें देज राम
बता ॥ ३३ ॥ लनमस रवूर मन मछिली ॥ पडी बिरह कें जाल ॥ तलफि तलफि जिव नी कसै ॥ बेगा हिम मृ४
लौ जमाल ॥ ३४ ॥ जो नराइ जगदीस उम ॥ नाम बिचार जईव ॥ हरि पिरेद रिया वै ते ॥ मछरी जीव

नकी वा ॥ ३५ ॥ वाजी दकें देकर जोरिवे ॥ अन कूं पियारे मित्र ॥ जो उ कहत ह जन जीव की ॥ सो हम तो वहि
किन्न ॥ ३६ ॥ रोम रोम रम म्यो मे है ॥ ज्यों इक कैर उकार ॥ राम घट घट दल ऊ ममि कारि ॥ बरस जमिर जमन हो
रा ॥ ३७ ॥ आपपा अपरंपार की ॥ बसि अबर अरतारा ॥ हरे पटंबर पहरि करि ॥ धरती करै संगार ॥ ३८ ॥
अश्रम सब फलै फलै ॥ पिरथी अनंत अपारा ॥ पान गार जिजलथल मरे ॥ दादू जे जे कार ॥ ३९ ॥ पं
गी सूं पेदा किया ॥ अघ नांउ राम कोइ ॥ मारी मांदे सो ऊरा ॥ पाणी याधे दोइ ॥ ४० ॥ दादू काला मुंदा
करि काल का ॥ साई सदा सुकाल ॥ मेघ उम्हारे घरि घरि मां ॥ बरस जदी नदयाल ॥ ४१ ॥ प्रफुलित
अमि म माइया ॥ मुया दोइ चिंतलें मां ॥ अब की बरयण ल कों ॥ जो मरि हों नेन ॥ ४२ ॥ बलिहारी तां पै विरहकीमं०
मकी ॥ बहु मदन नदेइ ॥ जन बाजी दबिलौ कि दे ॥ जनमसु फल करि लेइ ॥ ४३ ॥ १५ मि सपूरा ग
र ॥ ४४ ॥ बिरह पैम ग्यान ऊसर अ ॥ १० ॥ साषी ॥ बिरह अगनि कै उपफद ॥ क्यों हूं केंदे न जात ॥
नाटमलउम रोम रोम अंग नाटमल ॥ अमि अमि चांपति पिराता ॥ अब मद मन लंका नडी ॥ मन नो राखन राइ अ
रह रूप दव बंल कें ॥ दिन ल माझ लगाइ ॥ ३ ॥ मं अग नलंका जरि कुकी ॥ मोत न मच्यू जहूं अगपा ॥ तिन सी
पवतपाडेंडै परी थिर मकी ॥ उवन व सिल मि मिल गी ॥ ४ ॥ दादन सबतन दायियो ॥ बिरह अगबैरागा ॥ तिल अ
रम नयरि गोर नहीं ॥ ईस दापर दागा ॥ ५ ॥ बारु यो बिरह हल दोझनो ॥ रह्यो बसी तरि लागा ॥ तिर कें उ

गोगुल नाव के ॥ ढूंढे के मी आगि ॥५॥ तिनकौं देखे पूछियइ ॥ तुम कौं पनी यहु सांच ॥ आगि जु कौं
ताती लगाति ॥ मेरे तन की आंच ॥६॥ सोहिकविन अग्नि विरह कर ॥ परसी जिन्ह सरीर ॥ तिन
चिय सूकी हिम सरिस ॥ सुहिन सकी पिय पीर ॥७॥ विरह अग्नि सब मन तहै ॥ बसउ सदा
दय कंत ॥ यातें विरहनि नैन जल ॥ निसि दिन हिय सींचंत ॥८॥ कबीर यह रत्यौ चेताउन्या
विरहा लाई आगि ॥ तिन का बपुरा क्या करत्या ॥ गलि पूरकै लागि ॥९॥ प्रगटे ताके प्यंड मे
पारक परम ग्यान ॥ जगनाथ जु जारस बै ॥ अंरे नुत्रिय कौ ज्यान ॥१०॥ जगनाथ जा बिरह
काजन जु कहिये जसमाइ ॥ अरस परस मघ नस कई जेस ॥ दीपक पज पत्ल माइ ॥११॥ बिं संदरव र
जुसनका ॥ तन क दहि तो बास ॥ जगनाथ बरिब्ब मना ॥ बिलसे बरत तेजास ॥१२॥ आ द्रिस्ट
गमित्र जु स्पो ॥ तुकै ॥ सूर अग्नि आगि धर्म ॥ बिरह अगनि पी [illegible] ॥ तुकै ॥ जग जीवन मजे रा
मा ॥१३॥ पै म चिन गजु ही यब से ॥ कहुं जी मजरा इ ॥ हिरदे राषौं नेम दे ॥ मूद मास सजरि जाइ
१४॥ अहमद चिन गी पै म की ॥ सुन्यमहि मगन न मराइ ॥ अनि बिरही यहु धर्म हिया ॥ जिनि स
बआगि समाइ ॥१५॥ जो मिलवि सो अरि बुके ॥ बुके सु मिल सगी बाहि ॥ अहमद दौ धे बिरह के
तुम्ह त्तु कियरू मिलमाहि ॥१६॥ मद स्दन मरते न पाजि ॥ बिरह दई दौ लाइ ॥ जियरा आलि मू स ॥

मंसं ॥ बुके न तौ बरि जाइ ॥१७॥ कबीर हिरदा भीतर दिदौं बलै ॥ धूंवां नु प्रगट होइ ॥ जाके लागी सो लख
षै ॥ के जिनि लाई सोइ ॥१८॥ चौपई ॥ बिरह अग्नि बिरही पै जांनें ॥ बीचै बीचि न बाद रिस्यानें ॥ तात्र अग
नि हिं को के मैं पावे ॥ जरे लागि पै कर न दिषावे ॥१९॥ अस पजरे रेत्र सपजरि न जाई ॥ जो सीचौ तौ होइ स
वाई ॥ अति विपरीति अग्नि की हरई ॥ जरि न जाइ पै जरि बो करई ॥२०॥ बिरह अगनि उपजी अस रा
रा ॥ चहुं घां देषौं बिरह की कारा ॥ पिय हिं मिलन की बुधि है पूरी ॥ ऐकै जो मसि ज्ञास बिनु सूरी ॥२१॥ साष
॥ कबीर अग्नि जु लागी नीर मैं ॥ कंदउ जलि ये कारि ॥ मतर हा बिन के पंक्षिमा ॥२२॥ दहै बिचारि बिचारि ॥२३॥
॥ कबीर प्यो गी मा है पर सरी ॥ जइ अपर बल आगि ॥ बहती सरिता रहि गई ॥ मछ रहे जल त्यागि ॥२४॥
सोवो ॥ सम में दिल्लागी आगि ॥ नदी यों जलि कोइला भई ॥ देषि कबीरा जागि ॥ मछी रूषां चढि गई ॥२५॥
चौपई ॥ सषी हूं जांन्यो चाहौं जाही ॥ बिरह बंधि बसि की नी माही ॥ बिरह अग्नि सुन सी जस कां मां ॥ अ
बतन नि सदी मो हि समां नां ॥२६॥ साषी ॥ बिरह अग्नि कबिमल कहि ॥ पिय बिन रहन न कोइ जंगम
सी तल संग करौं ॥ त्यूं त्यूं अग्री होइ ॥२७॥ चौपई ॥ सीतल चंदन घसि घसि ल्यावा ॥ सीतल चंद करौं अ
वा ॥ सीतल सीतज बढ छिषि छी ही ॥ बिरह अग्नि मधि सबै समानी ॥२८॥ चंदन चंदक समजं रेष्या
इन हिं जी जि सोरी रहती दे ॥ अबके रस मम ई बिघ बां नां ॥ मन रहे धि पजंची अ समा नां ॥२९॥ साषी

गुं०७०
३६

घीवाचंदनऊमसऊमा॥ काचघसिलोतइज्जअंगा॥ सुधिबुधिबिसजनीसबगई॥ पारेपियूकेसंगा॥२६॥
पैमपंथजेतनजरे॥ मनमतकारजुद्दासे॥ काचहबैनबासकी॥ मेकेसोहिंछुबासा॥२७॥ बिरह
अग्निमेंजलिगए॥ मनकेमेलबिकार॥ दाहूबिरहीपीवका॥ देखेगादीदार॥२८॥ बिरहअग
निमेंजलिगये॥ मनकेछिविबिकार॥ नोतैंपंगुलकेरद्या॥ दाहूदरदीदार॥२९॥ संकरगोअम
तपतिसहि॥ सुरंगसरसहैनूना॥ ताकीगतिकतकहिसकता॥ जरततुहिबिरहअकृत॥३०॥ अग्नी
बिरहअग्निजलतनजाशिय॥ ग्यानअग्निदोलाइ॥ दाइनबसपषपरजलै॥ नबरामसुकोवेआइ
॥२४॥ चोपई॥ ग्यानअग्निकाघापरजारे॥ बिरहअग्निमिमनमनसाबारे॥ बुद्धअग्निघासमें
प्रगटे॥ तिमसंकमिपापअघकंटे॥२५॥ साखी॥ ग्यानबिरहबुद्धअग्निभिजो॥ अंतरसातिपु
टाहिं॥ जगनाथदिनदिनकला॥ करमसकलजलिजांहि॥२६॥ बिरहबहानिजबकपजे॥ बषु
भावरहैसंत॥ ग्यानअग्निभिजगनाघउर॥ प्रगटदिपियपेषंत॥२७॥ बुद्धअग्निआतमजोगे॥ बिगत
नजोनेबोर॥ जगनाथनिरखेरता॥ व्यापकसकलसरीर॥२८॥ चोपई॥ ग्यानअग्निसोबिंदसुनया राम ३६
वे॥ बिरहअग्निगुनसकलजरावे॥ बुद्धअग्निघरमेंघरपावे॥ जगनाथनिजजोतिनपावे॥२९॥
॥वरदामलजलअमरअहारे॥ बरननिबहानिबरहिबनकारे॥ ग्यानबिरहबसप्रकाशे॥जेन॥

छिदैपैमग्यानबुद्धअग्नि०
जगनाथजरनिकामागुं॥३९॥ साखी॥ ग्यानजरतासबकामकी॥ अरभिजरांवनहार॥ बिरहबहनि
स्रुतिकोधुउर॥ बारतलवेनबार॥४२॥ बुद्धअग्निजगनाथजनि॥ दहतमोहमनदाह॥ पश्रा महिमा
तमअत्मिलै॥ आनंदअमिटसुछाह॥४३॥ इतिमिसपूर्ण॥२५॥ टेक॥ बिरहप्रीतिप्रसाद॥४०॥ सा
घी॥ सम्मनप्रीतिनकीजिये॥ काहूसोंमनलाइ॥ हियोहिलोलाकोरदे॥ ओचतदीदिनजाइ॥ र
सम्मनप्रीतिनकीजिये॥ काहूसोंमनलाइ॥ अनेपमिलनबछुडिबुरन॥ सोचतदीजियज
छु॥२॥ प्रीतमरीकिनजाइ॥ काहूसोंमनलाइ॥ बिछुरेअमिलागिहै॥ सूरिहैपगकेघाइ॥३॥ अरि
ल॥ मैंबरसेरिचित॥ चिन्हारीजिनिकरे॥ प्रगटप्रीतपकोफंद॥ नैनलिकेमनिपरे॥ जोकोउमि
लेअजान॥ नोपैंगुनजोरिहै॥ ग्रंनवंतोजोमिलै॥ सोबिछुरनमारिहै॥४॥ सोरठा॥ जिमजिमअ
धिकसनेह॥ तिमतिमदुषचवगनो॥ ताकीहोषदपह॥ नैतिनेहनदीकीजिए॥५॥ साखी॥ न
कष्टरहेंआहटरघटे॥ हरिगयेदुषदोइ॥ पांमनहदि संसारमें॥ प्रीतिकरेजिनिकोइ॥६॥ करस
करीबिछुरतमरी॥ अरीजरीयकुरीति॥ उरसीकबछुनकीजिये॥ परदेसीसोप्रीति॥७॥ प्रीति
कीरीतिअमीतिहै॥ नैलिकरकुजिमकोइ॥ सुघदीपकमकेसैंबरे॥ बिरकुमायाजदेहोइ॥८॥
॥बिरजगुसेमयमतनमसे॥ मंत्रनलागेकोइ॥ रांमबिछोगीमांजिवे॥ जिवेतबोराहोइ॥९॥ जिनि

पुं०प१० कंमसी सुखंग है॥ सो बहुत मकि दिढंग॥ आपुन कारे फेरहे॥ मो सिष लायें अंग॥ १० ॥ नयो सि
५३ गार अंगार सा॥ तिलक तिलक तदेह॥ फसिंगो कारे नाग जो॥ मो जकरे ती नेह॥ ११ ॥ पहिलें
पैम नवकि या॥ सवि समीप सुष सत्य॥ अब जो नें जियसाथुरा॥ परस्या बिरह के हत्य॥ १२
॥ नवल नेह अंकुर तन॥ मूलन किये लों मूल॥ सो तन करंजक रूप उप॥ नष सष फल मी
स्या॥ १३ ॥ जो संग्रह तन तन देहे॥ तओ तपै माहि लाज॥ नई चचे धरि सरग्य की॥ नवल बिर
ह पियवा ज॥ १४ ॥ जो ना जो तो न्हें घनी॥ सब सुष रहयो न जाइ॥ रह तो संघ छुजगाइ ये॥ मेंव
जमारी आइ॥ १५ ॥ पीतम चंद चकोर को॥ बिछुरयो पोन अधार॥ जा सों सी तल आगनि के॥
सोफि रिज येां अंगार॥ १६ ॥ पी तम सबरवि सो गकी॥ छुबिली ज्यो यह जान॥ सुष तो पी रहे के
गयो॥ स्याम व यो सब प्रान॥ १७ ॥ पैम बनि जकी तो कते॥ नेह न का जिय जानि॥ नुधेअव
गलंदी भई॥ प्रानपुंजी मदि हिंदानि॥ १८ ॥ बोन नलोपि प छलकि यो॥ मनलिलो [illegible] दोदें न
॥ पैमपें महमा धिके॥ लागयो सरव सलें न॥ १९ ॥ तम कूर प्रीति पगाइ करि॥ मजें नलयो
चित चोरि॥ यहु अब क्तो सु भमल यो॥ ज्ञानी परी कि छोरि॥ २० ॥ चोर चोर केमारियं राम
॥ ओ चित अंगे हिलोर॥ मेरो चित तु राइ ये॥ हृदी दइया चोर॥ २१ ॥ संकर अपने चोर को ५१

मबको प्रारत मारि॥ मो मन चोर न जो मिले॥ तौ सब स दों वारि॥ २२ ॥ कोटि मयां नप सहें सु
न पधि॥ सम सब बेअकत्य॥ चित चिहं टयो मित्त सो॥ जीव भयो पर हत्य॥ २३ ॥ सो गि॥ मेरे मन घर बात
॥ सो में लालन को दयो॥ टो भी जी दुजे बात॥ मन घो यो लाल न गये॥ २४ ॥ साषी॥ आये मा जबगाय
नाकि य॥ मो मन लि ये न फेरि॥ जे से सब सबों निके॥ दी जे रंक घर दे रि॥ २५ ॥ अब किबे र मन क
रघटे॥ बहुरि नूका हूदेव॥ कोंन सयांनप से दना॥ चित दे चो ता लेव॥ २६ ॥ जा को तो में मन दयो
॥ सो मो हि सेर न देइ॥ ना वह मारी बहुर गाति॥ खोम सबा यो लेइ॥ २७ ॥ जब तें तन तजि मन न
यो॥ फिर यो न रही फिराइ॥ अब अंसो देको न हल॥ तन मन नप हिलें जाइ॥ २८ ॥ मन तो जात
सुंदम सनयो॥ सुष गयो तत जिमां व॥ अब तो हमप हि मा हिका हु॥ जाडि तिहारो नांव॥ २९ ॥ पीतिम कं
हु न सम सो॥ नयन तपम तुव नों म॥ सुर ति सु जरिया हि मज॥ औ रन दी कं दु को म॥ ३० ॥ पीतिजु रै
मेरे पाव की॥ पेगी पंजर मां हि॥ रोम रोम पी व पी व करे॥ साइ इसर नां हि॥ ३१ ॥ इमिं सपू [illegible] ॥ ३२ ॥ ऐ दव
॥ पैम पी तिसु मेह पारि॥ ३०॥ साषी॥ एक लिों की कं रिणनंडे॥ ने हा मो जरण मांहि॥ नेह बिछु रयां हि अ
रां॥ मो हप्टडे न समांहि॥ ३३ ॥ जे रा च न की रुचि भई॥ तौ कोटे सुष सेज॥ बिरचा फल न हि स्मल के
जनर नवबिलसेज॥ ३४ ॥ कं त्त नबे रगा पैम को॥ सी चि ष्ठ अधर स सोइ॥ सुफल व फल्यो न बजां नियो॥ ज

विरहिपतिवप्ता०

गुं०रा० बमीत निरादर होइ ॥३॥ पुंन स्वार्थ अरु रूप कौं ॥ प्रीति करै सब कोइ ॥ अरप्रीति तब जांनिये
२२ इन तें न्यारी होइ ॥४॥ तन मन पायो पेम रस ॥ रूह फरुद अरु मास ॥ रज्जब चूत बकां कूं हिये ॥ पर
पेंम की फांस ॥५॥ जिहि दिया लिफाफा सी दई की ॥ ते पाव हिंमि त्तभाट ॥ फांस बिकहि ने बापुरे ॥ बूड
गहिरै घाट ॥६॥ सम्रम न मांगि पिरंम की ॥ परी जु कान्ह फेर ॥ बड़ तें सयांने पाचि गये ॥ नां छूटे
अरके र ॥७॥ लगन लगी छूटत कठिन ॥ जग मंडोदीमो जान ॥ वेद बकत ओरे कहा ॥ मन को म
रग आन ॥८॥ पेंम डुरायो नां डुरै ॥ रहो दुरान स्यो पा ॥ पलक कह दी महि प्रगट है ॥ घास धुसेर
आगि ॥९॥ प्रीति प्रगट वापी य की ॥ अन नैंनन मैं होति ॥ जैसे पटपानूस के ॥ डुरति न दीप
क ज्योति ॥१०॥ बाहरि भीतरि सारिषो ॥ केसो बड़र इये वीर ॥ ज्यूं बक रोती काच ॥ दीसत दोउ की
घां नीर ॥११॥ डुरति डुराई नांहि में ॥ प्रीति पियारन रपीर ॥ काच करोती मैं लसत ॥ जितो कन
कत नीर ॥१२॥ जसवंत कूपाका चूक्या ॥ कछ कातजल ज्यों दिषाइ ॥ जैसी जाके प्रीति मन ॥ तैसी
प्रगट होइ ॥१३॥ हिरदे आरसी बाहिये ॥ पेंम पीय को होइ ॥ फूटै बासन दसौं दिस ॥ फूल डस्यो
कहुं कोइ ॥१४॥ लाग लगी गमें जांनिये ॥ जाके हिरदय बहै त ॥ नेह नाह को कहुं डुरै ॥ नैंन दोऊ राम
कहि देत ॥१५॥ अंतर गति जैसी लगनि ॥ छानां रहै न देत ॥ जग मनो पर्म मैं नीकै रो इश्वर को ह ३८

नैन ॥१६॥ जैसें अपज्यो जीय कौ ॥ कर लेष मिं लिषि लेत ॥ त्यूं परमार्थ पेंम कौ ॥ नाथ नैंन कहि
देत ॥१७॥ तन मन अंत करण की ॥ बात कहन कौ हेत ॥ पर सासार कूं सनेह की ॥ प्रगट क त
रन कौ नैंन ॥१८॥ जग नाथ कृपा इये ॥ हरि लपजो चैन नेत ॥ पर सुष पग्रीनैं लषे ॥ दीये होइ जु
हेत ॥१९॥ बचन सुनत श्रिय सो हिये ॥ पाती बांचत पेंम ॥ जगनाथ छांनो नहीं ॥ अंतर गति
कौ नैंम ॥२०॥ जैसे ई तन की लहत ॥ कर नारी बिन बैन ॥ तैसे ई मन की लहत ॥ मन की गा
री नैंम ॥२१॥ जलत रूसी चल पंकते ॥ पानि प्रगटत आइ ॥ त्यूं जग नमीय को नेह री ॥ नैंन
नि मैं फल काइ ॥२२॥ नैंन नैंन की जानहीं ॥ नैंन नैंन कों देत ॥ नैंन नैंन कै मिलत ही ॥ नैंन
अैन कहि देत ॥२३॥ एक दीप तें गेह की ॥ प्रगट मेव भिन्न होइ ॥ नेह नाह कौ कहुं डुरै ॥ ज
हां हगा दीपक होइ ॥२४॥ गाथा ॥ अत्थ बिआर बस नेहो ॥ सत्थ विपसरति लोइ ॥ तरु
लो ॥ वेरूइं र गिरत्ता ॥ लष्यी जि ये लष्य मकाणी ॥२५॥ साषी ॥ येक हूं नू कौं पूछि ले ॥ नै त
न निपै परसंग ॥ देषन कौ एदी इदे ॥ चाहत एक अंग ॥२६॥ नैंन निहारे एक मु ॥ बिच अ
नर हे कोट ॥ सुरालि पकसं गर हत हे ॥ चित वै जित तित ओट ॥२७॥ एक दृष्टि होइ लोइ गा ॥ ए
क बात होइ कान ॥ एक प्रीति है मजनां ॥ है घट एक हियान ॥२८॥ ता सौं गूंज डराइये ॥ जाकौ का

गुं०गु० पहसनेह ॥ ता दिन अंतर की जिये ॥ ये कप्रान दे देह ॥ २९ ॥ चित्त ज्युं लागो संपत सों ॥ संपत समां नैं चित्त
३ए ॥ य कहि ये कस माइये ॥ ७ जो गादर किन ॥ ३० ॥ ज्युं वे जो मिंन संग रहै ॥ मन ज्युं हलिकं सें वेन ॥ ३१ ॥
हीनें सनु को दूष ॥ विधि विवा तन कोने म ॥ ३२ ॥ नैं न पदार थ नैं न रस ॥ नैं नें नैं न मिंत्त लहि ॥ अनंजे १
न्यो सौं प्रीतडी ॥ पहली दें नकरांति ॥ ३३ ॥ सोवी ॥ चित्त के चाकर चारि ॥ नैं न श्रवंन नासा रसन ॥
मिलि वे की सनु हारि ॥ ३४ ॥ जमा वत जगन कुंहि ॥ ३५ ॥ साषी ॥ जगन न सम किं मन श्रवंन श्रुनि
॥ रसना रस के वेन ॥ ह्व ज्या रूप सनेह कौ ॥ नीके सम फल नैंन ॥ ३६ ॥ नैं नां वें ना देह याति ॥ आतम त
परछा हीइ ॥ ज्युं मा हैं बाद रिलि सी ॥ जग नाथ न दिहीं दोइ ॥ ३७ ॥ नेह सगर कै न रालि कौ ॥ जग ज्यु
ग की पाहि चांनि ॥ हष्ट्रिप रे ते जो नि ये ॥ डरे न दिहि ते कोबांनि ॥ ३८ ॥ प्रेम रसिक के रस रूप को ॥
आ गर बजी सकोर ॥ नेह नगर के बगर में ॥ साहिक वे चेर ॥ ३९ ॥ जो विहरा न तो सु मिरि सुष म ति
ही त मंगल काज ॥ अंद मदन मंद ये मकौं ॥ सदो न है वारा ज ॥ ४० ॥ इति स पूर्ण ॥ २९ ॥ २००१ ॥ स
घ रस ये म० ॥ सोरठा ॥ कि मजु बदह दंग नारि ॥ मम श्रा यो आ ये नहीं ॥ निरष ति नैंन पषारि ॥ मलि
नहु ते उव ब दशी चित्त ॥ १ ॥ साषी ॥ गमन न पी त्य कौ मिले ॥ डिग जु लग मे मि भरंत ॥ रवाल न चित्त राम
वृंनडष तिमर ॥ धुधु धुडइ रिक रत ॥ २ ॥ नारि नी रैनें मा नि उत्यो ॥ पिय पर सत जग नाथ ॥ अधि २९

पेमपचीसिसनेहपारिस०

रज वै दिन चिति चढे ॥ या पे गा दन विन नाथ ॥ ३ ॥ पिय हि मिलन मन सदन करि ॥ उघरि
श्रु मनैं नों ॥ हं ॥ विरज अंगनि सषि स्वांति मड ॥ छेम लग्यो मैं नांह ॥ ४ ॥ पिय पर सन दे षत द
रस ॥ मैं न लिहरि कूं नीर ॥ जग नाथ श्रुकि सो केकी ॥ सुषमें सर ई सी ॥ ५ ॥ जब लग पिय प
र देश हैं ॥ नैं न बिनि घृ टेवो नी र ॥ जगनाथ आ ये चली ॥ फूके सर वर सीर ॥ ६ ॥ आनंद के आ
भ्र चले ॥ मिले जब हि पिय आइ ॥ मोंन जुं सर वर उमंगि के ॥ उछलेन लनि बहाइ ॥ ७ ॥ सोर
ठा ॥ चित्त न आ वत ओर ॥ उव मूरति उर में बसी ॥ नीर न पावत भोर ॥ उमगि चल्यो मधु मैंन ॥
कौ ॥ ८ ॥ साषी ॥ अंद मद षारतें न जेल ॥ कज षे कारन कौ न ॥ त्यौं नी मूरति चित बसी ॥ नाथ
अ मृत न लौंन ॥ ९ ॥ पति पेषत पतनी परी ॥ जग नाथ कूं सो चि ॥ पर स विनों हूं लपी छले ॥ ते
म व गारे अ मो चि ॥ १० ॥ जगनाथ सजन मिले ॥ सइ विकल कूं देह ॥ सत पा मनों रथ की जाती
छाकि दृ ये उनये ह ॥ ११ ॥ जगनाथ पीय परसतें ॥ सब सो बिटे सनेह ॥ नां न रया संसार में ॥ सा
न गी अपनी देह ॥ १२ ॥ ह या मिं दोष द रसन बिना ॥ जगनाथ न सक तिन्ह हारि ॥ सजन अंग न के
मिले ॥ सब सो न द्दई चिन्हा रि ॥ १३ ॥ सजन मिलि याहे सघी ॥ जिम दी झंदी चाहि ॥ हियडे देम ग
रजिया ॥ जे थि ब ले दी आ हि ॥ १४ ॥ अति आउ र ह्वी मिलन की ॥ नांहि न अकपल जो य ॥ हरि अ

पुंग्र० गेंहरपतन सरधै॥ जगनाथ जन दीयं॥२४॥ पिय पर सत पसेंन भये॥ रोम रोम आनंद॥ अति छाह
५० आनन सुषी॥ गये सकल दुष दुंद॥२५॥ इति सपूर्ण॥२६॥१०२८॥ पेंम मगन लाग०॥ साषी॥ पेर
त पेंम समुद्र कौं॥ अंत न पार न वार॥ पार गये कौ ना फिरे॥ डूबि गये कौ पार॥१॥ मूल तु पेम रहि तरा पिये
सब काहू सुधि होइ॥ पेंम सुधा रस जिन पियौ॥ तिनि सुध रहीन कोइ॥२॥ पेंम मगन पत बीम
री सुष सरीरवि सराइ॥ भोग जुगत आवरिन हो॥ सदा बिनु कछु न सुहाइ॥३॥ पेंम सदा ही अटपटी
॥ है के बोलै बेण॥ बात बणाइ रतो कहे॥ जो हे अस नेही सेंण॥४॥ दादू पेम मगन रस पाइया॥ अम
ति देत रुचि आव॥ बिरह बिसासनि जनां व सो॥ दे दरदया कर सि आव॥५॥ जहां पेंम तहां नेम नह १
तहां न बुधि ब्यौहार॥ पेंम मगन जब मन भयौ॥ कौन गिनै तिथि बार॥६॥ लोक बेद कै नेम र
रहे॥ रस पीजे दिन राति॥ को भी पेमी हरि नमत॥ इन दिन पफे जाति॥७॥ कबीर मेंमें नाति ग
जो घेरे॥ मा लेचि ता सनेह॥ वारि जु बंध्या पेम के॥ वारि र मां ति रिषेह॥८॥ कबीर मेंम ता अ
५ बिगत र रता अकल आसा जीत॥ राम अमल माता रहे॥ जीवत मुक्त अतीत॥९॥ दादू बि
रह पेम की लहरि में॥ यहु मन पंगुल होइ॥ राम नाम में गलि गया॥ बूझै बिरला कोइ॥१०॥ दादू राम
पेम अगाति माता रहे॥ ताला बेली अंग॥ सदा सपीडा मन रहे॥ राम रमें जन संग॥११॥ पेंम मगन ५०

पेंम मग्न लाग०

इति संपूर्ण॥
देषत न बूझै घोषा पीय दीदार॥ तन मन धन सब वारि सरी॥ जगनाथ तिहिं वार॥२२॥ ज्यौं
२९॥१०२९॥ पेंम प्रवेस कविनता०॥ साषी॥ पेम प्रगट तन तें भयौ॥ तन हि दे तक फिरि पीर॥ ज्यौं रोस
लौ म्यौ भीत हिल गयो॥ गलि यहु मई गंभीर॥१॥ जगनाथ पाये पेम कौं॥ जिनि कौ करे अरोस
॥ आपु न म्यारो नाधि कै॥ बिपति कहू पता को स॥२॥ पेंम नेम की नौं सही॥ लही कमाई कोर
॥ जगनाथ दुष बजाब दयौ॥ मेंदी नौं मन मथो र॥३॥ लो कला ज सब परहरी॥ रही मकुल क छु
को नि॥ परे परब स पेंम कै॥ सही सरब सहोनि॥४॥ पान पेंम पर ब सपरें॥ जगनाथ जुग जोर
॥ गो मैं गो मैं ना बने॥ नयो साह को चो र॥५॥ लाजै हां छा मत नहीं॥ मूलि अपन यो दी न॥ सरित कै
बरिया मां वरी॥ पकार त पेंम जु की न॥६॥ साहि सुमी सुष रूप दे॥ जगनाथ यहु जपें ना॥ या आव
तडु षहर कै॥ मन न कलेत न है मेंमु॥७॥ पेंमु पो रिड पेपारिया॥ महल सु मी चनि राम॥ जगनाथ
छत हां पे मिहे॥ चाहत सिरि बिलास॥८॥ जतन कि येप रा पेम का॥ ऊंचा अति रअतेग॥ सी सन
दीजे पाइ तर॥ करन पहंचे घंग॥९॥ कबीर निज घर पेम का॥ मारग अगम अगाध॥ सीस उत
रि पग तलि धरे॥ तब निकट पेम का स्वाद॥१०॥ पहिली सीस उतारि करि॥ लौ पे सो घर मां हि
॥ सेमन यह घर पेम का॥ षाला का घर नाहि॥११॥ सीस पटै पेम है॥ सेमन हा टि बिकाइ॥ राजा

गु० ग्रा०
४२
दा

परब्रह्म जिहिं रुचै॥ सिर दे सो लै जाइ॥१३॥ कबीर ही रा बनजिया॥ महिंगे मो लि अपार॥ हाड गा
ल्या माटी गल्यो॥ सिर साटै व्यौहार॥१४॥ कबीर जे हा र्या तो हरि सवां॥ जे जी त्या तो डाव॥ पा
रब्रह्म सूं खे लतां॥ जे सिर जाइत जाव॥१५॥ कबीर सिर साटै हरि सेइये॥ छाडि जीव की बांनि॥ जे
सिर दी यो हरि मिलै॥ तब लगि हांनि न जांनि॥१६॥ सी स काटि पासंग किया॥ जीव सरभरि
लीन॥ जो चाहै सो आइ लिइ॥ पेम आघ हम कीन॥१७॥ सी स सटै जो पाइये॥ पेम भक्ति का रत
हाटि॥ सू स न चिलम न कीजिए॥ तब लिहिं दी जे काटि॥१८॥ इक सिर मंजु पाइयां॥ जो नि
सुमं दे आइ॥ दसा सिर दे रावन लयो॥ बीस मु जा गहि पाइ॥१९॥ सम मन जा के झंपे म की॥ जो रे
गर थ्यें मा हि॥ तौ रा वन कंहा रंक हो॥ दस्या सिर रही नै काटि॥२०॥ राव न मिले त पुछि यो
॥ सं म न हि बुदे ह त्या॥ दस्या सिर सो पे पेम को॥ कहिंधं कहि स्वा रत्या॥२१॥ दशरहर को द
भ्रा राम को॥ रो वं मद ए भु बी स॥ सं म न पेम सने ह लगि॥ जो नि सम र पे सी स॥२२॥ सम दं ति रं त
चढं त गिर॥ कंप ड्डू ता म नल्पं त॥ पेम भरा जिहिं अंचयो॥ कि य कि य क्रि य न करं त॥२३॥
य क्रा है पे म न छ भू हो॥ सचु सम न मो हि पुछ॥ ले को सी स कटा इ दे॥ य हे कि औ रे कं छ
॥२४॥ गे या गा ह क पेम को॥ कहा क स्त प स रूप॥ से तस्पां म औ ब र न ब डा॥ सुचि आपनी अ

जेती मनसा दास

में

मेरे कुबे जाति

राम
४२

नूप॥२५॥ रूप न रेष न गु न का ह॥ स ब दे षे अ व गा हि॥ संम न जा सो म न मिलै॥ सो ज्ञाछ अ व रै अ
हि॥२६॥ कबीर पेम न चषिया॥ चषि न लिया साव॥ सूने घर का पांहु नां॥ ज्यें आया त्यें जाव
॥२७॥ कबीर जिहि घटि प्रीति नं पेम रस॥ फुनि रस नां न ही राम॥ ते नर इस संसार में॥ उपजि षपे
बे कांम॥२८॥ वे ता ब्रि स मां कि स मां॥ के अ म र म म र म॥ घाट न जो बे जग घड्या॥ पेषै पेम पर म॥२
९॥ कबीर जा घटि पेम है॥ सो सगु सांवां जानि॥ राज छरी जस हुड कर॥ को न हिं लो य ल को नि॥३
०॥ इति सपूर्ण॥ ग्रं० १०५८॥ पेम म हिमा म हा त्म०॥ साषी॥ जप तप संजम बिधि बिरत॥ स ब स यां न
जग मांहि॥ पेम पो रि प गा धर त हीं॥ नां जो नौं कत जांहि॥१॥ जप तप संजम ह र ष सुधि॥ म्यांन म हात
म गा बि॥ दादु मिनेम ष क पेम पर॥ वारि वारि व्यौ स रेब॥२॥ राज गर्व जो बन मद॥ अ र अ ने क सु
ब चित्त॥ ये स ब म न छा व रि क रो॥ तो पर पेम पवित्त॥३॥ राज का ज क बि बेद बिधि॥ जप तप
ज म ने मु॥ ए स ब अ क्ष र ब ढा इ क रि॥ ग हि लि म यै हो पेम॥४॥ बेद पुरान सबै पढै॥ य क्षु प हि दै ष
डा कोइ॥ ए के अ छि र पेम का॥ पढै सु पंडित होइ॥५॥ दा हू अ छि र पेम का॥ कोइ पढैगा एक
म ब्रा इ पु स्त क पो थि न॥ के ते पढै अ ने क॥६॥ दो हु पाती प्रेम की॥ बि र ला बांचै कोइ॥ बेद पुरा
रा पु स्त क पढै॥ प्रेम बिनां क्या होइ॥७॥ लि क रि फि क रि फो क ट सबै॥ नो म लु ग्यां न न ध्यांन॥ टे

पेंम प्रेम क बिनता०

मग मे जौंर
क्बीर बचन

सिरा का हिन बचर्न

बेद उक्त

गुं०अ० मरजपतप्रवादिसब॥पैंमरीतिकछुआंन॥८॥धर्मषटयोअपसेपर्की॥पंचागनितपदांम॥क
४२त सीकरषकोटितजगि॥नहिंकोपैंमसमांन॥९॥कोटिबरसक्याजीवणां॥अमररुपेक्यादि
षा॥पेमसंगतिरसरांमबिन॥कादाइजीवन सोइ॥१०॥सरफापेंमसुमांननहिं॥कोटिजे
गनुप होम॥जंमसबतागमनगहे॥केशोपावेसमसोम॥११॥जाघटपेंमप्रविनबस॥तुहां
मकरोरकुकाइ॥जसन्याकिनरकेहरी॥कोबसके म्रगजाइ॥१२॥नैकांकिरकटीजोपरे
करमीमतडुषपात॥देषकुपेंमपरतापबल॥म्रतिनैनसमात॥१३॥पुरसजोइनका
तुरे॥जोनहिंजमतीमाइ॥संमनमागरपेंमका॥देतुकोनुबताइ॥१४॥सबेरसाइनपिषा
मैं॥पेंमनपटेकोइ॥जिहितनरत्नीसंचरै॥सबतनसोनांहोइ॥१५॥चिनमाएकजोअपजै
पेमअमानिजिनदेह॥ग्यानुध्यानुसुषसजमदि॥जारिकरैसबछेह॥१६॥मनपतंगजब
गमिपरै॥पेंमुदीपमेंजाइ॥कोटिमिमरहोकजरै॥जोतिहिंमांतिसमाइ॥१७॥पेंमपर
बसिजेमए॥कातिनमरनबताऊ॥पंथ्यामारगपेंमका॥एकपंथहैकाउ॥१८॥पी
तिग्रेहपकुच्यानुदी॥पेंमपंथपगधारि॥त्याजजोमबटपारमें॥त्येयोबोचिहीमारि राम
॥१९॥जेवषलमहियलिझेफिरो॥पेंमरतनकैकाज॥तिकुबिनतजेनपाइए॥नव ५२

पैंमप्रहिमा महात्म०
सांहासपोनपसबगाई॥सबजियनउपजेपोपैंम॥त्याजमिटीनिरमयम
ललोमभरत्याज॥२०॥ सोहासपोनपसबगाई॥सबजिपनपजेपोपैंम॥त्याजमिटीनिरमयम
नौ॥मनसाधुचानेम॥२१॥सोसागरनरमछला॥सोईसचाबीर॥पेमजालमेजेपरे॥तेइजेल
घेतीर॥२२॥पेंमुप्रीतितेंऊपजै॥प्रीतमपेंममिलाइ॥जगनाथपेकबिनेंदे॥दुषपीछेसुषपा
इ॥२३॥आसंगतैआसानदै॥डसहइषतिरिजाइ॥पेंमुपरोहनबेसिकै॥सुषसिंधमांहिसमा
इ॥२४॥इतिसंपूर्ण॥२५॥१०८२॥नादअनहदरसिकरीकहुत०॥साषी॥पेंमभेदजोनैनदी॥ब
रछुमारनहिंलेहि॥तिनिमिबनम्रगआतिमले॥धुरपलटेसिरदेहिं॥घेमपेमदतब्याबिन
कदैरीकिकाकोन॥अनचरतेतिनचरम्हले॥जिनिनादपछनमसरहीन॥२॥मरण्यासिरग
बालिकमदा॥धरेसुकमनरसध्यान॥मरसमफलसमकमनहीं॥लांनमानबेधान॥३॥अरसघम
रगऊरंगकनी॥फुनफनिसुरसिरदांन॥जनसुबदतब्याबिनां॥क्यासमकेबझतान॥४॥
बेनधनकपुरमरलगो॥सारंगतजेपासरीर॥जगनाथचितदेसुने॥आहिनबिसरोबीर॥५॥म्र
गमांनतसुषनादसुनि॥बिसरतअपनीदेह॥जगनाथअनहदलगो॥तिनसुषमाहिनछेह॥
६॥आदिआपुनबासिआंनके॥नादहिनेहकरंत॥जगनाथअनहतपुनै॥परबसिप्रानपर
स॥७॥रसिकनादरसमगनकै॥मछआनंदअंग॥जगनाथजनपुनिसुषी॥अनहदनादअ

पुं०॥१०
४२

जंगा॥८॥ शिशु स्वादी रस सबद का॥ अग्नि रोवत रहि जाइ॥ जगनाथ एरं कार सुर॥ उपजत इमि ब
सराइ॥ ९॥ चौपई॥ जग मग जाति गम अधि जन गृह निकरि॥ अनहद नादधि सर जन दैह॥ धरे अ
धर कीलगा निवीचबज॥ जगनाथ जाति जे सो भेद॥ १०॥ साषी॥ कौऊ कौऊ नाद कै॥ रसिक
मगन अति होइ॥ जगनाथ अनहद रसिक॥ देह द्वि सर जन सोइ॥ ११॥ पैमफंद कौ छिनि
यरे॥ जो मैं जाउ रथा बे॥ उरसी मृग अंश्र बसु मत है॥ मरत जुकंदी बजाय॥ १२॥ बाइबाइ मम
वंच करि॥ जो धर धर निपरंत॥ जे रीझ्या ति बी फियॆ॥ अघ मध्या मालि चरंत॥ १३॥ मृग ध्रुर सं
नलि सर सहै॥ कालो करफिन मंति॥ धमन द्वीपा रािध मिथे॥ रािफ नगद हल ग मंति॥ १४॥ उचा
मुनी श्याम जोग नो॥ मैं न ष्ट याद्ल कीन॥ पगा काय रन्ष्य पत हि॥ नाद श्रुन तम्रम्म दीन॥
१५॥ संकर जो जाल गि मूरे॥ सो पुनि ताहि सरूप॥ नाद स्वाद मृग बध्ये कां बधि॥ सी गी
नाद अनूप॥ १६॥ ऽ जी दा श्रो स्यामतन॥ बंक चलनि विधि षगो नि॥ पेसु बचन सुनि सत्र मुषि॥ सी मस
मुणो श्रोणि॥ १७॥ वंस नाद श्रुनि अहि जगेयो॥ रद्दो न विष गुद माद॥ चत्र उर यरु र निक रहै॥ मं
कर ष्ट नि ध्रु निना द॥ १८॥ जनम मन मैं सो कमि हि॥ चपजे अतिअहि लाद॥ जगनाथ चिरथ
रसुन्यो॥ सबद अनाहद नाद॥ १९॥ नाद सुनत जो सिर धुंनत॥ कहि संकर कहि आइ॥ अरथ ना

१
राम
४३

जग रखो निकै॥ भरत दला इहलाइ॥ २०॥ दानादां नु जुदे तहै॥ कहि संकर कहि आइ॥ कंमम
रत है री फक ौ॥ मति बजी व ले जाइ॥ २१॥ हत बंद मैं हत न है॥ रंचक सुषत न होइ॥ जगना
थ न्पर बिघन जन॥ अनहद तष्ठन ई सोइ॥ २२॥ दतौ सबद सो हदम ही॥ बेहद अनहद त
सोइ॥ जगनाथ हद अमई॥ बेहद निरधे होइ॥ २३॥ रसिक अनाहद सबद कै॥ तिन कौ कछु
न पुहाइ॥ संमलि सुरसा रंगा जसे॥ घो मणो न बिसराइ॥ २४॥ जगनाथ सब बीसरे॥ देह गेह अ
रु नेह॥ धंनि सो मन ल्या गयो रहै॥ अनहद का गुन गेह॥ २५॥ अनहद हद है भांति कौ॥ सो जे
जु देप विचार॥ जगनाथ अम जी रिदै॥ तत पुर भवनो निहार॥ २६॥ अमली अनहद अमरप
द॥ तत बरत निस सारि॥ जगनाथ जो जि हिरु चे॥ सोइ गद्दो विचार॥ २७॥ असली अनहद
रूप जे॥ जगनाथ घटि जासु॥ अजरा वर कै हैन को॥ कबहें दोइ बिसवास॥ २८॥ सुरति॥ इनि म
मदा सुर मै रहै॥ लहै सु सुर मै वास॥ जगनाथ सुर मैं न ही॥ सुर मै राम हि पास॥ २९॥ इनि म
पूरणो॥ सूर॥ ३०॥ दीन ता गरी बीण॥ साषी॥ घटत घटत सु भनि रमलो॥ वढत क ऐ की
होइ॥ संकर पाव स सरद रूति॥ गंग निर्मल जो इ॥ ३१॥ हाथि न घोरे जे चढे॥ चढी वृतिनम
धिपरि॥ संकर सौ जगरी बसे॥ रहीपगा न पर पूरि॥ ३२॥ निगुसां हरे बहि जाइ धनो॥ जाके पाय
१

गु०आ०
४४

मध्य कृत्या
त्रिवत

नां हिन कोइ॥ दीनगरीबी बंदगी॥ करंता होइ सु होइ॥३॥ दीनगरीबी दीन कौं॥ दुंदर कौं
अभिमान॥ दुंदर दिल दो जगम ही॥ दीनगरीबी राम॥४॥ जिनके गुरख गुमान है॥ तिन
ते गाविंद दूरि॥ दीनगरीब अनाथ के॥ जनजगनाथ हजूरि॥५॥ अभिमान होत अनमें मिले॥ दीन
ते गोविंद दूरि॥ दीनगरीब अनाथ के॥ जग जगनाथ निवाहि॥६॥ जेतक आके दीनता॥ तेतक
रीझुषजाहि॥ पतिसु गरीबी तें लहे॥ ओ जगनाथ निबाहि॥६॥ जेतक आके दीनता॥ तेतके
ताको हानि॥ जगनाथ मगन जरिजे॥ पारिष पावपति तानि॥७॥ जिनी गरीबी जन करे॥ ति
नीअधिक ता होइ॥ जगत पूर्य जगनाथ जग॥ तो तुनि ते ली मोइ॥८॥ लघुता जी ये अति
बटै बलि ता जन जगनाथ॥ जैसे सोभा बहुत है॥ मिलन सूर के साथ॥९॥ कबीर नवै सु
आपको॥ परकूं नवै न कोइ॥ घालित राजू तो लिये॥ नवै सु भारी होइ॥१०॥ सिर रवदे बरपम
परे॥ भलीम नावक मंहार॥ संकर सोजगि बहु है॥ जो अगावे भर भार॥११॥ अरीअर रक्त जोन
नर॥ नवै नहीं कुल नास॥ गुनवंती गरहे ते नवे॥ कुलवंती कबिदास॥१२॥ संपति के अस देस
नर॥ नवंत इक दिनियक बेनि॥ बिसम समतर कै चनी नर॥ नमत बिसवकी हानि॥१३॥ मन
मद न संक चनि मली॥ पूनू कहियेप्र नपोह॥ फल होत ही फलहु मां॥ ससि जुपर तनुवम
हा॥१४॥ लघुता दीरघता लिये॥ दीरघता लघु जांनि॥ ऐसा काई और कहां॥ इकादस इकाइ | राम
४४

कमांमि॥१५॥ नैंनैं अनि अंचे चढे॥ हरिजन जल की रीति॥ देउ न तली नैं दरसि॥ देषो प्रीति
प्रतीति॥१६॥ नर की अरु नल नीर की॥ गति एकै करि जोइ॥ जेते नीचे कौं नवें॥ ते तो ऊंचे
होइ॥१७॥ जलसी तलता पावक जरत॥ कहो कौ न एह भाव॥ यह सब ते निहरो चलत॥ | मर
यह सब कूप रक्षातु॥१८॥ जे गमन कबीर दिल मेंौं॥ पावक पवन हु काइ॥ सोकु समर्थ
सगुन॥ प्रवेस षु हाथु भाइ॥१९॥ सेक सजन बारि मिनि॥ छोटे बडा होमन॥ जो बढि के बड
ते बढै॥ आपुन मिजु रैनित॥२०॥ नवंतु चलैपो जलु नीच मघ॥ अन रुचि मइ न ताहि॥
तासु नते संकर कहे॥ पानी पांव न आहि॥२१॥ दादू दीनगरीबी गहि रह्या॥ गरवा गुन
गंभीर॥ सूछम सीतल सुरति मति॥ सहज दया गुर धीर॥२२॥ आपा गरब गुमान तजि॥ मद
मछर अहंकार॥ गहै गरीबी बंदगी॥ सेवा सिरजनहार॥२३॥ ... ना॥ रामगरीबनिवा
जहै॥ आप सुपुरसहार॥ मोरी पति गति नाले है॥ मोरी अति रअपार॥२४॥ साषी॥ दीनबछल | व
सबका हत है॥ बल बछल हरि नांहि॥ ... तिजगनाथ पंहि॥ साधि साधमत माहि॥२
५॥ कबीर दीनगरीबी बंदगी॥ दरिसु मरन बैराग॥ एता जिनकों सांप ज्ञो॥ तिनके माथे भा
ग॥२६॥ कूं गाग छी गुमान तजि॥ तजि आपा अभिमान॥ दादू दीनगरीब व्है॥ पाया पद निरबा

गुं०१० ४५ दीनतागरीबी० १ रि

ना ॥ २७ ॥ इति सिंमरण ॥ अथ ॥ २२ ॥ करुनां० ॥ कबीर सूखिविमांहि ॥ मो करिमें लाचिन्न ॥ साह
बगरता लोडिया ॥ नफर विगारे लिन्न ॥ १ ॥ दादू बहुत बुरा किया ॥ तुम्हैं न करुनां रोस
साहिब समाई का धणी ॥ बंदे को सब दोसु ॥ २ ॥ कबीर करता के रे बहुत गुन ॥ अ
वगुन कोई नांहि ॥ जे दिल षोजो आपनी ॥ तो सब अवगुन मुझ मांहि ॥ ३ ॥ दादू बुरा बु
रा सब हम कीया ॥ सो मुझि कह्या न जाइ ॥ निर्मल मेरा सांईयां ॥ ताको दोस न लाइ ॥ ४ ॥ पतितउधारन बंदि
मदाप तिल में फानमे ॥ मुझ साज्ञ न होइ ॥ जगनाथ दरिद्रि मेटै नहीं ॥ अज्ञान मेल जो होइ ॥ हि सै सहंस अ
॥ ५ ॥ सोरठा ॥ कहुं न देष्यो कोइ ॥ मो सारी सो में मदी ॥ पतित निकी न हि गेर ॥ जग
गनाथ सो ॥ ६ ॥ पापी मुझ सो न और ॥ पाप किया पर लै जिसा ॥ कियेपापपरचंड ॥ सरनसरि सो
मोहे जगनाथ बिमुष ॥ ७ ॥ साषी ॥ जगनाथ जगि न मानि के ॥ कियेपाप अब कहि ॥ सलीही जे सा हि
जम पे न दी ॥ स आई न को ईन ॥ ८ ॥ जे मन राम राम अब कहि ॥ जीवत जाइ अज्ञान में ॥ राम राम
गुन हय पांचो डी सजा ॥ साहिब मालिम तोहि ॥ ९ ॥ मो तें विगरी बहुत है ॥ प्र
करि देह ॥ जे मन चोरी बहुत है ॥ सासति छोडी एह ॥ १० ॥ बंदी षंड कीलाजा ॥ ११ ॥ जे मन जोद
८ गटक दत पुमि आज ॥ पतितउधारन के मद ॥ राम ४५

मबदे विकार मैं ॥ करहा तुम्हारे हांणि ॥ हरस घमोचन सांईयां ॥ आपणों बिड़द पिछांणि
१२ ॥ किरत संसारी आपनां ॥ तब हरि हूं सुरकाइ ॥ बिड़द सुनौं तो तुम पतित ॥ आनंद दस
मि नुमाइ ॥ १३ ॥ सुकृत को गुंबै नां कियो ॥ बादि धरी है देह ॥ फेरे औगुन सौ रकज्ञ ॥ सांते रे
गुन छेह ॥ १४ ॥ जे मन मुझ औगुण अति घणा ॥ तुम्हा गुणां न पार ॥ मुझा कीया न चित धरी
सदिकै मिरजनहार ॥ १५ ॥ सबदी ॥ साई सेवा चोर में ॥ अपराधी बंदा ॥ दादू दूजा को नहीं
मुकुस रि षा गदा ॥ १६ ॥ साषी ॥ तिल तिल का अपराधी तेरा ॥ रती रती का चोरा ॥ पल पल
का मैं गुनही तेरा ॥ बकसहु अवगुण मोर ॥ १७ ॥ चौमुषी ॥ जिती चक जगनाथ मैं ॥
तली कही न हीं जाइ ॥ पिती षेतस र जो मन मैं ॥ इनी नगन तिपु जाइ ॥ १८ ॥ साषी ॥ धर
अवर पातालपुर ॥ ले षाम सेर मैकालु ॥ मम अवगुन जगनाथ का हि ॥ मांहि न कछु
पुरठान ॥ १९ ॥ सोरठा ॥ धन जोबन बहु जोर ॥ करनी कछु वैसी करी ॥ सयो मोर सब मोर ॥ न
चैरा वै चरन चहि ॥ २० ॥ साषी ॥ धनजोबन सुभि बल बिना ॥ बिन बिद्या बिन जाप ॥ सोसे पत
तपतं गकी ॥ उम पति राषत बाप ॥ २१ ॥ चौमुषी ॥ धन धाव रिहा वरि सहा ॥ तेन का वरिजं की
मा ॥ मन आवरि मो ते भइ ॥ जन्न राइ रिन हिलीन ॥ २२ ॥ साषी ॥ आपणा मेरी आदि को ॥ मेरी नि

वही दोर॥ जगनाथ मन बचन करि है॥ आहि उभारो चोर॥२३॥ आदि अंति लौं आइ करि॥ सुक्र
त के छू न कीन॥ माया मोह मद मछरा॥ स्वादि सबै चित दीन॥ काम क्रोध संसैय सदा॥ कबहू
नां तु न लीन॥ पाषंड पर यंच पाप मैं॥ दादू ऐसे षीन॥२४॥ पूरा दगा पर जीव किये॥ मेरे मन की पू
म॥ अंतर जामी जगत गुर॥ सब तुम कौ मालूम॥२५॥ हूं दे षोरी मेह की॥ मैं कीने बहु पाप
म॥ अंतर जामी जगत गुर॥ सब तुम कौ मालूम॥२५॥ हूं दे षोरी मेह की॥ मैं कीने बहु पाप
॥ मरन बन्यो बाजीद कौ॥ मिहरि जु कीजै आप॥२६॥ पाप किये पर मिति बिनां॥ पार न पाव
न जीव॥ जन बाजीद गरीब की॥ बेराह मत पीव॥२७॥ साषी॥ मैं अति अपराधी कुमती॥ मैं अ
न गुन बकसन हार॥ गरीबदास की इहै बीनती॥ समर्थ सुषदाइ करतार॥२८॥ साषी॥ जितै दो
ष संसार मैं॥ तेते है मुझ माहि॥ गरीबदास के ते कहै॥ अगपन त परमिति नाहि॥२९॥ चौप
ई॥ बिष्नु बिसंभर बिस्व बीचारा॥ जोगिन जोगियं जे आदीसा॥ माया अमिति अरे बा लौ
कू॥ इन्हें ता घाव सुधारी होइ॥३०॥ साषी॥ है सो सुमरन होत नही॥ नही सु कीजै काम॥ दादू य
ह तन यों गया॥ क्यों करि पाइए राम॥३१॥ दादू पछिताचार हा॥ सके न गहर लाइ॥ अरथ
न आया राम कौ॥ यह तन यो ही जाइ॥३२॥ साई सेवन करि सकौ॥ जुब थौ बार बेर॥ मनि
पछितावो रहि गयो॥ पकुर आएज के स॥३३॥ प्रीति न लागी पीय सो॥ अैसो कहा कहूं आगा॥

कै गाय लटि पंमुर रहण॥ मन मो का री का गा॥३४॥ सही॥ कहत सो सुनत तां दिन गए॥ है कछु न आ
वा॥ दादू हरि की भगति बिन॥ प्रानी पछितावा॥३५॥ साषी॥ सो कहत मनै नां भया॥ जाय रि
री कै राम॥ दादू इस संसार मैं॥ इन आये के कांम॥३६॥ मनिष जनम मिनि जपाइ मैं॥ संगति स
तगुर साध॥ जगनाथ तो क्यों किये॥ अपराधी अपराध॥३७॥ जन कहाइ जग दीच मैं॥ अकर
म किये अधाइ॥ जगनाथ नर देह धरि॥ साध लजाए आइ॥३८॥ तुम भाव रिहरि आजि लौं मै
मनि ही मन कीन॥ श्री भरोस जगनाथ अब॥ मिली पती ज्यूं दीन॥३९॥ सबदी॥ दादू जे सा
हिब लेषा लीया॥ तो सीस कटि सूली दीया॥ मिहर दया करि फिल किया॥ तो जीया जीये
करि जीया॥४०॥ इति संपूर्ण॥ अंग॥२२॥ बीनती॥ साषी॥ कोई नही करतार बिन॥ प्रा
न अधार हार॥ जियरा दुषिया राम बिन॥ दादू इहि संसार॥१॥ सोरठा॥ जुग मांगे जगनाथ
॥ साध संगति निजु भगति सो॥ समरथ करो सनाथ॥ अनाथ आतमा अरिष एां॥२॥ साषी॥
हाथ सु हाथ नितै गये॥ पां इनि फारे पाइ॥ के सब के सो राइ जी॥ अब कि न होऊ सहाइ
॥३॥ आवही॥ कबीर बरियां बीती बल गया॥ अरु बुरा कमाया॥ हरि जिनि छाडो हाथ तै
तें॥ दिन नेडा आया॥४॥ साषी॥ जा दिन बुधि बल सब घटे॥ दोइ बिरांनी देह॥ ता दिन

पु॰ग्रं॰ ४७

जन बाजीद कौं॥ हंस्त्र पबौं करि लेद॥५॥ जन बाजीद अमृत छाड़ि दे॥ ता के नांहिं न कोइ॥ सरन आ
पनी राखि ले॥ आवागवन न होइ॥६॥ के सो करमां गांठ कठे॥ मेटी जे अप्र मछात॥ नी सरतां ना
री न सो॥ मातिसामी म्याता॥७॥ जन मन बांकिन मेटहू॥ सबे तुम्हारे हाथ॥ तो नैं बिनती करत है
ड षपावृत दो साथ॥८॥ साषी॥ कबीर बिचारा क्या करे बीनती॥ जो सागर के तांई॥ बंदे अपरि
जोर होत है॥ राम को बरजि गुसांई॥९॥ साषी॥ सांई साचा नांव है॥ ज्ञान काल मिटि जाइ॥ दा
दू निरमें होइ रहे॥ कबहूं काल न षाइ॥१०॥ काम क्रोध काया बसै॥ पांच रें निदिन काल॥ तु
म पावन हो पतित हौं॥ देषा कर ज्यदर हाल॥११॥ सरन सुसाहिब तेरै रहै॥ अपनी चूक्ति न
कोइ॥ जन ज्यप कछि म्हाइ॥ लूं तूं पकरहि दोइ॥१२॥ बाजीद दुषी दीवांन जी॥ पंचा नि
की नों कै है॥ दरद हिदी रू ही जिय॥ हूं रांगी तुम बेद॥१३॥ राम नाम बिन दुषरा॥ राम न
म ही पोम॥ रघुबर कबहूं कारज्या॥ तुरमी अस जल मीन॥१४॥ सबल संसार मन मैं रहै॥ राम
बिसरि क्यों जाइ॥ यह दुष्ष दाहूकुं सहै॥ साइ के रामसहाइ॥१५॥ सबदी॥ आत्मचेतनि की जि
ए॥ प्रेमरस पीवो॥ दादू भूलै देह गुन॥ ऐसें जन जीवे॥१६॥ साषी॥ कबीर जम न मेरा तुम्ह सौं॥
तू जनराहो इ॥ नाता लोहा संमिलै॥ सांधि न लषई कोइ॥१७॥ जे आपे दे षै आप को॥ सो वे नां

राम ४७

दे मुक्त॥ मीरां मेरा मिहर करि॥ दादू देषै तुम॥१८॥ दादू दिन दिन नूतन नलमसलितिदे॥ दिन दिन
नउतम नांउ॥ दिन दिन नउतम नेह है॥ मैं बलिहारी जांउ॥१९॥ सोई सत संतोष है॥ आव भगति
बेसास॥ सिदक सबूरी साच है॥ मांगे दादूदास॥२०॥ कबीर अओ सरबी सा अलपतन॥ पीवही
परदेस॥ कलेक तुम्हारो केत्रावा॥ जो भी नर मअदेस॥२१॥ दादू बहु बंधन सों बंधिया॥ एकं बि
चारा जीव॥ अपनै बलि छूटै नहीं॥ छोडण हारा पीव॥२२॥ दादू बंदीवान है॥ तू बंदि छोड़ दि
वान॥ अब जिनि राषो बंदि मैं॥ मीरां मिहरवांन॥२३॥ काया के बसि जीव है॥ कसि कसि बंध्या
मांहि॥ दादू आत्म राम बिन॥ क्यों ही छूटै नांहि॥२४॥ जिन की रष्या तुम करो॥ तिन कै उभड
र व्याधि॥ तुम बिन कैसें ऊबरे॥ अैसें बैरी मांहि॥२५॥ जो तुम बर मैं तो रहै॥ मन पंचनि का साथ
॥ नोमरु ये मन बस मैं है मै॥ बीरत है मो साथ॥२६॥ कैसा करूं मों की जिये॥ मन रुंन सब मिटि जै
हिं॥ तुम बिन को जग मांण को॥ राषन समरथ नांहिं॥२७॥ जो तुम राषो रांम जी॥ सो गने कहि
कोमु॥ मुक्ति मरो मान रली॥ लगे मता तो पोन॥२८॥ चित बोकु पाकटा छि जो॥ एक पलक ही पीव
॥ धनी बिराजे अबधू जा॥ तब गंजे को सीर॥२९॥ कहि यह मेपाव मपतित के॥ बेद सु बोलन साध
॥ चरन सरन बाजीद कौं॥ जुगि जुगि पहु राषि॥३०॥ यह दबि मनी बाजीद की॥ चित दे सुनियो॥

गु.ग.
४८

ज्याहि ॥ तारन कौं हरिलोक मैं ॥ तुम सौ कोऊ न आहि ॥ २२ ॥ बक्रत निकै बजाय सिरा ॥ मेरे
तुम आधार ॥ जगनाथ श्रीनाथ हिकै ॥ देषे करि निरधार ॥ २३ ॥ इहा दिक बहु साहि तै ॥ जगन
थ सब जोइ ॥ काल कलि तैं राषइ ॥ तुम बिनु समान कोइ ॥ २४ ॥ काल जाल तैं सो बचै ॥ जो तुम
करो सहाइ ॥ जगनाथ कौं राषि प ॥ आप नैं अंगि लगाइ ॥ २५ ॥ जिनि की करी सहाइ तुम ॥ ते
सुबरे जगनाथ ॥ करसौं कर गहि राषिया ॥ परम पद के हाथ ॥ २६ ॥ जे सब तुम ते सेकरी ॥ माधव
मया कु मोह ॥ जे सपारस पै षे नहीं ॥ कहिन कालिमा लोह ॥ २७ ॥ इति संपूर्णम् ॥ स्वप २२२४ ॥ के वीनव
रु नौ बीनती ॥ साषी ॥ तुम कौं आवै और कछु ॥ हम कछु कीया और ॥ भिदर करै तो बूट
है न ही मनां ही गोर ॥ २ ॥ मुक आवै सो में कीया ॥ तुझ आवै सो नाहि ॥ दास गुन इमारहे ॥ मैं दे
षा मन माहि ॥ ३ ॥ गुन ह मारे मुक मारि हो ॥ तुम सौ बकस नहार ॥ जगनाथ पावै नहीं ॥ सो ध्ये
सकु मे सार ॥ ४ ॥ जितौ होत जिय कौं मरन ॥ तितौ छोरी नाथ ॥ मार जरा षष्क जे भुसी ॥ काहे
जाइ जगनाथ ॥ ५ ॥ चौपई ॥ जनम मरन्यौ तुम सम्रथि जग्यासपति ॥ षुर बोगु नहीं विसराबी
स ॥ आपन सेजगनाथ मिलन इस्त्रव ॥ औरौ का दुगुन दह जगदीस ॥ ६ ॥ साषी ॥ मैं सांई निलिय । राम
हरि इ सा ॥ अधम उधारन हार ॥ कुतो बिंड दकि मछाहिये ॥ जगनाथ की बार ॥ ८ ॥ चौ ४८

पई ॥ पावन पतित उधारन अधम हि ॥ ऐसो नाम तुम्हारो गाइ ॥ मोकौं सरनि राषि हो स्वांमी ॥ जगना
थ जु तत बपति साइ ॥ ७ ॥ साषी ॥ अधम अनेक आगे कुते ॥ और अबहि कलि मांहि ॥ आगे जैते
होहिंगे ॥ जगनाथ सम्रि तांहि ॥ ८ ॥ चौपई ॥ हौं पतित निके पावन करता ॥ अधम उधारन देउ
मनोंम ॥ बिरद आपनो सही करौ जो ॥ तौ सम्रि जगनाथ न पावौ राम ॥ ९ ॥ बिरषी परपर मिछ
पतित जे ॥ अधम अवनि अधिकार कहंत ॥ नीके करि निरषी जो स्वांमी ॥ सब हिन मैं जगना
थ महंत ॥ १० ॥ पावन पतित उधारन अधम हि ॥ ते मैं बिरद पन जो तुम धारि ॥ तो गुरु जो सरन आस
गु सांई ॥ बेगि जन जगनाथ हि तारि ॥ ११ ॥ साषी ॥ कौन आतुर हि है बिरद ॥ अब देषबी मुरारि ॥ बी
थ मो सो आइकै ॥ मी ह्वै भी धहि तारि ॥ १२ ॥ थोरे ही गुन रीझते ॥ हि मुराइ सो है बानि ॥ तुम जुं को
क मनो न ये ॥ आजु कालि कै दानि ॥ १३ ॥ की जै चित तासोई ॥ तिरौ निज पतित कै साथ ॥ मेरे गुन अ
रु गुन गुन सब ॥ जिनो नगर जगनाथ ॥ १४ ॥ चौपई ॥ सुर की जानि बिदे पनि तारौ ॥ एक अपल छन आतिमे
मांहि ॥ सलपन जो तुम देषो अधर ॥ जगनाथ महि तन कौ नांहि ॥ १५ ॥ साषी ॥ जो तुम चाहो साध कौ ॥ तौ
हम नाही बलि जाउ ॥ जे तुम छाडौ पतित कै ॥ तौ कहु पावु कहां ठाउ ॥ १६ ॥ जे मूल तुम पावन हम पतित है
ताते मिले संजोग ॥ जे तुम पतित उधार ना ॥ तौ हम अबै संजोग ॥ १७ ॥ छिपन अघ की एक रौ ॥ कहि ये

ग्रं॰ ३॥० ४९

करहु बनाइ॥ राषहु अपने सरणि विरदे का॥ तो सम और करहु मतफाइ॥८०॥ इति श्री संपूर्ण॥ २८॥ अथ दया बी
नती को अंग॥ साषी॥ काडी रहरिया प्रभु जल्या॥ दाधे जलत थल न फोरल॥ ... मैं हि गोपाल न सौं॥ बिन मेरे रतन
अमोलिक॥२॥ दादू दौं लागी जग प्रजले॥ घटि घटि सब संसार॥ हम तें कछू न होत है॥ तुम बरसि बुझावौ
न दार॥३॥ ओम भू आई बादली॥ बरसन लागे अंगार॥ ऊठि कबीरा धाह दे॥ दाझत है संसार॥४॥ ये
षपा॥ अरस जिमी असमान मैं॥ तहां तपै अपरतार॥ सब जग जलता देषि करि॥ दादू पुकारे साध॥
५॥ साषी॥ दादू गार कर सात लिजात है॥ तुम बिन सब संसार॥ कर गहि करता काढि ले॥ दे
अवलंबन आधार॥६॥ सकल लोक मारी आतमा॥ राषा करियहु नाथ॥ बिषे नदी मैं बहत है॥
गहि का हहु अनाथ॥७॥ तुम पहि रिरा घो नौ रहे॥ ... जल नाहि॥ इहि कलि तार बहुत म
छिना॥ जगनाथ को नाहि॥८॥ ... नहीं॥ बहे ... पार न एजगना
थ जन॥ तिनु को सुबजु पुकार॥९॥ सब कहत साध पुहि लाद जस॥ तिन के निज दिल एह॥ सब
आतम कु षमेटि है हरि॥ ... सुष देहु॥१०॥ साषी॥ आतम जीव अनाथ सब॥ करतार उबा
रि॥ राम निहोरा कीजिए॥ जिनि काहू मारे॥११॥ साषी॥ साहिब जी सम सपथ धणी॥ यहे करत अरदास
॥ आस सब निका कीजिए॥ कहि जगजीवन दास॥१२॥ राम गुसांई बीनती॥ काहू को बहु लाइ॥ स

दा॰ राम ४९

बकिन रहै साध करि॥ अपने अंगि लगाइ॥१२॥ जे मलकू पाव्या थदो॥ प्रगटि मेरे पीव॥ ते रा क
छु नाहीं घटे॥ सुषी होहि सब जीव॥१३॥ दादू सकल न बन सब आतमा॥ निरबिष करि हरि लेइ॥
पर दाहे सो दूरि करि॥ अमल रहन देइ॥१४॥ तन मन निर्मल आतमा॥ सब का हरि की होइ॥
दादू बिषे बिकार की॥ बात न बूझे कोइ॥१५॥ कलू काल पारब्रह्म का लहै॥ जीव जगत ... दुषिया
न को जगनाथ हरि॥ राषि ग्रीब निवाज॥१६॥ ... नाथ है आतमा॥ तुम बिन ... नाथ॥ हरि
कस्याहि तुम आदरो॥ तो होवे सुषी सनाथ॥१७॥ दादू सतगुर सबद सुणाइ करि॥ भावे जीव जगा
इ॥ भावे अंतरि आप कहि॥ अपने अंगि लगाइ॥१८॥ साषी॥ दया करे तब अंगि लगावै॥ ...
क्षमत देव॥ दादू दरसन आप अकेला॥ दूजा हरि सब लेवे॥१९॥ दादू साध सिषावे आतमा॥ सेवा द
ढ करि लेहु॥ पारब्रह्म सौं बीनती॥ दया करि दरसन देहु॥२०॥ साध सुसाही ... ॥ जिय ज
गदीसुर बीच॥ जगनाथ हित बीनती॥ साटि मेलि ... बीच॥२१॥ जगनाथ जगदीश ... ॥ ...
चलावे संत॥ जीवनि को सत सुष करे॥ बिनती करि भगवंत॥२२॥ जन सिमटावे जगत सौं॥ हरि
जग बांधे हेत॥ ... बार जीव को॥ जगनाथ ... ॥२३॥ जन जगदीसर दया करे॥ ...
प्रतिपाल॥ मुक्ति करन जगनाथ जु ... जीव ... ॥२४॥ साषी॥ साहिब साध दयाल है॥ हम ह

ग्रं०ग० अपराधी॥ दाह जीवन आगिया॥ अविद्या साधी॥२५॥ साषी॥ जेमल जंण पीतं साधें कही॥ हरिका
५० रही क्या साज॥ दहूं कि येहि तित आपतें॥ हमही माहि बराज॥२६॥ जेमल जंण पीतं साधें कही॥ साहि
३ बही क्यों देह ▪ दहूं किंधों हि आपतें॥ दोस हमारा एह॥२७॥ संतहण सब जग जनि पर॥ कहि हि दिवें
निज नाउं॥ जगनाथ जमही ससें॥ विनती मिलिन लिजांउं॥२८॥ हरि हित बिसरत नां हि नें॥ माधं
दया सहाइ॥ पूत अपत तन अंनां तु जें॥ जगनाथ पित माइ॥२९॥ साषी॥ सब जीव तो रे राम सो॥ पेरो मन ते
रे॥ दाह का चेतो गजे॥ छूटें तं जीरे॥३०॥ साषी॥ जन मन जन मन के बहर मुष॥ जीर जगत के नाथ॥ स
मुष सन मुष की जिए॥ जगनाथ गहि हाथ॥३१॥ इति स्रु परणा॥३१॥ २६॥ पीत्म पत्री०॥ साषी॥ स
हीन जुनां लिषि हि शु सुर निकरि॥ रस के भोगी बेंन॥ पीत्म की पतियां सुनत॥ रोम रोम सुष चेंन॥१॥ पत
यां आइ मीत की॥ बांचत गई हिराइ॥ अति गत का सन हिं सम कि हे॥ पढि हें पे रि फिराइ॥२॥ पी
त्म पतियां पेम की॥ अब क कहु कही न जात॥ गूंगे कौ सुपि नो भयो॥ समकि समकि पछितात॥३॥
॥ हम जो न्यों कहु ने हहे॥ सुष देषे की पीति॥ अंगुल हि पतियां न ही॥ यह जीतौ बडी अनीति॥४॥
कागद हूं ही नो न ही॥ ताते जांनी चित्र॥ देस छुटे उन ही तें षें॥ परदेसी भए मित्र॥५॥ कागद गम
थोडे दुष घणे॥ मो पैं लिषीं न जाइ॥ सागर कौ पांणी प्रिय॥ गागरि मैं न समाइ॥६॥ कागद में जील ५०

दसवीस०

षत हूं॥ ऐसे बहोत हैं एह॥ आपनैं जियतें जानिये॥ पर के जिय कौ नेह॥७॥ पीत्म पतियां तोल
बो॥ जो कछु अंतर होइ॥ हम तुम जियरा एक हैं॥ देषन कौं तन दोइ॥८॥ पतियां लिषि पितास कौ
॥ जो पीत्म परदेस॥ जगन तु हिरदय ही बसे॥ तिन सौं किसा संदेस॥९॥ पीति हि पत्र न पहुंच
है॥ का सुष की बहु बात॥ पीत्म मिलन बियोग की॥ मन जानें कै गात॥१०॥ सज्जन जे बस नेह हैं
पतियां लिषों न जाइ॥ चतुर बिचछन पीतमो॥ कहि एक हाब नाइ॥११॥ सज्जन संदेस सदसिधन॥
लेष जु हूं षा तुल्य॥ दरसन परसन कोटि परि॥ पीत्म सबद अमुल्य॥१२॥ साइर तुद रूपो सदि
या॥ बहु दे है दे बात॥ बी तु टि यां सज्जण मिले॥ तिन सो गही काव॥१३॥ यार कौ या र जु जीव है॥ या र कौ या
रे अपार॥ औरसबै सुष अंत है॥ इहै सुष वार न पार॥१४॥ र तन इन पाती लिषी॥ जे बस हो इहमार॥ अ
लप रहै कागद वहै॥ दरसन करौं तिहार॥१५॥ मनम कौं पतियां प्रथम॥ लिषत लिषें बड बेंन॥ जब तुम
स्यों बादल हिरदय॥ बिसरि गई सब चेंन॥१६॥ पतियां बेच व रु दन कर॥ लागत ही बिहलाइ॥ सिरा
षूं स्रम मौं हिम हिं॥ मर पूं जि बिजारि जाइ॥१७॥ लेषनि की छतियां फटी॥ कागर भेरी षात॥ अषर कारे
गये॥ लिषत बिरह की बात॥१८॥ पतियां पाहत न ठिक परत॥ कर न टिकत इक ठोम॥ लिषन हार पर
व सन भयो॥ इससौं लिषे षी कौन॥१९॥ लिषन कछ आन हि लिषत॥ भयो अनिमति भौन॥ लिषन हार सों उ

मं०मा० मलयै॥ इहां लिषि षेधों कौन॥२०॥ कागद मेरे हिय जिसौ॥ लेष नि सुष सी मांनि॥ यद अरै रवदन चैरै॥ गु
५२ नि छिकें गुन जांनि॥२१॥ यातन को कागद करों॥ लेषनि कर रे सुजीव॥ रो इह लिषौं इन पछक कहुं॥ कोंव चै
बिन पीव॥२२॥ प्रीतम को पतियां लिषी॥ लिषत न लिष्यौ इकताव॥ नांमि अक्षर कछु न दही॥ कैसे दाद कै
आव॥२३॥ कर कंपत लेषनि गहत॥ कगग रगरि डिग नीर॥ वचन न कहत सबै जु तनु भई॥ देह जु दर
सनां नीर॥२४॥ लोचन नपती परि लिषि षू॥ कि षें पथिक करदें वे॥ दे सुजु गाति जि दिहें भ मिलहु॥ दे
षिजन मफर लेंवे॥२५॥ इति सपूरणा॥ ग्रं॥ २८८॥ आरस आरसदनी का०॥ साषी॥ नहिं हूं जा सन
सपुर॥ नहिं वै कुंउ दसो जु॥ जो आवत पेषू सिर॥ पगपग डोल तपिरोज॥१॥ आवे ता आवत सुनत
॥ पलकन छंग गाहिं चाह॥ लोहस लाल नपाव दे॥ राषे न वल बनाह॥२॥ आवंता आवत सुन्यो॥ तन म
मनन समाइ॥ जैन यो पेषेरूपं जरी॥ उदि वे को अकुलाइ॥३॥ सीस षे हचरे नन की॥ मात सर गापरि
पाव॥ तिहुं लोको सिरि वा जिय॥ अहमद रंक कव आव॥४॥ सज्जन मिल्या न क्षिति भई॥ कहुं। मदस
रियो हूं॥ पुनर्‌ केरा बंद जे॥ हि सचारू नरियो हू॥५॥ जूं निस माहै सरद ना भि॥ पगट न होइ न जा
स॥ जूं सुषदी गंस जुनो॥ हिरदे होइ विगास॥६॥ आजि सुष षरे हिय॥ ओ रिपो वै रोइ॥ जेस राम
जन सुपिनै मिल्या॥ ते दोमा नेरो इह॥७॥ यञाइ दिन य जविन यञ घरी॥ जबस सुष दे षौं मित्र॥ पलप॥ ५२

प्रीतमपत्री०

लजे उमका विनगइ॥ वै मो हि सालैं चित्र॥८॥ चंदन चंद सुगंध नहिं॥ प्रीतम मिलैं जु रोइ॥ ता सुष
स मिं नहिं जांनिये॥ सकल लोक फिरि जोइ॥९॥ बलिजु दंपत सब लपसो घरी॥ बलम मिलैं जब
बात न वलि मन वलि जीव बलि॥ धन बलि जग बलि सब॥१०॥ मन हूं तन सजन न मिलै
हूं ता म कि दियो द॥ आजों सोदि न कपरे॥ वी जा बलि जु किपां द॥११॥ सोरठा॥ मदंम दि
याम न मांदि॥ सासा इन अंतरि सयो॥ हलैं ते पोताइ॥ वाल्हा अंछे न वेहन दा॥१२॥ परत पगारी
अंत नित॥ बचन अमी पवर पत॥ सजन धन निरषत री॥ ह्या वा हु कहर षतन॥१३॥ हरि जन
आयन तानका॥ वंदी हूं इ दे द॥ जानि तिसा या दा दरा॥ इ अंमर गोम दा॥१४॥ जो सज्जन अव संतो सु
नौ॥ सुनै सौ देष आइ॥ कोंदि सु कोंद आनंदरा॥ पामरि माके दीन जाइ॥१५॥ नयन निरषत सावंदु
हि॥ पर घांन डिगदंद॥ आनंद मिवी रतथ को॥ अवत प्रभ मज लहुंद॥१६॥ इति सपूरणा॥ ग्रंथ
१९०॥ उतै म अरसमा ह॥ साषी॥ जौ पिय मिलत न प्रीति करि॥ प्रीति करा हितौ नांहि॥ बिन बैरागन
हरि मिलहि॥ सो फेरो इक गांहि॥१॥ सजन न अस्त ससारसी॥ प्रीति सुप रग अदीद॥ दिवै वक जगमा
छ बिचि॥ मरकि सकत नहिं लोह॥२॥ लग निल गी लोग निलषी॥ पग दी पाति मिंदानि॥ जीयकौं
स दै मे कछि न दी॥ उनापिय इत कल कांनि॥३॥ जज लपा गैल जपान जौ॥ घमै जतन न जेन॥ जेसत हरि॥ प

आरस आरसदनी का०

गुं.ग० ५२

पद परसि पए॥ एक मन तिनि मिमंत॥४॥ आपनी जाति मनाइ के॥ मिंतर है रुचि मोइ॥ जे तूं मैं दरद मि
लै॥ तो बझरि निहनैं दोइ॥५॥ जो लज्जा त्यों लमगत नहीं॥ वे धन तही रही हीर॥ दिषा दिषी काहि कौ
बने॥ भाग घगाति मैं सीर॥६॥ जगनाथ संत समात हित॥ अब न अमेल समाइ॥ मोहि तें रका सली रसे
॥ एक कमै मा ए न माइ॥७॥ जो हूं हूं तो हे नहीं॥ जो हूं तो हूं नाहिं॥ अहमद इकप रि यारमुष्टि॥ दिषा मे
कौ माहि॥८॥ चाषो चाहै पेमरस॥ राषे मांन गुमांन॥ दिषा मेप रियार इक॥ अकलो सुनेन कान॥९॥ मे
॥ हरिजन मन अभिमान है॥ जगनाथ का ग्यान॥ अब लौ एक दें दिषी सुनी॥ दिषाड इक मांन॥१०॥ मे
री मेरे मोट सिरि॥ मरिए ताके मारि॥ व्याइ सु पर परमाद सौ॥ सिर मे धरा गुताशि॥११॥ मेरे आगै मेघ ड
॥ तो तेर सार तु काइ॥ दादू पर गट पया यहै॥ जे एक आपा जाइ॥१२॥ आपन है आपै नहीं॥ आपा त
दा न आप॥ जगनाथ मन मुष मसी॥ मंदिप निकन भ सपाय॥१३॥ नां ज्ञ है मसोनही॥ मसोन हा न
नां ग॥ जगनाथ कहि कैसे बनें॥ साइ सिंघ इक ठांग॥१४॥ बुस्त न दा माया नहीं॥ मा यात दान बुस्त॥ जग
नाथ सर्म ग्यान विन॥ ग्यांन तहां न दिषरम॥१५॥ कबीर षंड आप कमायो है॥ किम करि बाधि सि बारि
॥ मांन कहि तो पियु नहीं॥ पीय तो मांन निवारि॥१६॥ मांन निर्भी मांन करि॥ जो तो कंत सुहाइ॥ ला
२ षट कौ की पोह मी॥ तो पहरी जे पाइ॥१७॥ जोब पाती तो गर्व क्या॥ भरबन का इ मने ह॥ आपा छी

राम ५२

जन पर सम न॥ कौंन सरांन पएइ॥१८॥ दादू न चाकर पीतरी॥ साध मरकिस जोग॥ जो सिरि सौं
पन सकै हूं॥ कोइ ह सारु लोग॥१९॥ मांन कियो जिनि कंत सौं॥ बे ही भोड चटाइ॥ मम्म मति निषि १
ए अण ना॥ सो नहिं टियां समाइ॥२०॥ नैन मिलि मिलि मंत्र कियं॥ नवल रो सरस मछि॥ लेप कमा
ननि आपनो॥ पियहि समपि बाधि॥२१॥ टौमा टौम न बसि कर न॥ श्वपच दिस बजी॥ एक पर
क्रत साधि॥ दादू आपन सियी॥२२॥ सेवा की जे निकंत की॥ कंत निसी का होइ॥ इक मे वायु न १
बाहिरी॥ ऐन सुहागनि कोइ॥२३॥ साध सु मिल संसार सौं॥ एक तो बनें न बात॥ दे रणे हे चटत त
॥ जगनाथ घट घात॥२४॥ दादू एके घोडे चढि चले॥ दूजा को लिन होइ॥ दूजे ये दौड़ चढि चाल २
तो॥ पार न पहुंच्या कोइ॥२५॥ साषी मधी॥ फरीदा कै हं छोडि मु छी॥ इके न साई छोडि॥ बिंदह
डि यांम पैर धरि॥ दे जे जब घर बोडि॥२६॥ साषी॥ दादू पेल्या चाहे पेमरस॥ आलम अमिल माइ॥ इ
कौ दा सरनहीं॥ पंकज पन गंध समाइ॥२७॥ मिटे मनकी वासना॥ सेटे न बहुरि राइ॥ जगनाथ इ जाके
॥ सके न तहां समाइ॥२८॥ पेम सो चाहे मद लेवै॥ मता नहीं आरुहा॥ जहां न सूई संचरे॥ मसलटे
कै मूहा॥२९॥ आपन बूझे बावरे॥ लसकर ल्यायो लार॥ गोरस हा भारी कहै॥ सबद नहीं पै मार॥३
०॥ अनेक समान्यो एक है॥ एक न अहं समाइ॥ दे बिमु मांइ मेल जुग॥ तहां नेह जा जाइ॥३१॥ साषी

गु॰ग्रा॰ ५३

॥ यहु तौ कुमति न होइ ॥ सो समिथाँ है पैम रस ॥ देतन देख्यौ कोइ ॥ समझ न देहै चौपरी ॥ ३२ ॥ हे म दी
हि चुरहान ॥ इक सु षचा दी पैमरस ॥ यहु तौ मारग आंन ॥ एकं तो सम्र पाइए ॥ ३३ ॥ साषी ॥ मैं ब
ही तहां मैं गया ॥ एकै दूसर नांहि ॥ मेंहदी को यह रंग रंगी ॥ दादू निज घर मांहि ॥ ३४ ॥ दादू मिंहदी मह
ल बारीक है ॥ गावन गावन नांउ ॥ ता सौं मन लागा रहै ॥ मैं बलिहारी जांउ ॥ ३५ ॥ जहाँ राम तहाँ
मैं नहीं ॥ मैं तहाँ नाहीं राम ॥ दादू महल बारीक है ॥ द्वै कौं नाहीं ठाम ॥ ३६ ॥ दादू देखौं एक घण्यां
मेंहदी कौ कछु नांहि ॥ तातैं मेंहदी दोइ रहु ॥ आप रही साहिब मांहि ॥ ३७ ॥ मारग महिया एक कव
[illegible] तौ न मिल साथ ॥ [illegible] मैं तैं नहीं ॥ [illegible] चौ [illegible] साथ ॥ ३८ ॥ मैं मांहीं इक आय गया
मैं नांही तब एक ॥ [illegible] मैं मुकति कै ॥ पर [illegible] ॥ ३९ ॥ दादू मैं नाहीं तब एक
कहै ॥ मैं आई तब दोइ ॥ मैं तैं पड़दा मिटि गया ॥ तब ज्यूं था त्यूं ही होइ ॥ ४० ॥ सबदी ॥ मांही
कै करि नांस लै ॥ [illegible] साहिब जी की सेज परि ॥ दादू जाइ [illegible] ॥ ४१ ॥ साषी ॥ [illegible]
[illegible] बिस्तार बहु ॥ [illegible] जग नाथ मांही [illegible] सब छाड़ि ॥ ४२ ॥
सकरे हरि मिलन की ॥ [illegible] पीर मसहै बिन पद मनी ॥ पूत मलै [illegible] ॥ ४
[illegible] चाकर मन ॥ [illegible] रहि न सेवे कोइ ॥ पिय सौं धन [illegible] फिरे ॥ पूत कहाँ तैं होइ ॥

रा॰म ५३

॥ ४४ ॥ परस्यो पतंग [illegible] ॥ [illegible] जोति [illegible] ॥ तन मन सौंप्या सजन महि ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४५ ॥ [illegible] ॥ सी सकाटि [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४६ ॥ [illegible] ॥ मेंहदी पिय के पाइ लगी ॥ [illegible] ॥ [illegible] मिल
[illegible] ॥ ४७ ॥ साषी ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४९ ॥ साषी [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५० ॥ साषी ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ साषी ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ जग नाथ [illegible]
[illegible] ॥ अनंत रूप [illegible] ॥ जग नाथ [illegible]
[illegible] ॥ ५७ ॥ [illegible] अपार हरि ॥ पार न पावत कोइ ॥ जग नाथ [illegible]

इति [illegible] समाप्त

प्रमतीजरी

भेदमरस्वकेदवाला

पकस्रेते॥ एक मबचनसोइ॥ ३॥ कोडी सहंसमषिंड किया॥ औनेकसरदरलषा॥ सांई सांई सकहि
मुहै॥ सांई करी परषा॥ ४॥ दादू सबही मारग सांईया॥ आगै एक मुकोम॥ सोई सनमुष करि
लीया॥ जाही सेती कांम॥ ५॥ सो रठा॥ जगनाथ जगदीस॥ हष्ट मुष्ट आवै नहीं॥ मूरति बिहि
सवा बीस॥ समके अमनिराग जे॥ ६॥ गोमकरत जूराग॥ बे त्वाजनम॥ षाणहरि॥ जग
नाथ बड स्याम॥ औसी कोई जो गही॥ ६॥ निरूपक निरकार॥ कहै सुनै परमितिनही॥
जगनाथ आकार॥ अगस्त हे तधरे जि सो॥ ७॥ साषी॥ मे जो जगत रूप रे॥ हरि सरप हति
नाही॥ पोषा लिषा अलषा का॥ एकस एक समाहि॥ ८॥ तीनि लोका तहि पूरण॥ एक जोति
सबठा॥ जोतिहि अन अनसूरती॥ मूरतिहि अन अनना॥ ९॥ सोरठा॥ जोति न सरसी जे
ति॥ नूर भरी षोनूर महि॥ तेज नते जहि पोति॥ जगनाथ जो जोइये॥ १०॥ आदि अंति मधि स
न॥ सगन आषे पटतरो॥ देषो आहि अनेता॥ जगनाथ कहियो कहै॥ ११॥ संमम कोएसाध
॥ जिनपे कृपा कटाछि की॥ आपे आप अगाध॥ जगनाथ है रांनदे॥ १२॥ साषी॥ अलष एक न
कूने षके॥ घट घट रह्यो समाइ॥ साधन पुगटै ऐ अधिक अति॥ तो ने लषे न जाइ॥ १३॥ सब
दा॥ दादू जनमै गगन गगन मैं जल है॥ कृनि गगन निराह॥ ब्रह्म जीव इंहिं बिधि रहे॥ औस

भेद विचार॥ १५॥ साषी॥ ज्युं दरपन में मुष देषिए॥ पांणी में प्रतिब्यंब॥ औसै आतम रांम है॥ दादू स
ब ही संग॥ १६॥ ज्युं मां कपुर ते बातिह्व॥ ज्यं मधि घी सुचि दार॥ ज्युं आतम परआतमा॥ दीसे जग
निविचार॥ १७॥ चौपई॥ ईष मिठाई ते लतिल मि में॥ घृत दधि लोह पषांन जु मांहिं॥ अगनि
कावन पब्यापक आत्म॥ जन जगनाथ जु गति गुरपाह॥ १८॥ साषी॥ तेल तिलनि घृत इध ज
॥ पड़प बास घट जीव॥ जगनाथ जन जानि ये॥ अंतर जांमी सीव॥ १९॥ साषी स्पष्ट॥ दादू ईये रबु
ये तेल तिल मिमे॥ जी ये गंधक्र लेनि॥ जी ये मषु न षीरमें॥ ईये रबु रुहंनि॥ २०॥ दादू ईये रबु
रू है मिमे॥ जी ये रूह रगंनि॥ जी ये जेरो सूर मे॥ ठंठो चंड बसंनि॥ २१॥ साषी॥ बैसंदर में न स
नता॥ सीतलता जल माहिं॥ औसे हरि जगनाथ जन॥ ब्यापक षाली नाहिं॥ २२॥ जल दरप
न षानि बिंबज्यु॥ जीव निजिय मांहि जोइ॥ जगनाथ पूरन सबै॥ एक ते प्रगट होइ॥ २३॥ सीतल मे
रास अकनै॥ षमहीले जपिछांनि॥ दादू हरि न देषिये॥ पतिबिंब ज्युं जांनि॥ २४॥ कंठ सगुनि आ
कास ज्युं॥ जलमहि पूरन होइ॥ जगनाथ जगदीस॥ दादू हरि जीतरि सोइ॥ २५॥ कहु ठम के ठोल
के॥ कहू पुरस सद सबी सा॥ कहू त प्रगट परम सराम॥ ज्यं जल थल जगदीस॥ २६॥ जैसे ब्यापक बा
इ सब॥ पांन पिंड प्रगासीस॥ सकल निर्भर पूरियं॥ जगनाथ जगदीस॥ २७॥ पीतम मग सदा सदु

गुं॰ग्र॰ ५५

रा॥ अमृत को सम मोहीय॥ बिरह सथा निज रिदै समाय॥ चरन छूत्र तो कीय॥२०॥ निपट निकट सं
म सूरम॥ मुकर मो दिजिम छांह॥ मुष छबि आगै ही रहै॥ मिलन दिन अरि अरि बांह॥२१॥ ध्यान
धरौं देष निरंतरं॥ परसन कौं अकुलात॥ उर मूरति भई चित्र की॥ पकरी नां हिन जात॥२
॥ब स हित मस जन सेज महिं॥ निमष टरै नहिं जोट॥ लष्यो न परै जसेन अब॥ घट घट की वे
टा॥२३॥ करिये घट जमसो हिया॥ छकुन तरु मां ये लोग॥ दरसन तिन हि दिषाइयां॥ जे थे दे
षन जोग॥२४॥ घट घट के रे वदन की॥ परगट कर हिति रेष॥ जु सेन लागा हिपाइ मि हि
॥जो गी जुगाम सेष॥२५॥ जग माथ जगाटी सरो॥ जबही जन पर चाय॥ ह्रगन घरे अलि जलब
नो॥ जेउ इतिन हि दरसाइ॥२६॥ इति संपूरन॥ अथ रमैनी परचौ॥ मोरमा॥ आवंता जब दीष
माली मन आनंद भो॥ भोन कुमा मूडु भीषा॥ आई षेप अबा जे॥१॥ साषी॥ मद सं दनद रमत — की
सजन॥ मिटी बिरह उर पीर॥ ज्यों सम नों पपी हरां॥ पियो पेट अरि नीर॥२॥ देषत कर मक बीर के
॥कब पूरब लालेष॥ जा कों मह लन तमु निलत है॥ सो दोस्त की या अलेष॥३॥ कबीर पंजरि
प्रेम प्रका सिया॥ जाग्या जो गा अनंत॥ संसा छूटा सुष भया॥ मिल्या पियारा कंत॥४॥ जो परिहै — राम
के षेल महि॥ जुगान दं नत कोई दाव॥ संकर प्रीतम कै मिले॥ मिलन प्रति मंगल गाव॥५॥ मिरसता ॥५५॥

रमिलि नादजाद॥ मक्र रचुरायत चित्त॥ संकर मो सुष कतन कहै॥ मिलत तुम्यं महि मित्त॥६॥ म
दसूदन हरि रूप रुचि॥ घटै न घटी अभिलाष॥ आरि जन गुर जन इतर जन॥ लाष कहौ को कु
लाष॥७॥ लोक बेद की मरमाये॥ देषत ही द्विज राज॥ नेह चीकनो मन भयो॥ पानी सी भई
लाज॥८॥ लोक लाज गए हास जग॥ सहै कहै कहु कोइ॥ मन मोहन मोहन फिरे॥ जगि आप
नपोषोइ॥९॥ पग पग जग को निगघनै॥ बरनत बनै न बैन॥ नैकन कहुं उहरात है॥ नेह चीक
नैनैन॥१०॥ चितवत लोचन चहुं दिशा॥ फिरि चित समपी वृषा है॥ ज्यों जल बरषत माघरी॥ स
मिटि पनारे माह॥११॥ पिय मूरति क बिलाम गई॥ मो चषि कं बिलम मात॥ और गैर उहरात
नहिं॥ पिय हि मिस आवत जात॥१२॥ सबही अपनें नैनों आपकौ॥ जब आतम देषे॥ तहाद
हपर आतमा॥ ता ही कौ पेषै॥१३॥ साषी॥ दाइ बिन रस नो जहां बोलिये॥ तहां अंतरजामी अ
प॥ बिन प्रसन न कसाई सुनें॥ जे कछु कीजे जाप॥१४॥ साधन अब कहा होत है॥ नेन निरा षोम
द॥ पिय चित वनि चित यो चिती॥ जप बाहु मैं रहा॥१५॥ चितै चितै नर जात है॥ सो छिमा छिपा
छमात॥ आवंता कै रूप मंहि॥ बूडि बूडि मन जात॥१६॥ कबीर मन लागा उन मन सों॥ गगन पहुं
माजाइ॥ देषा चंद बिछूरे नों चांदिनी॥ तहां अलष निरंजन राइ॥१७॥ कबीर मन लागा उन मन सो॥

गु.ग्रं० ५६ उनमन मनहिं बिलगया ॥ लूंण बिलगा पांणियां ॥ पांणी लूंण बिलग्ग ॥ १८ ॥ कबीर पांणी हीं तैं हिम भ
या ॥ हिम केगया बिलाइ ॥ जे कछु था सोई भया ॥ अब कछु कहा न जाइ ॥ १९ ॥ हम सकुन पियरू
पंमे ॥ मो च षि जात न दिरास ॥ जंसा मारिग्गा मारियें रे ॥ मेरें भरें षसि जात ॥ २० ॥ कबित दा सइके
कर रहित ॥ ध सी पर तन रस रंग ॥ सडुन रूप समुद मधि ॥ कृमत डि ष्टि अंग ॥ २१ ॥ नाहल नउ पं
सुमुष मैं न सम ॥ कवल कहा वत सोइ ॥ त ब बिधि दीमीप न रूबी ॥ अजडति रांन पिरोज ॥ २
२ ॥ कबीर सुरति समांनी निरति मैं ॥ निरति रही निरअक्षर ॥ सुरति निरति पर चा भया ॥ षूले सं
भडु वार ॥ २३ ॥ कबीर सुरति समांनी निरति मैं ॥ अजपा मांहे जाप ॥ लेष समांनां अलेष मैं ॥ यूं
आपा मांहे आप ॥ २४ ॥ कबीर सचु पाया सुष ऊपनां ॥ अरु दिल दरिया पूरि ॥ सकल अघ
सहेजे गए ॥ जब साईं मिल्या हजूरि ॥ २५ ॥ अमिल रहें न छिप लमिलहिं ॥ दे तन आवें सैंन
॥ चित्र मिटे मति मित्र को ॥ रहे रूप भरि नैंन ॥ २६ ॥ बाजी दक हा अस्तुति करे ॥ अमोचे दस म
पूर ॥ आंषिनि के पगुफि स लहै ॥ देषि निरंजन नूर ॥ २७ ॥ दादू अबिना सी अंग तेज का ॥ ऐसा राम
तत अनूप ॥ सो हम देष्या नैंन भरि ॥ सुंदर सहज सरूप ॥ २८ ॥ परम तेज परगट भया ॥ तहां म
न रह्या समाइ ॥ दादू षेलै पीव सौं ॥ नहिं आवे नहिं जाइ ॥ २९ ॥ निराक्षर निज देषिए ॥ नैंन कंला

गा बंद ॥ तहां मन षेलै पीव सौं ॥ दादू सदा अनंद ॥ ३० ॥ कबीर पारब्रह्म के तेज का ॥ कैसा है
उनमांन ॥ कहिबे कौं सोभा नहीं ॥ देष्यां ही परवांन ॥ ३१ ॥ जल मांहे रवि चंद का ॥ झिलमिला ट जु
दीसू ॥ जगनाथ उनमांन गढु ॥ जोति अधिक जगदीस ॥ ३२ ॥ इक सी लख इक समप ति हे ॥ नो
निजर निंदी रूप ॥ जगनाथ सुष सोम आति ॥ अबिगत तेज अनूप ॥ ३३ ॥ चेतनि निंदा सांत
सदा ॥ षुस्याले तेज निमोइ ॥ जगनाथ नहिं आन जे ॥ आतम अनभव होइ ॥ ३४ ॥ कबीर देष्या
एक अंग ॥ महिमा कही न जाइ ॥ तेज पुंज पारस धनी ॥ नैंनों रह्या समाइ ॥ ३५ ॥ मैं जान्यो कवकं
नमिटे ॥ चष नै पियुन हारि ॥ सकल चित्र जलतें मिटहिं ॥ एक जल परि लिषी सु धारि ॥ ३६ ॥ नव
लब सजन पु अघ रे ॥ बसे जहियरा मांहि ॥ ते बिधि अंके कलि लाटलो ॥ अटरन टारे जांहि ॥ ३७ ॥
सेक मुदि नम हृरत ह ॥ सजन चित चटियां ह ॥ चित्र गयं दमहा वतं ॥ कबके नकत रियांह ॥ ३८ ॥ बक
जिसक सुपिनें कषसी ॥ परत षि मिलिया आइ ॥ धन मेली पिय सजला ॥ मैरे न छूटी पाइ ॥ ३९ ॥ बक
न व्यो सत पिय मिलो ॥ रहीति कंठल गाइ ॥ डरपत मन सबचिंन गा कहिं ॥ मति सुपिनौं है जाइ ॥ ४० ॥
॥ सेम न प्रीति चकोर की ॥ शसि निरषत निस जात ॥ बापुरके को मर जीय में ॥ पलक न ही पति याति ॥
॥ ४१ ॥ मोनैं नांमो मन नहिं लै ॥ गयें जसजन साथि ॥ जं पंथी कौं पंथ मिरि ॥ ठगा बेचत ठग हाथि ॥ ४२ ॥ मे

hundred six

DMV 14 B

r 56

सं॰ग्रा॰ उनमन मन हिं बिलग्गा ॥ लूंन बिलग्गा पांणियां ॥ पांणी लूंण बिलग्गा ॥ १८ ॥ कबीर पांणी हे मैं हिम भ
५६ या ॥ हिम के गया बिलाइ ॥ जे कुछ था सोई भया ॥ अब कछु कह्या न जाइ ॥ १९ ॥ हम सब जन पियू रू
प में ॥ मो चाखि जा न दिराम ॥ जैसा मारिग मारियेरे ॥ तैसें अरै धसि जात ॥ २० ॥ कबिन दास इक
टीका करर हित ॥ धसी पर तन करम रेग ॥ सजन रूप समुद मधि ॥ कुमत डि छित्र अंग ॥ २१ ॥ आलन उ पं
सुगुपनैं मसम ॥ कदल कदावत सोज ॥ तब बिधि दीनीपुन रुबी ॥ अजजति रान पिरोज ॥ २२
२ ॥ कबीर सुरति समांनी निरति मैं ॥ निरति रही निरधार ॥ सुरति निरति परचा भया ॥ खुलि सं र
भ दुवार ॥ २३ ॥ कबीर सुरति समांनी निरति मैं ॥ अजपा मांहे जाप ॥ लेख समांनां अलेख मैं ॥ यूं
आपा मांहें आप ॥ २४ ॥ कबीर सचु पाया सुख ऊपना ॥ अरु दिल दरिया पूरि ॥ सकल पाप सहजै
गया ॥ जब सांई मिल्या हजूरि ॥ २५ ॥ अमिलर है तन दिपल मिल हिं ॥ देत न आवे सैन
॥ चित्र मिटै भति मित्र को ॥ रहे रूप भरि नैंन ॥ २६ ॥ बाजी दकदा अस्तुति करे ॥ अंसो चंद
म पूर ॥ आंखि मि कैपमुक्ति मल है ॥ दीखि निरखो नूर ॥ २७ ॥ दादू अबिनासी अंग तेज का ॥ अंसा
तत अनूप ॥ सो हम देष्या नैंन भरि ॥ सुन्दर सहज सरूप ॥ २८ ॥ परम तेज परगट भया ॥ तहां म राम
न रह्या समाइ ॥ दादू खेलै पीव सौं ॥ नहिं आवै नहिं जाइ ॥ २९ ॥ निराधार निज देखिये ॥ नैंन हूं लां ५६

गा बंद ॥ तहां मन खेलै पीव सौं ॥ दादू सदा अनंद ॥ ३० ॥ कबीर पारब्रह्म के तेज का ॥ कैसा है
उनमांन ॥ कहिबे कौं सोभा नहीं ॥ देष्यां ही परवांन ॥ ३१ ॥ जल मांहे रवि चंद का ॥ किल मिलाट जू
दीआ ॥ जगनाथ उनमांन न पूजा ॥ जोति अखिक जगदीआ ॥ ३२ ॥ इक सीनल इक तप ति है ॥ जो
ति जरमिंदी रूप ॥ जगनाथ सुख सोम ऋति ॥ अविगत तेज अनूप ॥ ३३ ॥ चौनामिनि सां सात
अ स दा ॥ ब्रह्म तेज निसी इ ॥ जगनाथ न हिं आन जू ॥ आतम अनत सहोइ ॥ ३४ ॥ कबीर देख्या
एक अंग ॥ महिमा कही न जाइ ॥ तेज पुंज पारस धनी ॥ नैंनों रह्या समाइ ॥ ३५ ॥ पे जानो कबहुं
न मिटै ॥ चषतैं पियु जन हारि ॥ सकल चित्र जल तें मिटहिं ॥ यहु जल परिलिखी सुखारि ॥ ३६ ॥ जब
ल बसजन रूपघ री ॥ बसे जहिय रामा हि ॥ तेहि विधि अंकलि लाट हो ॥ अटर न टारे मांहि ॥ ३७ ॥
सेकसु दिन सहूर तह ॥ सजन मित्र दिरांदा ॥ चित्र गयंद महावतां ॥ कहु जे वकत रियां दा ॥ ३८ ॥
जिस कें सुपिनें के घरी ॥ परतषि मिलिया आइ ॥ धन मेली पियु संग लां ॥ मेरे नख रोपाइ ॥ ३९ ॥ बहु
तक्यां सतें पियु मिलो ॥ रही निकंवल गाई ॥ डरपत मन कुं चिंनगा कहि ॥ मति सुपिनों के जाइ ॥ ४० ॥
सं मन प्रीति चकोर की ॥ आसि निरषत निज्ज जात ॥ बाष्पुर कोमर जीयमे ॥ पत्नक मदीपति यानु
॥ ४१ ॥ मो मैं मामो मन नहिं ले ॥ मेयेज मजनमाथि ॥ जैपंथी कौं पंथ सिरि ॥ भगबे चत तउ गहा थि ॥ ४२ ॥ मे

क

गुं ३७ ५७ रीमन तेरी रे मयो ॥ छिन कल जु तन हि तो हि ॥ सो सो खहि हरि के मांहि ॥ कहा करै रे मोहि ॥ ४३ ॥ दे
रुम न मां नू रुं मुकर ॥ हितवो पितकित कंत ॥ हं तौ मै तू मो मह ॥ कांई कं कारंन ॥ ४४ ॥ पियनी
रके बीच मे ॥ जीवमि गाई बाहि ॥ मि हियौ हन सरवत स्यो ॥ दो मांही दे आहि ॥ ४५ ॥ मन मिलि
दो॰ तन गा मयो ॥ सो काई सै गेह ॥ ह जी तो दिन छदई ॥ र काई नै सोह ॥ ४६ ॥ सो नयु मो न मवे तु
करौ कौ नै विधि टेक ॥ नै नू नि मो नै नो मन्हे ॥ पिय जिय न ये बये क ॥ ४७ ॥ लो इन लागे लाल मे
कहा करो बस नाहि ॥ मे वे आवे धन कलौ ॥ छुटे मरज जाहि ॥ ४८ ॥ जे ते नैन बवाइ सहि ॥ ध
रियं हि ग्रा ह नि मोर ॥ पेउ तरनि महि को मुकर ॥ फिरी जात पिय वोर ॥ ४९ ॥ सोरठा ॥ जि मांह
सा दा नैण ॥ आज मि जु अरस मो ॥ निन्कां हदा वैण ॥ षालि कषा लू न करे ॥ ५० ॥ साषी ॥ नैन जरोष
बिधि किये ॥ देषन को संसार ॥ आप हि पिष्यत आपम हि ॥ नैन नगन ब्यौ हार ॥ ५१ ॥ नैनक
रोषा पलक चिम ॥ औ हैं ज्या जाकीन ॥ हं बलिहारी प्रीत्मां ॥ चितवत चित हरि लीन ॥ ५२ ॥
ते जद ई कर आरसी ॥ मुष देषन को मुक्क ॥ मेरो आप बिसारि करि ॥ देषन लागी तु क ॥ ५३ ॥
कबीर जब मै थात ब हरि तु ही ॥ अन हरि हम मांहि ॥ सब अधियारा मिटि गया ॥ जब दीपक दे राम
ष्या मांहि ॥ ५४ ॥ हे हे कर ते हे गया ॥ मुक मैर ह्या न हैं ॥ हे कर ते हे पाइया ॥ अब तो हे ही हैं ॥ ५५ ॥ गु ५७

नैन कहे मीत रि सो ब से ॥ मन जी न रि जी सो इ ॥ सो बंतां जी सो बसे ॥ जागंतां जी सोइ ॥ ५६ ॥ तन पिय
मन पिय नै न पिय ॥ पिय रहु धी सब ठांव ॥ दौ तौ नादी व खिलाई ॥ रोम रोम ञ्जुबनां ॥ ५७ ॥ क
हत बात पिरं मकी ॥ सुनो ल एही बात ॥ एही बात मि बात है ॥ और बात बिबात ॥ ५८ ॥ सुन
तां नि हारत रूप गुन ॥ मो हन एक समान ॥ कब हं लो इन लो इन ॥ कब हं लो इन कान ॥
॥ ५९ ॥ बारि भीति दरपन मई ॥ दिरद यत पति गई मोहि ॥ जह देजत हैं त हां घो दि छ मेरि ॥ तहं तहं दे
षौं तो हि ॥ ६० ॥ पिय निहाल अंतर नहीं ॥ जौ वप रै क छु आइ ॥ तह हवो ट च सम मा च सन ॥ देष
तमतु न अघाइ ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ बिगासि बगासि दरस न करे ॥ पुलकि पुलकि रस पान ॥ मग
मग लित मामारहै ॥ अर स पर समि लि पान ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ देषि देषि सुमरन करे ॥ देषि देषि
लै लीन ॥ देषि देषि तन मन हिले ॥ देषि देषि चित दीन ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ निरषि निरषि निज नैन ले
निरषि निरषि रस पीव ॥ निरषि निरषि पीव को मिले ॥ निरषि निरषि सुष जीव ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ प
रगट षेले पीव सो ॥ अगम अगो चर ठांउ ॥ एक पलक का देषणा ॥ जीवण मरन का नांउ ॥ ६५ ॥ सो
रठा ॥ षिसारा मदी मू षि ॥ सं भारां नहि कि हीं ॥ दियड़ो म फिर ज रि ॥ स्रत रति संदी संझु रां ॥ ६६ ॥ प्री
ति तडं दन ञ्जासा ॥ सो मन सांचो मै न किया ॥ बिरहअग्नि को त्रास ॥ हारन ते ऊ सम्रत नि रती ॥ ६७ ॥ तो क

गु०म० ज्योति रलोइ॥ बाइक कैदी जे डिडा॥ कांन न अंजे कोइ॥ अै षीवो लांडे करे॥६८॥ साषी॥ दादू नैन देष
५८ तस्यांम कौ॥ पलक काल गत क हिं हेत॥ नैनू पिया सेरूप के॥ घूंटि घूंटि रस लेत॥६९॥ नीचे लोइन
करि रहुं॥ जैसे तुझ न घट मांहि॥ जांमें सबै समित को॥ कैसे हित लषांऊं नांहि॥१००॥ नीचे लोइन
करि रहुं॥ लै गुरु की उन हारि॥ पिय मूरति छिपै नैन मैं॥ सके न पलक उघारि॥१०१॥ जे देषौ तो स
बल षै॥ बोलें स्मतर होइ॥ पीय सं आरू जीव मैं॥ दूसर नैन सं कोइ॥१०२॥ अदमद कं घेही रहे॥ लो नेमका
भकहै के घाहि॥ एन हिं आमे बापुरा॥ कंधे कंधे जांहि॥१०३॥ जिनि पिनरायांपे अंककरि॥ जिनि मु
षली या चाहि॥ घरी न बीचौ आनिये॥ जो तु गबी चहि तांहि॥१०४॥ चमब ष्टि देषे ब जतकरि
आत्म दृष्टी एक॥ ब्रह्म दृष्टि परचे भया॥ तब दादू बैठा देष॥१०५॥ एई नैना देह के॥ एई आतम
होइ॥ एई नैना ब्रह्म के॥ दादू पलटे दोइ॥१०६॥ घट परचे सब घट लषै॥ प्रांन परचे प्रांन॥ ब्रह्म
प्रवे० परचे पाइए॥ दादू है हेरांन॥१०७॥ इति सम्पूर्ण॥ ४२॥ ४५४८॥ अथ दस मी जन अरचा अंग॥ सोंजा॥ अ
राम आत्मा वैष्णो॥ सुबुधि भोमि संतो ष थान॥ मूल मंत्र मन माला॥ गुरतिलक सति संजम
सील सुच्या॥ ध्यान धोवती॥ काया कलस प्रेम जल॥ मनसा मंदर॥ निरंजन देव॥ आत्मा पाती॥ पु राम
हुप प्रीति॥ चेतना चंदन॥ नवधा नांव॥ भाव पूजा॥ मति पात्र॥ सहज समरपन॥ सबद घंटा॥ आनंद ५८

आरती॥ दया प्रसाद॥ अनिन एक दसा॥ तीर्थ सत संग॥ दांन उपदेस॥ ब्रत सुमरण॥ षट गुण गपां स
अजपा जाप॥ अनभै आचार॥ मुक्ति द्वारा म॥ फल दरसन॥ अभिअंतरि॥ सदा निरंतर॥ सत्य से
ज्या दादू वर्तते॥ आतमां उपदेस॥ अंतरगति पूजा॥ प॥ साषी॥ देही मांहै देहुरा॥ सत्र गुन ते न्यारा॥ सुक
लनिरंतर भरि रह्या॥ दादू का प्यारा॥१॥ साषी॥ देव निरंजन पूजिये॥ पाती पंच चढाइ॥ तन मन चं
दन चरचिए॥ सेवा सुरति लगाइ॥२॥ जीव पियारे राम को॥ पाती पंच चढाइ॥ तन मन मन सौं सौंप
सब॥ दादू बिलंब न लाइ॥३॥ पंच पदारथ मन रतन॥ पवना माणिक होइ॥ आतम हीरा सुरति सौं॥
मनसा मोती पोइ॥४॥ अजब अनूपम हार है॥ सांई सरीषा सोइ॥ दादू आतम राम गलि॥ जहां न देषै
कोइ॥५॥ आपै देव देहुरा॥ आपै आप नी सेव॥ सेवग सांमी ने आवनो॥ कबीर अलष अलेव॥६॥ अब
बिछड्या नां देहुरा॥ देहुरा बिछड्या नां देव॥ कबीर रतन त्यां हिलमिल सिष्य॥ जहां करै अलष की सेव॥७॥ कबी
त र देवल मांहै देहुरी॥ तिलजेते बिस्तार॥ मांहे पाती मांहि जल॥ मांहे पूजन हार॥८॥ पुहुप सुगंध
चढाइ ए पाती त्यादिप चीसां॥ कबीर प्रेम प्रीति सौं॥ सेवा करि जगदीस॥९॥ चित्त सम चंदन चे
रचित॥ श्रद्धा सोंज समजंत॥ कबीर अंतरि आरती॥ अनहद नाद बजंत॥१०॥ कबीर सेवग
सनमुषा॥ देहुरा पावन दीदार॥ आतम आरति रतनजे॥ सब के परमपगार॥११॥ चोपई॥ मांड देहु

ग्रं॰ग॰ ५६

रा देषि दे हमें ॥ ता हि सेतु सब ही करि साथ ॥ पत्र पञ्च पबिन पंच पल लहिले ॥ चाहिय चौसौं इंडी
नाथ ॥ बिन ही सी समाइ सो मस्तक ॥ कर दिढि बिनांते जो रैहाथ ॥ सो जसक लव आप नयो सो पूज
यहनु गति जगनाथ ॥ १६ ॥ साषी ॥ मूल कवल सो देहुरा ॥ प्रांन नाथ सो देव ॥ जगनाथ आतम
निकट ॥ की जेता की सेव ॥ १७ ॥ हसा देशु पञ्च महिसु ॥ निर्ह चेन मार स्तु नाम ॥ दिल दे लजग
नाथ जन ॥ पूजर चत्रुपति राम ॥ १८ ॥ बुध्य भामिका सुरु करि ॥ चौका चौषी चाल ॥ कल सक
मल पदे सजल ॥ जुक्ति जगनाथ र साल ॥ १९ ॥ सोल साच सनान सुचि ॥ संजन बपहि पहोइ ॥ गुद्ध
सत मति सुजमब रत ॥ पांवन पाति कषोइ ॥ २० ॥ धर्म आरनां धोवती ॥ न तद्या आचार ॥ बरतेल
ऐबबिक सो ॥ बरतनि सो जविचार ॥ २१ ॥ पवन पाछ परिब सलमन ॥ सुरति दिहि निरति बिछाइ ॥ ब
ध्यक रि सेहरा आतमा ॥ परआतम पधराइ ॥ २२ ॥ धूप ध्यांन नाम रथ रे ॥ दीपक पांन प्रकास ॥ चर चे च
दन चेतना ॥ चेत निरग्रासु बास ॥ २३ ॥ चौपई ॥ पे भुपञ्जपसो पूजा करई ॥ पाती प्रीति सु लेइ
चढाइ ॥ मन साथ्या लमाव धी जब करि ॥ भगवंत भोग लगानि सेलाइ ॥ २४ ॥ साषी ॥ रहति तिल
कमत छाप गुर ॥ माल मनोर थ हाथ ॥ फेरा फेरी पोइ ॥ अजपा जपि जगनाथ ॥ २५ ॥ दह्न्या
व दसुनाइ कै ॥ सुमति दिहोदे सार ॥ गुरदे सब सुष सिघ कं रे ॥ सकल पबिषै बिकार ॥ २६ ॥ अत

सुरत मे

मति आरति आरती ॥ वारिअप्रभुवन अहित नाद ॥ घंटा घट मैं घोर धुनि ॥ बाजा अनहद नाद ॥ २७ ॥
मेड सतड रछाडे मुही ॥ निझरन क बड़े दोइ ॥ करैवंदगी बंदमा ॥ परमबैष्नव सोइ ॥ २८ ॥ पछि
परकृतिसो परहरै ॥ पमेपुरस पछि पाइ ॥ परदछिन जगनाथ ये ॥ फिरि फिरि फिरिन फिराइ ॥ २९ ॥ च
रनामृत चरचा चवे ॥ देह दसापर साद ॥ मुदित मुक्ति जगनाथ जन ॥ पमरे मिटै बिषाद ॥ ३० ॥ म
रजादा पर ब्रह्म की ॥ ममता छेवे न मलि ॥ जु गतें भाव रिअ मीतजि ॥ रवैं नरसक जंम्हलि ॥ ३१ ॥ षट
कर्म्म षट गुजल रदे ॥ पंचे दीचि न ॥ नेम नेम नवध्या करे ॥ अरथा आरंभ निन ॥ ३२ ॥ सत संतोष घी
रजाछि मा ॥ हित रुचि दस्य सेह ॥ जगनाथ जगदी सकी ॥ सेव सिरोमनि ऐह ॥ ३३ ॥ सूछम सेवा मो
जगफ ॥ अहनिस अंतरि सोइ ॥ जगनाथ बिन बासनां ॥ फल द्रसन जन होइ ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ गंग स्य
न म्हाइ लि तनि मल ॥ ध्यान धोवती सति सालिगरांम ॥ पाती पांणां चाहि चित चौषे ॥ तब दह निरद्व
ल पाये गांम ॥ ३५ ॥ साषी ॥ दया छबति मैं बिसया परदछिणा ॥ भाव पूजा लिजा पा संतोष कदे मदजो म
ले ॥ अलष निरंजन आयें ॥ ३६ ॥ सहज बरत संतोष तीरथ ॥ गंगा मध्य सनस मांन ॥ ध्या देवता षिमां
जपमाली ॥ ते मो निषपरधांन ॥ ३७ ॥ साषी ॥ सुरति चौका जुगति धोती ॥ तिलक करणी होइ ॥ आ
दि भोजन नांम का ॥ बिरला हर कै कोइ ॥ ३८ ॥ आदि अंति आगें रहे ॥ एक अनूपम देव ॥ निराकारम

मनान ध्यान पुन पाठ पूजा महोमकार जे मनित ये अ ट करम नित ब जन
नित करनि हैं

गु॰ प्र॰ जबि मेल्या ॥ कोई न जांणैं भेव ॥ अविनासी अपरंपरा ॥ तारण तरण अबिंदि छे वृ ॥ सो हूं दादू देषि लै ॥ अंत्री
६० तर करि सेव ॥ ३९ ॥ घट परचै सेवा करै ॥ प्रतषि देषै देव ॥ अविनासी दरसन करै ॥ दादू पूरी सेव ॥
४० ॥ दादू जीनां रिपै सिकरि ॥ घट के जड़ै कपाट ॥ सांई की सेवा करै ॥ दादू अविगत घाट ॥ ४१ ॥
आतम मांहैं राम है ॥ पूजा ताकी होइ ॥ सेवा बंदन आरती ॥ साध करै सब कोइ ॥ ४२ ॥ दादू अरे च ल
आरती ॥ जुगि जुगि देव अनंत ॥ सदा अषंडित एकरस ॥ सकल उतारें संत ॥ ४३ ॥ संत उतारें आ ।
रती ॥ तन मन मंगल चार ॥ दादू बलि बलि वारनैं ॥ तुम परि सिरजनहार ॥ ४४ ॥ पूरे सेवा आ
रती ॥ परचै मंगलगाइ ॥ दादू सब पर साहिब को ॥ महिमा कही न जाइ ॥ ४५ ॥ मांहैं कीजे आरती ॥ मां
हैं पूजा होइ ॥ मांहैं सतगुर सेविये ॥ बूझै बिरला कोइ ॥ ४६ ॥ मांहिं निरंजन देव है ॥ मांहैं सेवा हो
इ ॥ मांहिं उतारैं आरती ॥ दादू सेवग सोइ ॥ ४७ ॥ तन मन निरमल यूं कीजिए ॥ जे घट लागो राम अ
दादू तम कांवूं दे तदो वंदगी ॥ जहां परगट रांम ॥ ४८ ॥ दादू तन मन बिलै यूं कीजिए ॥ जैसे पांणीं मैं लूंण
॥ जीव ब्रह्म सेवा करै ॥ तब दूजा कहिए कौंण ॥ ४९ ॥ जीव ब्रह्म सेवा करै ॥ ब्रह्म बरावरि है
॥ दादू जांणै ब्रह्म कौं ॥ ब्रह्म सरीषा सोइ ॥ ५० ॥ दादू निसंपूरण भया ॥ ५१ ॥ दास बिनस मागें अपणा कं राम
बीरबा मारग हरि घर ॥ बिकट पंथ बहु मार ॥ कहो संतौ कैं पाइया ॥ दुर्लभ हरि दीदार ॥ ६०
[illegible]

॥ कबीर मारग कठिन है ॥ कोइ न सकई जाइ ॥ गए ते बहुरे नहीं ॥ कुसल कहै को आइ ॥ २ ॥ अग
म पंथ कहु गमि नहीं ॥ पग धरि सकै न कोइ ॥ छोडि रहै हरि मधि सो चलै ॥ जिहि तनि सुरति न
६२ होइ ॥ ३ ॥ जन कबीर का सिषर घर ॥ बाट सलैली सैल ॥ पाव न टिकै पपील का ॥ लोगनि लादे बैल
॥ ४ ॥ कबीर जहां न चींटी चढि सकै ॥ राई नां ठहराइ ॥ मन पवन की गमि नहीं ॥ तहां पहुंचे जाइ
॥ ५ ॥ पिपल कमारग पेंडतैं ॥ चढतें कोला षाइ ॥ मोहन फिरि धरती परै ॥ फल लौंच हान जाइ
॥ ६ ॥ शुक मारग निज साधका ॥ पंथ पाणि उडि जाइ ॥ मोहन चींटी चर न गाहि ॥ तिष्णा सोपका
ल षाइ ॥ ७ ॥ पडिया पडिया ही रह्या ॥ पडि पडि जे मर पडे ॥ ८ ॥ जिणि पडियो पडि जै न है ॥ पंथ न
पडियो तेणि ॥ ९ ॥ दादू मारग कठिन है ॥ जीवत चलै न कोइ ॥ सोई चलि है बापुरा ॥ जे जीवत मृतक
होइ ॥ १० ॥ मृतक होवै सो चलै ॥ निरंजन की बाट ॥ दादू पावै पीव को ॥ लंघै औघट घाट ॥ ११ ॥ मृतक पैंडा
कठिन है ॥ चलनां बिनहीं पाइ ॥ जगनाथ तहं एक को ॥ बिरला ही ठहराइ ॥ १२ ॥ जीने मारग मांहि
रा घन घाटी घर हइ ॥ जगनाथ जन एक कौ ॥ पडे बहु बिरला सूर ॥ १३ ॥ बिषम पंथ पाई नहि बिनां चा
लें बोचित हौं ते मांषि ॥ जगनाथ जन मन मंदी ॥ अपजनर हत बियाधि ॥ १४ ॥ दादू बिन पाइन का पंथ
है क्यूं करि पहुंचे प्रांन ॥ बिकट घाट औघट घरे ॥ मांहि सिषर असमांन ॥ मन ताजी चेतन चढे

गु·ग·
६२

॥ल्यौ की कै रेल मांग्या ॥ आब दगुरू का ता जनां ॥ कोई पहुंचे साध सुजांण ॥१४॥ जगनाथ जगदीश का
॥राद सुस्त्रुति बारी का ॥ पहिले पुलिबो कबिने दे ॥ पीछे सुर मन सी का ॥१५॥ चौपई ॥ मारगि अग्म सुगम
अति दौरे ॥ जो सतगुर द्यौं दिसराइ ॥ जुगि जुगि कहत कबीरन दिपहुंचे ॥ जगनाथ तहां सहजै जाइ
॥१६॥ साषी ॥ सिर पर राषि कबीर नै ॥ रांम नांम ल्यौ लाइ ॥ दादू मारग जुगौं का ॥ एक पल के मैं जाइ
॥१७॥ मार्गि मुनारायद मरहला ॥ संत चले करि बाट ॥ मपांनी चाले एक कों ॥ उलटा औघट घाट ॥
॥१८॥ मारग ऐसे साग्म है ॥ मुनिजन बैठे थाकि ॥ तहां कबीरा चलि गया ॥ गहि सतगुर की साष
॥१९॥ सुरनर थाके मुनिजनां ॥ जहां न कोई जाइ ॥ मोटे भाग कबीर कै ॥ तहां रह्या घर छाइ ॥२०॥
दादू मोई मारग मन नि गह्या ॥ जिहि मारग मिलि ये जाइ ॥ बेद कुरांनों ना कह्या ॥ सो गुरि दिया दि
षाइ ॥२१॥ चौपई ॥ सूक्ष्म मारग मो जे सकल दे ॥ जगनाथ सूक्ष्म करि जाइ ॥ सूक्ष्म बस्त अगम
तहां पापति ॥ अति सूक्ष्म कै मांहि समाइ ॥२२॥ साषी ॥ पिंड पलटि करि पिंड न सौ ॥ उलटि न आवै
सोइ ॥ अंन गुगति सूक्ष्म भये ॥ आतम बज्र ल्यौं होइ ॥२३॥ दादू मारग मिहर का ॥ सुषी सहज सौं
जाइ ॥ भौ सागर तै काढि करि ॥ अपणे लिये बुलाइ ॥२४॥ इति संपूरणं ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ अथ कितन राम
॥ साषी ॥ का सिम बैरा बंधियो ॥ संमद तिरन कै काज ॥ आइ परे ता गुरन मांहि ॥ बहु कै कौ टि जहा ६२

सूषिमसार१०

जा ॥१॥ पेंम तरंग नि तीर रहै ॥ चलि ब टल्यै प ल्यौ पाइ ॥ जन सौं कर पहुंचे न दी ॥ मां फिरि रिनिक १
ल्यौ जाइ ॥२॥ बाजी ब ब दढ बिसंभ मकी ॥ मैं न नमि रषी जाइ ॥ चहल्यै पर रिनि के सी मुं दी ॥ म
मकु ढबरी गाइ ॥३॥ बेह्न म च का बोहद्यौ ॥ मो मन अद मन निन ॥ पेंम प्रबे सा सि ष्पयौ ॥ निक
सि न जा न त चित्त ॥४॥ मा गा उ रंग कुसै न मन ॥ अस्या पि रंम की बो रि ॥ पगु न धरै मगु च ल न १
कौं ॥ ता जिन दृष्टि करो रि ॥५॥ मनम पुदै दया ब न हि करत ॥ सदन मस्त गंभीर ॥ डहरी तिहरी बो
हरी ॥ परी पेंम क्रे जीर ॥६॥ जो कोजरै जे जीर तन ॥ तो तो रै सत सान ॥ पेंम तंत अघट केंग न बल
॥ मट को नै कन जाय त ॥७॥ का ठिन कगोरा दृढ़ै ककरि ॥ मन म भ्रकर उडि जाइ ॥ कोमल कमंल
मैं पी ति सो ॥ मंदजो रहै लु भाइ ॥८॥ रस बी धै तै कैं गुन हि ॥ गाड़ हिंद सौं दिया भूल ॥ म जुन बिरंबा म
लती ॥ मन मधंकर रह्यौ भूल ॥९॥ मे ह्या बिसरे आप कौं ॥ मेह्या बिसरि न जाइ ॥ दादू पूछै रांम कौं ॥
मो तत कहि समकाइ ॥१०॥ जा रस सिया रस पीवत ॥ आपा भूले और ॥ यौं दादू रहि गया एक रस ॥
पीवत पीवत गौरा ॥११॥ जहां से सुगात दां सा हिब बेगा ॥ सिव गम सेवा मां हि ॥ दादू सांई सब क रैं ॥ के
ईजो ऐ मांहि ॥१२॥ इति संपूरणं ॥४५॥ लोबि अथ साषी ॥ मजुन रूप समंद मांहि ॥ हो जहा
जई कंता ॥ तन मन जो बिवेस्त लगो ॥ पेंम धजा फहरंता ॥ लोचन नैक अघात नांहि ॥ देषत पीन

एकिता१०

गुं०ग० ६२

मलोग॥ जंत्र पिवैं पांन्यौं पियै॥ प्यास न बुझति अप्रमोग॥१॥ आदि ले आदि वहि सदा॥ कबहूं न्हें पूष
न जाइ॥ अंत एतहो मैं वास दे॥ वैबेन दी अघाइ॥२॥ आदि ले अंत दिषितिन सैं॥ कोटि कलप जे ज्ञांनी॥
जीस पेट विभु रसा निया॥ पीवत तउन अघात॥४॥ दादू मीमरा मररस॥५॥ कघट करि जो जो ५ ग्रिया गन॥
पीछे कोई रदे॥ सबदि रदे मांहि समांजे॥५॥ दादू चिड़ी चंच भरि ले गया॥ नीर निघट नहीं जाइ॥ ऐसा बा
सन नौ किया॥ सबद दरिया मांहि समाइ॥६॥ एक बूंद चाहु गल दे॥ सदा होत चि मेचे न॥ नीर सरेष्या सेम
रै॥ असस्न नौ षे नैन॥७॥ लेपट स्नूट कत मान दी॥ पत लेपट न समांहि॥ जहि गेम न पड़जे चैन दी॥ तदे
त्रापा क जो हि॥८॥ नूषे ट्या न अघात बिन॥ तक कि कका कि रुचि श्रोर॥ हाथ दी गले घात दे॥ रूप सले
मैं कौ श॥९॥ उ रसी चाहु गके मतै॥ स्वाति बूंद के रन पांनि॥ पेम कथा बधतें मली॥ घटैं घटे की कांनि
॥१०॥ दादू हरि रस पीवतां॥ कबहूं अरुचि न होइ॥ पीवत प्यासा नितनवा॥ पीवन हारा सो होइ॥११॥ राम
रोमर स पीजिए॥ एती रस नो होइ॥ दादू प्यासा प्रेमका॥ यौं बिन तृपति न कोइ॥१२॥ जैसे जल पीवे रांम रस
॥ ते सत्य बहे पियासा॥ जैसा कोई ए कदै॥ बिरला दादू दासा॥१३॥ कबीर हरि रस बृ जीत दे॥ आत्मप्या
स अपार॥ ताकी बोछिन बुझ पके॥ पीवन कोटि नगार॥१४॥ कबीर हरि रस अघट दे॥ पीवत षराम राम ६२
गास॥ श सिया ताका आमि टदै॥ अंच वत अधिक पियास॥१५॥ कबीर हरि के नांमका॥ लेत छ है स्यौ

मकार॥ सा सा सर सपी वतां॥ पास न मिटै कराहर॥१६॥ अंमृत अंतन आवही॥ षि पति न पीवनहा
रा सो षे बरवा अनल जरे॥ पोषे सलिता धारा॥१७॥ अगम अगति मग वंत दै॥ सुष रस आदि अपार
॥ जग नाथ रसिया तिसे॥ सरघ रिखि ल सनवा रा॥१८॥ जग नाथ जन न मांड़ लगि॥ जुग मिजु पनि
अग षांन॥ अमति करत रस पी वतां॥ नांहिन को अरमांन॥१९॥ सफरी जन वजग नाथ जन नें॥ कोटे
न नीर सुहा इ॥ तौ हरि केर स नो मतै॥ साध लेत अरसा इ॥२०॥ जग नाथ पूजा साषि सबै॥ सुनी जह
त सांशे न॥ धान पान र स करत कहि॥ अमृत अघो नो को न॥२१॥ हरि रस हुस नां रूप न धन॥ अ
चवत सचिन अघाइ॥ जग नाथ जे पिन जल॥ पीवत प्यास न जाइ॥२२॥ अस थिलि बरन जद
षि जे॥ अचवत रसन अघांन॥ देव सकि जगनाथ पूजा॥ हरि रस कहा बषांन॥२३॥ कच न के
है का पहि सुनी॥ पर मतल्यालन गात॥ पूजा अंगीर कौ व तैं श्री॥ लोचन दसि अघात॥२४॥ सजु
नि दी नौ हे सषी॥ दरसस ह्रै सलो इ॥ मो मन नैनन सब पांन जे॥ तिपति न मांनत लोइ॥२५॥ बडी म
५ दश्रि रिब्यां दसुत॥ त्रि दिन पेम दिषा नि॥ पियस सुषनि रषत न द यानि की॥ पलकर चूनि विचित्र
नि॥२६॥ लौम्र इद्यनि रषतुर ह्रौ॥ हूदय पूजा विसरि न जांजे॥ नव लपेम पल जो घटे॥ तौ जि य लागा॥
जलजा जे॥२७॥ सेवा तौ लौ की जिये॥ जो लौ मिरजन हार॥ मां वो थपे न दजाण के॥ कबीर से वग म

गुं०ग्रा० र॥२३॥ दादू जब लग राम है तब लग सेवग होइ॥ अषंडित सेवा एक रस॥ सेवग कहिये सोइ॥२
छ्रु ४॥ दादू जे सा राम है॥ ते सो सेवा जांने॥ पावै ग्यान बकरै रंग॥ दादू सो परसां न ऋण ग्या कही॥ दादू
से सांई सरीषा सुमरन कीजे॥ सांई सरीषा गावै॥ सांई सरीषी सेवा कीजे॥ तो सेवग सुष पावै॥२५॥
साषी॥ जो लौं हरि तौ लौं करै॥ भगति भ्रम जन सोइ॥ वाको वार न वज्र थके॥ जगनाथ समि दे
हु॥२॥ मा घ्रम गति आगा लगे॥ जे सोई भगवंत॥ वे पूरण यज्ञ नाथ के॥ जगनाथ निज संत॥ २
॥ भगवंत अरु भगवंत भजन॥ इन का आदि न अंत॥ अैसी ही जनकी लै मानि॥ है जगनाथ अनंत
॥ ३॥ सो रग॥ मा रि मिलती जोइ॥ जो हरि सिरि गमा वदै॥ तब अष पति नहीं होइ॥ घणो घणेरा नेष पे॥ २५
॥ साषी॥ दादू माला प्रेम का॥ रस मैं रह्या समाइ॥ अंतर अरथे जब लगैं॥ तब लग पिव न जाइ॥ ३६॥ पीया
ते ता सुष भया॥ वा की वज्र वैराग॥ अैसे जन वथा के नहीं॥ दादू उनमनि लाग॥ ३७॥ चौपई॥ जो इन्हा पष
म जुडे षज्ञां नो॥ नीर रहै उज्जल तो गि नहो॥ ते सब दहि चा वहु साध नमन कहि या॥ अंत हद हिं हद स
मंद वडो॥ ३८॥ साषी॥ रस की रिस की रसिक है॥ तेरी सब सुहाइ॥ तातै सीरे नीरते॥ जे सम अग न
मि लु काइ॥ ३९॥ पिवे पिलावै राम रस॥ माला देइ सिं गार॥ दादू रस पीवे घणा॥ भारी को उ प राम
मारा॥ ४०॥ सुनत अरु चिनहिं हरि कथा॥ अचवत रस मन अघाल॥ जगनाथ मत संग ते॥ कबहुं॥ छ३

लां०वि० न मन न अरसाल॥ ध राइ निं भ पूणी॥ ४२॥ रपटै है॥ देरां न अंग॥ सबदी॥ केते पार ष अंत न पावें॥ अ
गम अगोचर मांही॥ दादू की पति कोई न जांने॥ षीर नीर की मांई॥ ४॥ साषी॥ एक जीभ केता कहे
पूरन ब्रह्म अगाध॥ वेद कतेबा मिति नहीं॥ थकित भये सब साध॥ २॥ ओ सम हंस देरस न
सो॥ लेत जुज चो नांम॥ जगनाथ न कत मसदा॥ अति अचिरज वलि जांनं॥ ३॥ चतुरानन मुष
च्यारि सूं॥ च्यारि वेद निति भाषि॥ जग जीवन अस्तुति करे॥ राम नाम निज साषि॥ ४॥ दादू मेरा
एक मुष॥ कीरति अनंत अपार॥ गुन केते परिमिति नहीं॥ रहे विचारि विचारि॥ ५॥ स्रुति सुम्रिति मे
मांहि नें॥ पुराण अगम पुरांन॥ कबीर केवल ब्रह्म का॥ करे कवन परवांन॥ ६॥ नेति नेति मिति
दी कहै॥ नि भरद है रांम॥ जगनाथ कारिका रिषि को॥ साध सिध परमान॥ ७॥ कवि मन परमिति मीत
गी॥ जोगी जंगम जेन॥ कहि मुनि दुआ दा सगति॥ विरले हूं कत से न॥ ८॥ मुनि जन रिषि जोगी जत
साध सिध जग मांहि॥ कबीर सब देह रांनदे॥ कदम सुन नमें मांहि॥ ९॥ बलि जांउं तेरे साध की॥ अगम अ
गाध कि हि वाध॥ षोजत देषि सब मुनि जन॥ जगजीवन सब साध॥ १०॥ सुर नर गण गंध्रप मुनी॥
आराधै सब साध॥ जगजीवन की रति करै॥ जे नै राम अगाध॥ ११॥ रसनां कहा बषांनि ये॥ अव
लं ब सुने का गांन॥ जगनाथ की मति नहीं॥ देषि दिषि हेरांन॥ १२॥ देषत मर षी बातें है॥ कोइन स

ग्रं० ग० ६४

रीझी नांहिं ॥ ग्यांनी जैता बोलिये ॥ तेता माया मांहि ॥४॥ कबीर हरि हैं रांन गति ॥ वार न लहिए पार ॥
वरणरूप कौ का कहैं ॥ निराकार आकार ॥७॥ केते पारिष जौंहरी ॥ पंडित ग्याता ध्यांन ॥ जांण्यं जाइ ॥
न जांणिये ॥ का कहि कथिये ग्यांन ॥४॥ केते पारिष पचि मुए ॥ कीमति कही न जाइ ॥ दादू सबै हैरां
न हैं ॥ गूंगे का गुड़ षाइ ॥५॥ सब ही ग्यांनी पंडिता ॥ सुर नर रहे उरझाइ ॥ दादू गति गोविंद की ॥ क्यों
ही लषी न जाइ ॥६॥ दादू नां कहीं दिषै नां सुणिये ॥ नां को आवणहार ॥ नां को उतैं थी फिर्‍या ॥ नां
उरवार न पार ॥७॥ देषि दिवांने व्है गये ॥ दादू षरे सयांन ॥ वार पार को नां लहै ॥ दादू है हैरांन ॥८॥
ध्यांन थकित इन्द्री रहित ॥ ब्रह्मा बेद पंडित ॥ हरि दारै औ तार धरि ॥ तौ हैं न अविगत अंत ॥९॥ दे
वलोक स्वर्गि रज रहै ॥ अंत न भेद प्रवांन ॥ नागनाथ गति नां लषे ॥ जगनाथ है रांन ॥१०॥ इति श्री पू रैग०
रण ॥४७॥ दूहु ॥ रस अंग ॥ साषी ॥ मन हरि रस मीगा पीजिये ॥ अविगत अलष अनंत ॥ दादू निरमल
देषिये ॥ सहज सदा मरंत ॥१॥ मीठा पीवे रांमरस ॥ सो भी मीठा होइ ॥ सहजै कड़वा मिटि गया ॥
दादू निरविष सोइ ॥२॥ रस जोगी हरि रस पीवे ॥ विष भोगी विष षाइ ॥ कहि जगजीवन सो ई लै ॥
है ॥ जो कोई जेइ सु षाइ ॥३॥ अमृत रूपी रांमरस ॥ पीवे जे जन मस्त ॥ जे सी पूजी गांवड़ी ॥ ते सी बात राम
जे बस्त ॥४॥ लेषा किसा अलेष का ॥ बेहद की मरजाद ॥ जे मन लागा रांमरस ॥ पीवण ही का स्वाद ॥५॥ ६४

॥ क्या तुन मां न अनंत का ॥ अपरमित का क्या पार ॥ जे मन लनि मिलै न रांमरस ॥ पीजै बार बार ॥६॥ अविगत
का का जांणिये ॥ अगम अगाह कूं जाइ ॥ जे मन लागा रांमरस ॥ पीजै प्रीति लगाइ ॥७॥ अकह कहैं कूं
जाइ ॥ ॥ अगम कहां गमि होइ ॥ जे मन लागा रांमरस ॥ हम कौं लागा सोइ ॥८॥ तन कैरी आवी कीं
मन का करी कलाल ॥ नैंन सराई प्रेमरस ॥ भरि भरि पीवौ जु माल ॥९॥ नैंन तजूं मैं रस पीजिये ॥ दा
दू सुरति सहेत ॥ तनमन मंगल होत है ॥ हरि सौं लागा हेत ॥१०॥ कबीर हरि रस पीयां जांणिये
॥ कबहूं न जाइ षुमार ॥ मैंमंता घूमत रहै ॥ नांही तन की सार ॥११॥ तनमन हरि को है लाज पति ज
बर सिमाता होइ ॥ जब लग दादू सांवधान ॥ कदे न छाडै कोइ ॥१२॥ पीवत चेतनि जब लगैं तब
लग लैवे आइ ॥ जब माता दादू प्रेमरस ॥ तब काहे कौं नाइ ॥१३॥ जगनाथ जुगादी मरस ॥ या का रस
या को इ ॥ घट रस मौं षपि होत है ॥ षुसी मात सब लोइ ॥१४॥ रांमरस माइ तन पै मरस्सा ॥ पीवत अधि
कर सालै ॥ कबीर पीवन डुलनै है ॥ मांगे सी सकलाला ॥१५॥ साषी ॥ सुरति समाइ सनमुष रहै ॥ जु
ग जुगि जन पूरा ॥ दादू प्यासा प्रेम का ॥ रस पीवे सूरा ॥१६॥ साषी ॥ दादू भीगे प्रेमरस ॥ मन पंचौं का स
थ ॥ मगन भए रस मैं रहै ॥ तब सनमुष त्रिभुवन नाथ ॥१७॥ हरिरस माते हर सारिषे ॥ अमर लए के
रि ॥ जगनाथ चाषत मिटै ॥ जरा मरण जन फेरि ॥१८॥ सर्व मुनि रीकें रांमरस ॥ ब्रह्मा बिष्णु महे

गुं०भा० ६५

थ॥ जगजीवन रसपीवतां॥ पारस परसे भ्रोस॥ १९॥ दादू अंमृत भोजन रांम रस॥ काहे न बिलसै षाइ॥ ८८
काल बिचारा क्या करै॥ रमि रमि रांम समाइ॥ २०॥ कबीर रह रिस मय पीया॥ बाकी रही न थाकि॥
पाका कलस कुंभार का॥ बहुरि न चढई चाकि॥ २१॥ जे जन राम के रसिक है॥ तिन्ह जरा
वर अंग॥ जगनाथ जन नमि नहीं॥ हौइ न कब हुं भंग॥ २२॥ इति संपूरण॥ अथ ... जर रस०
णा अंग॥ साषी॥ कबीर कहिये को न सो॥ अजर सुरस बिगत बात॥ कहता बदै करै सब जान॥ १
तैं मांहि समात॥ दादू सारा गहि ल्या छोरि रहे॥ अंतर जांमी जांनि॥ तौ छूटै संसार तैं॥ रस पीवे
सारंग पांनि॥ २॥ दादू मन ही मांहे जप जय॥ मन ही मांहि समाइ॥ मन ही मांहे राषिए॥ बाह
रि कहि न जणाइ॥ ३॥ दादू मन ही मांहे समझि करि॥ मन ही मांहि समाइ॥ मन ही मांहे राष ।
ए॥ बाहरि कहत न जणाइ॥ ४॥ दादू समझि समाइ रहु॥ बाहरि कहि न जणाइ॥ दादू अदेभुत देष ।
या॥ तहां ना को आवै जाइ॥ ५॥ जन मन करत भ्रोमान है॥ ना वह छेल डर हो हि॥ जगनाथ सकाय
जांनैं है॥ जिन को मोहि॥ ६॥ सासुसा स सौ हैं जे॥ छिमरि नक बहु हि जाइ॥ जगनाथ जं रजन बधु
सिवा करै ल जाइ॥ ७॥ बाहरि कहि न जाणा वई॥ भीतरि किरिया साषि॥ जगनाथ प्रगट कि राम
ये॥ छो स्वतरा इ उपाधि॥ ८॥ जस निरधन धन जहि दरयता॥ जतन करै बहु भांति॥ जगनाथ ६५

दादूराम

अजन की॥ किरिया करिए कां ति॥ ९॥ कबीर जरनां सो जती॥ जोगी जगन सन्यास॥ कहत न कई
गुरि कहै॥ मंत्र जाप अभ्यास॥ १०॥ कबीर किरिया करि जरे॥ सेवा सुमरन ध्यांन॥ जब तब परच ।
पति सही॥ लल टिम मावे ग्यांन॥ ११॥ को साधु राषे रांम धन॥ गुरु बाइक बच नि विचार॥ गहिला
दाइ कूरहे॥ मकोट सु थिगवार॥ १२॥ जिनि षोवे दादू रांम धन॥ रिदै राषि जिनि जाइ॥ रतन जत
न करि राषिये॥ चिंतामनि चित लाइ॥ १३॥ चौपई॥ हीरा है मला लाल मनि मोती॥ रतन पदारथ
जिसो जतन॥ जगनाथ जगदीश पाइ वया॥ जनजन आगे कहै न जनपर॥ १४॥ साग नीमाया ब
रतानि॥ राषत गुपत सअधिक गाहा स॥ जगनाथ जन अै सी जरना॥ कसनी सहै न करिए कास॥
१५॥ साषी॥ सो ई सेवग सब जरै॥ जेताघटि परकास॥ दादू सेवग सब लषे॥ कहि न जणावे दास॥
१६॥ साषी॥ अजर जरै रस नां करै॥ घट मांहि समावे॥ दादू सेवग सो भला॥ जे कहि न जणावे॥ १७
साषी॥ रस अमृत मैं जर रस रहे॥ अमर सकब हीन होइ॥ जगनाथ जारे जपे॥ रस का रसिया सोइ॥
१८॥ पीवै जारै रांम रस॥ तौ सुष अधिक अपार॥ जानै सो जगनाथ है॥ बिरी सब संसार॥ १९॥ जग ।
नाथ रस रसिक सो॥ जरि नु जनावे मूर॥ महा अजुर देषत छकै॥ सो षिता हि मन सूर॥ २०॥ बात ब ।
सके मा चई॥ मगन हुंद मो होइ॥ जगनाथ पी वै पचै॥ रस का जारक सोइ॥ २१॥ रस पीवै अन जदक॥

गुंण॰ग॰ जं॥ जा मैं और न कोइ॥ जगनाथ मन सूरवां॥ प्रगट करै न सोइ॥२३॥ साषी॥ अजर जरै रस मांक
६६ रै॥ जेता सब पीवै॥ दादू सेवग सो भला॥ राषै रस जीवै॥२४॥ साषी॥ अजर नां जो गी जुगि जुगि जीवै
॥ करनां पसरि ससरि जाइ॥ दादू जोगी गुरमुषी॥ सहजै रहै समाइ॥२५॥ अजर मां जो भी जगपती॥ अब
नासी अवधूत॥ दादू जोगी गुरमुषी॥ निरंजन का पूत॥२६॥ इति संपूर्ण॥४६॥ २६ द्व॥ पतिपहि
चांनण॥ सारौ कै सिरि देषिए॥ ता सपरि कोई नांहि॥ दादू ग्यांन विचार करि॥ सो राष्या मन मां
हि॥१॥ कबीर संपट मांहि समाइया॥ सो साहिब नहि होइ॥ सकल मांड मै रमि रह्या॥ साहिब कही
ए सोइ॥२॥ रहै निराला मांड तैं॥ सकल मांड ता मांहि॥ कबीर सेवै तास कौं॥ दूजा सेवै नांहि
॥ आपरि को कचांहि है॥ सब दिन को ओईस॥ जगनाथ के हूसो॥ मन बच बिस साषीश॥
३॥ दादू जिनि मुझ कौं पैदा किया॥ मेरा साहिब सोइ॥ मैं बंदा उस राम का॥ जिनि सिरज्या सब
कोइ॥४॥ जो सब रै मसु रै सतिरि॥ सिमि बिधि सब ही मो छि॥ है मि है धिक दाइ पूछि॥ जो यम
म ज्यो वो ष्छि॥५॥ करता बादी सेघ सम॥ करम स्वान समान॥ यूह आसु धरी रिपु जग षे॥ व
ह पेर कंप रवांन॥६॥ कबीर करता सब करै॥ करता करै न कोइ॥ सकल सृष्टि उपजै षपै॥ राम
पै हरि अविनासी सोइ॥७॥ सब का साहिब एक है॥ जाका प्रगट नाउं॥ दादू साई सोधि ६६

लै॥ ता की मैं बलि जाउं॥८॥ दादू जा मैं मरै न जीवै है॥ रमिता राम न सो इ॥ जां मन मनै तैं रहत है॥ मेरा सा
हिब सोइ॥१०॥ सिरजनहार सुषे कहै॥ घट घट अंतर सोइ॥ जगनाथ जाननहीं॥ ऐसा समरथ
कोइ॥११॥ धरती धरी अंबर रच्या॥ चंद सूर परकास॥ पानी पवन थरपिया॥ जगनाथ अजै त
मा॥१२॥ साषी॥ ब्रह्मा बिस्न महेश उपाया॥ कीया सकल पसारा॥ जगनाथ करता अबिनासी मै
ई इष्ट हमारा॥१३॥ चौपई॥ सत त्रेता द्वापर कलिजुग मैं॥ आदि मध्य कीते अवतारा॥ जगनाथ बिजै
निजमक सही सो॥ जाका कीनां सकल पसारा॥१४॥ सबदी॥ धरी या कौं धरै जो नहीं॥ ऐसा पारा नाक
॥ निरकार आकार बिबर्जित॥ ताका सेव गरां का॥१५॥ साषी॥ जा की थापी मांड सब॥ ता की कीजै
सेव॥ जो थरप्या इस मो क का॥ सो न ही हमारा देव॥१६॥ भक्ति वंत करि मांड सौ॥ दीया आप पयाइ
कूण मतै तूं ही करै॥ करता कबहु न आइ॥१७॥ साध निरंतर प्या जु कार नै॥ निमत देह नि रखै स॥ ध
र्म धरन जगनाथ जन॥ करत परगट हरि अंस॥१८॥ कहि जगजीवन जनम धरि॥ चरित किये ज
गि आइ॥१९॥ सब समक्ति अगाध की॥ अबिगत लष्यान जाइ॥२०॥ बहुतै सब नमे कि ये॥ दरि सा मित
न कोइ॥ जब आवै अपना हैवौ॥ तब ही अपनो होइ॥२१॥ कोरि देषे अरु करत हूं॥ कोरि हुं मी नू
अपार॥ सुन्यों न कोऊ राम सौ॥ नेहचि बाह्न हारा॥२२॥ आव है वै आदर बहुत॥ कबहूं न सै

कापल

दू कहा ॥ सो साहिब किन सेइये ॥ जनम कै मरहि मरि हुवा ॥ २४ ॥ दूलम सीरां का पति रख दिस्ता ॥ तार
गन समुंदा इ ॥ सकल निरंजन होंला इये ॥ रहि बिन राति मन जाइ ॥ २३ ॥ दादू जोति चमकै तिर
वरे ॥ दीपक देषै लोइ ॥ चंद सूर का चांदिनां ॥ पगार छलतां न होइ ॥ २४ ॥ छलतां चाछ लिनां इगा
॥ सुपिनां बाजी सोइ ॥ दादू देषिन भूलिये ॥ यूं जनिज रूप न होइ ॥ २५ ॥ दादू अंतर घट अलषला हके
कहूं के सादे नूर ॥ दादू बेहद हद नहीं ॥ सकल रह्या भरपूर ॥ २६ ॥ दादू पारषी मोहि पे सिकर
॥ देषे दिष्टि न धारि ॥ जलाविब सब भरि रह्या ॥ ऐसा ब्रह्म विचारि ॥ २७ ॥ दादू जालीनूर अला ॥
दहै ॥ लफा तीअर वाह ॥ सफा लीसि जदा करे ॥ जातीने परवाह ॥ २८ ॥ अमरन चंद प्रकास हीं ॥ अगन
थ पद सोइ ॥ नहांगाइये संसार मैं ॥ आवन न हुरि न होइ ॥ २९ ॥ द्रष्टि मै पूरणा ॥ ५० ॥ रद है ॥ पति
रत सुंदरि निह कर्म ओ ॥ साषी ॥ जो न हि दे सो वदन छवि ॥ होवै औं नवना ॥ इह सुरी किंदि
का जरे ॥ मनन ही रहि गैमं ॥ ३ ॥ कहा करौ वै औरकौं ॥ कलपहूँ छकी छांह ॥ हैत मनहा कसुदं ताव
॥ जहां सजन गलि बांह ॥ २ ॥ जो बहु गति पियु मिलन की ॥ सरिम मुक्ति मुदंदीन ॥ जिलहियु संगम सजन
तो ॥ धरक अंतर कहुं नकी माग्र ॥ कबीर दोजग तौ हम अंग सह्या ॥ यूं जमेर नां हीं मुक्त ॥ भिस्त न मेरे
चाहिये ॥ बाझ पियारे तुझ ॥ ४ ॥ सही ॥ धणी बिहूंणों पाट पटंबर ॥ मांही सेती जाले ॥ सही बिचिल

मंदी सो हांने ॥ मांन कैतें सर ह ना ले ॥ ५ ॥ साषी ॥ एक तुम्हारे आसिरे ॥ दादू इहि बेसास ॥ राम भरोसा
तौ रहै ॥ नहीं करणी की आस ॥ ६ ॥ रहणी राजस ऊपजै ॥ करणी आपा होइ ॥ सब ते दादू निर
मला ॥ सुमरण लागा सोइ ॥ ७ ॥ कहूँ न कीजे कांम सो ॥ सगुन निर्गुन होइ ॥ पलटि जीव तैं ब्रह्म
गति ॥ सब मिलि मांने मोहि ॥ ८ ॥ घट अजरावर ह्वै रहै ॥ बंधन नांहीं कोइ ॥ मुक्ता चौरासी मिटै ॥
दादू संसय सोइ ॥ ९ ॥ जब लग अपा तिस कौं मनता ॥ तब लग निरफल सेव ॥ कहि कबीर वै कौं मि
लैं ॥ निह कांमी निज देव ॥ १० ॥ दादू नांव निमति रांम हि भजै ॥ भगति निमति भजि सोइ ॥ सेवा न
मति सांई भजै ॥ सदा सजीवनि होइ ॥ ११ ॥ पंडित तौ गुपा सिकब्रह्म कौं ॥ सुनौ न सेवे आंन ॥ तब हित रहैयां सब
गई ॥ जब हि दे नयो आंना ॥ १२ ॥ जन जग नाण आ नाण तजि ॥ मिरि मना ण भून राषि ॥ आंन देव सब एक
बिना ॥ तरमुष क बहून नाषि ॥ १३ ॥ आंन गौर आट के नहीं ॥ सुंदरि सनमुष जाइ ॥ भागि बत जगमा
थ सो ॥ परसै पियु के पाइ ॥ १४ ॥ दादू आंन पुरष हैं बहन डी ॥ परम पुरष भरतार ॥ हूं अबला समके
नहीं ॥ तू जांनै करतार ॥ १५ ॥ सुंदरि कबहूं कंत का ॥ मुष सौं नांव न लेइ ॥ अपणे पियु के कारणै ॥ दा
दू तन मन देइ ॥ १६ ॥ मांडु मांडि आतीन है ॥ उर धरि राष्या सोइ ॥ अपना पणवां मेरि सा ॥ जो गौर आर कौं हो
इ ॥ १७ ॥ कबीर सीप समंद की ॥ रटे पियास पियास ॥ समंद हि तिनका बर गिनै ॥ स्वांति बूंद की आस ॥

पुं०ग० १९ ॥संमन ज्ञानि पपीहरा॥ मेघैं मनी च्चैनी रा॥ केज्ञो चेष्णु रपातिकौं॥ कै दुष संदे सरी रा॥२८॥ हते
६८ रूषि कप रयो घुमिज्ञानि॥ परमगु वाई चंच॥ कदि भिरमी के सैनेगे॥ यभुर चाविगदिषूंचा॥ २९॥
मोरवा॥ मीधी करीम वारि॥ चाह गतु रूपेनपै मरस॥ श्रुर रश्रुरिझ कौं वारि॥ मरतमनमांगेयो मोषि
मिसु॥ २०॥ साषी॥ हो त्याप रेस्र का संते॥ सांरगा रूयो सुमा रिश्य रनि परयो मुषकं चंदे॥ मनिबुद्धि
श्रावै वारि॥ २१॥ माहेबर षद्रु स्वांतिजल॥ आदेश्च समय्रपार॥ चाह ग केयन ही सरना॥ फुंचे सु
करद्ध विचार॥ २२॥ घरन चंच गतिचानकदि॥ प्रेम नेम की पीर॥ भरसी परख महाप्रपर॥ पिरिदे
दुहमीनीर॥ २३॥ श्रमफोरि कियो चेट वा॥ भषय स्यो नीर निहारि॥ भरसी द्वारि गचुगल माहि॥ का
ढेवोव्राहरि वारि॥ २४॥ श्रुतिदुरा मश्रागामश्रु मूर्ति॥ जलधर जलसंमुजांनि॥ भगमपपी होस
मतजे॥ नगाति स्वाति रति मानि॥ २५॥ मुरग मरग दादुरक मम॥ जलजो ग्रनि जल गेह॥ भिलस १
एक हि मीनकों॥ हे साचिलो सनेह॥ २६॥ जंजलमी न नुसंगमसि॥ द्वोक्ष्यनिवरत माहिं॥ मी
नमुहित श्रौर जलहिं॥ अपश्रौ रमासि नाहिं॥ २७॥ बांभ्रच्छ स्रु रूचडार घरि॥ जरत दीपजियार॥
मोहनमते पतंग के॥ संवेदीपइक सार॥ २८॥ एके नैनबिरा टके॥ निगमकहत देमित॥ सूर्हिच राम
कोरच्च्र नरिकियो॥ दिनकर श्रारिससिमित॥ २९॥ पाव कचुगतच कोरनित॥ भमम कर नके। ६८

श्रंग॥ द्वै विसूतिचि रवसिरि चढैौं॥ जोपाकं चाशि संग॥ ३०॥ चातक मीन पतंग मृग॥ सती स्रूर दात
रा हरिजनये इक इक लमे॥ इहि गुन अस संसार॥ ३१॥ नदी नर्म मिलैनें नमम॥ सबरूप समि माहि॥ दर्पन
एगुदा जमिल एक मनि॥ सि खी मैनदर साइ॥ ३२॥ श्रंग श्रांनि दसेत सजन॥ सज्ञन सरूप समांहि॥ जे
मै सिलामुदाज मिष्ठि॥ निरषत श्रापी नांहि॥ ३३॥ उवज संश्रु निकै मगनमन॥ द सैन देषो नांहि॥ ।
कपाहो इतो पाइए॥ निशूबा सुरजिय मांहि॥ ३४॥ कियाक रह्न केनांक रज्ञ॥ संगम छाडो श्रा स
दसैन कारनितल फिहू॥ जो लो जिय में सास॥ ३५॥ साहिबरहा न सब रहा॥ साहिनुजानतजा
इ॥ दाइ साहिब राषिए॥ इजा सहज अश्रुभ्राइ॥ ३६॥ दाइ साहिब मिल्यान सब मिलै॥ भेटे भेटा होइ
साहिब रहा न सब रह्या॥ महीन नांही कोइ॥ ३७॥ सब सुषमेरेसांईयो॥ मंगल अति श्रानंद॥ दा
इ सज्जन सब मिलै॥ जब भेटे परमानंद॥ ३८॥ दाइ रीके रामपरि॥ श्रनत न रीके मन॥ मीला श्रावे।
एकरमा॥ मोई साधु जन॥ ३९॥ लो कादेषि वदमुष॥ हंमुष देष्ण तक्या॥ इहीमेरा चंद है॥ भक देषै।
सुष पुन्या॥ ४०॥ वाबै देषि नदों हियो॥ तनमन सनमुष राषि॥ दाइ निरमल तन मगा है॥ सत्य चाव
दयहु साषि॥ ४१॥ कंश्रोई दरिम्न बारे॥ जोरन मांने तो इ॥ हियडाहें गहलो घरयो॥ की कोध्यांगी मिसे
इ॥ ४२॥ हरछोड़ै दीवांम को॥ मिमनै हर की दोइ॥ श्रा इ बैविनु वि आइकिमि॥ श्राद रकरत न कोइ

पुं०ग०
६६

॥४३॥ रहि हिरदै मां छोटै किकै ॥ गा। दौकि बाडै कहाए ॥ चरनन सरन बिन जिय कौं ॥ और ठौर नहिं ना
ए ॥४४॥ मै सांई दा जीव हूं ॥ सांई मैं मा सा स ॥ हिय डो कालीजे न हूं ॥ बिये सकाले ए स ॥४५॥ सार
दिल सांई सेरो रोषे ॥ दाहू सोई सयांन ॥ जे दिल बंटै हि आपनी ॥ ते सब सू हस्य यांन ॥४६॥ आपो
सौं पै रांम कौं ॥ हरि आपन पैपोता हि ॥ जगनाथ जग दौशा बिनु ॥ आपो दौ जे का हि ॥४७॥ और ठौ
र काला हुए ॥ मनन सयै है चारि ॥ जगनाथ [redacted] मन एक है ॥ सो हूं दयो मुरारि ॥४८॥ एक चित्त
एक हि दयो ॥ दूजे दयो न जाइ ॥ सांधी को सो थै नही ॥ जन जन हाथ बिकाइ ॥४९॥ मन मांहै सजन
बसे ॥ सो मन सजन हाथ ॥ नरक रहथी मांहि नर ॥ अरसपरस जगनाथ ॥५०॥ पतिब्रता पत
बरत मैं ॥ तिम सधन चित सत आंन ॥ जगनाथ चित जगति य ज ॥ इक मन सेव समान ॥५१॥ सुंद
रि सो सन सुष रहै ॥ पिय की सेवा मांहि ॥ जगनाथ हि सि आन की ॥ कबहूं चित सत नाहि ॥५
२॥ आंन ठौर षर चैन है ॥ सुंदरि सुरपतो सेष ॥ के सत ति सन सुष रहै ॥ के चिजन हरत सेष ॥५
३॥ समन सैं कर बादरी ॥ जिनि द्वा वौं अरध ॥ मास्ता के कारनै ॥ बलि कीजे सरब गा ॥५४॥ क
बीर जे मन लागो एक सौं ॥ तौ निरवार्‍या जाइ ॥ दुराइ इं मुषि बाजनां ॥ न्याइ तमाचा षाइ ॥५
५॥ कबीर तिन कौं सुष कहा ॥ कीनै अनत जु ईग ॥ जिनि मन लाया एक सौं ॥ ते अति सुषिया दी

राम
६६

ग ॥५६॥ बे गांनै सब लोग है ॥ आप नै कौ तन इस्त ॥ जे जन लागे ऊमहि सैं ॥ ते बूजा हिं मजकि ते
॥५७॥ सोषी ॥ किन्ही किन्ही कोइ ॥ मुक्ति नि मांगी हि मांहि ॥ किन मरी जे रोइ ॥ जे हो चित्त न आवई
॥५८॥ साषी ॥ दाइ एक हमारे हरि बसै ॥ इजा मलया इरि ॥ दूजा देषत जाइ गा ॥ एक रह्या भरपूर
॥५९॥ सो हं ब मारा ए प्रभु ॥ सो हं न सरणा ॥ जस त्री या मैं त्री भुवन ॥ त्री पै त्री हैम था ॥६०॥ संमर
थ सांई हूं बड़ा ॥ ता के बराबर न कोइ ॥ आदि मध्य हूं दए है ॥ सो जग मसै हो इ ॥६१॥ सोई हीत कबा
हरी ॥ कौ फी हुन लदांतै ॥ जो सिरि ऊपरि रहे षड़ा ॥ तो लथो मोलक राजे ॥६२॥ मो ऐइ द पलनै
नु बि ब ॥ न स जो ना स जि मांहि ॥ मित मराति अरजगा सुरति ॥ पा संग उत्तीन आहि ॥६३॥ इ
ति सरणी ॥ ५२ ॥ २५ पक्ष ॥ मनि ब्रता बिने चारणा ॥ साषी ॥ योग भोग दो इद्दी पजग ॥ मह्त्र मसार सपद
नो मदर यांन तप किया ॥ बा हि गवाइ देह ॥ ॥ चोपई ॥ बादि देह अस ऊद रूपाइ ॥ एको बे नाकै
उन हि सु छुपावा ॥ ड बिधा हरि कि रैजी को इ ॥ तन फिरि दोइ फाक कतु हो इ ॥ ॥ साषी ॥ यमत
सुष न इत्र जगु ॥ कि ये जु ब जोते मित्र ॥ जिनि चित बंध्या एक सौं ॥ ते सो वे हि सुष नित्र ॥ ॥ तजे अ
नेक हंका दिरवै ॥ संकरत चित धीर ॥ बड्डा बे ल्पा निकाल्प चिमि तै ॥ अल्पन इक मुष पीर ॥ ॥ सो वो ॥ ए के
पिय सौं षेल ॥ इज्ञा दिल तै इरि का रि ॥ या हति लो ग्राहि तैल ॥ जो बै जी व जग न्न को ॥ पा ॥ साषी संधी ॥ सो है

सुं०ग्रं०
३०

मीयें न्नु घुरें ॥ जो मीयें मीयं नि ॥ अंदर थी ये वो त्यो करें ॥ मंदो थि ये वियं नि ॥ ६ ॥ साषी ॥ दो ।
मन क्रूं हरि श्रयात ॥ मायादासी देषि ॥ पतिव्रता गनि का मूं होई ॥ उलटा कौ बितपेषि ॥ ७ निका
॥ धरी हयापति बोल छो ॥ मां न्यो बतनि संका ॥ यातिजा पे बुंटन हा ॥ सो जीब मे कलंक ॥ ८ ॥
दर बत्यो अबिन प्रीति कै ॥ गनिका कोटिक टा छि ॥ कत पूजे रमाइला ॥ उलट हयमन क
तरा छि ॥ ९ ॥ मन बच क्रम करि भि सत्त्व कहि ॥ जो चित उपजे चेत ॥ साई कौ बिरहा सलो ॥ मां सव
यन का देत ॥ १० ॥ चौपई ॥ सखी हेत मांहि कौ जनन्त्राव ॥ पिय बियोग पिय होइ मिलाव ॥ आप
हि वियोग के तक रहोइ ॥ ताको इसर स चेन कोई ॥ ११ ॥ साषी ॥ जो मन मद हरि चिंरत निबसे ॥ तोतन
मस्स नत नजाइ ॥ तन हरि पे मन अवतन ही ॥ ताहि नव्यास पत्याइ ॥ १२ ॥ जगति हीन नट जु संकत्या
वि अति दीह दबिरह ॥ भगति नेतव्यार हित ॥ करै जब रोरह ॥ १३ ॥ जग रुचि कुं कक लंक जा हैं
हरि अन जां न जुं चंद ॥ आनंत पा सकल बिंब लत हु ॥ तकत दाउ तिमंद ॥ १४ ॥ जे पो गसोंम ध्ध घरम
हत ॥ अति कि चेतन के नीच ॥ आनंद धरम छोटे बडे ॥ रति तिम निबजा बीच ॥ १५ ॥ इमि संपू
ग ॥ पद ॥ १२७२ ॥ आनंद निं चार १० ॥ साषी ॥ प्रिथी दा सबां णी बिष्णा ॥ छ मि मव सी बि ज़ोश ॥ कांप राम
पाथरी ह्हव से नहीं ॥ अमोघे साच सितो इ ॥ १ ॥ प्रिथी दा सबाणी बिष्णा ॥ गोविंद छंदि मंगांधि ३०

त्रिशु बिम
वार०

॥ कांइ इं दीन जि सायर तिरसि ॥ के कर बांधे के गि ॥ २ ॥ मैं हरि तू जि गुंगा मांन संगा ॥ जो डगा करे ज
तंन ॥ जांणि न मित चित बांध्रिया ॥ गलिमा दहार त्त्र ॥ ३ ॥ जो नरु मर की रति करें ॥ बकला
ओस समान ॥ मनो उ चिहु के नर हवां ॥ काग केलि कल्याण ॥ ४ ॥ जो नर हरि की रति करें
॥ सर अछिर नहीं जान ॥ मान सरोवर सु रूप्य त्वां ॥ हंस केलि कल्यांन ॥ ५ ॥ बांनी हरि के
नाव बिन ॥ मांनत मानव अंस ॥ काग के लित द करें ॥ जग मां थुजनं हंस ॥ ६ ॥ कांदे सु
नै बांनी कहू ॥ रसरो व कत मितापा ॥ जगनाथ हरि से तो बिन ॥ इणा सकल वे आलाप ॥ ७ ॥ ष
थुज मैं अव राङ्गणि ॥ गुरा छदे गोपाल ॥ अगि गूथे मोताह लां ॥ जो रोम ड गलि घाती माल ॥ ८
॥ कितां हरि इ स्नुह्हि त्र ॥ अमि कांयम जे अस्ं संत ॥ चिदानंद छा मेवरण ॥ मड आलिं गने मं
न ॥ ९ ॥ हरि पर हरि करि आर सो ॥ जो सबितू फी बांधि ॥ तक छमेल गी हता ॥ पत्थर कै गल
जांनि ॥ १० ॥ रण्सारांमसि सारियो ॥ अनि संन्या रिअ सापि ॥ रति छंडे पति आपरो ॥ जार बिछली
जांणि ॥ ११ ॥ चौपई ॥ अपने रसि आ पगर बांनी ॥ साई सो वत संदरि जांनी ॥ न वही जानि यह दा ।
षे सीली ॥ सेज एक पे मिलन डहेला ॥ १ ॥ साषी ॥ कबीर मन सत साजे कामनी ॥ तन मन वरही सं
जोइ ॥ पियं के मन नि मांने नहीं ॥ पटम किर्दे का होइ ॥ २ ॥ पीव न पावे बावरी ॥ रचि रचि करे सं ।

गुं॰अ॰
७१

मार॥ दादू फिरि फिरि जगत सौं॥ करै गी बिभचार॥२४॥ प्रेम प्रीति सनेह बिन॥ सब झूठे
स्यंगार॥ दादू आतम रत नहीं॥ क्यूं मांनै भरतार॥२५॥ कबीर काजल तिलक करि॥ भूष
न सकल बनाइ॥ पति कौ सो पतिब्रत बिन॥ क्यूं करि मन कै रिझाइ॥२६॥ करि सिंगार
सनेह बिन॥ कांमनि कंत रिझाइ॥ कबीर कहै कटाछि सब॥ मन तन अंनत लगाइ॥२७॥
दादू जग महि बिभचारिनी बावरी॥ छोड़ सकल स्यंगार॥ महा न संवारे आपकौं॥ जहां नीत सिंभर
तार॥२८॥ दादू तजि भरतार कौं॥ पर पुरष रत होइ॥ ऐसी सेवा सब करै॥ राम न जांनै सोइ
॥२९॥ पतिब्रता पुरष सौं॥ बचन मन नैन मिलाइ॥ कहि कबीर बिभचारनी॥ तन मन सु
रति समाइ॥३०॥ माला तिलक बनावई॥ हरि जी सौं हित नांहि॥ कबीर आंन उपासना॥ सो
बिभचार कहाहि॥३१॥ कबीर हरि गुर साध सौं॥ बिमुष दहै बिभचार॥ मन बच क्रम सनमुष
रहै॥ सो पतिब्रती पियार॥३२॥ सुत बित मांगै बावरे॥ सो हित सौं निधि मेलि॥ दादू वै निरफल गये
जैसै नागर बेलि॥३३॥ स्वारथ सेवा कीजिये॥ तातैं भला न होइ॥ दादू ऊसर बाहि करि॥ कोठा
भरै न कोइ॥३४॥ साषी॥ आंन पुरष की सेवा कीनी॥ ऐसें पुरष न हिं ध्याया॥ जन रज्जब नाथ बाव
री सुंदरि॥ देखि जन मगाया॥३५॥ साषी॥ भवन आप मो छांडि कैं॥ पर घर आई लोइ॥ बात डि

राम
७१

यां घर कत छंडे॥ चूल्हे दाखि दहोइ॥३६॥ चौपई॥ पौरी पर हरि आप मनी॥ दौरी पर कै भौंन॥ बौरी बा
तन मांन ई॥ दौरी लागी कौंन॥३७॥ साषी॥ बनिता नृप जन ओ फिरै॥ बिभचार जु पर द्वार॥ जग न
थ ना कौं कहै॥ तन बादी बिभचार॥३८॥ मन बिष्वल कहूं न दी॥ तन ब्रत निं सु बिकार॥ बिभ
चारी जगनाथ तें॥ जिन के पंथो द्वार॥३९॥ कहा पंडित ग्रहरष कहा॥ कुदारा बकार क॥ जग
नाथ हरि बिन करै॥ सो बिचार कलंक॥४०॥ हरि ललिपि छन क मिंओ करै॥ सो पतिब्रत सु सार॥
जगनाथ जगदीस बिन॥ करि बिभचार असार॥४१॥ सोरठी॥ केवल कि एक नाइ॥ देदी देदी द्वार
कौं॥ मातैं निझुरे न्याइ॥ निंमत जैं लछिन लागै पो॥४२॥ साषी॥ जिनि चषि निरष्यो वदन॥ अर
कौं नैं सुष चैन॥ सो अब औरनि तन टरै॥ द्वार परै तिमन नैन॥४३॥ साषी॥ आगै अंनत तणोइ॥ म
अच्युर रोम मियो न दी॥ माथैं तिरिंगि मा थेइ॥ न्याए ना कारे नमें॥४४॥ हरि सब लाक रि दाण॥ दे
वजोड नमियो न दी॥ तिणि आव लिपि नाथ॥ बादे वादे बीन दौं॥४५॥ साषी॥ धमेत ओपो धमकारन
॥ नर मिरथ न अग्पान॥ जं बालि कन गाछाफि दे॥ देषे नैं कं मिवान॥४६॥ पियो उर सरु चिम
नि कै॥ नृप नंजरित रु राज॥ अब कत्तस कन नपरि भरर॥ लुटमन आवत लाज॥४७॥ और
न कं जरर भसल्ला॥ बीफ्हत णान जाइ॥ जे भी त्यां अवलेह णां॥ त्यां कां परमल होइ॥४८॥ ओस्यां न प

गु०अ० हरि सत न बिन ॥ सो दुष देहै सुष नांहि ॥ जैसें पतंग दीप तंग पर ॥ डारत पावक मांहि ॥ ३९ ॥ दा
७२ दू जे कछु कीजिये ॥ अबिगति बिन आराध ॥ कहिबा सुनि देषिबा ॥ करिबा सब अप बा
राध ॥ ४० ॥ सब चतुराई देषिये ॥ जे कछु कीजै आंन ॥ दादू आपा पोसिये ॥ पिय कौं ले
जु पिछांन ॥ ४१ ॥ इति सम्पूरण ॥ पद्य १३२१ ॥ हरि हेरा को अंग ॥ ७ ॥ साषी ॥ को साधू जन उस दे
स का ॥ आया इहि संसार ॥ दादू उस कौं पूछिये ॥ प्रीतम के समाचार ॥ १ ॥ समाचार स
ति पीव के ॥ को साधू कहेगा आइ ॥ दादू सीतल आतमा ॥ सुष में रहै समाइ ॥ २ ॥ कबीर पर
रा बत पर बति मैं फिरया ॥ नैन गवाये रोइ ॥ सो बूटी पाऊं नहीं ॥ जातैं जीवन होइ ॥ ३ ॥ दादू प्रीत
के पग परसिये ॥ मुझ देषन का चाव ॥ तहां ले सीस नवाइये ॥ जहां धरे थे पाव ॥ ४ ॥ साचे
सांई सोधि करि ॥ साचा राषी भाव ॥ दादू साचा नांव ले ॥ साचे मारगि आव ॥ ५ ॥ लष चौरास
जीव जे ॥ जाति थुलि बिव से अपार ॥ जे हम बूझें कंत को ॥ तुम कहो बिचार ॥ ६ ॥ तीरथ स
षा नां कहे ॥ नां दे षत्ख काहेत ॥ राजा पर जौ करे ॥ करां कौन की सेव ॥ ७ ॥ परबत में नां हीं के मो
हैं नांही धरणि आकास ॥ का हूं कोई जन कहे ॥ जाके घटि परकास ॥ ८ ॥ चंद सूर में नां कहे
पांणी पवन अकास ॥ का हूं कोई जन कहे ॥ जाके घटि परकास ॥ ९ ॥ कबीर बन बन मैं फि

र्या ॥ कारनि अपने रांम ॥ रांम सरीषे जन मिले ॥ तिनि सारे सब कांम ॥ १० ॥ एक मनों स्वामी रहे ब
अंत मिले सो होइ ॥ दादू जाके मनि बसे ॥ ता कौं दरसन होइ ॥ ११ ॥ इति संपूरण ॥ प ४ ॥ १३२२ ॥
॥ पसम प्रीति अंग ॥ साषी ॥ कर रांग रंग रादू ॥ जल बिन कैसी देह ॥ बिन सरोवर प्रीति ज
ल ॥ सो हो सा सपिरत ॥ प्रीतम अैसी प्रीति करि ॥ जैसी निस चंदा हेत ॥ चंदा बिन निस सांवरी
॥ निस बिन चंदा सेत ॥ जगनाथ हित परसपर ॥ बिछुरे दुष मुरकाइ ॥ जल बिन मछरी न
रत जे ॥ तिनि बिछि न बारि बसाइ ॥ मन मैं रूप नीर जैसें ॥ अन मिल जैसे जल तेल ॥ जगना
थ मिलि मिलि मिलो ॥ हेल मही बिन मेल ॥ पेपीम्ह के कारनै ॥ या हत अपनी देह ॥ जगना
थ जल जैसें करी ॥ राषो सजन सनेह ॥ प्रीतम मन मैं कर रहिहू ॥ बोल पोत सतुराय ॥ जैसे सू
ति दरपन मैं हैं ॥ रूप नपंनि पिराय ॥ बिनो पर सपरपे मरस ॥ बेहेम दित बोहार ॥ नलिप
राग हूजो रतै ॥ बेलै हीत चोतार ॥ नाल अस मज ड जोग ॥ बिमल प्रगट सई जोति ॥ म
जन हीं सजन मिले ॥ कौन परम सुष होति ॥ और कछू जेतो लिप ॥ हो इ मिलि है सो होइ
॥ मन न मन हीं मन मिले ॥ है मन कहे न कोइ ॥ मन मिल बूझ तसु एक है ॥ अन मिल है न
मिलो हिं ॥ जगनाथ जो मैं सब ॥ परगट छानैं नांहि ॥ १० ॥ कहिबे को तन सजन वा ॥ जगनाथ

गु०ग० न हि लीन ॥ परचे मनि जं रंक मन ॥ परम पुरस सौं लीन ॥११॥ मन का दिक जं मिलत स
पत्र मि ॥ जगनाथ जन नटि का ॥ साध सिरोमनि सबनि कौ ॥ रुचि मतौ मन एक ॥१२॥ कबीर स्वाम
मी सेकृपा एक मत्त ॥ मन दीमैं मिलि जाइ ॥ चतुराई रीझै नहीं ॥ रीझै मन कै भाइ ॥१३॥ चौपई जग कै
न की लगन निज मन गुर जांनै ॥ हरि हित जन परिहरै सु कौन ॥ जगनाथ बहि जरी तंत
पर्चापरी मन ॥ मिले जु अमिलक रवमर वौंन ॥१४॥ इति सपूरण ॥ पप ॥ रढप्रण ॥ हेत प्रीति सनेह
अंग ॥ साषी ॥ प्रीति रीति मन निरमल करि ॥ हरि मिलि रहे हजूरि ॥ लाछि जो जन पर
रवि बसे ॥ नहीं दरप न ते दूरि ॥१॥ कबीर कमोदनी जल हरि बसे ॥ चंदा बसे अकास ॥
स ॥ जो जाही का भावता ॥ सो ताही कै पास ॥२॥ कबीर गुर बसे बनारसी ॥ सिष समंदां त १
र ॥ बिसार्या नहीं बीसरै ॥ जे गुन होइ सरीर ॥३॥ प्रीति परम गुर साध सौं ॥ गुरै निरंतर देह
॥ नगन रमा हौ जं रहै ॥ जगनाथ निज नेह ॥४॥ अंतरगति जो हेत है ॥ अरु नाथ को हजूरि ॥ ज
गनाथ हित बाहिरो ॥ मेरा है पर दूरि ॥५॥ घनवा हगावन मागजुं ॥ चेवक कौं रस नेह ॥ कमल
सूर आसिक मलमी ॥ जगनाथ हित एह ॥६॥ कबीर अपनें अपनें नेह कहु ॥ मन को नेह करा राम
इ ॥ नेह जु कीया माछली ॥ जल छाड़ै मरि जाइ ॥७॥ हित कारी सो आवि मिपै ॥ दिन दिन अधिक सनेह ८ ९३

॥ कहि कबीर जं नीर सौं ॥ मछरी देह बदेह ॥८॥ मांन मराल सु मीन जल ॥ धन निरधन कौं चीति ॥
सु मन अक्रत धन चेत जं ॥ जगनाथ हरि सौं हित ॥९॥ किरपन हित जं माल सौं ॥ सुरति रहै चित मांहि
॥ कहि कबीर करतार सौं ॥ प्रनि नेह कराहि ॥१०॥ कबीर ओ है आ का भावता ॥ अहि तद्दि मिल
सी आइ ॥ जकौं तन मन सौं पिया ॥ कबहुं छाडि न जाइ ॥११॥ मन दीया तिनि सब दीया ॥ की याप
रम बिचार ॥ हरि से प्रभु आतें लहे ॥ सब सुष जिमि तिवार ॥१२॥ मोहि क लपत रकां मगो ॥ सिषि चि
ता मनि लीन ॥ प्रीति लै सके समनही ॥ जाके हरि आधीन ॥१३॥ परम पुरब सि प्रीति को ॥ जगना
थ जन होइ ॥ कंती सुत बसि कृष्ण जं ॥ नयो टहल वा सोइ ॥१४॥ सुरति सु मन मिलि कहत हैं ॥ प्रीत
कहि न पध रात ॥ जगनाथ आधीन हरि ॥ जं बालिक बस मात ॥१५॥ प्रीति न सरिषा पुन्य कौ ॥ स
क्या सबद बिचार ॥ जगनाथ हरि हेत बिन ॥ आन धर्म बिसतार ॥१६॥ अगम रंगि है अब सहित बसै
॥ अजित हि जीतै सोइ ॥ इसी प्रीति जिहि घट बसै ॥ तहां सु मांन न होइ ॥१७॥ रिमो रही आधीन नित
न ॥ मिहित बंद हो नां हि ॥ तन मन धन सुबारो कहा ॥ बिन सिज्या छिन मांहि ॥१८॥ मन प्रीति सौं ले
भका ॥ सो मन करा नेह ॥ कीली दीसै बलाइ ये ॥ हटै छपर मेह ॥१९॥ घट घटहू प्रमाप कहि
मो मन मेले भिन्न ॥ तो मुष मो आनि रषिके ॥ हपति हो तन हि चित्त ॥२०॥ गोपकं है संसार मे ॥ जो प्रीत

गुं०ग०
७४

हीन होइ॥ तौ सुरपुरकौ छाडि सुष॥ नरपुरि वसै न कोइ॥२१॥ पङ्कज रजनि हां मनेह लष
॥ तहां न अस गुनवोर॥२२॥ चोप थि चंद निंदत सबै॥ वंदत निश मन चकोर॥२३॥ सज्जन दुर
जन के कहे॥ मानि रहै मनि रोस॥ जाज काज मब ही थकै॥ जग बस ही ना पोस॥२४॥ सज्जन दु
रजन के कहे॥ तियति विधरी जु भाव॥ हम तुम प्रीति चपुनी॥ लाष लाष कहि जाव॥२५
छाया फल तन सब प्रान प्रिये॥ सब तन न लये तान॥ सज्जन मिलि दुरजन मिले॥ ला भै सज्जन मान॥२५॥ न
पत्र कहे तर वर सुन हु॥ नहिं कछु हम न मोर॥ पार्यो बीच व सत रिति॥ तहां जां जं न हां तोर॥
२६॥ तरवर सु षै पत्र सुन्य॥ जो हम सौ हो हेत॥ तो दुरजन जन के कहे॥ सजन पीठि क्यूं देत॥
२७॥ पत्र कहे तू रसा भलो॥ मोम विनरी जु भाव॥ मिलि मोटे हूं बीछुरे॥ अव ाथि बनी ते आव॥
२८॥ बीछुरि मिलत सु षि कसु ष॥ जे सजु न ते दिखाइ॥ पिम पलट पाहै स षी॥ बीछुरि मिलत के
हा॥२९॥ हमतुम मन एके भलो॥ अंतर खुरी हयाल॥ राइ परी विधि पस्यौ रे॥ जां म्यो घास गुपाल॥
३०॥ एतो फूटां ही जुडै॥ कर कंकन सुवरन॥ एते फूटा नां जुडै॥ इक मोती अरु मन॥३१॥ मन
नग मोल अमोल है॥ तोडि न जोडयो जाइ॥ मणि यां नां ही लाष का॥ कीजे आंच लगाइ॥३२॥ सेक
तो डिर जोडि ए॥ गांचि गंठी ल्यो होइ॥ जे करस तामि रिपडे॥ अति किरकिरी सोइ॥३३॥ आगां मनमि राम
७४

सतिकरि॥ हूयादेह न सांधि॥ सायर फूटो नीर गो॥ मद्दली पाखि न बांधि॥३४॥ पीपा जे मन मुरथे छे॥
तिनिं मों मिलि पिछात्रा॥ मनि डोछै कपटी देवे॥ तिन सौ मिलिम लाइ॥३५॥ चोपई॥ हिम हीइ पहली र
चिहि षल्लावा॥ बहुरि गिधरि स्थै न आवा॥ ता सौं प्रीति करै मति कोई॥ पहली राचि रचि तफिरि है होई॥ १०६
३६॥ साषी॥ सजन सु सम कि मनेह करि॥ सज्जन देषि सवोल॥ जण जण से ती जिनि करे॥ मिको
स जो इगो मोल॥३७॥ चोपई॥ ऐसी प्रीत मकं वहू कीजे॥ हसे लोग अरु आपन छीजे॥ ता सों प्रीति
करौ अधिकाई॥ जो उपजे तो कब हूं न जाई॥३८॥ साषी॥ समन न मरियांदे जना॥ नेह लगावन हार
॥ वोरे निबाहन को नहीं॥ लोग द सावन हार॥३९॥ प्रीति जु जासों कीजिए॥ अविहर तहां अ
भंग॥ आदि अंति विहिरो नहीं॥ रहै एक रस रंग॥४०॥ पीछे ही जो नांच रघे॥ तो समकी मन मांहि
॥ सत्य कहत हो सज्जनो॥ लोग हसाई नांहि॥४१॥ ए हम ति जोनै सज्जनो॥ प्रीति घटै मम चित्त॥ मरै
त सुमरत ही मरो॥ जिअंत सुमरो नित्त॥४२॥ मोहन बात सनेह की॥ कहन सुनन को नांहि॥ सो सु
षदेष्यो ही बने॥ जो बीतै दुहु मांहि॥४३॥ सांच ता की प्रीति कौ॥ साषी नांहिन कोइ॥ के जो जाने जिन
बसै॥ कै जिहि लागी सोइ॥४४॥ इति सप्रपी॥ प०॥ १८८॥ प्रीति सनेह विप्रीति॥ साषी॥ कंदे संते ही
मीन जल प्रीति रीति तिन हिलेस॥ नीर रहत किमी चे चे रतो॥ उर्ध्म छप र वेस॥ जारत ही पप तंग को॥

गुं०म० ७५

जगमन अथिर जु कोऊ कहा सुसम जत हित अहित ॥ जो सनि मिलाहो इ ॥ ३ ॥ दुषी नहीं दुष
मित्र के ॥ तहां प्रीति नहिं जांनि ॥ आपन सी व्यापै जहां ॥ तहां प्रीति पहिचांनि ॥ ४ ॥ प्रीति सम प्री
ति जु पेम की ॥ जो जिय जानें कोइ ॥ पेम बिनां परसम भइ सो ॥ दरसन पमन तें होइ ॥ ५ ॥ पेम जु
मा ह्यो हरि तें ॥ एकनि के घट मांहि ॥ बधमृत की आगि जूं ॥ निकट गये कछु नांहि ॥ ६ ॥ प
रूषी बत्य यां जोति नांहि ॥ अधियारो घट गेह ॥ जहां सनेह सोई दिपै ॥ कह्य मंदर कह्य
देह ॥ ७ ॥ नेह निहोरें नन्नष्ट वे ॥ माटो न होवे प्रेम ॥ कहो देवो आरति कहो ॥ कहो पेल्यो चेम ॥
८ ॥ सोरठा ॥ सम नर सको रीति ॥ देषि सो बिन्हे हूं षपे ॥ रसदी मैं बिपरीति ॥ मांभिगां भेरा
सओर दूहो ॥ ९ ॥ साषी ॥ स्यामति न जु सो प्रीति रस ॥ कमनि रवा छहो इ ॥ अनु गुन येक
चित्ति धरें ॥ गुन बक्र रषै गो ॥ १० ॥ ज्यो ज्यो करत जाज छो ॥ जिनि सी ले ब्यो साउ ॥ ओ जी यं इ
ज्यो सडु नां ॥ जा फिरि पी ओ पछिताउ ॥ ११ ॥ समदी ॥ करिक रिदे षी को दिविषि ॥ कहुं न भि
वहे नेह ॥ जो जल मिलिता हित लमिलिये ॥ नवल सयान परह ॥ १२ ॥ साषी ॥ प्यो धसलिल साइ रस
रे ॥ तिनछिन घटत न बार ॥ एक सरीर रहू कबहू दको ॥ कहु निसदिन इकतार ॥ १३ ॥ यो ध्रयास राम
सार मे ॥ बाप पूत न हिद्दम ॥ रंच कजल चोरी दयो ॥ मरिभरि अंजुरी लेत ॥ १४ ॥ साषी ॥ अंगु ७५

री गिलतां पञ्चो गिलइ ॥ पञ्चो गिलतां बांह ॥ इहां की कहा जो कहइ ॥ ते दन दीजै तांह । १
॥ १४ ॥ साषी ॥ हम रै ई हथियार लै ॥ हम सो मांभै कंक ॥ एक न दीजै आपनां ॥ की जै तिस की
संक ॥ १५ ॥ सजो वेदन अष्प ए ॥ जे मजु रामु पिया र ॥ इक्षांहहा पितपडे ॥ अधी अधी वार ॥ १६ ॥
२ भेद सुलष्प रा अष्प राये ॥ रषे मं किहियां ॥ जर जो धनकर रौक हो ॥ कहांन संभलि सांह ॥ १७ ॥ अ
रसो धन नहीं नांज स्यौं ॥ अपनो दोष बिकार ॥ दाष्यो दाग तक्षम मैं ॥ रोग कर नहु पमार ॥ १८ ॥ जम
तराइ नेह हि घटै ॥ फिरि नेही रिप होइ ॥ जे चिकनाई तेल की ॥ षरि मैं देह बिछोइ ॥ १९ ॥ कवित
दास कीड तगु रहि ॥ पुहुं झती जु बप्रीति ॥ अब पर सतन हिं कुज पाक हो ॥ सजन सुइ की री ॥ २० ॥ ति
देषि सु की नीबद्धम हि ॥ नेह बिहूं न काढ ॥ अवगुण अवगुणाच हि लीये ॥ सुगुणा मन पूत । २
ल ॥ २१ ॥ मिर तित राज तो लिप ॥ मिह हकि तामण हो ॥ २२ ॥ चतांतै षो न हीं ॥ बिरच तिट्यांन सोइ
॥ २२ ॥ सोरठा ॥ जिसे दो ढो दीह ॥ उदारी कतो मु से ॥ सूसी जे बिण नीह ॥ अघो बि णां रा ल्हबि साहि ए
॥ २३ ॥ साषी ॥ जहां वादिन हिपाइए ॥ तहां डुषक के दे बलाइ ॥ अगर अंध की नारि ज्यों ॥ संमन बीचि
हीं जाइ ॥ २४ ॥ संमन पर घर जाइ कहि ॥ दुष आपणा न रोइ ॥ इक तो सो सों पाइ ए ॥ सलान कहि दे के ।
॥ २५ ॥ दुष्पन कहि ऐ किसी सौं ॥ कर षत मह हि एमी मन ॥ जिमि किरै ज ल हंदतै ॥ जां मतै हे ज मदीश

पुं०११० ॥२६॥सज्जणा गुण गोम स्रमुगुणो॥सज्जण ये मन ते म ॥ हंदो ले ही त्ता किया॥ओरी पाथर जे म॥२७
७६ गिरमोरांस रसा रिमां॥अन्न बाइ ग्नि सू वांह॥मित ज्ञ अघ र जन मझे॥बी मरि वो मु वांह॥२८
मोर सिंघा विन मोर ड्डी॥पुल कि नग र जिन मे द्या उर मी मरयो न म रि मि ट्यो॥अ सो वं धेमे
सनेह॥२९॥सोरठा॥नागरा निपं गो नेह॥क ड क घन कं चक पि लो॥पा ह णक परिते ह॥
निहचै नी वह सी न टी॥३०॥नागरा नि वी दो नेह॥ज राज ण आ गलिज त्तु वो॥स जेम त्या गे।
देह मृ टैवे सी मोह नी॥३१॥नागरा नवे लो नेह॥चो षो दी से चारि दिन॥ता व न ल गे ते ह
जेह सु रंगो जा लगे॥३२॥नागरा नि बाह्ल नेह॥सज्जणा चो ल म जी व जिम॥ति णारी पारि
घ ण दे॥ता ह लो ह ता लगो॥३३॥साषी॥सर के सर क स नेह की॥उप जि उ प जि डुरि जा इ॥दे
षो सज्जण ला गई॥ सर णां टो न हि जाइ॥३४॥दुनि मं पुर णा॥ प०॥१६१५॥मन मेल्हू अमिल
ण॥साषी॥सज्जणा अलुणा ति टक डा॥जे जाइ इक णि चो ति॥ दीयो ह लादे मि ले॥ओषर गि
ल हो न भी ति॥३५॥इक अग्र गादी टक डा॥इक नि यड दी इरि॥ सं टू सा सइ णांत णा॥आवइ
प्र वत चू रि॥३६॥अा मनो हू गर घ णां॥आडा घ णां पहला स॥ति सज्जणा कि म वी सर इ॥व
ज्र गुण त संणा निवास॥३७॥जो वन्न दा पंजर इह॥कारु करि का हिर दो इ॥सज्जणा आडा बी
पीतिसंभे:॥बि ११०
राम
७९

क वन॥चित्त दिन आमा को इ॥३८॥जे सज्जण सो जो इ णां॥तो ई दि पां मं झा रि॥जे उर अन घ
र अंग गो॥तो इ मन मं दां पा रि॥३९॥पं ष हो इ तो उ डि मि लां॥मन म पहे इ हि त क्षा इ॥समन न पंषन
पाइ व लां॥रह्या चो वल्यो ला इ॥४०॥प्रीति न सही जे जी य भै॥ तो पंषा का सा हो इ॥दे ल ष चं दा क वल
ज्योति॥स्तुत समा नो सो इ॥४१॥मिल ण सु हे लो सज्जणां॥ज्योत विउ प जे नेह॥नल नी ज ल ह सि
सत्रि गमन॥नि न वी दे देह॥४२॥इ सफ सिंघ णि रा तो रदे॥जसमन लागो उ क॥वर सन हुर के।
वसि परे॥न ह्री वो सम्र व मुक्त॥४३॥सोरठा॥ हं जांणो करता र॥जो वे सज्जण वी सरे॥दिन मां दे क
इवार॥संभारी सास हि प हिला॥४४॥गाथा॥सज्जणा वस ति इरे ह॥चित्त इ मे ह इ णक्राति का सनो॥
ग रज्जति ग इ णामे ह॥मी रानाचंति मव ल णा॥४५॥साषी॥मिरा मोरां दा ड रां॥को इल व वी दा
॥रवि स तां ज न मणो॥ मेह मेह टीत्या ह॥४६॥ता क्या॥इस र इसु र हि वि छो॥ब मैंत ग्नि को इ
ल सरइ॥विंक सर इ गा पूरो॥ति मअ म्र मग णां उ मं सर इ॥४७॥साषी॥धर अंवत रवज्जते भयो॥मन
को अंतर नो हि॥सुत सदा इक वो रहो॥जो चिं जंटे चित मांहि॥४८॥ इ रि इ शि त व मन मिले॥व
व व ज्जत त उ साथ॥मन न जी क परि नो॥मिले॥मन अन मिल जग नाथ॥४९॥मन न मि लियां त।
न वेग ला सज्जन सन मुष साथ॥ति मे न मि मेंजां नि ये॥मन मेल्हू जग नाथ॥५०॥मन मेल्हू मिल्ल

मुं० भा०
७७

यं सुषी॥ सू मिलत मिलत तदुष षढोइ॥ मेल मुक्ति जगनाथ जन॥ अन मिलत बंधन सोइ॥२०॥ तुम म
जि चित्त आंनो नेह रह्यो॥ हरि संतनि कै बास॥ नैन मिलायो जोड़ि जो॥ चित्त रहत तुम पास॥२१॥ सुंदर गा
इ पिय नेह गायनु॥ हरि विदि मग यांह॥ बिन सगुन बाधइ सजु ण ह॥ तेह कृपा दरवत तोह॥२२॥ मई
गा सुंगो नै हंडो॥ हटि सिइ रियायां ह॥ बिवुरी दोइ चवगा णो॥ जिम रियां बो हरियां ह॥२३॥
जो लौ सजुण नीयरै॥ तौ लौ नैन मिदी व॥ बीवुर तां यजु गुंन भयो॥ हियरै मांफ पई व॥२४॥ क
वल नाल सजुन जन हि॥ हियै जु पेम समाइ॥ जो बिछिवि नां अंतर करै॥ अंत जू तत न जाइ
॥२५॥ जग नु बचन बरण करै॥ कहो सुसो बर जांनि॥ अन रस मदु लवन हु लउ लि॥ प्रेर म
रस मिमानि॥२६॥ जग न रस हि रस पाइया॥ न हि रस अन रस मांहि॥ चैन चाहि मो चोगु नी
॥ कारी मै कछु नांहि॥२७॥ राम दो सर स मिलनि मै॥ अ मिलनि मै रस जाइ॥ मिलियो सघ
न मार इं॥ अमपली मोरे गाइ॥२८॥ जो मिलियो तौ कहा भयो॥ अनि पराये अस॥ राम दास मि
ष्री यादो॥ मातेन क बहुते स॥२९॥ पिता बंधु परजन सजन॥ सोम जगत यजु येल॥ अंच नी
च अपनो अपर॥ जो मन मिलत इन मेल॥३०॥ नैन बैन तन मन मिलै॥ लगी लगनि चित च ।
व॥ कहि कि सोर कछु न मिलै॥ जो नहि मिलै सुभाव॥३१॥ सोरगा॥ जे मन मिं मिलै सकाइ॥

राम
७७

मिलै मन निं मां नैं नंदी॥ तौ सारी षै साथ ह॥ साध मरी सेसुरियां॥३२॥ सुरियां सैं एंचार॥ जन
जण सौं की जे न ही॥ खां जूणै संसार॥ तो मेला गोई बहे॥३३॥ नागा न गरिमयां ह॥ मन न मे ।
लू मिलियो न ही॥ मन मांण सांघ ण ह॥ तो अंपणि लागे न ही॥३४॥ नर नागरी न रेस॥ पुरे
न गरे पूरे रहा॥ तो बिण किपाहि देस॥ मन न मिलै मद सदन॥३५॥ सुरपुरि सुरबहु अ ।
थि॥ नरपुरि नर न रहै घणां॥ नग पुरि नग न अणा थि॥ तो बिन जन कजु जगनाथ नहि॥
॥३६॥ साषी॥ अम रतर या न रति हुपुर॥ हु हत न ही मांहि॥ आं वृत बिन रमति या॥ एक जउ से अ ।
हि॥३७॥ सोरठा॥ बहुत मिले बहु भांति॥ मन अन मिल सब सो रह्यो॥ जा सो जियकी पांति॥ तेउ
लंम जगपाव ने॥३८॥ मन हि लियो हरि रहे॥ रुड़े रंग परतणो॥ फूट रैयै फट कत णो ह॥ मन पिरी ।
मन री के न ही॥३९॥ साषी॥ जे सजुन मन में बसै॥ ते न रंत रिमां हि॥ जा चित मांहै नां वसै॥ ए हीं अस बेज ।
हि॥४०॥ सषी॥ मण पांन सरीषा गुरु न मिलिया॥ चित्त सरीषा चेला॥ मन सारीषा मन मेलू न मिलिय ।
॥ तातै गोषि फिरै अकेला॥४१॥ साषी॥ मन मे रहु मन सारिषा॥ मिलैन दोइ समाधि॥ पर सार हिये
कल्या तर जिइ सरीनु पाधि॥४२॥ मिलि रूमी जो मन मिलै॥ मन के मत न मेल॥ जगनाथ नी को यहै
रकाण की मेल॥४३॥ मन अन मिलै ते नां मिलै॥ कहा भरी जो साथ॥ जहां मन सुष मांहि मैं॥ मिल

गुं०ग्र० तां जन जगनाथ॥४१॥ मन मेलू पामन जि सो॥ मिलियां मन मांनंत॥ जगनाथ जिय ब्याप मां सुष
५८ दुष की जो नंत॥४२॥ मन सारिष कहां पाइये॥ मन मेलू जगमांहि॥ जन जन कौ जगनाथ जन न हू
जत सू जतन नांहि॥४४॥ परसा पी त्म प्रीति बिन॥ कहा जो भयो नेड़ जु रि॥ जैसे भ्रीकुटी मैं न संग॥ बसे
निकट पर दूरि॥४५॥ आप मुरादी मांनई॥ साथे पका अमत्थ॥ पासा हाथी हातका॥ हाथे थका
६ अत्थ॥४६॥ मोर गाम दर मांहि मंजार॥ नितू आवै नित मारिये हि॥ हस्ती बंधे दुवार॥ मांन न घट
ई म छ्र कहिं॥४७॥ साषी॥ एकणि दीवां पाप षो॥ एकणि दी वां पाप॥ इक इके रंग थां नू वि सरिये॥ दु
कनी टोदी सताप॥४८॥ चाहै ते पाऊं न दी॥ पाऊं ते न सुहाइ॥ तेषां बू सो इणि दगोड़े॥ कुजड़ मे
रे आइ॥४९॥ जे नू नोंन सुहावई॥ ते नित रहै हजूरि॥ इन मैं न जु मुंबसे॥ मेह न मैं नोई रि॥५०॥ अ जे
न आवैं तनि यरेब सहि॥ आवै ता परदेश॥ इन देषत तउ न दरसबे न॥ हे दुष छ देयने स॥५१॥
दुड़ीन के अव गुन मदो॥ गोबिंद विहुरें चेन॥ सतुन गुन कि हि कांम को॥ फिरि स्या गड़ुषदै न॥
॥५२॥ आन अगासे आन जन॥ हरिजन नैन सुआइ॥ अंतराइ कि रकिरिपरै॥ कंनके पोंउ न न
सुहाइ॥५३॥ आवैंता अन आवंतौ॥ नेमा दीक हिदेत॥ एकन देषत जरि गत्ता॥ एक नि बलेत ब राम
लिलेत॥५४॥ एकं निंत बतउ जारिसी॥ एक उवतर कंति॥ मन मेलू अरु अमिल की॥ जगन ५८

थ सुअंतिं॥५५॥ जगनाथ मन मेल सों॥ चरचा किये अनंद॥ मन मेलू बिन दरि कथा॥
कहत सुनत मति मंद॥५६॥ सुमिलत संगति तैं सुषं॥ होत सुमति जगनाथ॥ अै गिठे नव ंअ
ता वदे॥ अमिल आ त्मा सा ण॥५७॥ ग्यानी जो मेलक मिले॥ तप जे अंगि गुर भाद॥ जगनाथ
चिंता मिटै॥ जग सो वे परवाह॥५८॥ नैन सयां नै दोऊ किन॥ इह सिष मो पैले ऊ॥ सडुन आवं
न दे षि करि॥ पज क पाट जिनि देऊ॥५९॥ आवैंत के बगर मे॥ अन का जे हूं काज॥ अनत आं
वैं ता बगर मे॥ काज इं आवत लाज॥६०॥ सैं गांद दोस थरा॥ नां बिड दे दी वाट॥ टाटै पाणी
गागरी॥ नाऊं नै अरिपा माट॥६१॥ संकर सडुन पै मम गा॥ मिले दु गिजा व पेट॥ त व अन
मिल्यौ कहु व तहीं॥ कौ तु गि के परि लेट॥६२॥ जगनाथ धनि पुरषसो॥ मन मेलू मन दे
लि हू॥ सेतनि सों हि लिमि सदा॥ सु व दा ई मन क्याइ॥६३॥ [illegible]॥ [illegible]॥६४॥ [illegible] जेह मन मेलू अमिल०
निवाह॥१॥ साषी॥ संकर दिन दश के जो गो॥ करन हि तजत विहंग॥ ने ही कं देही तजे॥ जो ज
गे इक संग॥२॥ चौपई॥ मरमी हो इत मर्मह्रिं जीवे॥ कछन बा दि अस मर मि व थोवे॥ कछि न मरमि क छुक
हत न आवा॥ बिन मरमी को मर्म हि पावा॥३॥ साषी॥ भवरा रसियां मल्लक हि॥ जि म रस छंडेर नांद
ओौ जीया तो रस दीर सा॥ मुया तौ रस ही मांहि॥४॥ चौपई॥ जम भवरा माल ती चिमनु लावा॥ मन सरसा पेर

गु०ऽ० ९९

हनम भावा॥ ऊसमवा सरसर हालु अोंनां॥ हितन छाडि पैछा फिपरें मां॥४॥ मद्दा विकट कंटक
अवता रा॥ प्रांनु दरत कछु सी इनवारा॥ जंजं ए मालचि कंट कगद्दई॥ तंतं जय रनि हनि मद
ई॥५॥ साषी॥ रिके सूमममरव करि॥ मो सिरि अव रख यहु॥ मा हनचि छिरह विद्दोगां कै॥ पावक सं
निपयहु॥६॥ नेह निवा हेंही वनें॥ वनेंन सोचें आंम॥ तनदेंममनेंहसी संदेहै पैमन दाजें जां मा॥७॥ म
रूफम या हमनधरजा॥ वोरनिवा ज नेहा॥ जोजु याचारि नि निरवहै॥ एक जजनमसंदेहा॥८॥ अन
रसकेपीत्म अनन॥ जमदर पनकी छांह॥ नेह निवा हमनवलकहि॥ मितकोक कलि मांह
॥९॥ पंच अग्नि महनी सुम्म॥ सुमम स्हनष गाधार॥ नेह निवा हनमवलनहि॥ मद्दाक विनव्यौ
हार॥१०॥ नरहरि जपतप ध्यांन वरत॥ यह सवसुव तेंहो इ॥ नेह निवा हन एक रस॥ नहीं सं
मथैकछिकोइ॥११॥ जे रस्ता ते नार है॥ कोटि करै जो कोइ॥ नेह नीर जंसजु मां॥ रीके मह रादो
इ॥१२॥ विसहर वारि नूरु प दघर॥ पांचा ग्रण राग्रंत॥ यम जोरावरया हरु॥ रहातक मिरत
नु॥ अग्निको टमूतिको महत्व॥ यमजा लिम कटवार॥ अगर निभर जे प्रीतिरस॥ तकपुमि
करम संचार॥१४॥ दीहा गी पंथी पुमे॥ उमक उमते मांहि॥ हमतो दाके पंथ विन॥ उसकाहाके
मांहि॥१५॥ पात विगाडे फत्नमषे॥ वसेउ मक्कारी भारत॥ अवदेमतु भत जिजोदिगे॥ तो जो वैगे॥ राम ९९

केका लगा॥१६॥ जे तो हि साध पिरं मकी॥ तो पाकें से ना षेल्हा॥ काची सरि सों पीलतां॥ नांष लिईनि भ
तेल॥१७॥ पवनवेग जीतत जुमन॥ जो मन जीतत प्रीति॥ सो छूटै कंतक रच है॥ संकर मांनि प
नीति॥१८॥ श्रवन घटै अरु हगा घटें॥ जगम घटै वल देह॥ इते घटें घटि है कहा॥ जो घटि है ने
रिमेह॥१९॥ संमन अरु सी प्रीति करि॥ जे सी के सक रा हि॥ मैं कालै के मुजल्हो॥ जदि ता हि सि
रसौ जा हिं॥२०॥ वेलहि याजु रण हतिसां॥ नेहा नांम कंमि॥ जे दहा गला विलें विया॥ नेहा र
तांस कंति॥२१॥ पनगा वे लिपति प्रेमरस॥ सुनज संत सु जां न॥ मो जी हि मले ली दही॥ सो
जो जग मढ हिं पान॥२२॥ दीपक प्रीति सो दिरे॥ विदुर स वजा स्पो प्रेम॥ स्त केदे सा विद्रेस सो भ
हनत वे लि जि मदे म॥२३॥ अदि वे ली हि मक रिदही॥ सजन दि सा व रि दीप॥ एके डषि ए
दो न्पो पुषी॥ यहे सजन की रीति॥२४॥ षोजी मकी प्रीत डी॥ कहिं ना कि मजा यात॥ सुत न
सोको सां सक टेपी॥ अरु स्थ न षा जिकर त॥२५॥ मीन मारि जल धोइ यो॥ षांये अधिक पि
या स॥ मसन प्रीति म राहि ए॥ मूये मांत की आसा॥२६॥ प्रीति धनंजे वाइ की॥ जीवन पैन
हिं जा इ॥ जे से न न ते हो तहै॥ सें दारि सो रह राइ॥२७॥ कोटि कछुठि मनि जतन नहिं॥ नदारि
करत नितनेह॥ अरि सो जो प्रीत्म लगे॥ नहां प्रीति विन चेह॥२८॥ सव काह सो दे षिए॥ ल ।

गुं०प्रा० दमिहारीपीति॥जदांमा रिषत दंबेहि॥अमरबेलिकीरीति॥२३॥संतप्रीतितासौंकरैं॥अपार निबा
८० हैं अंत॥बोलि बचन पलटैं नहीं॥पावरेषगजदंत॥२४॥सोजी आपन दृष्टि॥सकु नहूटै तोड़
उरियांकेंअत्यापिये॥जेसूडिं नम्राहोइ॥२५॥अइयौमुंमेलोसजुणां॥पूरोलेनिबहंत॥बुज
रेवंतमहमनिषनर॥दोन्यौकाजकरंत॥२६॥प्रीतिकरैंते बावरे॥करिमोरैं तेकूर॥प्रीतिनि
बाहनंहलणषअम॥जेनिबहैं ते सूर॥२७॥जिम सारदूरा सरस रा॥जिमधरती अरमेह॥बुज
गुणियांसेसजुणां॥इमपालीजेनेह॥२८॥जेजिद्राजजलनिधिबिषे॥बेवलआइबिहंग॥स
हासजुनसुरतिको॥मनछामनमहिंसंग॥२९॥गुरहरिजसंसेवाकरै॥बहतेतनकोदेत॥
वेसेहसोजनतनमें॥रहैसुषाहितेहेत॥३०॥यापानीरीतिप्रीतिकी॥जेकरिजांनेकोइ॥सजुन
मे०नि बा०दे० कहैंसुकीजिये॥प्रीतिघनेरीहोइ॥३१॥इतिसंपूर्ण॥पटे॥२०४॥आइनिबाहण॥साषी॥
गहीटकसोनातेजो॥पंचजीमजरिजात॥मींचेकहांअंगारमहि॥जाहिबकोरचुगात॥१॥
काग नीरहबोरतकी॥कहिअसोगकिंहिकाज॥मींचौअपनोजानिके॥करतआपणीलाज
॥२॥श्रीरजदाषिजिहाजकौ॥कितोसबाहैभार॥पाल्यौअपनांहाथकौ॥नीरनिबाहनहार॥३॥
गरखाआद्दरनांकरैं॥करैंतप्रतिपालंत॥संकरबिषसायरबहनि॥ऋरंमधरधरंत॥४॥ज राम ८०

गनाथजौआदरैं॥बमांबडोपरवांन॥हरिगुरधरीभृगुलता॥अजहूंत्योंसहिमांन॥५॥हरैंकैं
पूजकौवकिये॥जुगनिजुगनिअवतार॥जगनाथआदरकिये॥जन्मजांनिभुपगार॥६॥ब
ध्मसुबिरधिरद्याहरी॥हरहिहरनओगाद॥जगनाथमतबकनिकौ॥गहैसुकरहिंनि
बाह॥७॥हरिकबुकरैसुआजई॥दीरघलघहूंहोइ॥छत्रपतिपलपरजाभयो॥कहैक
मीननकोइ॥८॥सुनतखुरीहीस्तखुरी॥खुरीखुरीजिनिजांनि॥जांनिकरीहरिजांनअ
तिं॥तिहिकोसकैनिदांनि॥९॥कोकहिसकेबनिसो॥लषेबमांजोमल॥दीनेदईगुलाबकी
इमडालिनदेफल॥१०॥बलियाजेजेआदरैं॥नतंदाषेरेम॥सीसतुजासैंदेवता॥ईसपुजावे
रंपथा॥११॥चौपई॥तहिबमगाकपरिनमगा॥कांमखिकंठिबिलगा॥लहियाजेमकरैंतिमछेजे
॥औरकरैंतोहादीबढुं॥१२॥जिसकाकांमतिसहीकौछाजै॥औरकरैतौडीगाबाजै॥परपद
हेपडअथिरअदेष॥कनककोमणीथापणभेष॥१३॥साषी॥अहिअहारकाउरबसन॥बुज
रंगाहिरदेकंचोरा॥उरसीजौपसुपंषधर॥ताहिकहैंसबमोर॥१४॥उलसीरांमजुआदरो॥घे
टीषरोघरोइ॥दीपककाजरसिरधरयो॥धरोसुधरोधरोइ॥१५॥सप्तदीपबोदहभुवन॥कोरिदे
ध्यासबयोंन॥खुरेमनुषकोआदरैं॥हरिबिनिअरमाकोंन॥१६॥साधधरमत्यागोनहीं॥प्रांनत्पमाक

गुंण्य ८२

नहोइ॥ जगनाथपन स्त्रापवैं॥ छामनता दिनको इ॥१३॥ कुंती सुतमतसाषकै कोइ रखा सारि
षस्त्राप॥ जिहिं जैसै जगनाथपन॥ तजपै नहो पुनि पाप॥१६॥ अरजन पनसो जागि दो॥ कुंभ
कर्नगादिमी द॥ गसोसु श्रा दरस्त्रंतलो॥ कि योहोह स्त्र घदीद॥१९॥ स्त्रणुरबिलई स्त्रमीत
गदि॥ सुरसु मीति नितदेत॥ छामनननहिं जगनाथपन॥ बीजजिसोफरिवेत॥२०॥ जोजैसोय
नपाकरै॥ स्त्रतनिवाहसोइ॥ जगनाथता कीतिसे॥ अस्थल पापति होइ॥२२॥ इति संपूर्ण

॥छ०॥२०७॥ सजुनता स्त्रंग॥ साषी॥ गरड पंषि ज्ञिमस्त्रप्रमत्त॥ सीहसमानस्त्रहीह॥ डीलसो
भाकाकह॥ ऊंद्र गुणापकै जीह॥१॥ सममद जेमगं भीरचित॥ शसिसीतल जिमसंम॥ रविप्रगार
सुपील्मप्रगट॥ कमलसकोमलतंत॥२॥ जिनके चित्त समंद से॥ नवणिनदे जसकेलि॥ मीठ
बोवणसेसदरस॥ दई सुसजुनमेलि॥३॥ जिनकै हिये समंदसे॥ खड जसबडा विथार॥ निनि
सेराचीरेहियो॥ फरजेषवै भार॥४॥ गोराई धरजे तली॥ उंडाई मछिराण॥ हियडा तणोंटी स
जुणां॥ घणौ भला रखाण॥५॥ ओंडा चित समंद जिम॥ नेजिम चंबे तीर॥ सो दोषां निरस्वै नहीं
सजुणां गुणां गंभीर॥६॥ सोर्ग धरजंक्षम सदं नि॥ गोराई पवनतजस॥ सिर ईसै ताकि जुनि॥ स्त्रा
ईबाव नमजुनै॥७॥ साषी॥ पंषकड फड करनहर॥ चेचां तणां निहाव॥ तरवरपाषें को सदै

घण

राम ८१

सिरदी जतै पाव॥८॥ पातहं हो रैं फल्लस्त्रषें॥ उमता बांटकरेइ॥ तरवरपाषें को सदै॥ स्त्रै
गुंणपंषित णेइ॥९॥ उतपमएस जपा रिषा॥ हियऊंनां गैंमंस॥ छेद्या नेद्यो इदवो॥ मस्त्रकर
बाजै बस॥१०॥ मोरमा॥ पूरोप्पर थी रूप॥ उरोडषदे वीफजस॥ रजुबष नेसुकपं॥ मीरने
द स्त्रविकी बढे॥११॥ साषी॥ ईष कनककुत्लस्त्र मार॥ सहै स्त्रापतन त्रास॥ बांनी चंदय बु
गनी॥ कसैं कसैं क ब्रिदास॥१२॥ स्त्रेवपरागोपरदरै॥ सजुन सरजुसु भाइ॥ जेनेठेदसपुके
रे॥ स्त्रगापूरतजाइ॥१३॥ ध्रम्पत स्त्रस्त्रु नम्पतके॥ नहिं स्त्रानोविसचरंत॥ कपटगांदजूंकपमे॥ हिए ही
मंकिरसंत॥१४॥ जेस्त्रवगुन किम्पतमे॥ तो मात नचित धरंत॥ केउ किरसव समफ्फयज॥ कांट
कउ घनगनंत॥१५॥ परफुलितसजुचेकंजदल॥ नवरसदेइकवाडू॥ युलषिसजुनमनाबि
रत॥ स्त्रन्सनस्त्रनंतनहिं जाइ॥१७॥ एकोस्त्र वगुणजायणे॥ तेसजुनांनलोडि॥ तनछूटा रंग जाइ
मी॥ स्त्रवगुणकरोकरोडि॥१८॥ दूरणनमहिप्रतिबंबजस॥ सवासनमु घहोइ॥ विमुषनसं
पतिविपति मधि॥ सुमिचकहिये सोइ॥१९॥ पीतमसमेंपरषिए॥ तदूस्त्रदिनदिनसोइ॥ संपतिवि
पतिजुसारिषो॥ सोसजनसति होइ॥२०॥ साहस दोइसुषसुषमे मो॥ सा जनविताविनदोइ॥ नीकेरा
हवैकोजगन॥ चाहत है सबकोइ॥२१॥ कोटिकदोकोटि कष्ठनौं॥ तीनिस्त्रछिरविनबादि॥ स्त्र

सुं०ना० मनमैं मथि देह जो ॥ मैसौ ज्ञान मिलै जु आदि ॥२४॥ मात पिता सुत बंधु ही ॥ जनम जनम संजोग
८२ ॥ कहि राघव कहं पाइए ॥ प्यारे प्रीतम लोग ॥२५॥ बहुत मबेली जु पेम की ॥ छिन छिन बढ़ै सु
भाइ ॥ जो ल ज्वाल तिन बरग मैं ॥ कपट लपट छू मिलाइ ॥२६॥ सज्जन क्यों पारी बन्यौ ॥ पूजा प्र
थम मिलाप ॥ तामैं दांम न दीजिये ॥ न फोकट अलाप ॥२७॥ ज्यां सूं तन मन मूल्य दियौ ॥ का स
ण कहिये केस ॥ बीहुड तौ पंजर बिलै ॥ दियौ मिलंतां देस ॥२८॥ जा जी क्यों मां जहर मथि ॥
क मन करणी यों सैण ॥ कहिबिन जनदौ देहुं ॥ पूछि दवदौ बेण ॥२९॥ सेक सज्जन सौं बसै ॥ छिर सौं क
हा बसाइ ॥ मांन मसदाम्मी पे मरस ॥ जो कीजे सु बखाइ ॥३०॥ मांजे कांइ मनजो हया ॥ सूपारी ज्यूं सै
ण ॥ तन मैं लाम निउ डुल्या ॥ ता दिन रंदै नैण ॥३१॥ भौरे ज्यूं छूटै मन दी ॥ सज्जन सद अमृत भाव ॥
ज्यूं ट्या फूटै बिया ॥ पलक न तजत सुभाव ॥३२॥ ज्यूं तन राषत भैकर ॥ पलक पूतरी गो
श ॥ बिनां बीनती हित करै ॥ हित कहां वै सोश ॥३३॥ जे सैं कर अम्र देह सो ॥ नैनू पलका देउ
आहि ॥ इम इस्ट कर इ बिचार सूं ॥ सुं मित्र कहिए ताहि ॥३४॥ सज्जण गदा लोड़ि ए ॥ जे द
सज्जण दस्य ॥ का इरतौ आगै कटै ॥ सूरत घाइ समस्य ॥३५॥ सज्जन एदा लोड़ि ए ॥ जे दा राम
कहै कोस ॥ पग सौं पाछा पेलिये ॥ तकन मानै रोस ॥३६॥ सज्जण एदा लोड़ि ए ॥ जे दाघली ॥ ८२

भरट ॥ छेदा यौं न बिछोहिये ॥ तोई पेरसें वझंट ॥३७॥ सज्जण एदा लोड़ि ए ॥ जे दाआं कों इक
॥ ओगुण कपरि गुण करै ॥ तो जांणो कुल सुद्ध ॥३८॥ गुण ही कपरि गुन करै ॥ कि सौ न हारो
जोद ॥ ओगुण कपरि गुन करै ॥ हो बलिहारी तांह ॥३९॥ सेक सब जग मपत करि ॥ बैरन की
रक झंवाद ॥ घुरि घरि मपत न करि सकै ॥ एक एक करि गाव ॥४०॥ सज्जन समरथ है मही ॥
का दिन जनां बै काहि ॥ जगां न थ जगि जां न पन ॥ अम सु अमृत नि आहि ॥४१॥ साइ रबोलि न स
रोवर ह ॥ सब दो सयल समंग ॥ जल दर बिन को अंग वै ॥ गिर अमृत दलि अंग ॥४२॥ ओ धाजेन
उतै समनू ॥ मिलै गतया दिन जाइ ॥ धार राधर बिन सेल की ॥ मलिता स्वाति न पाइ ॥४३॥ मांन मद
नम कंचन को ॥ बीच न उर बनयो ॥ मेल निकट सलिता बुढै ॥ मेघ दरै रवि रोग ॥४४॥ देखत सज्जन सी
पत मिं ॥ बस्त कछू नहिं दोहि ॥ त्यों तिहे दको पंमकरि ॥ सो अ समपै दहि दोहि ॥४५॥ प्रथम रंजन सज्जन
घनै ॥ उघ अंजन को कु मांहि ॥ उघ अंजन न माराइ णां ॥ उलसी मन दी मांहि ॥४६॥ अज्ञान सु सज्जन नाइ
मना ॥ जनम मन बज्र स्यौ होइ ॥ जुम ज्ञात नांव ज्ञान इ ॥ जगि जसज्जीते सोइ ॥४७॥ इति सप्रकरण ॥ ८ ॥ ५० सज्जन ना०
उ जनस्त्री ॥ माखी ॥ सोमा सी कज्जलेल को ॥ सी मनबाउ को ॥ मन के रूषे मांनु है ॥ तन बी कभौं
नहोइ ॥ उर जनत जइ मद्भ मति ॥ कीमै कोटि उपाय ॥ सीच जधीर षां दहत ॥ कम्हदौ नीबजस्नु भाव रू

गुं०म० ८२ ॥३॥ मिश्री मिश्रन अरु सस हत ॥ बींट फुनार पचास ॥ नीव नींब कर वाय पलो ॥ तुतन तजन ति कबु
दास ॥४॥ बांधे सम्हर सा निकरि ॥ ये पानी परि देइ ॥ बाजी द मिहचै नीब को ॥ करवो फर ले ई
इ ॥५॥ परसा गुड्डु की मे रकरि ॥ मांत्रे इ धवगा पइ ॥ अति निवो लो आप गुणि ॥ अम्ह न गयो ब
लाइ ॥६॥ अमृत ब रिक्षो ॥ विष सयो ॥ ये फी गुर की सीख ॥ आक धन्नु रां रस राम ॥ पल्लटि न हो प
ई ईख ॥७॥ दुरजन रूष बंहुर के ॥ सङ्ग मकार न बोइ ॥ जो बन्न मीठे सीचि ए ॥ तो ब कटी लो हो
इ ॥८॥ बहु बिसहर बब में तोर ई ॥ पर माती रथ थ्रोइ ॥ हे ब मिजत निजमा इये ॥ कद्दे पुरे निन दो
इ ॥९॥ क्यारी करे कपूर की ॥ मृगमद भ्रम रां बधि ॥ नंद सुधा अरि सी ॥ सि ये ॥ ल्क सण न छाडे गंध
॥१०॥ करि कस्तूरी थ्रां बु लो ॥ जदि जमु नां के सीच ॥ ल्लघ्य न तत छूटे मदी ॥ ल्क सन नीच सुनी च
॥११॥ जो कबु करि ए दुष्ट कडं ॥ बिर थ्रा सकल उपाय ॥ जैसे मदा हे दी षधर ॥ वो षध को पर भा ३ ११
बा जीह बिष्ठा तानि रमुये ॥ नष सम मेद्यो अंग ॥ कुकर कफ हंन सुचि हो ॥ जो पर बार जमंग
॥१२॥ बुरो बुराई नां करे ॥ तकु बु रो ही नांनि ॥ सरणन काटे कर मबस ॥ लो कद्दा सुष दब
बांनि ॥१३॥ मेलि कर समेमं डि ए ॥ लगे न ताती बारि ॥ बिष सुभ व गम ना तजे ॥ मर कंचुरी देइ रा राम
रि ॥१४॥ दुरीन ब्रुरी मु जंगतें ॥ जिनि अ सो प्रापति याइ ॥ को नमु लागत ओर के ॥ आंन को क्रम ८२

रजाइ ॥१५॥ जो कि सो ब को बे ये म ली ॥ घ लल अवसन ॥ ले जाइ ॥ राग सुनाइ सुयाइ पे ॥ सपँ पि ला
वत षाइ ॥१६॥ सर्पो हिं दु ध पियाइ के ॥ सुष मी ढं डी न सोइ ॥ थ्रां न पधन के मांहिं ॥ जब ही मसिं दे
लोइ ॥१७॥ जदय न रिम रि मा रि मय ॥ नंद सं घ सु रुषो स ॥ तक न बाडत ढ ह ल्ला ॥ मारतु कं टक के
मुख ॥१८॥ सर्पो पाइ इ ब धं दे त है ॥ सं घ शो स अ रु भू त ॥ सत जो जम पी डा करे ॥ बुच न इ इ की हुत ॥१९॥
हो व ज दा सण स ब भि मि ॥ जि नि क रि गर ल गुमांन ॥ ता ही सो अ ति नि गुर है ॥ इ ह बच न ब अ न ॥
२०॥ गाथा ॥ मूरष मुष ब बई जिम कारियं ॥ बेरा भु जंग जे मत्थ रियं ॥ ड सि य स ज नचित्तो ॥ छुटी
बिसो गब दे सगां बन ॥२१॥ साषी ॥ नीच मं जगुन सा रि षो ॥ ल सस जलु मनु हा रि ॥ उपर सीन ता
बो ष धी ॥ प्रीति बे र षिन सारि ॥२२॥ जहां ब बे क नू जां नि ये ॥ तहां को रो क तन्त्रा स ॥ अ न बो ले हो
जो विचलो ॥ को क इ है का बिदा स ॥२३॥ नर छि म सियू ह लधि म ग ॥ इ रजन इ सह प सु भाय ॥ आ
टे परि घां न मुह रे ॥ कां टे लो लग पाय ॥२४॥ जदपि दुरजिन म सज न सो ॥ बोले बाह त व माह
तद पिम न की का लिमा ॥ मुष फु परि कान का इ ॥२५॥ कहा जो बे वे प क गे ॥ मनके म ने बधो इ प
र स पर से कां करा ॥ कंचन न क दे न हो इ ॥२६॥ जे मिलिया ते मन न मिल्पा ॥ बिन म म मिल्या त कोइ अ
घाक र की पै कहा ॥ चित्त न अ पू ब ज नोहि ॥२७॥ कर आ घा म न पद्मा जि द्दिं ॥ दुरजन ह प नि न षे म ॥

पुं०भा०
८४

सज्जनहितजगनाथलषि ॥ मैंनमैंनमिलिपेम ॥ ३४ ॥ मिलिबेकौंहितप्रिनदिष्ट ॥ जलमि
पसारतहाथ ॥ तमिलीछबिनिरषिहिंकीसकी ॥ सनहिंमोरिजगनाथ ॥ ३५ ॥ आवतकरकंचाकोरे
मैंननिमीरहराइ ॥ आसनबैसनत्रुटिमिलै ॥ पगदेसनमषजाइ ॥ ३६ ॥ आदरसोंप्रबारता
॥ पूछेप्रीतिलगाइ ॥ मनिकपटीमुषिमीरसो ॥ मायामिचतुराइ ॥ ३७ ॥ डरजनमेंमेंछंदये ॥ सीषे
कहूंसजाइ ॥ जगनाथदिरांनपूजा ॥ काहूपैंनरषाइ ॥ ३८ ॥ दीपतिमरजिहाजानिषि ॥ गरमब
जनोनाहि ॥ अकसमागमहजरीबसि ॥ बसततिलीविथिमाहि ॥ ३९ ॥ सकलत्याउपाइबनाइधरि
॥ बैबेमश्रेसीकाहि ॥ डरिजनमचितरहतिदरनको ॥ जुक्तिजगनाथनआहि ॥ ४० ॥ पेमप्रीतिजिन
सौंमटूं ॥ ओघंतामनमांहि ॥ दांतविमामैंराइमल ॥ दियोविमामैनांहि ॥ ४१ ॥ पाया था ॥ जोसुदिव
अणिये ॥ जकहंमितनमहमकामि ॥ मधुरीदेवेमईसरो ॥ सविमालनुवंगामिलण ॥ ४२ ॥ मा
षी ॥ मीठांबोलोमांणमां ॥ बेरोमनरौंदेमाइ ॥ गरुडपषिमधुरीदवे ॥ सपमसपूछोबाइ ॥ ४३ ॥ बाजी ॥
दकबहुतरीकिरे ॥ सुनिबडप्पेकेबैन ॥ मुषिमांनोअमृतश्रवै ॥ दियेहलाहलबैन ॥ ४४ ॥ यहे
सुभावसुडप्पका ॥ मबीकरतसुरखाइ ॥ मुषकपरिमीठीकहे ॥ पीछेकाजनसाइ ॥ ४५ ॥ जग
मापडरजनरिदे ॥ डविषमदीरदेश ॥ अमोबचनरसमांवसे ॥ विषभरिपेटसुराइ ॥ ४६ ॥ दृ

राम
८४

भे

करे

यषोटोमीठअधर ॥ तासोंकेसोपेम ॥ तरंगमादांनकीदोमती ॥ नेकीरहैदेननेंम ॥ ४७ ॥ हियषोटो
मीठेअधरअधरदरिधरेनधीर ॥ तासौंप्रीतिपिरामकरि ॥ किनसुषलहोसरीर ॥ ४८ ॥ दाइकद
णीओरजकछै ॥ करणीकछुओर ॥ तिनतेमेराजीप्रमरै ॥ जिनकेचिकनगोर ॥ ४९ ॥ अंतरगत
औरैकछू ॥ मुषरसनांकछुओर ॥ दाइकणणीओरकछु ॥ तिनकोनांदीगोर ॥ ५० ॥ आगेबो
लैमधुरअति ॥ पीछेकरइविरुद्ध ॥ अेसोमंपतनकरजजिन ॥ विमगामरिमुषडठ ॥ ५१ ॥ कुरे
मनिषमीमलीहु ॥ बस्तनलदतकरार ॥ मधुरइधजंगविषमिले ॥ पाचतकरतविकार ॥
५२ ॥ अंतरकपटमिथासमुष ॥ तिनन्रतियनपत्याइ ॥ जंचिअचारनिआनरत ॥ पतिपरपं
चरिकाइ ॥ ५३ ॥ पुस्तकपोथीदेषिकरि ॥ जंनबांजीदनभूलि ॥ सज्जननाकोअधरहि ॥ डरज
नपदतनभूलि ॥ ५४ ॥ गाथासउरागीसिमवलनमिये ॥ जीहाबोलियअमीसाबैणा ॥ टीकदके
वाछिनमिये ॥ पाइलागिमोविषनीर ॥ ५५ ॥ सामी ॥ टीकेकोनेबीकहा ॥ हंसोमदतनधीर ॥ प
वलैलागतकपृपग ॥ पीछेसोषतनीर ॥ ५६ ॥ सज्जनबलतेजिनिगनज ॥ जोतुरस्वधनहोहि ॥ चं
ताचीरकमानलौ ॥ नवैदिआपनीगोहि ॥ ५७ ॥ दरबंसहरहटकीघटी ॥ जंजकमीतस्योईसजन
सालीनबसनमुषी ॥ जबरसुभरनबपीम ॥ ५८ ॥ आवेबीभिआदरबडजन ॥ जोलजंजियनपत्याइ

गुं०मा० ॥ गंग न लौं लुकुं ग्रम नगि मन ॥ लिन अप्रम नौं जा ८२ ॥ ८३ ॥ कबीर ततं न गाइए ॥ जहां कपट कौ हेत ॥
८५ जाल्हौं कली कमी रकी ॥ तन रातामन सेत ॥ ८४ ॥ देषियत टाटी मैं ठकी ॥ परष मिलन तहीं पांइ
॥ बोलत बच न कुफ रद रे ॥ चिनमा न जइ येतां हि ॥ ८५ ॥ जीवन दें ही बैसनों ॥ मैं न न जो रैता र
बिन स्थां गल रथ ऊ ॥ सो के नहीं गवारा ॥ ८६ ॥ अन मिलनी बजांते मिलैं ॥ मिलनी मिले न कों
ज्ञा मिलिया अन मिलनी मिलें ॥ नवल मह ऊ षहोइ ॥ ८७ ॥ ये पांणी कपरि मिले ॥ अंतर मिल्यो
नहीं र ॥ कंम राल नी रहित जे ॥ कागदि पी तन षीरा ॥ ८८ ॥ हरदचून तत म मिलन ॥ ये पानी दोउ
धूत ॥ संकर हिलि मिलि दुक जाये ॥ मिलि फटिया कपूत ॥ ८९ ॥ बोहरिषीरे जं मिलै ॥ तर अंत
रम छिटैत ॥ संकर फाटिक पास जै ॥ जीतारि निक सहि सेत ॥ ९० ॥ सेक षीरा की मिलनि ॥ का
ही बात है बीनि ॥ कहा भयो कपरि मिल्यो ॥ जीत रिमापे ती बि ॥ ९१ ॥ आगे निर्मल आर सी ॥ पीछें
मलिन बिकार ॥ आगे पीछे ओर सी ॥ क्यों न परे मुष छार ॥ ९२ ॥ बुरो बुराई न्यां तजे ॥ भलें छे संजो
ग ॥ अंपन जो कारगा इए ॥ ढ धन पिम तिज्म सोग ॥ ९३ ॥ घल ते ओ गुन आ पर हि ॥ छन कौं गृहें
न लोइ ॥ जो कत हां टी जामई ॥ जहर मानुर होइ ॥ ९४ ॥ दुष्ट हि मिलीन भासई ॥ बुरी बात लेहू छि
जे सैं घघ घर बस्यो ॥ ब्यों सत्रं धमिवा सकि ॥ ९५ ॥ देषित मासो दुष्ट कौ ॥ सकल न अपनी दोशि ॥ प राम ८५

रके अगुन कसन कं ॥ मुष रस नां के कोरि ॥ ९६ ॥ बाजी दरस्तां ढ जैन की ॥ सजुन बस हिं जु अंन ॥ जे
लोंछे न बुरी कहे ॥ तोलों चित नचें न ॥ ९७ ॥ दुरजन तारु टेन ॥ सजुन तानन दिमर ॥ पूच निमें जगना
ण ने ॥ बदिक हावत कर ॥ ९८ ॥ बडो सोई जो काज को ॥ बडे बमे महि फेर ॥ दीपक सों कहियत बं
को ॥ घर में दुगुन अंधेर ॥ ९९ ॥ चौपई ॥ बमासु ओर रहि देष बडाई ॥ बमा सबांटि बांटि बसधाई ॥ ब
मासु साच कुगप हिचांने ॥ मूरष कहा बडाई जांने ॥ १०० ॥ साषी ॥ बडि मा पेषौ कति मह ॥ कहिबे कें
बुभ लोइ ॥ सदैक सोटी बके जु ॥ बमो नांम तब होइ ॥ १०१ ॥ पर साबु धि बबे के सों ॥ तुज डां बमा के
माहिं ॥ आव भगति सम के नहीं ॥ मो बहाय म हि मा हिं ॥ १०२ ॥ बमो बमाई बात जे ॥ बो छो ई हत राइ
॥ तरु गित ये तिहित पन हीं ॥ बारु बारे पाइ ॥ १०३ ॥ जो दुष मा ई आपु कों ॥ सा को इहि बिधि मारि
॥ बजात सजा कालु कहै ॥ द्यल ते दहन तारि ॥ १०४ ॥ मोर वा ॥ बो छे को सगा साण ॥ अरह मद तज
दु अगार जं ॥ ताते जारे हाथ ॥ सीरी सो कारे करे ॥ १०५ ॥ साषी ॥ दुर्जन अंन अगार है ॥ सजु नग दतन
बीर ॥ सीरी कर कारे करे ॥ ताती दहे सरीर ॥ १०६ ॥ जगनाथ जिय मांचव ज ॥ दुजन हरि बसन दि
बन्न न हित दुष बेरता ॥ जे से साय रदत ॥ १०७ ॥ जगनाथ न हिंने दसुष ॥ तस्कार किये सत जोर ॥ जे
कांटे कर बेरि के ॥ दुष दाई दुजं जोर ॥ १०८ ॥ दुरि दुरि जन दुवदेत है ॥ मां निज छेड़ अस मोनि ॥ जगनाथ

पृष्ठ संवत-संवत गलत, चाहिए अथवा
अंतिम तरफको मिलने के बाद गलत

गुं०ना० २६

मतिस्वांमकी॥ दइंपरारां दांनि॥ ७८॥ बिरचें कोटे पाइकों॥ राचें चाटे मुष्ष॥ बाजीद स्वांसों होसती॥ दइं न
परारें दुष्ष॥ ८०॥ बामदफाई जगतुकी॥ कूकरकी पहिचांनि॥ हेत कियें मुष चाटिहै॥ कोधकी सेंत
न दांनि॥ ८१॥ धन गुन मूरष नजी रहै॥ उजीन नीच सरीर॥ स्वांन उदर जंम छकहि॥ षाइजे रेनुषीर॥
८२॥ सोरठा॥ बाणीं षल सों बात॥ एकान बांणीं रामसेां॥ कहिकि सोरक्क सरात॥ जेचा हत हें अध
मन रा॥ ८३॥ साषी॥ दूगरके राबाहला॥ वो छांनतणंस नेह॥ बहला बहैतनाहला॥ फूट किहि षोवे
छेह॥ ८४॥ इकअंगम प्रीति कसूं मरगा॥ नहियत्तार हुमफाल॥ रेतजी तिझु सखी पनी॥ कूं दिट होत
जमाल॥ ८५॥ सोरठा॥ मांभायो मोत्रणो॥ हे नरपोसजकीणों॥ बीयोबटाये मनो॥ कछलगें कोरोथये॥
८६॥ मेलएह जभीति॥ घरसां सो घामें नहीं॥ पांहणा मर सी प्रीति॥ सूकहि मोरविथो कहे॥ ८७॥
साषी॥ केतो दांनांही मला॥ केरु मला मांदांन॥ अधबिच का जो आधमी॥ नजेन ही मगवांन॥ ८८॥
साषी॥ जोंम बहेकी सबकाछजांणें॥ अजांण बपुरा सोकहा॥ बिचबेमाहियाकहन जांणें॥ दाधरीम
दो कहा॥ ८९॥ साषी॥ सुधदुधमें सो सुष पाइये॥ के साधबबेकी होइ॥ दादूए बिच केदुरे॥ साधेरीगमे
॥ ९०॥ सुधदुधपांनी क्षीरसमि॥ दधिसुबोधदुधिवत॥ जगनाथ नियजेंजतनि॥ अधछिचिदुष्ट॥ राम
अमत॥ ९१॥ सुखपसबदबजसमक्षइ॥ पणीनीभोलाहोइ॥ जगनाथबसिनांहिमें॥ सुरोंनसुणईसे॥ २६

॥ ९२॥ केसुषियासब सुषमईं॥ केसुषसबनिश्चजांन॥ जगनाथते अति दुषी॥ जांनि पूछि अमींन॥
९३॥ सुहरसदे अरुगुकाले॥ आतिसुकरहिंबिमास॥ कबहूं केंघे देषता॥ अमितरतें कछिदास॥ ९
४॥ सबमसेंदते सक्रिये॥ मंदश्री रमरनांहि॥ सुतमांपनिकेहेत जं॥ पेटिपरियपचिजांहि॥ ९५॥ दुरेज
नविद्यावंत जो॥ नपतजिएतासाथ॥ जंमनि मूंछितसप्यांते॥ भेनुपजे जगनाथ॥ ९६॥ अहिमुषि
अंमृतरी मेलिये॥ आगभ्योग दिये हाथ॥ सांपडज मरिपाइए॥ दुरी दुष्ट को साथ॥ ९७॥ सोरठा॥ गिर
सों परिपषाइ॥ आदूसमुद्रजाहूं जिण॥ बरु मरिग्येमाजरषाइ॥ पेमूरषमीतनकीजिये॥ ९८॥ साष
॥ पसबनसगअमिबोमलो॥ बनपरबतजगनाथ॥ थिरचिरसुषसुरलोकहिन॥ दुसहदुष्टकें
साथ॥ ९९॥ कनकहिदुष्टनदाहकें॥ मांहिंनडषघनघाइ॥ गुंजबराबरितोलकें॥ दरदसदे
महिंजाइ॥ १००॥ सोरठा॥ बडुबिनबादकराहि॥ बिनयमिष्याइनसीषइ॥ जीतनकी मनमोहि॥ डुर
जसहिलिडुबिधारहै॥ १०१॥ साषी॥ जंजं क्षेवेतसकंक्षे॥ घटिबधिकेहेनजाइ॥ दादूसो सुध आत
मां॥ साधपरमें आइ॥ १०२॥ इतिसंपूर्ण॥ दस॥ २०॥ सकुनउजेनअंग॥ साषी॥ सकुचचंदनचंदके
इन थकसुषदआवास॥ हिहिंबोलेवाकोंघसत॥ अहिंजगियाजामप॥ १॥ कूकरकागउकमांणास
हि॥ तिजंधाएकनिकास॥ जिंहिजिहिंसेरीनीकसे॥ तिहिंतिहिंकरहिबिनास॥ २॥ सकुनचंद

गा चंदन रोगै ॥ सदो कालन प्रदाह ॥ षल कहु संगा अंगिं बिसार पछ ॥ आंगणि जेजे जाइ ॥ ३ ॥ सजन बचन
अरु इंद्षरसा ॥ पैत्यां करे पियार ॥ ज्ञ समें दी रुकसूभ रंग ॥ कटकि दिषावें पार ॥ ४ ॥ सज्ज
न कौं कमित्र कहि ॥ जद पद्मी जे जास ॥ इषजु को दिपिराइ ये ॥ तऊ न मिटत मिठास ॥
५ ॥ दुर्जन कौं कब्येम कहि ॥ जद पि दीजे देत ॥ जैसें रंग कसूभ को ॥ छिनक चटक पु
नि सेत ॥ ६ ॥ सज्जन अजन कसमी सूहे ॥ दे मजे मव रादि ॥ जगनाथ षलके लिपत ॥ बाइ बच
न फाटि जाहि ॥ ७ ॥ पुष्प बचन जो साध को ॥ कहि ए सीतल सोइ ॥ जगनाथ षल की दये ॥ सं
ध नतासो होइ ॥ ८ ॥ इति या चंदन सजीव रंग ॥ साध बचन प्रतिपाल ॥ पांहन रेषा करमगत
॥ कूर जन मिटत न जमाल ॥ ९ ॥ पून्यूं चंद कसूभ रंग ॥ नर तन गदर को देत ॥ ढहत न तब
पे ओन्यूं यहि ॥ उघ दिषावहि सेत ॥ १० ॥ सज्जन रूपस मानि है ॥ सिर जे हैं बंदन नाथ ॥ उ सन
मार हि फट कि करि ॥ कनको पुरकरत दाथ ॥ ११ ॥ दुर्जन कौं चित चाल नी ॥ विध ना सिरा
ज्यो मूरि ॥ उसतें आपन संग्रहे ॥ कनको मारत दूरि ॥ १२ ॥ अब मार कि सदा कहे ॥ फर
लागे पर देत ॥ यज्ञ हत तें पांहन हनंति ॥ वृक्ष जत तें फर देत ॥ १३ ॥ दुर्जन संगति साधु हि
य ॥ ना हिन होत बिकार ॥ बिषधर चंदन हि गर हत ॥ ताहि न बिष संचार ॥ १४ ॥ गयंद सुंगा

न न गति तुंजे ॥ कूकर कितै सु आइ ॥ जगत भगत की रमतिया ॥ सूंहि चाली जाइ ॥ १५ ॥ साषी ॥ का
इर कूर कोट मिलि ॥ जो कैं अरु आगो ॥ दाहू गरवा गुरसुषी ॥ हस्ती नहिं लागे ॥ १६ ॥ साषी ॥ दुर्जन बं
बर दो कजूरे ॥ कंटक कुटिल कुलीन ॥ आपुन निरफल और फल ॥ रोकत जाइ अमोग ॥ १७ ॥
दुरिजन मारे हस्त हीं ॥ न दी बिरछ अंसधोइ ॥ सज्जन माली रूषयूं ॥ काटत गहराही होइ ॥ १८ ॥ सज्ज
मिल्यो कुमारई ॥ ता हिन धी अज्ञ को इ ॥ जगनाथ जूं उपम जल ॥ अगनि बुकावें सोइ ॥ १९ ॥ चौपई ॥ दु
रिजन मिल्यो सज्जन गलिजा मि ॥ बारें सीतल मांहे आगि ॥ अंतरि कडवे मुष मे मीठे ॥ ब्रष ने बूंद
हूं को सीठे ॥ २० ॥ साषी ॥ ऊपर तें सुध बुध साद सैं ॥ साध जन संसारि ॥ ब्रषमां बोरें कं न दी ॥ मांहि म
का की ज्वारि ॥ २१ ॥ सोरठा ॥ अभि अंतरि नहीं आव ॥ नांम कहे हरि नाम सैं ॥ नीर बिहूंणी नाव ॥ २२ ॥ सा
षी ॥ अभि अंतरि का लार दें ॥ बाहरि कों रहि तु जास ॥ नांम कहे हरि भगति बिन ॥ निहचै नरक निवा
स ॥ २३ ॥ अंतर गति रांचें नहीं ॥ बाहरि कथे उदास ॥ ते नर नरक हिं जांहिगे ॥ सति भाषे रविदास
॥ २४ ॥ रैदास कहे जाके रिदे ॥ रहै रैन दिन राम ॥ सो भगता भगवांन सम ॥ क्रोध न ब्यापे कांम ॥ २
५ ॥ मांहि कुटिल मुष मिष्ट जन तन ॥ मीठी बातन माह ॥ ताहि अचान क की जईं ॥ परे आपदा आइ ॥ २६ ॥
मुष मीठी उर कपट ना ॥ गिर गाज रजस रीति ॥ जगनाथ असी सदा ॥ दुरिजन जन की प्रीति ॥ २७ ॥

गुं०ग० साजरषारि कबे रजं ॥ यूं जु कुहरिजन का भाव ॥ बाद रिते लागत नसदै ॥ मीत रिडु षष्ठ अभाव
८८ ॥२८॥ राह हल ना रेल जन ॥ सजन के लारूप ॥ कुपरि नि रयं नक कोरसे ॥ उरिजगनाथ अनू
प ॥२९॥ औरहि ग घरयो दो बिके ॥ बचिम निकी मो लाज ॥ लो टबिह नकन नसहो ॥ पर
केटंक न काज ॥३०॥ करमी देखि कपास की ॥ ऐसी मति की धीर ॥ डुष्ष सहत सिर अ
पने ॥ परकौ टकत सरीर ॥३१॥ औरन कोऊ काम नां ॥ जो चित दे मज चेत ॥ बाजी द को
मोटी बाति सही ॥ केवल पर जन देत ॥३२॥ सनके मन को डुषता ॥ सुनत मरियत ला
ज ॥ चांम उचैरत आपनो ॥ परके बंधन काज ॥३३॥ सजन जिय औगुन गहै ॥ डुरजन जे
गुन जाइ ॥ नाथ गुं मूट की बंद लो ॥ कितिइ कै लैन हराइ ॥३४॥ मंत्र दिवे गुन चाहिय
हि ॥ दोष दिकोरिद संदोस ॥ पालित पादन रेष सम ॥ बीज चे मं का रोस ॥३५॥ डुरजन अ
न के सीयर ॥ औगुन ते बिसेष ॥ पीति सुघन चपला सभै ॥ गसपां हन की रेष ॥३६॥
फूटत बारन लागई ॥ बजा रिजु रे नहि सी हुजगनाथ घट मृत पका ॥ ऐसी डुरिजन
होइ ॥३७॥ कनक ककं ते स बिहरे नहीं ॥ बिहरत बजा खिरंत ॥ जगनाथ यूं सजन जन ॥ राम
फाटपै बे गि पुरंत ॥३८॥ आवंते को रूसनो ॥ पांनी पर की लीक ॥ उपजत चपला चपल गुन ॥ र ८८

हत नन वत लरती का ॥३९॥ सजन रिसां णां देसषी ॥ कातिक दहां सरीख ॥ थी यम ताषु षअपै
मीन दता अंतरीष ॥४०॥ सेक सजन न चप किके ॥ जौ बउ वन जिय जागि ॥ जंस्त्र सम हिं नालहि
लेमी ॥ ननन हिंदा दत आगि ॥४१॥ और समे रिसक पने ॥ रससुर कहिये नाहि ॥ लंघन पलते हूं स
नौ ॥ फिरि मिलि बोपरि आहि ॥४२॥ जे सजन डुरिजन थिये ॥ तौ कजु नचंगी बत्य ॥ कहौ तौ का क
रि का टिये ॥ जे ख बादत्य ॥४३॥ माय रजौ स सिंतु जिदयो ॥ तकबहाव तनीर ॥ बरखा नल रा
खो निकट ॥ सो सोषत बे पीर ॥४४॥ बिरचि परखियहि सजन जन ॥ राचि परखि य हिं मंद ॥ बडु स
नत सो षत उदषि ॥ पोषबढावत चंद ॥४५॥ सजन बिरचि परखयहि ॥ उत्प मजगा जि दंत ॥
ये सो राचे नाकर हि ॥ जे तौ बिरचि करंत ॥४६॥ सजन को अभिमान बर ॥ षलगुन धार बढाइ ॥
घोड़ा के री लात सहि ॥ षर पर चढे ऐन जाइ ॥४७॥ सैणां दे दे माण्ये ॥ मो घाम लो सु डाहि ॥ डुरजन मि
यो केलात रहै ॥ जांणि बलंदी आंहि ॥४८॥ जो डुरिजन मिसरी बयन ॥ तो न मदारत आरि ॥ कैकि सो
रस सीतल हिये ॥ सुनि सजन की गारि ॥४९॥ औगुन गामगाम गुन ॥ गुन गहि औगुन गाम ॥ सठ दे
मिलि सजना ॥ षल रलिया लाछन ॥५०॥ चोर मलांदी धन देरो ॥ साडुरि सां घरि जार ॥ दीवा दोष जु
परहरे ॥ लाघाते दातार ॥५१॥ जगनाथ देषी कदै ॥ तामे कछू बबे कन्दे दिशु राई छाव रै ॥ सो जगमे

गुं०गा०
९९

जन येक॥५४॥ अरा देषी आतुर थका॥ बकता आरन लाइ॥ कारता ओ रे सेका कुरिसा॥ तिन
का मुष मन द्विसाइ॥५५॥ स्वांति सुधा कर रे षर स॥ पर सा साध सुभाव॥ जद र मुअ गम लिछ
मन॥ जो सुषत कत आव॥५६॥ सज्जन जन ती गुन गहत॥ दुरजन श्री गुन लेत॥ जैसे ची
टी सुरजन में॥ छिद सु चाहे न्यंत॥५७॥ सज्जन ते गुन को गहत॥ दुरजन औगुन लेत॥ सुंदर
भागा बरिरवे॥ अवर आइ जर्ज फल॥५८॥ पंछित पछित रे करे॥ श्री रुग वारि गवार॥ का
ग कर रंको रेक रे॥ बग छील रषर छार॥५९॥ इक सज्जन अरु दुर्जनको॥ मतो न मिलइ मूल
॥ को इन्लन कहकति अरु बन॥ कांग कर रंक मसक ल॥६०॥ सज्जनि यां हसां हजूर कोई के
षहंति॥ क सज्जन काल के कमाल्यो॥ महियलि घणां अवंनि॥६१॥ दुरमी नो लेहं न हं मली
॥ काग पवन का भांग॥ जो गंगोदक सी चिये॥ भी तर मली न सोय॥६२॥ पोनि पद मल हि साध के
॥ मुहि षल सी सषि थांन॥ गुन अवगुन ते जानिये॥ दो से दुवे समान॥६३॥ सज्जन थे ति पे
डवे॥ जो तिन नीर को हा॥ देवति दुरजन सप्पी सम॥ षीर दहये विषही होइ॥६४॥ संत अस
न मंध जी व मुष॥ अहि मुष अवन अजान॥ वजा विष ते अमृत करे॥ तो अमृत विष
हि समान॥६५॥ ते ई सज्जन मत्त कहि॥ जे सम सरिस बगो र॥ ईषमंड श्री कुरंन नर॥ याहि

राम
५५

गंधिर मत्रो रा॥६६॥ सेअ सज्जन मेघु जल॥ अंन इं यांघ न थदह॥ पिसण पसन ध्वै संचरया॥ भा
शि कि याव्ह ह वह॥६७॥ समन मुई सुजान नर॥ फाटा एक करंत॥ करवत कर रक दारि यां
॥ अन वि दस्यां बिहरंत॥६८॥ गज मुक्ता फल पाइये॥ मांसें सप घके क्षेम॥ जव कके य रपाइये॥
सीग पूछ षुरयांम॥६९॥ सोरठा॥ आवत नां नदी आव॥ बलता बोल्या वो नदी॥ तिणि सज्जण घर
पाव॥ बलेन मीं जे बीफरा॥७०॥ साषी॥ आवत आदर करै॥ बिगसत बदन मिलंत॥ ते सज्जण
क बि ना थ कहि॥ चित ते कं उतरंत॥७१॥ हेत महित सरू जो मिले॥ तिन स्यों मिलि धाइ॥ ओ हय
दयं मिले॥ तिन स्यों मिलि बलाइ॥७२॥ आयेंन आदर सम्मंगमन॥ आनंद सो नह संत॥ तहां प
रा गा न जाइ॥ ए॥ जो कंचन बरिसंत॥७३॥ अगणित गणि हसि मिलणि॥ की को मानंभांति॥ इतर ए
ते ही अस्ता धरमी धाइ मिलंति॥७४॥ उत्तम संगति मत्त कहि॥ प्रीति रहै ठहराइ॥ नीच मे ह सरु
वह जं॥ घटत घटत घटि जाइ॥७५॥ दुरिजन प्रीति प्रमांन॥ युज॥ संप भान बज्र छांह॥ अगनाथ
आइ रहै॥ घटत घटत पय मांह॥७६॥ भांन पूले जु पछिम दिसि॥ उछ छाया विस्तार॥ जगनाथ
सज्जांनिएं सज्जन हैत अपार॥७७॥ प्रात छांह षल मित्र ई॥ तास मिमन पत्याहि॥ अगजी वन दी
रघ पहल॥ पीछे घटत घटत घटि जाइ॥७८॥ जैसी छाया भोरकी॥ त्येसी षलकी प्रीति॥ जगजी

सुं०प्र० १५० रन सहजैं ठली ॥ साध मल टीरी ति ॥ ८७ ॥ नेह मिला लबरत देह ॥ सतगुन कति या चंद ॥ जगनाथ
१५० बल पीति रै ॥ पूरन परिहा मंद ॥ ८८ ॥ पीन छीन छोटी बटी ॥ आन प्रीति तर छांह ॥ सतगुन
छाया मौन की ॥ सदा रहै मन मांह ॥ ८९ ॥ डर जन ता दुष मत रहै ॥ सतगुन ता सुष रूप ॥ मन बच
करम जगनाथ जन ॥ ता मत रहै स रूप ॥ ९० ॥ चौपई ॥ डर अमन ता नौ लौ मर दहियै ॥ दुमद
क इंद रिया संसारि ॥ सतगुन ता सुष साध र मैं जन ॥ जगनाथ जगदीस संकारि ॥ ९१ ॥ इति सुपर
णा ॥ ९२ ॥ रर दध सम कि सुजांनता ॥ साषी ॥ दुइ का सलि कहि समझाइ यो ॥ सब को च
तुर सयांन ॥ कीडी कुंजर आ दि दे ॥ नां हि न कोई अयांन ॥ १ ॥ सबै सयांने हैं जगत ॥ आप
नी बुधि तन मांन ॥ अ सम कि समक आपनी ॥ सोई समक्यो जांन ॥ २ ॥ जगत न सम कि मरम
लगा ति ॥ आपनी सु धि बुधि बांनि ॥ जब सम के सम क्यो कहै ॥ समक्यो तब ही जांनि ॥ ३ ॥ अ
पुन्न धिक ई आ पलघु ॥ बिधि बेन नि पहि चांनि ॥ जो ई कहै अजांन सोई जांनि ॥ ४ ॥ चंम
सुकट रकटथ रै ॥ जांन तनी नू काल ॥ सक रये जांन तब ही ॥ छत्र दियै छिति पाल ॥ ५
॥ समकि मरस समकै कहो ॥ समकै सो सूरि कौ ॥ जगब लयो लौ न्यो लगी ॥ मिल्यो मूल तै
सौंन ॥ ६ ॥ काल रिक व लनक पजे ॥ घरि कैं कांणा बजो इ ॥ जुगि जो पाप रा दो हरौ ॥

काल्हां ही होइ ॥ ७ ॥ बिद्या साधै पाइए ॥ चातुर पन न समझांहि ॥ अवर मब ठाये बहरहिं अति
॥ ढगन बठाये जांहि ॥ ८ ॥ अंतर की जगनाथ जन ॥ जो जांन न समस्या ॥ ति न सो बात
बनाइ कै ॥ कहनी सबै अकथ्य ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ भेद लम री भूष ॥ नू तत्त का भ्राजे नहीं
॥ का हि दाषी जैह स ॥ जो गाडा जा पीतल पषै ॥ १० ॥ साषी ॥ दो हाते ही अषिये ॥ जे थोहा
डु बिनां ॥ ११ ॥ अधूर पूरा करै ॥ पूरै अधिक बषांण ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ सुहङ न संप जियांहि ॥ नियरा
हि सिनां ध्यान ही ॥ सरहै समकित पांह ॥ भेदी बिरा आथै रहा ॥ १३ ॥ साषी ॥ सो जो सेणा न गम्न है ॥ घर
सांनांक हि यांहा ॥ ते गाल्ह डि पांपेट मैं ॥ बाहे बणा थहयांहा ॥ १४ ॥ जांण ता की अधिक दुष ॥ आ जांण
ल अजां ॥ घै ती कहैं जु पेम की ॥ ते हबरे कि सांण ॥ १५ ॥ कबीर जांण भगत का नित मरण ॥ अणजांणे
का राज ॥ सर आम सर समके नहीं ॥ पेट भरण सों काज ॥ १६ ॥ फरीदा जिनि मकबूल न बकिया ॥ तिनि सुषरै
नि दिहाड ॥ सें रूआस लफी न कि या ॥ चप्परि न ईखलाइ ॥ १७ ॥ जगत जनयो सो जिहिं सकल ॥ सो हरि आंने
नांहि ॥ ज्युं आंषि न जग देषियां ॥ आंषि न देषी आंहि ॥ १८ ॥ अक अगुन अछि र सगुन ॥ समके भे अपार
॥ बोधे रांधे आप मन ॥ तुलसी चार बिचार ॥ १९ ॥ दादू जब समक्या तब सुरकि या ॥ उलटि समानां सो
॥ कसू कहा दे जब लगैं ॥ तब लग समकि न होइ ॥ २० ॥ बिरह नबिहरी मस्तका ॥ आप मचि तसदा धि

ररा अक्षर मात्रा नसा मेमे मात्रा नाहि अमरजब रामहिमिले
दोनों बदै जाहि

गु०प्र०
९९

॥ज्ञांन राह जगमग णसो॥ न उनमांन बरतो हि॥२०॥ बचन रचन सब को करै॥ अपनी बुधि उ
नमांन॥ हिरदौ बिमल बांणी बिमल॥ जगमग सुज्ञांनि सु ज्ञांन॥२१॥ कहा भयो लछि मनपुरा॥
चारि चारि चौबीस॥ जगमग सुज्ञांन सुज्ञांनि ए॥ जो जांनै ज्यादीस॥२२॥ साषी॥ आगै चौकनी सो
लछन सो है॥ जे मुष मैं मुणांमु होइ॥ ऐसे हरि का नांव बिन॥ बषनां सो भन कोइ॥२३॥ साच
॥सब आयाग सग कर्मै॥ दही मही घ्रत सूं धै॥ बषनां बाकी क्यार हा॥ जब उ छिपी याह थी॥
२४॥ जैं तिन बास्या फूल सं गि॥ यूं हिरदे रांम बसाइ॥ बषनां त्यांह की बास सं ना॥ जुग जाते
साहिस जानमी० नहीं जाइ॥२५॥ इति संपूर्ण॥ द॥ग्र २२८॥ अथ गोष्टि बद्धित का अंग॥ साषी॥ जो गीक छ णी जे
गु की॥ तासों मूष न बोल॥ कथा मे न्यारा कसे रेपा॥ जोगी तिन्हां न तोल॥१॥ हाथ पर षि का ल्कु
है॥ तासों मांडि न बाद॥ सारे मारा ज्ञांनियें॥ फूटे फूटा नाद॥२॥ पी हेदी पछि तांइ रा॥ पहले
नहि पैं पाइ॥ मूरष सूं गोसटि कहा॥ अनरस घेर संजाइ॥३॥ सोरठा॥ बंक छि न बाद कियं
हा नि मांहित बरुछि न किणी॥ जीतो जी तो नाद॥ जे हारियो तो हारी यो॥४॥ साषी॥ सीगं
अंके हरणा आंटी करणा॥ जौ लै अपणी लाइ॥ बषनां तिनसों क्या कथा॥ जे हरि का सुमरन आर राम
इ॥५॥ चल क्या बोलै गाहष मैं॥ ता गा रंग अरंग॥ बषनां तास्यो संग की या॥ हो इ भ्रांति का भंग॥६॥ ६९

दादू राम दादू राम दादू राम दादू राम दादू राम दादू राम दादू राम दादू राम दादू राम दादू राम दादू

सुल क्या बोलै चाहष मैं॥ भगति हेत कै भाइ॥ तिस का पग की पांनही॥ बषनां सीस लगाइ॥७॥ जे बोल्या
तौ रांम कहि॥ जे चुप का तौ रांम॥ मन मन मांहि रदा म हीं॥ बषनां यह बिश्रांम॥८॥ बषनां बांणी सो
भली॥ जिहिं बांणी मैं रांम॥ बकणां सुणणां बोलणां॥ रांम बिनां बेकांम॥९॥ समके सेती गोवडी॥
ला हा लहंत परेह॥ पूरी पूरी पूरियां॥ आधूरी पूरे ह॥१०॥ आण समके सूं गोवडी॥ की करि जे हीब
त्थ॥ बहता नीर बघोलियां॥ कछु न आवै हत्थ॥११॥ समकायो समूके न सग॥ जो कहि रे सो बार
चतराचित बनि मै लबै॥ सब मेकि एक रता र॥१२॥ साषी॥ ता नर सौं गोष्टि कहा॥ जो आप सरा है
बे परवादी कहन को॥ ले मांगेपी चाहे॥१३॥ साषी॥ षोजी आप सराहतां॥ तीन थोक की घात॥ बुधि
वो छी बाचा असुधि॥ आव घ्या घटि जात॥१४॥ अपनी की रति आपमुषि॥ रसिया बड़ा न कहंत॥
फीके लागत कमबक हि॥ जे ऊच हया गहंत॥१५॥ हरियो ई हरिया इभला॥ जे जल सीचे पूरा॥ अप
सी सूं कै का ग के॥ निकसत नहीं अंकूर॥१६॥ इति संपूर्ण॥ द॥१५॥ ग्र २३०५॥ सयुक्त आग चौपइ॥ गुण सदगो हिवजीत०
देत नै गाई ज्ञां णी॥ रूप देत नै बेद बषांणी॥ धन देत नै बिनै प जोटे॥ मां णि कढ धर्मे सा कर लोटे॥१॥

गु०ग्र० ४२ साषी॥ भीगबोलगा सबचलन॥ परश्रो गुगाहकेगा॥ एहयबंगेनांनुका॥ चीथाहयांभेगा॥२॥ फरी
दाइतजिहां नहिचि॥ एहयचंगेटोलु॥ हथोंमेंनेन बिंदते॥ मुषेंमिला बोल्ला॥३॥ श्रांहन्पांच
छेजहांदने॥ टोटेत्यागी होइ॥ अरिजोबनमेंसी लबंत॥ सो मुलदीजे लोइ॥४॥ चोज्जाषी॥ ना
हेजोबनजेमरजती॥ कालेषका लेतेनरमती॥ करतेंभोजनश्रलपश्रहारी॥ कहेगोषेनाथसे
कायाहमारी॥५॥ श्रहनिसिमनलेउनमनिरहे॥ रामकीछानिश्रमकीकहे॥ श्रासाछांडेरहेन
रास॥ कहेंब्रह्मामेंताकादास॥६॥ श्ररधंजातागरधेंधरे॥ कामदग्धजेयोगीकरे॥ तजेंश्रल्पमन
काटेमाया॥ ताकाबिस्नपषालेपाया॥७॥ श्रजपाजपेंसुन्यमनधरे॥ पांचोंइंद्रीनिग्रहकरे॥ ब्रह्म
श्रग्निमेंहोमेंकाया॥ तासमहादेववंदेपाया॥८॥ धनजोबनकीकरेंनश्रास॥ चित्तनराषेंकं
मनिपास॥ नादबिंदजाकेघटिजरे॥ ताकीसेवापारबतीकरे॥९॥ साषी॥ नबेररहेतोमरमि
टै॥ निरबिकाररहेंसकजाइ॥ निर्हिंकोधरहेसुषउपजे॥ निरलोभरहेंपद॥१०॥ निरदंदरहेतो
तनसुषी॥ निहिंचाहरहेतोचैन॥ नमोहरहेनिरबंधकेा॥ निहकल्परहेतोश्रेन॥११॥ निहम
मरहेंश्रासमसुषी॥ निंदकमरहेंदुषजाइ॥ निहतरंगरहेचितथीरकेा॥ निहचिंतरहेपतिपाइ॥१२॥
हिरसमिटेहरिपाइए॥ श्रदया मिटेंदयाल॥ श्रंतरगतिकीकांमनां॥ मिटेंतबंधेकाल॥१३॥ करन

करिजस्यमनगा॥ कलउनिमगतिमांहि॥ कनकपात्रकोमदनजेयो॥ कामबिहूएजांहिं॥१४॥ गु
राकंनदेषेंदेवगति॥ कलकहादेवेंसाध॥ किस्तूरीकाकलनिकउ॥ गुगाकमबकतश्रगाध
॥१५॥ कलर्कंकहावषानिये॥ गुगाकर्मकंनवषांगा॥ पासिंहीरागुगाकरिमहंगा॥ कलतेांक
हापषांगा॥१६॥ मादश्रारसीमेंदमधु॥ गुगाकरिप्यारहोइ॥ कलकहाबकोईमहे॥ गुगामोंनें
सबकोइ॥१७॥ पांनफूलघृतमाया श्रोषद॥ गुगाकरिमहंगाहोइ॥ कलकहावकोईनहीं॥ गु
गामोंनेंसबकोइ॥१८॥ इतिसंपूर्गा॥ छप्पय॥ साधसपरसकीनलीप॥ साषी॥ कहेकबीरहरि
भीम॥ साचीसंगतिदेज॥ फलनकबहूंश्रादरे॥ बनबासीजसहै॥१॥ कबीरजांनिहकिसाच
हिंतजे॥ करेंकबमोनेहू॥ ताकीसंगतिरामजी॥ सुपिनेंहूजिनिदेज॥२॥ दादूप्रेमकप्याहरिमीक
हे॥ करेंभगतिल्योलाइ॥ पीवेंपिलावेंरामरस॥ सोजनमिलवूश्राइ॥३॥ दादूसुषदिषलाइसाध
काजेउमहीमिलवेंश्राइ॥ उमनमांहेंश्रंतरकरे॥ दईनदिषाइंताहि॥४॥ कालकसघातनिहिठल
॥ चितचंचलमनचोर॥ स्वांगाबिनासनसंषिया॥ दईमलेहोर॥५॥ जनजुनैजोवनएका॥ पीसेक
छकबार॥ नरसामिलेयोगियं॥ जंतनिहीइश्रधार॥६॥ सोगी॥ कबीरतासमिलाइ॥ जासहिया
लीहंबसे॥ नांतरबेगिउगाइ॥ नितकागंजनकोमहे॥७॥ सबद॥ जिनिमिलियांमेंडीकुमतिदंजें॥

r 56

hundred seven

DMV 14 B

P 92

गुरुग० भेर

साषी॥ मीठा बोलणा सच्च चलण॥ परश्रो गुण दके ए॥ एहु पच अंग मो मांनु का॥ चौ था द्य थां के गा॥७॥ फरी
दा इतु झि हां न बिचि॥ एहु पच अंग गै टोल॥ हथों मे वेन बिच दे॥ मुषों मिठा बोल॥८॥ आदंन पाप
हे ज सा इहं मे॥ टोटे त्या मी होइ॥ अरि झो बन मे मीसी लवंत॥ सो सुल दही जे लो इ॥४॥ चौ ण साषी॥ मा
हे झो बन जे मर जली॥ कालेहु का लेते न रसती॥ कुरंते भोज मन्न ल पन्न हारी॥ कहे गोषे नाथ से
का याद मारी॥५॥ अहनिसि मन लेउनु मनि रहे॥ रामकी ठाणि अमन की कहे॥ आसा छाडे रहे न
रास॥ कहे ब्रह्मा मैं ता का दास॥६॥ अरधे जाता उरधे धरे॥ का म दग्ध जे योगी करे॥ तजे अल्प मन
का टे माया॥ ता का बिस्न पषाले पाया॥७॥ अजपा जपे सुन्य मन धरे॥ पांचों इंद्री निग्रह करे॥ ब्रह्म
अग्नि में होमें काया॥ ता स महादेव बंदे पाया॥८॥ धन जोबन की करे न आस॥ चित्त न राषे
मणि पास॥ नाद बिंद जा के घटि जरे॥ ता की सेवा पारबती करे॥९॥ साषी॥ नृबेर रहे तो मरम मि
टै॥ निरषि कार रहे सक जाइ॥ निद्रि क्रोध रहे सुषत पजे॥ निरलो भ रहे पद॥१॥ निरदंद रहे तो पद
तन सुषी॥ निर्दिंदा स्थिर रहे तो चैन॥ नृमोह रहे निरबंध ह्वे॥ निह काल्प रहे तो श्रेन॥७॥ निरह्म
मेर रहे श्रा त्म सुषी॥ निंद्र क्रम रहे दुष जाइ॥ निहतरंग रहे चित थीर रहे॥ निरद्वंद्वं रहे पतिपाइ॥८॥ राम
द्विरस मिटै हरि पाइए॥ अद या मिटे दया ज॥ अंतर गति की कामना॥ मिटे तब चेका॥९॥ करन ९२

करि गुरु मन ए॥ कुलतनि मगति मांहि॥ कनक कामनी को मदन जैपे॥ का मा बिष्ट पूजां हिं॥४॥ गु
सा कों नदेषे देव गति॥ कुल कहा देषे साध॥ किस्तूरी का कुलनि कुछ॥ गुण कम सब जाते आध
॥९॥ कुलक कहा बषानिये॥ गुण कम कं न बषाणा॥ पासी ही रा गुण करि महंगा॥ कुल तो क
हा पषाण॥६॥ मांवं आर सी मेद मधु॥ गुण करि प्यारा होइ॥ कुल कदा बकोई नहीं॥ गुणगों ने
सब को इ॥१०॥ पांन फूल घृत माया औषद॥ गुण करि महंगा होइ॥ कुलक हाव कोई नहीं॥ गु
मगुन० णमां ने सब को इ॥११॥ इति संपूर्ण ग्रंथ रत्न॥ साध संपर महीनमी॥ साषी॥ कहि कबीर ह्म र
भीम ती॥ साधी संगति देऊ॥ कुबनकबन्न आदरे॥ सनबासी जंगे हा॥१॥ कबीर जा नि हकि साच
हिल जे॥ करे कुल सो नेहु॥ ता की संगति रामजी॥ सुपिने ह जिमिं देहु॥२॥ दादू प्रेम कुप्या हरि की क
हे॥ करे अगनि ल्यो लाइ॥ पीवै पिलावै राम रस॥ सो जन मिलयो आइ॥३॥ दादू सुष दिष लोई साध
का जेहु मही मिलवै आइ॥ उमम्मां है अंतर करे॥ दईन दिषाई ता हि॥४॥ काछ क सूचा तनि निहिचल
॥ चितचंचल मन चोर॥ स्वामा बिना सनु संघिया॥ दई न मिले हीर॥५॥ जनजो जोबन थका॥ दीसे क
लुकार॥ नरसा मिलै यो बियं॥ जंतनि चिहोइ अषधर॥६॥ सोषी॥ कबीर ता स मिलाइ॥ जा स हिया
लीह बसै॥ नां तर है गिगाइ॥ निसकां गंजन की मरे॥७॥ सबदी॥ जिनि मिलिया में ड़ीकुमति बजे॥

मंतअरु साफ़े सेई॥ भेंटहूं दीजगत सबाय॥ नांम कबिरले कोइ॥८॥ साषी॥ दादू जब दर वैत
बदी जिये॥ भम पेमांगू येऊ॥ हरि प्रति दुसैन साध का॥ प्रेम भगति दिढ देऊ॥९॥ कै सो क्रपा
कीजिये॥ जन कबीर परई सु॥ संगति साचे साध की॥ दीजे बिसुवा बीस॥१०॥ सत संगति
मम दीजिये॥ संग अरु संत विचारि॥ जं प्रभ ध्यान थेती धनी॥ कहि कबीर करि बारि॥११॥ सा
संगति सर रक्षकरो॥ जिहिं तुम सरबा वो चीति॥ कबीर कमे रूप मे जिटि॥ दादू भजन परमातिम॥१२॥ इमिम
पूरी॥ छग॥ रवनप भुवन का सीक साधण॥ दादू सगी पया जु मे॥ साचा लेसे नांउ॥ सकल लोक सिधि
देषिए प्रगट सब दीसंग॥१॥ मनसा बाचा क्रमनां॥ अगतअ जेभगवंत॥ कहि कबीर जो नांम दी॥ प
रगट लोक अनंत॥२॥ कबीर सब को जांनई॥ जन गुन्ता नहिं गोइ॥ प्रगट शेशमहेस अ. जगविजै
भै सोइ॥३॥ दादू सो बेत हैं छिप्या धूए॥ साच न छांनां होइ॥ सेवार सात लिग गमन श॥ प्रगट कहिये सो
इ॥४॥ दादू कहां थांनां दे मुनिजनां॥ कहां भगत प्रहिलाद॥ प्रगट तीन्यूं लोक मे॥ सकल पुकारै
साध॥५॥ दादू कहां सिव बैठा ध्यांन धरि॥ कहां कबीरा नांम॥ सो छांनां होइ॥ जेर कहैं गा रांम
॥६॥ दादू कहां लीन सुकदेव था॥ कहां पीपा रहिदास॥ दादू साचा क्यूं छिपै॥ सकल लोक प्रक
स॥७॥ दादू कहां था गोरष भरथरी॥ अनंत सिधों का मंत॥ प्रगट गोपीचंद है॥ दत्त कहै सब संत

॥८॥ शेशमहेस गनेस सब॥ नारद मुनिजन और॥ जगन्नाथ जुग जुग बिषै॥ प्रकासिक सब ठौर॥
९॥ जोगे सुर रिषि जां निये॥ सनकादिक नव नाथ॥ परचे ताय गोट संवे॥ हो नांनहिं जगनाथ॥
१०॥ सोधि दत जती सती॥ तनवे तात तल्लीन॥ जगनाथ हे जु यकहै॥ मोटा जे मसकीन॥११॥ नांम
नांमां नामेले॥ सु धरे सकल सरीर॥ पीपा प्रगट लोक मे॥ जन धरे दास कबीर॥१२॥ साध सिद्ध सेव
जती॥ लघु दीरघ हरिदास॥ गुप्त सु प्रगट करन को॥ जन दादू परकास॥१३॥ चौमुषी॥ धुनियां
धुजू प्रगटे॥ सुनियां से समदे सा॥ ढुनियां मे दादू कहै॥ सुनियां मन परदेस॥१४॥ साषी॥ जगन
थ जगदीस जन॥ परकासिक सज नीक॥ साच छिपाया नां छिपै॥ हिलि मिलि जूवा नजीक॥१
५॥ अगम अगोचर राषिया॥ करि करि कोटि जतंन॥ दादू छांनां क्यूं रहै॥ जिस घटि रांम रतंन॥
१६॥ छांनी माया नां छिपै॥ दीसे मस्त कमांहि॥ प्रगटनिधि जगनाथ जन॥ कहि हिलु कायें जांहि॥
१७॥ सूर छिपै का बादरी॥ नजरि न आवत और॥ जगनाथ जगदीस जन॥ परकासिक सिरि मे
र॥१८॥ है मिति थि चंद न दीसई॥ ये यो कहां आसिनास॥ जगनाथ घट लीक ला॥ दिन दिन जन पर
काश॥१९॥ बसन बोट के सैकरे॥ दीपजोति जगनाथ॥ त्रिसे साध जु जासंहै॥ बंदनीक गुनगाथ
२०॥ निदाय घट अंतर रकिये॥ दासन दीपक रत॥ जन जगनाथ जहां रहै॥ तहां प्रकासक रंत॥२१॥

पु० ममा० ६४

पूजा पटरन ग्रटरहैं॥ षटरचतुर सबदीन॥ जगनाथ तिन ऊपरैं॥ पुरष प्रकास पुनी मा॥२३॥ जिं
हि हिरदै हरि ग्राइया॥ सो कंछु कांनो होइ॥ जलनजंतनक रिद्धासिध॥ ता ऊपर गटै सोइ॥२४॥
तसकर तो हरि बसुस॥ गाफिल पांणी मांहि॥ जसु गाफिल तर उछले॥ का सुबकानां मांहि॥२४॥ मुख जएसा ष
तिरै॥ परमेस्वर के संत॥ जेगाफिल का लूकदै॥ ऊपरि आइ रहंत॥२५॥ पुरष प्रतापी हरि दिखै॥ सक
मुनि कटहिं जानि॥ लहिजो जन पररहि बसै॥ पंच अगनि मैं मांनि॥२६॥ ब्रह्मा संकर सेस मुनि॥ ६
नारद ध्रू सुष देव॥ सकल साध दादू सही॥ जे लागे हरि सेव॥२७॥ कबीर रमइया केउ की॥ अवर अस
सब दास॥ जहां जहां समाति कबीर की॥ तहां तहां राम निवास॥२८॥ साधु कवल हरि वास मां॥
पुरिष कासी कमा० ४०
संत भवर संगि आइ॥ दादू परिमल लेचलै॥ मिले राम कौं जाइ॥२९॥ इति संपूर्ण॥ ६॥ स्वद्ध॥ स
ध मद्धि ग्रंथ [illegible]॥ साषी॥ दादू निराकार मन सुरति सौं॥ प्रेम प्रीति सौं सेव॥ जे पूजे आकार कौं
॥ तौ साध प्रतषि देव॥१॥ रूप [illegible] जो मैं जे पांनी ध निराराध॥ जोइ सेवै रूपकौ॥ तौ मैं देही सा
ध॥२॥ सेवै देही हरि साधदे॥ तिनकौ मति करि भेद॥ सब साधमें हरि बसता॥ पारिष तारै भेद॥३॥ सरवा
वंतके सुरति सू॥ अविगत सेवि अगाध॥ कहि जगजीवन देह सू॥ पूजे तौ गुर साध॥४॥ दादू मे राम ६४
जन दी जैदेह कौ॥ लीया मन विश्राम॥ साधों के मुषि मेलिए॥ पाया आतम राम॥५॥ जंगम जंगम का याजी

इंकै॥ [illegible] सांई की साध॥ दादू सब संतो बिना॥ मोहै आप अगाध॥६॥ सतसंग राम भगवंत का॥ मांहि मेने
क संदेह॥ जिनि पोषे जगनाथ जन॥ ति निती मेहरि नेह॥७॥ साध सेवग परब्रीत कै॥ ते जगनाथ गया
रा सुरत रगो मन निपंमनो॥ मांमत जन्दर अहार॥८॥ मुनि परब्री जगनाथ तव॥ दा सदर सजब्र होइ
हरि घरि आप तिविद जप॥ अलदिन पूरे को इ॥९॥ राम जपे रुचि साध कौं॥ साध जपे रुचि राम॥ दा
दू दूनूं एकटग॥ यह आरंभ यह काम॥१०॥ निगुसांवां कलन बाहिरा॥ मोल माल बपरहा॥ रमैय
कै तौ संधणी॥ कहिनें थारे कौंण॥११॥ या तो रमिता सू नहीं॥ यह ठे कथा अगाध॥ अंर रमिता कौ इंक
धणी॥ म्हारे म्हारा साध॥१२॥ दादू इस संसार मैं॥ पहि रहै लुकाइ॥ राम सनेही साधजन॥ और सब जतेरा
आइ॥१३॥ दादू इस संसार मैं॥ यहै रतन अमोल॥ इक सांई अरु संतजन॥ इनका मोल न तोल॥१४॥
कबीर ध्यरती अरु अंबर मां न बिचि॥ [illegible]॥ षट दरसन संसाय पडया॥ अरु चौरासी सिध
॥१५॥ कहि कबीर या काल में॥ यह दै बस्त अगाध॥ मुकति करैं अरु मुकति दे॥ परमेसुर निज साध॥१६॥ कबी
र मेरे संसी को नहीं॥ इक कबे [illegible] के राम॥ सौ देख्यातां मुकति का॥ सो सुमिरावे राम॥१७॥ जहां राम तहां सं
तजन॥ जहां साध तहां राम॥ दादू दुन्यूं एक ठौ॥ अरसपरसि विश्राम॥१८॥ दादू हरि साध यूं पाइए॥ अवि
गत के आराध॥ साध संगति हरि मिलै॥ हरि संगति तें साध॥१९॥ दादू राम नाम सौं मिलि रहै॥ मन के छाड

गुं०ग० ६५ विकार॥ तो हिरदै मांहि देषिये॥ दूनं काटी दार॥२०॥ साध समो मांगो मेमें॥ रांम रह्या भरपू
रि॥ दादू इनमें एक रस॥ को करि कीजे दूरि॥२१॥ दादू पीव कै पग परसि यें॥ मुक्त देषत क
यां॥ तन दीले सो सब वाड ये॥ जुधा धरे ध्येपावं॥२२॥ हित चित करि यह रिवे हिरिया॥ संगम मत
प्र मे रि॥ जो जीव साध के दरस मैं॥ पाप ताप कहि हरि॥२३॥ श्रवन सुनत सीतल सुषी॥ दरसु
देषि दुष जांहि॥ जगनाथ साध मिलें॥ जिय की जर मिटु जांहि॥२४॥ साध सुनत सुष ऊपजे॥
दरसत दुष भघ जांहि॥ जगनाथ परसत अये॥ पतिपार सपरसां हि॥२५॥ प्यां जी दरस नि साध के
सब तीरथ फल होइ॥ अजर हि माहि मा अगमदै॥ दर्श विरला कोइ॥२६॥ साध मिलन हीं उपजे॥ द
रिजस सोरु चिहता॥ जगनाथ निज गुणन के॥ उघरें निर्मल नेत॥२७॥ जो मल धनि म हरत धनि
घड़ी॥ धनि रैनि दिन सो आर॥ हिय संगति साध की॥ जहां हरि सुमरी होइ॥२८॥ जगनाथ जनम सु
धरी॥ मायें किते गुन होइ॥ कथा कीरतन सुनि सुषी॥ अरु अस थिर मन सोइ॥२९॥ साध संध नो पोते हैं
करिया कथा विचार॥ जगनाथ जम जुगति सों॥ पसेन पेली पार॥३०॥ जो जग नर संसार मैं॥ जनन गु
दीस जिंदा जु॥ जगनाथ जीवन मई॥ मति करि साध समाज॥३१॥ साध सु संजरू पंहैं॥ भेद न निमर ग्यां श्री राम
ना॥ जगनाथ जन की जिए॥ नित प्रति न्रभ्रम ना॥३२॥ कबीर सोई दिन भला॥ जो दिन संत मिलां हि॥ ६५

का

अंक भरे भरि भेटिये॥ पाप सरीरां जांहि॥३३॥ धनि धरती घर बार धनि॥ धनि राज धनि गांउ॥ क
म बीर धनि माता पिता॥ जन नें पति जिहि गांउ॥३४॥ दिसा देस धनि नग्र सो॥ जहं जन प्रगट विराज॥
जगनाथ धनि सुनि षेते॥ धनि पर जा धनि राज॥३५॥ अमर नग्र नर तिहूं पुरा॥ हंहं तहीं ता
ति भाव ता बिन रमिया॥ एक सड मे भाहि॥३६॥ मावता सो धिति न दी॥ कोटि कलप जो जात॥ जीम ऐय
बिन रमतिया॥ पीउ मत तक न अघात॥३७॥ बिन बजत निधि वार नें॥ तहां न जन पर वेस॥ जगनाथ
जं सुफल तहं॥ भार ललपेटे सो मा॥३८॥ कदन कांम की मयदा॥ ऊंचे महल अकाज॥ जगनाथन
जं संत जन॥ ने कुंजो न विराज॥३९॥ ऋपरि टूटी टापरी॥ तरे पुरानी घास॥ असन अचीत्य तोष
तिहिं मांन तमन न हिं मि वास॥४०॥ आसत्त तहां निसंकते॥ जगत सिरोमनि दास॥ जगनाथ धनि ते रसु
तास मि नहीं अवास॥४१॥ सोना रूपा गालि करि॥ रतनों चिरि ये वांध॥ ज्यादि ल गोउ न धोल हर
म जहां हरि का नां माछेर॥ साषी॥ नां न कदली सुहाई छपरी॥ जहां हरि गुण गाये॥ ज्यादि ल गोंउ
नधोल हर॥ जहां हरि चिंतिन आयें॥४२॥ साषी॥ जन राते रांम सों॥ तिन की मैं बलि जांउ॥ दादू
उन परिवार नैं॥ जे लागि रहे हरि नांउं॥४४॥ पाप सु पेल्यो पगनि सों॥ दादू निपक स्यो धुन्य॥ आज
द साध के दर्स कौं॥ जो चाहि सुर नर मुन्य॥४५॥ धरती अंबर राति दिन॥ रवि ससि नावैं सीस॥ दादू

गु.ग. ६६ बलि बलि वारने ॥ जे सुमरें जगदीस ॥४६॥ चंद सूर सिजदा करें ॥ मांने अलह कालिइ ॥ दादू ज ।
मी आसमान सब ॥ गुन पाऊं सिर देइ ॥४७॥ सब ही रथ घर निमिष में ॥ सकल देव प्रतिष्ठा ॥ सामी
मी तहां साधु रहे ॥ तहां पुरस निरधार ॥४८॥ ब्रह्मा बिष्णु महेस तहां ॥ इंद्र सहित सब देव
गण नी मुनि जन आदि दे ॥ करें संत की सेव ॥४९॥ देखे फटकि पिछोरि सब ॥ दा संग [illegible] ततन और
८ [illegible] जी साधु बिध ना किया ॥ आपनी इजी गोर ॥५०॥ गणी नी जे सारा मदे ॥ ते सा साधु जोइ ॥ इन की संगति
[illegible] सता ॥ मुक्ति पद प्रेम होइ ॥५१॥ हरि सरवरि ए साध हैं ॥ गुर गमि कियां विचार ॥ गणी नी जब साध मि
[illegible] जा रिपि मिल्य करतार ॥५२॥ जामि [illegible] देस [illegible] नाथ जब ॥ मिलें सिरोमनि संत ॥ मन बच आया [illegible] जानि
तब ॥ सकल अघ न का अंत ॥५३॥ सो [illegible] मिटे जाम ॥ साधों का दरसन कीया ॥ [illegible] तेस ।
काल ॥ [illegible] पीया ॥५४॥ जगनाथ जगदीस सन ॥ जु येन जानि बिबेक ॥ जिसे मा [illegible] अने
की [illegible] तरण का ॥५५॥ इति [illegible] सतसंग महिमा महातम ॥ साषी ॥ एक घडी ।
आधी घडी ॥ भी आधी सौं आध ॥ साधों सेती गोठडी ॥ कोटि [illegible] का फल लाइ ॥१॥ सोवी ॥ साधों
सेती वार जे इक गै तौ लाइ ॥ जे पंथि होइ अवार ॥ तौ अंधेरे घरि जाइ ॥२॥ अंधेरे ॥ तो साध नि राम ६६
सेती वार [illegible] गै तौ लाइ ॥ जो न होइ घर हरि ॥ अंधेरे जाइ ॥ ते इ जन [illegible] जानि ॥ जु तौ जिय ॥

साधमहिमामहातम

मेरें ॥ सब कारज सिधि होइ ॥ क्रिपा जौ वै करें ॥३॥ सोरठा ॥ बारू सेती बार ॥ जो लागे तौ ला ।
इए ॥ दहवा रूह बार ॥ बारे बार न पाइए ॥४॥ साषी ॥ चंचल जीव न जानिके ॥ संत संगति
करि नित्त ॥ जगनाथ पर का सनुष्य ॥ सुमरन अस्थर चित्त ॥५॥ फूटे बासनि जल रहे ॥ जो
जल राषे आणि ॥ जसे बेली घडि यालि की ॥ साध संग यों जानि ॥६॥ साध संगति नित होत है ॥
निरबंधन परम ॥ जगनाथ जड़ जरथ जमसु करे रघुन की न ॥७॥ सत संगति जगनाथ ।
जन ॥ नौ ऊंच ते ऊंच होइ ॥ पतत पुज्य पावन सदा ॥ षुक सनीप तें सोइ ॥८॥ साध उधारे सह
जही ॥ जगनाथ षुक प्रत ॥ कष्ट अकहत का रज किये ॥ कपिल देव द हत ॥९॥ जे में अंबर
अरु नलनी ॥ षेम स पाम ते पीत ॥ यं सत जन संग जानिये ॥ सु नअरघ गुन रस रीत ॥१०॥ गणी नव
त को सुघ घनां ॥ सुध बुध को बुधि वंत ॥ साध संगति की जय ॥ आप मिलें भगवंत ॥११॥ सा
धु संगत सुध बंध ॥ फाड़ चोट जम घा ॥ सा गणी न धम न हरि नाव का ॥ हिरदे होइ प्रकास ॥१२॥
कबीर संगति साध की ॥ बेगि करी जे जाइ ॥ दुरमति दूरि गवाइ सी ॥ देसी सुमति बताइ ॥१३॥
तहां अवसि चलि जाइए ॥ जहां होइ हरिजन ॥ संगति की जे साध की ॥ दी जे अन तन मन ॥१४॥
कबीर संगति साध की ॥ कदे न निरफल होइ ॥ चंदन होसी बांवना ॥ नीव न कहसी कोइ ॥

गुं०ग ६१

।५॥ कबीर चंदन के हिडे ॥ बेठ्या आक पलास ॥ आप सरीषे करि लीया ॥ जे होते उन पास
॥१६॥ रूष बिरष बनराइ सब ॥ चंदन पासैं होइ ॥ दादू बास लगाइ करि ॥ कीए सुगंधे सोइ ॥१७॥ ज
हां अरंड अरु आक थे ॥ तहां चंदन उगण माहिं ॥ दादू चंदन करि लीया ॥ आक कहे को नांहिं
॥१८॥ कबीर साईं कोट की ॥ पाणी पीवैं न कोइ ॥ जाइ मिले जब गंग मैं ॥ सब गंगोदिक
होइ ॥१९॥ भीवर मन सीतल होइ मन ॥ चंदन चंदन पास ॥ सीतल संगति साध की ॥ कीजे द
हू दास ॥२०॥ दादू सीतल जल नहीं ॥ हेम न सीतल होइ ॥ दादू सीतल संत जन ॥ राम सनेही
सोइ ॥२१॥ नहीं सीतल ता साध बिन ॥ शसिमल्रिया गिर नी ॥२२॥ दे मां जनु हरि नांव बिन
जे मल जल लागि सरीर ॥२३॥ दादू पाया प्रेम रस ॥ साध संगति मांहि ॥ फिरि फिरि देखे
लोक सब ॥ यहु रस कतहूं नांहि ॥२४॥ जिस रस कौं मुनि वर मरैं ॥ सुर नर करैं कलाप
सो रस सहजैं पाइया ॥ साध संगति आप ॥२५॥ ब्रह्मा लाग्या रह्या पलोक मैं ॥ साध अस्थान पांन
सुष मारग अमृत करैं ॥ कसतदर्हहा इ अंनु ॥२६॥ अमीं पता लिनया इ यो ॥ नो शासि संग
आकास ॥ पतछि अंमृत पाइया ॥ जे मल साधें पास ॥२७॥ कबीर मथुरा जावो द्वारिका ॥
भावे जावो जगनाथ ॥ साध संगति हरि भक्ति बिन ॥ कछू न आवै हाथ ॥२८॥ तीरथ संगति

राम ६१

साध की ॥ कथा कीर्तन रांम ॥ कहि जगजीवन प्रेम रस ॥ जरि भरि पीवे नांम ॥२८॥ जे मल इह
संसार मैं ॥ सति करि तीरथ साध ॥ दर्शन देषत ही गया ॥ जीव के सब अपराध ॥२९॥ साध नद
जल रांम रस ॥ तहां पषालै अंग ॥ दादू निर्मल मल गया ॥ साध जन के संग ॥३०॥ हि नांम त्रमूल
ता नइ और सब व्यापक सोई नीर ॥ भव न जीव खुन गरल गो ॥ तहां धोइ मन नीर ॥३१॥ संत संगति बै
णारसी ॥ अंतर जामी ईस ॥ सकल कांम नां छाडि जन ॥ आइ समर पेसी स ॥३२॥ सत संगति बारा
णसी ॥ गंगा मुष की बांनि ॥ बिद्या सो अक्षर रते ॥ जगनाथ सति जांनि ॥३३॥ तीरथ मांमा आदि दो
जथा जुगति सब मांहिं ॥ जगनाथ सत संग के ॥ पुनि पटंतर को नांहि ॥३४॥ धांम धाम सिव जु को
छलो ॥ नित प्रति करे सनांन ॥ जगनाथ सत संग छिन ॥ नांहिन ताहि समांन ॥३५॥ कासी यहु सो
सुरधुनी ॥ समपे पद पर संत ॥ निजु निरगुण जगनाथ नित ॥ संत निरिंद्रे बसंत ॥३६॥ सत संग
तते कालिमां ॥ पतित तत जे तत काल ॥ कोइला पावक पसतें ॥ पलक मांझ भे लाल ॥३७॥ सत सं
गत करि लीजिए ॥ कहि का लूप यहु भाव ॥ सहजि पाप कटि जांहिंगे ॥ जे एकु काटे आव ॥३८॥ अ
गुर पद रज पर सतैं ॥ षाचे अगति अपंगु ॥ छिमें नहीं मोह मन अली ॥ सकल बारि सत संग ॥३९॥ पथ
सहोइ श्री हरि कृपा ॥ तब सत संगति होइ ॥ सत संगति तें दिढ भक्ति ॥ भक्ति मोक्ष कहि सोइ ॥

॥४०॥ साध मिलै तब ऊपजै ॥ हिरदै हरि का भाव ॥ दादू संगति साध की ॥ जब हरि करै पसाव ॥
॥४१॥ साध मिलै तब ऊपजै ॥ हिरदै हरि का हेत ॥ दादू संगति साध की ॥ क्रिपा करै तब देत ॥
॥४२॥ साध मिलै तब ऊपजै ॥ हिरदै हरि की प्यास ॥ दादू संगति साध की ॥ अविगत पुरखे आस ॥
॥४३॥ साध मिलै तब ऊपजै ॥ प्रेम भगति रुचि होइ ॥ दादू संगति साध की ॥ दया करि देवै सो ॥
॥४४॥ साध मिलै तब हरि मिलै ॥ सब सुष आनंद मूर ॥ दादू संगति साध की ॥ राम रह्या भरपूर ॥
॥४५॥ दादू राम मिलन के कारनै ॥ जे तूं षरा उदास ॥ साध संगति सौं षेलि रे ॥ राम न्हौ के पास ॥
॥४६॥ ज्यूं जल पर सै धरती को ॥ गहि सलिता को संग ॥ यूं राम मिलन को परगरा ॥ है मारग सत संग ॥
॥४७॥ सत संगति बिन जौ भजन ॥ लहै न सुष की सीर ॥ पर सा मिलै न साध को ॥ नदी बहंती नीर ॥
॥४८॥ सीप न निपजै साध बिना ॥ मुकताहल बिन सीप ॥ यूं साध न निपजै साध बिन ॥ परस राम कहुं दीप ॥
॥४९॥ मीरबि नां निपजै नदी ॥ पर स राम मन मन ॥ यूं साध न निपजै साध बिन ॥ फिरि सोजै मन षैन ॥
॥५०॥ बाजी दरदास कैसा प्रसको ॥ फल कहा बरनैं कोइ ॥ तांबे तें कंचन भयो ॥ पारस परसै सोइ ॥
॥५१॥ संगति बिन सीझै नहीं ॥ कोटि करै जे कोइ ॥ दादू सतगुर साध बिन ॥ कबहूं सुध न होइ ॥
॥५२॥ माया मरत न तरंगनी ॥ इनसु न रही परकास ॥ तामैं देषहि जाइ जो ॥ के

साध निमिलै सबकौ ॥ ५३ ॥ सत्य लोक पाताल बिचि ॥ बहै जात सब जांनि ॥ सत संगति गहि दिनि
कसि न रा ॥ बहन अपार तजि प्रांनि ॥ ५४ ॥ नरक का सो सत संगति ॥ करिया आत्म ग्यान ॥ पार दे
तजो साध कै ॥ जगनाथ आसान ॥ ५५ ॥ ग्री न हरन आनि हित करै ॥ किंयू सत संगति बास जं
ब्रिष सौ षधि सन मिलै ॥ करै रोग को नास ॥ ५६ ॥ साध संगति अनसूरै ॥ ताका कुरान दोष
ल मीच्य मडु षटै रे ॥ ग जिन सकै कोइ ॥ ५७ ॥ काम कटै देदसै न कियो ॥ समझै साधु सुमा स
त संगति उपगार यूं जा ॥ भागै कलि बिष भ्रम ॥ ५८ ॥ पाप ताप सब कलपना ॥ सत संगति
जाइ ॥ ग्यानी दुष सह जे मिटै ॥ सुष में रहै समाइ ॥ ५९ ॥ ग्यानी संगति साध की ॥ ग्यान बिचा
र बबेक ॥ रिधि सिधि चेरी मुकति है ॥ सब सुष दुष न हि एक ॥ ६० ॥ जगनाथ सत नि साधि
जिय ले मिलि परम गति पाइ ॥ लाते है तातें मन नहिं ॥ लाइ बुझै तहीं लाइ ॥ ६१ ॥ इति संपूर
॥ ३० ॥ २६८० ॥ साध संग महिमा को अंग ॥ साखी ॥ साध बचन समि मिष्टना ॥ और न जा
नै जाल ॥ दादू दादू सुकच ॥ तिन मुष न यो निराल ॥ १ ॥ दादू राम रिदै रस भेलि करि ॥ को
साध सबद सुणाइ ॥ जांनों कर दीपक दिया ॥ भ्रम तम सब जाइ ॥ २ ॥ साध सबद सरूप है ॥ बि
षका पालन हार ॥ जगनाथ जिय सुरषै ॥ पीवन अमृत न दुवार ॥ ३ ॥ दादू राम रसाइन भरि
सत संग महिमा को अंग संपूर्ण

गुंज्या. २६

धरया॥ साध निसबद संकारि॥ को पारिष पीवै छीति सो॥ समझै बचन बिचार॥४॥ सबद रसांइन
साध को॥ जिहि देत पलटै धात॥ जगनाथ कंचन भए॥ होत सकल ही गात॥५॥ हरी भए तृप्त तहां सदै
तहैं॥ सबद म थोर समोइ॥ देह पोष पृतर म मयषें॥ जगनाथ जन दोइ॥६॥ साधु बरिषे राम र
स॥ अंमृत बांणी आइ॥ दादू देषन दोष ता॥ त्रिविधि ताप तनि जाइ॥७॥ साध सबद सुष बर
षहिं हैं॥ सीतल होइ सरीर॥ दादू अंतरि आतमां॥ पीवै हरि जल नीर॥८॥ सबद सुनत सुष क
पजे॥ कहत आनंद होइ॥ करते का रज सरत है॥ जगनाथ गति सोइ॥९॥ दादू हरि रस र
की बांणी साध की॥ सो परिये मेरे सीस॥ छूटै माया मोह ते॥ प्रेम भजन जगदीस॥१०॥ साचा
सबद कबीर का॥ मीठा लागै मोहि॥ दादू सुनतां परम सुष॥ केता आनंद होइ॥११॥ जगनाथ
जन सबद सौं॥ लाग्रत लगै न काल॥ जमि क्रम ब्यापै नहीं॥ छूटै माया जाल॥१२॥ जन बांनीं
आतम है॥ जन मन मन की मूल॥ जगनाथ जन पाइए॥ सकल सुषनि कौ मूल॥१३॥ सिरागि मां
नी पुरष की॥ सामल तौ सुष होइ॥ कहत बिठल जगनाथ जन॥ करता करता सोइ॥१४॥ इ
ति सपूर्ण॥ १४॥ २४६॥ साध पारष लछिन॥ साषी॥ दादू साध परषिए॥ अंतरि आतम देष॥ राम
मन मांहैं माया रहै॥ कै आपै आप अलेष॥१॥ एक नांइ ल्यामा रहै॥ आग मदा इकरंग॥ जगनाथ २६
साधमए प्रसिषि महात्मे

न म साध का॥ कीजे सोधि स संग॥२॥ मैं मेरी बिन साध सो॥ लघ दीरघ सौं हीन॥ जगनाथ निर
बैरता॥ निज मन सौं पन लीन॥३॥ संतनि के नहीं सत्र को॥ औन्यो कों जगनाथ॥ षरि मिले
कहि बचन जन॥ पुरसी ल्यावत माथ॥४॥ दुनिया मैं दुरि जन नहीं॥ कही कही कोय क॥
जगनाथ सजन सरे॥ महा परम की टेक॥५॥ ने नो मे पुतरी मही॥ जगनाथ तन न्यार
थू संतनि घट स्वांति है॥ दुषमिल्यो निकोर॥६॥ साध षुसी आनंद सुष॥ रीम हीतरसार
गा॥ जे मे बरसन जटाधि का॥ किया अभर जइ अगा॥७॥ निहिं अगपी तम से परम॥ तिही मबंअ
ग अंग॥ जैसे जिरहनि दाल कहि॥ मिमटि ही ढिइ कं गोर॥८॥ करपल्लव ठकरी बनो॥ हद
सबनि का एक॥ ऊंच नीच समि जो मिलै॥ काल्ह कहा बबेक॥९॥ सुषिया सुष सो चाहिए॥
घां न पांन कै एक॥ पाले पोषै सकल अंग॥ तुलसी सहित बबेक॥१०॥ साध बडे सबनि के
॥ जगनाथ अहिलाद॥ जं पिता ज्ञासप तिपे भयो॥ पिथी दुष पहिलाद॥११॥ चले न मन न है
य माल परि॥ अच गुन तजि गुन लेत॥ जगनाथ जन डुष सहै॥ औरनि के सुष हेत॥१२॥ म
रंथ न बांधे गांठड़ी॥ नहीं नारी सौं नेह॥ मन इंडी अस थिर करै॥ छाडि सकल गुन देह॥ मा
रा कार सौं मिलि रहै॥ अघेर मतिक रिलेह॥ दादू करु करि पाइए॥ उन चरनौं की षेह॥१३॥

मु०सा० जिहिं घट मैं संसो बसै ॥ तिहिं घटि रांम न जोइ ॥ रांम सनेही दास बिचि ॥ तिणां न संचरे होइ ॥१४॥ र
१०० दादू साध सिरोमणि सो थिलै ॥ नदी पूर परिश्रा इ ॥ सजीवनि सांष्यां चढै ॥ इ जा बहियां जाइ
॥१५॥ श्री गुर छाडे गुन गहै ॥ सोइ सार रामि साध ॥ गुन श्रवगुण ते रहित है ॥ सो निज ब्रह्म
स्वरूप अगाध ॥१६॥ कबीर संगति साध की ॥ फल सत हुं ॥ जे कोटि मिलै असंत ॥ चंदन भुवंग गांवहि मै । क
सीतल ताप न तजै त ॥१७॥ कबीर चंदन बावना ॥ किस ही रंग न मिलाइ ॥ आप मे दीरे
ग राचि कै ॥ सोइ सब बन राइ ॥१८॥ साध सदा संजम रहै ॥ मेला कदे न होइ ॥ दादू पंक
परसै नहीं ॥ करम न लागै कोइ ॥१९॥ कबीर हरि का भांवता ॥ दूर तै दीसंत ॥ तन षीन
मन उनमनां ॥ जग रूठडा फिरंत ॥२०॥ कबीर हरि को भावता ॥ फीका पंजर ॥ ता सु
षि निन्द्रा नां सूवै नी रही ॥ श्राग बाहै मांस ॥२१॥ दादू जब लग नैन न देषिया ॥ साध कहै
ते अंग ॥ तब लग क्यूं करि मानिये ॥ साहिब का परसंग ॥२२॥ दादू श्रमर पिव कंत्र अनत
सो ॥ सदा निरंतर प्रीति ॥ जिहि पारीषी न सब सै ॥ सुष गावे सब जीति ॥२३॥ बाजीद
बात एकै गहै ॥ दुईं दीन दुनीं मैं ॥ अंधा बिचार करत है ॥ जो जाणै हरि कै जनां ॥२४॥ धनी राम
श्राप संभार दूरि ॥ कबी कहा कहां मीत ॥ एक राम के नाम बिन ॥ रहै न इजी धीमा ॥२५॥ १००

रांम नांम रस मांत रहै ॥ केवल मन हिं जस कां ॥ हा पतिव्रत एह सनांग है ॥ भई सतगुपा श्रांम ॥२६॥ बा
जीद साध अस्थिर भए ॥ मन की मिटी बटोर ॥ कहिबो सुनि बो समझिबौ ॥ बिन जगत तन श्रौ
र ॥२७॥ जगत में मघन हरि हि तन मगन ॥ प्रफुलित आदि सत अंत ॥ श्रैसे संत बसंत है ॥ निस दि
न तहां बसंत ॥२८॥ सील छिमा आवरु साच सुचि ॥ पुरष हि भूषन एह ॥ पाहिली मे तत्पमन रत
मनै मी सब धरि देह ॥२९॥ सुधि अरु गपा नकि मादया ॥ दम सम सति संतोष ॥ समता सत तप
दां न ज सा सुषदु षतें निरदोष ॥३०॥ सावसु निति न अभावृते ॥ श्रैसे जन सब हि पोष ॥ सुमरन
रत जगन्नाथ दरसि ॥ प्राप्ति तत्प मस मोष ॥३१॥ रैदास कहै जा कै रिदै ॥ रहै रैनि दिन रांम ॥ सो भग
ता भगवांन सम ॥ क्रोध न ब्यापै कांम ॥३२॥ मत प्रमत तसम मतप्यको ॥ छुधित त्रुधित न यवंत
॥ ब्रह्मचारी लोभी न गपो ॥ इन बिन बचन न सु संत ॥३३॥ श्राद्वारा सीम न सुषा ॥ रहत बिहलनि
जदास ॥ पांच भक्त मैं परस रांम ॥ ते कम भक्त की श्रास ॥३४॥ गुन के श्रांति श्रतीत सो ॥ बिषकै श्रंत
बिचार ॥३५॥ श्रांति सति पाइए ॥ सुंदर तत बिनिरधार ॥३६॥ छिनु सोहित रति रांमु सों ॥ बैरती स
रैभाव ॥ उदासीन सब स्यो मरहे ॥ जल सी सहजस्व भाव ॥३७॥ देषी अन देषी करै ॥ सुनी अन
सुनी कांन ॥ तेन र कहिये दे वता ॥ बेठे सुमति बिवांन ॥३८॥ कहै सुने हरि की कथा ॥ कैसु घर ।

गुं०अ०
१०२

हैं बमीं न॥ साध जन संसार जंग॥ ज्यां न तो रहिं पींन॥४८॥ आंन कथा नुहिं उचरहिं॥ मुष सनां
नीं पीव॥ ल्याव लोग मरहिं जांनि यें॥ जु तो बिबेकी जीव॥४९॥ घट की आंनि अनीति सब॥ मन की
मेटि उपाध॥ दादू पर हरि पंच की॥ राम कहैं ते साध॥५०॥ इक तो अनल्यो न आपई॥ दूजे सब मे
दीन॥ बाजीद बिक्षता साधया॥ को नबस्त की नाथ॥५१॥ आंन अनल्यो आंषे नहीं॥ कंबहूं न बि
सैरे राम॥ जगनाथ अनहित रमां॥ साधन संचे दाम॥५२॥ अपरानि बंछे नहीं॥ गाइ बस्त च ह
सो क॥ मोहन पावें आपदा॥ नहे संत सालोक॥५३॥ बिरहन बिदरी बस्त को॥ आगम चितव
मनोहि॥ आमराई जगनाथ जन॥ बरत मान बरतां हि॥५४॥ सती सूर दातार को॥ हिरदे
छील तरी जानि॥ जो देषे हरि को कीयो॥ हियो अगाध बषांनि॥५५॥ सो रग॥ उन्मन मं॥ गोम
रा अरु औ तन्न तन नहीं॥ हरिजन नन जं छीर॥ आन उदक्षिण रिपे बियें॥५६॥ साषी॥ रेवह
ग्रीष्म संमन सी॥ देषत हरि के दास॥ न्याइ सबै को देत है॥ हरि किय लोच सुवास॥५७॥ कोम
ल पनां मिटि गई॥ कंचन तो सो लोह॥ सील सु भाव तयें रहे॥ हंनहार सो होइ॥५८॥ आपैन
ही आनंद कहुं॥ मां कछु मयें विषाद॥ सुष दुष दोऊ सम करै॥ सोइ जानिहुं साध॥५९॥ पंचप
ची सनि को गहै॥ रहे सजिय की गाय॥ तनमन मद क्रोऊ बिलै है॥ तब दिवड़ ग्यो नाय॥६०॥६ राम
१०२

साधपारिषलछिअ०

नि संपूर्ण॥ वर॥ रपथ॥ साध समर्थता॥ साषी॥ ऐं अबिगत आपैं॥ साधेकौं अधिकार ता
॥ चौरासी लष जीव का॥ तू मन मन फेरि संवार॥१॥ बिष का अम्रत करि लीया॥ पावक का पांणी॥
बंका सूधा करि लीया॥ सो साध बिनांणी॥२॥ दादू अमरापूरा करि लीया॥ षारा मीठा होइ॥ फ
टा सारा करि लीया॥ साध बबेकी सोइ॥३॥ बंध्या मुक्ता करि लिया॥ उरझ्या सुरझि समान॥ सु
बैरी मीता करि लिया॥ दादू उत्तिम ग्यान॥४॥ कूड़ा साचा करि लिया॥ काचा कंचन सार॥ मै
लानि मैला करि लिया॥ दादू ग्यान बिचार॥५॥ उलटे को सुलटा करै॥ ज्यों हाथ न पाव॥ द
[illegible]
रपन अरु दगा दे षि लै॥ आद सुतमत प्रभाव॥६॥ दूषित देषि की नों कदे॥ गोरष नाथ सदा
व॥ सिरु जग जगनाथ जन॥ औ घर हाली पाव॥७॥ निरंजन जन जगनाथ मुनि॥ संकन असुर
मरे सा॥ पूजवांन पहिलाद को॥ उड मांहि उपदेस॥८॥ प्राची छुवे जगनाथ जन॥ कीना
नहीं गुध्यारा॥ अपबल मुनि मारद कियो॥ जे दिषाइ औ पूरा॥९॥ रहत संथ सराय मे॥ जग
नाथ जन षेव॥ कियो पुरी ज्यौं सपर सो॥ ग्रासि कियें तत सु यह देव॥१०॥ नहीं सदा इक साध बिन
॥ जगनाथ जग जो इ॥ राषे सो जन लह मता॥ असा सम पूरण को इ॥११॥ साध सदी संसार मे॥ समर
थ जन जगनाथ॥ मलिता संसय दह मता॥ राषत गहि के हाथ॥१२॥ जगनाथ मे प्रीत दे॥ रूप

गुंज॰ अंधस्रुति श्रौंन ॥ करगहि कोढै अनबिनां ॥ त्रै सा संम्रथी कौं नमा ॥ २५ ॥ करन मतें तृं ही करें साध
१०२ साक्षि हरि जे म ॥ जगनाथ जगदीस भे ॥ अलपन ही कौ नेम ॥ २६ ॥ इति संपूर्ण ॥ ७ ॥ २४ ॥ ५ ॥ सा
धसाषी अंतकाल ॥ चौपई ॥ एक सु पंषी अहि गुंमेराना ॥ करे मच्ची मुखिरां नौ ताना ॥ निज्ञ दिन
सबद सुकारे रुही ॥ हो कों कहीं हो कों कहीं ॥ १ ॥ साषी ॥ संत सु साह क्षिदा कही ॥ हित जगनाथ
न दोय ॥ दीव यां न देषत रहे ॥ होणां होइ सु होइ ॥ २ ॥ पूछे जन की लरु कहे ॥ अब पूछे अवधूत ॥ जग
नाथ कौ कूच लो ॥ साध सु साषी अंत ॥ ३ ॥ आप कहे नृपगार कौ ॥ मांन ज्ञ कौ हुन कोइ ॥ अभाना
राम पजन नेक ॥ कहि करि न्यारा होइ ॥ ४ ॥ साध दया करि जो कहे ॥ जगनाथ नृपगार ॥ क [illegible] अनक
रता के रहे ॥ बोझे नही लगार ॥ ५ ॥ साध सु भावन छाड ही ॥ सेवा सुमन नेधम ॥ बिमल के [illegible] मनो क
है ॥ जगनाथ निज ग्यान ॥ ६ ॥ पख निय सारा अति संमथा ॥ बोल्या बनने कबीर ॥ जो तुम समझ्या सा
ध हो ॥ तो साषी अंत सधीर ॥ ७ ॥ पर्म रिथ को राषिये ॥ कीजे परउपगार ॥ दादू सेवग सो भला ॥ नि
रंजन निराकार ॥ ८ ॥ जिस का तिस कों दीजिये ॥ छूटे तप तन पगार ॥ दादू सेवग सो भला ॥ सिरिन द्व
लै भार ॥ ९ ॥ साषी ॥ करता के करि कछ करे ॥ ता मों हि बंधावे ॥ दादू उसकों पूछिये ॥ उत्तर नहिं
आवे ॥ १० ॥ साषी ॥ करे करावे सांइयां ॥ जिनि दीया अवतार ॥ दादू बंदा बीचिं है ॥ सो आ को मोजूद राम १०२

॥ ११ ॥ सेवा सुकृत सब गया ॥ मैं मेरा मन मांहि ॥ दादू आपा जब लगैं ॥ साहिब मानें नांहि ॥ १२ ॥ को
जन नो सेवा करे ॥ को कहूं षवे आइ ॥ जगनाथ जन दिहवा ॥ जो जे सा फरया ॥ १३ ॥ जगनाथ जन
अन्य जन ॥ देखे न तो दुषाइ ॥ आपने आपने भाव सों ॥ जन तंर निजकथाइ ॥ १४ ॥ दादू कोई भलार आ
रती ॥ कोई सेवा करि जांहि ॥ कोई आइ पूजा करें ॥ कोई खुलावें षांहि ॥ कोई सेवग व्है रहें ॥ कोई आ
रती ॥ कोई सेवा करि जांहि ॥ कोई आइ पूजा करें ॥ कोई खुलावें षांहि ॥ कोई सेवग व्है रहें ॥ कोई सा
ध संगति मांहि ॥ कोई आइ दरसन करें ॥ हम तें होता नांहि ॥ १५ ॥ नांद्रम करे कराबे आरती ॥ नां द्रम
पीवै पिलावै नीर ॥ करे करावे सांइयां ॥ दादू सकल सरीर ॥ १६ ॥ उपदेस तत आये संबे ॥ छूटम पूरि
सब मांहि ॥ ताते साषी साध के ॥ अस्तुति निंदा नांहि ॥ १७ ॥ इति संपूर्ण ॥ ७ ॥ २५ ॥ ५ ॥ अन जन बिय
री तिजिन ॥ साषी ॥ बरतनि एके भांति सब ॥ दादू संत असंत ॥ भाव स्पनन्न अंतर घणां ॥ मन मात
हीगबंत ॥ १ ॥ दादू सीधव फटक पषाणका ॥ ऊपरि एके रंग ॥ पांणी मांहि देषिये ॥ न्यारा न्यारा अं
ग ॥ २ ॥ दादू सीधव के आपा नहीं ॥ नीर षीर परसंग ॥ आपा फटक पषांण के ॥ मिले न जल के संग
॥ ३ ॥ दादू सब जग फटक पषांण है ॥ साध सीधव होइ ॥ सीधव एक वे कौ ह्या ॥ पांणी पथर दोइ ॥ ४ ॥ अग
जगनाथ विषिणकसी ॥ सजन साध संसार ॥ जैसें मनि का जल वक्ष ॥ बरतन्ड वे सिनगार ॥ ५ ॥ अग
न तुमावन जन गाहे ॥ जनन गति जगन नलेह ॥ जगनाथ विधि नां बने ॥ बरतनि बकत संदेह ॥ ६ ॥ म

एक लड़का एवं एक लड़की क्यों नहीं है? ... चाहिए अथवा पुत्रोंव का बड़ा ... [illegible]

क

गुं०ग्र० १०७

गत जगत की ऐसी ॥ जुगति बंधे मैं नहिं कोइ ॥ जगनाथ बगदे सजुं ॥ छिन गमि बरतनि दोइ ॥
१३॥ ज्ञाइ फिरता चाक कूं भार का ॥ ऐसी मैं संसार ॥ साध जे मन निंद चले ॥ सरण ॥ जिन के राम
अधार ॥ १८ ॥ उलटी चले पपील का ॥ सुलटा चक्र फिराइ ॥ यूं साध संसार गति ॥ काल न दे घवता
इ ॥ १९ ॥ जगचंच जन थिर रहे ॥ ध्यान जग जन बिच रति ॥ जगनाथ बिप्रीति मिति ॥ कार स
कल मरंत ॥ २० ॥ पर ब्रह्म गिंधा चेतनि सदा ॥ जगनाथ संसार ॥ निस बासुरि दिन आतिनि पुनि दे
संतनि यु जाओ हारा ॥ २१ ॥ जन अमा बपन्यो हारगाति ॥ दे खत एक निराल ॥ जगनाथ आ सेतु
दु बेल ता बिजे चाल ॥ २२ ॥ ध्यान जन जग स्वत सभि ॥ रहता तन रहती ति ॥ जगना [illegible] गति प
न की ॥ जगते जन बिप्रीति ॥ २३ ॥ चौपई ॥ जगत अगति सूबै सो नाहिं न ॥ भगत जगत के धर्म तज
इ ॥ जन जगनाथ विरोध्य देह मि ॥ ते पर मप रकार लजा ॥ २४ ॥ साषी ॥ सफरी मनसो सा त
ध का ॥ सरिता जल संसार ॥ एक मेक हिलि मिलि रहे ॥ मनि जगनाथ निराल ॥ २५ ॥ आगनि स
षा ज्यूं नित रहै ॥ संत सुरति निरबाह ॥ जगमूल साजगनाथ यूं ॥ बहती जल परवाह ॥ २६ ॥ ज राम
गनाथ या जगत सों ॥ जन की उलटी चाल ॥ देह सदन मध्य हरि मिले ॥ दास कबीर दयाल ॥ २७ ॥ हिं॥१०७
॥ साध अनभे लटा चढे ॥ परस धरे धर नाहिं ॥ जगनाथ निज अंग मन अ ॥ अस्थिर तंदो रहा

जनजगबिप्रीतिग्रं०

दा पति संपूर्ण ॥ १४ ॥ २४ ॥ ३ ॥ सूर सती साध निरनैं ॥ साषी ॥ सांचा सिर सौं षेल है ॥ यह साध जन
का काम ॥ दादू मरणे आसंघे ॥ सोई कहैं गा राम ॥ १ ॥ राम कहे ते मरि कहे ॥ जीवत कह्या न जा
इ ॥ दादू ऐसे राम कहि ॥ सती सूर सम भाइ ॥ २ ॥ स्वांग सती का पहरि करि ॥ करै कुटंब का सं
च ॥ बाहरि सूरा देखिए ॥ दादू भीतरि पोच ॥ ३ ॥ जल दाइ मरि बा गदे ॥ तब ज्यों गो की क्या लाज
॥ सती राम साचा कहै ॥ सब तजि पति सौं काज ॥ ४ ॥ सती बिचारी ऐ कीया ॥ कुल छिन दाइ [illegible]
रि ॥ लागि रही मगि पीव के ॥ आपा दीया जारि ॥ ५ ॥ सुख छडा मा साबेक्षी ॥ चाली पीव के संग ॥
सती बिचारी सो चिकारि ॥ सदी कसौटी अंग ॥ ६ ॥ कबीर अबतो ऐसी है परी ॥ मन का रुच
त कीन ॥ मरने कहा डराइए ॥ हाथि सिंधौरा लीन ॥ ७ ॥ कबीर सती जरन कौं नीसरी ॥ पिय क
सुमरि सनेह ॥ सबद सुनत जिय नीकस्या ॥ भूलि गई यह देह ॥ ८ ॥ कबीर सती जलन कौं नीस
री ॥ चित्त धरि एक बबेक ॥ तन मन सौंप्या पीव कौं ॥ अंतरि रही न रेष ॥ ९ ॥ घट पट अंतर हरि कर
घर ते निकसी जुह ॥ सती चली सल समदी ॥ सूकन लागा सह ॥ १० ॥ गैबर गाज हिंद सौं दिसि
॥ बाज हिंजे गी ढोल ॥ साध सती अरु सूर कौ ॥ जग महि जी वहि बोल ॥ ११ ॥ प्रान पतन दीं के गए
नैन न आयो नीर ॥ साध सती अरु सूर कौ ॥ मतो सराहो बीर ॥ १२ ॥ कबीर सती सूरातन साहिक

ग्रं०ग्या० रि॥ तन मन की या घांम॥ दीया मदौलता रांम कौं॥ सूर हट करे बषांन॥२३॥ बाजीद सती हद
२०४ गा है रे॥ आ के जिय मंहि सांच॥ कौतिग हारे कूं सदा॥ इस द अगनि की आंच॥२४॥ इन कौं
लोट तौर नांहि॥ साहिब जी की सौंह॥ साध सती अरु सूर का॥ दई न फेरी मौंह॥२५॥ पति
सुन पड़े रण पंच मंहि॥ मुष का मिटइ ब नूर॥ एती न्यूं जलटे बुरे॥ साध सती अरु सूर॥२६॥
॥ बाजीद इक मन सिध है॥ बांई दाहि नी छांडि॥ आ पाहै सो जादि मतिा र हियरु जाने ज
या मि॥२७॥ मरद हूं का मेदांन है॥ मन हिं बंधाइ धीर॥ देषि न बो सा दाहि नो॥ सीध
च खिज्मती रा॥२८॥ सहनाई सेंध बजे॥ सु भट खुदार हिं षेम॥ पीछि म दूर में दोनते॥ म
रि साहिब के देत॥२९॥ आतिङ्ग लहै सो बचै॥ यमतो बिसवा बीस॥ दे साहिब की
राह में॥ तन मन अपनो सीस॥३०॥ सबदी॥ सूरा पूरा सतजन॥ साई को सेवे॥ दा
इ साहिब का रनै॥ सिर अपना देवे॥३१॥ साषी॥ सिर के साटै लीजिए॥ साहिब का नां॥ जी
व॥ षेलै सो मत तारि करि॥ दादू मैं बलि जांउं॥३२॥ षेलै सो समतारि कै॥ अषर एक सो॥
आइ॥ दादू पीवे प्रेम रस॥ सुष में रहै समाइ॥३३॥ हौ यो बिम से कर लजे॥ मैं कन मारे राम
ठौडि॥ मरतो बारियां देषि॥ सूरा सर के मौर॥३४॥ मरतै मुष्प सिरी चैडी॥ बढी पीय सौं प्री २०४

ति॥ साध सती अरु सूर की॥ सब ही उलटी रीति॥३५॥ अहनिसि युद्ध है लै मांगई॥ मुष कौं मिट कुम
सूरा॥ पांनि पहीं कौं लोचत हूं॥ साध सती अरु सूर॥३६॥ कबीर सूरे सीस उतारिया॥ छाडी तन की
आस॥ आगे तें हरि हरषिया॥ आवत देष्या दास॥३७॥ कबीर भगति दुहेली रांम की॥ नहि
कायर का कांम॥ सीस उतारे हाथि करि॥ सो लेसी हरि नांम॥३८॥ कबीर भगति दुहेली रांम
की॥ जेसी षंडे धार॥ जे डोलै तौ कटि पडै॥ नहीं त उतरै पार॥३९॥ कबीर भगति दुहेली रांम
की॥ जिसी अगनि की झाल॥ डाकि पडै ते ऊबरै॥ दाधे कौतिग हार॥४०॥ जो सिर सौंप्या रांम कूं
॥ सो सिर भया सनाथ॥ दादू दे उरण भया॥ जिस का तिस के हाथ॥४१॥ जिस का है तिस कौं
चढै॥ दादू ऊरण होइ॥ पहली देवे सो भला॥ पीछै तौ सब कोइ॥४२॥ साषी॥ सप्प के सरि काल कौं
जर॥ बहु जोधा मारग मांहि॥ कोटि मैं कोई एक ऐसा॥ मरि मी आ संधि जांहि॥४३॥ साषी॥ काया
कउवक मोण करि॥ मारण भेद करि मीर॥ दादू यहु मर सा छि करि॥ मारे मोटे मीर॥४४॥ दादू
मांहै मन सौं झूझ करि॥ ऐसा सूरा बीर॥ इंद्री अरि दल भांनि सब॥ यूं कलिजुग राक बीर॥४५
॥ सांई कारनि सीस दे॥ तन मन सब कुछ सरीर॥ दादू प्राणी पंच दे॥ यूं हरि मिल्या कबीर॥४६॥
सबै क सोटी सिरि सहै॥ सेवग सांई काज॥ दादू जीवनि क्यों तजै॥ भागे हरि कौं लाज॥४७॥ कब

गुं०अ० रजामरोतैं जमाफ़रे॥ सो मेरे आनंद॥ कबमरिहौं कबदेखिहौं॥ पूरणपरमानंद॥३९॥ मेरयरबत
१०५ फेरहै॥ सहै सनमुखि सेल्ह॥ साधसती अरु सूरके॥ सरिबोहासी खेल्ह॥३८॥ सोमरिबेकों का
मरहि॥ बेसयां मी मेल॥ साधसती अरु सूरका॥ जगमीं जु दासी खेल॥४०॥ जगनाथ को गाहरै
जब हिं होइ सुझ मेल॥ साधसती अरु सूरको॥ धरम बहासी खेल॥४१॥ जांनि अरुसमथा आप
नी॥ सती सकति बिन होइ॥ देखि अग्नि आनंदहै॥ जगनाथ सत सोइ॥४२॥ खरसतु लज्या
लोंनकी॥ सहै सांकरे घाव॥ जगनाथ तन तजि रहै॥ सूरा सहज सुभाव॥४३॥ सूरसती घग र
ज्वालसों॥ मरत न लागे बार॥ बिरहा नित प्रति साधको॥ जगनाथ फुरक्षार॥४४॥ सब सत
अरु सूरकौ॥ जगनाथ जस होइ॥ मस्त खड़नी ब्रह्म दिखि॥ सनमुष सो आसो इ॥४५॥ साध
म सती अरु सूरका॥ साचि सेरत है कों॥ उमे जो हि पुर आपने॥ जगनाथ जन राम॥४६॥ सती॥ म
सूर सुर सुगतिकै॥ बहुरि अौतरै आइ॥ जगनाथ जन राम॥ राम हिरदै समाइ॥४७॥ इति सपू का
र्ण॥४८॥ १९४०॥ सूरसवाई क०॥ साषी॥ फूरसों मदकाति कबिन हिं कबिन॥ मंदय हमति
मार॥ अलि अंबुज सों मिलि रहै॥ कावहि कोट न द्वार॥१॥ जोरावर सो जोरबर॥ दीनन सें राम
ती दीन॥ अलि अरिबिंद जगनाथ हित॥ कामछि इनि निकीन॥२॥ सूर साध साचे मतै १०५
सूरसती साध मिरैमें०

कहनिकों कुषदीन॥ देजगनाथ गरीब सुष॥ रजबूट निजपद लीन॥३॥ जगनाथ बलसब
ल सों॥ अबल निबल न करो हिं॥ पाद्य कों पारे परन॥ तिन हिं छी जब मांहिं॥४॥ हाथी हाहे कों
टमाठ॥ मारत राव न तराइ॥ जगनाथ जोरावरी॥ सिसुकी करत सहाइ॥५॥ नाग दिनाहर निर
दरै॥ आंन जीव किहि मात॥ ग्वाल देषि जगनाथ सो॥ छांड़ि दे करि जात॥६॥ कौरकरी के जंम के
स्यंघ मारि कैं लेत॥ सूर चोट सिरदार कै॥ हें दल मांहें देत॥७॥ बलिवंत सों बल बीर करि॥
आइ सनमुष होइ॥ जगनाथ मन मिसन तें॥ जग करे जन कोइ॥८॥ आवे सनमुष समार यहि
॥ सूर मचावै मार॥ जगनाथ जब गुन जगे॥ साध करै पर द्वार॥९॥ दुषदाई नहिं दीन कों॥ सूरस
ता बै सूर॥ जीव दया है साधकै॥ कमिनु कों चकचूर॥१०॥ सूरा समत रस जपरि॥ पाहें मचावे म
र॥ जगनाथ मन गुन निकों॥ संत सु करे सुमार॥११॥ साधन का इ को खुरी॥ बाछे बसु धमांहि
॥ जगनाथ घट मांहि अरि॥ तिन ते गुदरें नांहिं॥१२॥ सूर भले जगनाथ सब॥ बिरले जन अधि
कार॥ बीरब बेकीते सही॥ मन गुन जीत न हार॥१३॥ इति संपूर्ण॥११॥ १९५॥ सूरातन अंग
साषी॥ सेख गस्त राराम का॥ सो ई कहै गा रांम॥ व्हाइ सूरस सनमुष रहै॥ नहिं कायर का कांम॥१॥
॥ कायर का मिन आसई॥ युद्ध सूरे का षेत॥ तन मन सौंपे रांम कों॥ व्हाइ सी स सहेत॥२॥ कबीरक
सूरसवाई क०

गु०अं० यरहूसां न छूटि॥ जब सूरातन साहि॥ समै सल का हरि करि॥ सुमरन सेल संबाहि॥७॥ जे म
२०६ न का यर ज्यों न छूटि है॥ जा सौ बैरी मांहि॥ साच धरे रज सूरिवां॥ हरि नजि हारे नाहि
॥४॥ जे मन कायर का भयो॥ सूरातन की बार॥ साहिब कौं सिर सौं पतां॥ सो चेक हां गंसार॥५
॥ सूंनै परयां न छूटियां॥ सुमिरै जीव अलफ॥ कबीर मरि मैदान मैं॥ करि इंद्र्यां सौं झूफ॥
६॥ कबीर सांई सूरिवां॥ मन सौं मांडै जूझ॥ पंच पयादा पाडि ले॥ दूरि करै सब दूज॥७
॥ कबीर मेरे संसा को नहीं॥ हरि सौं लागा हेत॥ काम क्रोध सौं झूझनां॥ चौड़ै मांड्या खे
त॥८॥ वेधे बामी बांन करि॥ धनुक सुध्यांन कसीस॥ जगनाथ मन सेल सौं॥ पारे पंच पचे
स॥९॥ गोली गुपती गुर ज्ञान की॥ पांन गलित धुनि धार॥ जगनाथ जोधा रगुन॥ भाजहिं लार लार॥१०॥ म
रै नांव समसेर लै॥ पांन पुरिस जब हाथ॥ जगनाथ वे का बली॥ सुरै मोह सब साथ॥११॥ कर्द्दक
टारी लेलगा मिल॥ मारे बिषै बिकार॥ जगनाथ मन को गदे॥ पांन बहा जोधार॥१२॥ मन मनमथ म
द मछरा॥ मोह लोभ अरु क्रोध॥ जीते पंच पचीस कौ॥ जगनाथ सो जोध॥१३॥ कबीर कायर आप
स राहड़ी॥ आंन सरा है सूर॥ कामपरयां कातर भगे॥ सुभट सुमुष परि नूर॥१४॥ कायर बहुत प राम
मावहीं॥ बहकि न बोले सूर॥ काम पड़ियां ही जांणियें॥ किसके मुष परि नूर॥१५॥ सब चंगे सब २०६

रूपड़े॥ सब का जौंस मरत्य॥ सार सलक्यां जांणियें॥ पहल न पाड़ै हत्थ॥१६॥ दादू जब लग
ल्यालच जीव का॥ तब लग निरभै हूवा न जाइ॥ काया माया मन तजै॥ तब चौड़ै रहै बजाइ
॥१७॥ दादू चौड़ै मैं आनंद है॥ नांउं धरयां रण जीत॥ साहिब अपनां कर लीया॥ अंतरगति
की प्रीति॥१८॥ पीछे कौं पग नां भरै॥ आगे कौं पग देइ॥ दादू यहु मन सूर का॥ अगम ठौर कौं
लेइ॥१९॥ आगे ही कौं अनसरै॥ पीछे कियो न गौंन॥ सु भटर है मैदांन महिं॥ थापै समन को लै
न॥२०॥ सुहमिलन गएब सूर कै॥ पीछे परहि न पाइ॥ आगे ही कौं अनसुरे॥ सीस टूटि कि निज
हूं॥२१॥ जाके धर पर सीस नहिं॥ सो चलि है रहिं मग्ग॥ सु कबीर की बाट महिं॥ कायर का देष
ग्ग॥२२॥ जगनाथ सो सूरिवां॥ है दल महिं आरूढ़॥ सिर गौरा सिर दैं नकी॥ सूरनें का मन गूढ़
॥२३॥ जे मन लग्गा छा भै नहीं॥ सो सूरा रण जीत॥ आगे मांहि एकला॥ षेडा रहै अभीत॥२४॥ सूर
सूर मुज्ज सो रहै॥ जब हिं जुरत संग्राम॥ जगनाथ गुन गगन है नै॥ जोधा मन मद कांम॥२५॥ सो आसु
रति सूर की॥ जगा मैं देषम ज्ञोम॥ जगनाथ जन भर मकु॥ ता दिन संग्राय जोग॥२६॥ सष्यी सूरा
२०७ छोड़ सुमेरल थै॥ सब गुन बंध्या छूटै॥ दादू निरभै है रहै॥ कायर तिणां न टूटै॥२७॥ साषी॥ सुबुध
सो मिस सूरा रूपै॥ ग्यांन जो मि संग्राम॥ ग्यान दयो मिश्र स्यय तिलहै॥ जगनाथ निज धाम॥२८॥ कब

गुं०म०प रसरातबहीघरषिण॥ लोरेषनीकेहेत॥ प्ररजाप्ररजाछ्वेपरे॥ तकनछामेषेत॥२८॥ कब
१०७ रषेतनछामेसरिवां॥ कूफेवेहलमोहि॥ आसाजीवनमरनकी॥ मनमेंआनेनोहि॥२९॥
कबीरश्रबतोकूफ्याहीबनें॥ मुडि चाल्याघरदूर॥ सिरसाहिबकोसौंपतां॥ सोचनकी
जेसूर॥३०॥ जनरिपरिमेंन्हानमाहि॥ कामिनीयकीआस॥ पांनगणेकीसहलदे॥ जोपति
रहिहैपास॥३१॥ घरआपणाबाजारमहि॥ बंकासबकोहोइ॥ रतुबेरणप्रेवकडा॥ सोज
नविरलाकोइ॥३२॥ सूरसभामेकहतहे॥ सकलमरादेमोमे॥ जगनाथरनमें॥ ये॥ सूर
बीरतिहिनांव॥३३॥ कायागढकोंबसिकरै॥ सोईसूरसुजांण॥ मेवासामेंनेभिडे॥ जग
नाथहरिआण॥३४॥ अतिप्रतिसूधदेषिये॥ सूरमदरकेमांहि॥ कांमपडयांहिकेमरी
रणामेंमावेनांहि॥३५॥ आपीवेरीजीतबसिकरै॥ तोडिविषमगढवांका॥ जिगमरनप
गरोपई॥ सूरबीरजनराका॥३६॥ साषी॥ नारिमरेसबलोइके॥ केकायरकेप्ररा॥ जुधमि
लैसोजांणिये॥ प्रमापमकोनूर॥३७॥ बीरगहेविषिसातने॥ गंसेत्यागेसूर॥ जगनाथर
जुवटमहा॥ ओमेरजनमहूर॥३८॥ मासूतमनमनमथमरे॥ जुरेरुभेरजरेत॥ बीरबषेकीन॥ राम
नेंजे॥ जगनाथयज्ञखेत॥४०॥ पांनबडगगाहागदे॥ छेरीमनबेराग॥ जगनाथयज्ञविषम १०७

हे॥ जेबासत्याग॥४१॥ जिकाइंद्रीबसिकरे॥ संजमदमोंडवार॥ जगनाथसोसूरिवां॥ मन
काजीतनहार॥४२॥ मनइंद्रीनिकेअरणको॥ लोचतकायरकूर॥ जगनाथजीतेविषे॥ सुथ
वंतसोईसूर॥४३॥ सूरधमनिदिसंकहे॥ इंद्रीनिसोंसंग्राम॥ जगनाथयाजुधतें॥ सिद्धिस
कलहीकाम॥४४॥ जगनाथयाजुधकों॥ पांवहिंमुनिवंतबीर॥ सुगमीहारितिनकोंभले॥
अरिइंद्रीजितधीर॥४५॥ गेगेमाकचकापुरिसमदेकांणिपडं॥ णिपडंतासीदसिवांणास
पुरस॥ पडिमडि जीऊठंत॥४६॥ ससिवेसंन्दरसापुरस॥ समयेठीवपरत॥ जीजीवताऊव
रै॥ नोफिरिनदोकरंत॥४७॥ गुदाटकेमोआयनी॥ जेघोरेसांबीपूछ॥ समनदेतनकोंमली॥
नाहरकेमुषमूछ॥४८॥ सूराचीरपकेनला॥ साचारोपेपग॥ बझतमिलेकिसकोंमके॥ सांव
नकेसेबग॥४९॥ कहाजोकायरबझमिले॥ सूरहिलालकमोहि॥ घिरीघिरीजोसेतिकी॥ न
कसापछिपांहि॥५०॥ बाजीदमुहमिलदोमही॥ जोजिजाहिगेबीद॥ कदामयोजोबजतहे॥ स
लनगेजहिंसीहा॥५१॥ सायरमलटेकांरहे॥ कायरसजिजाइकूर॥ सहेकसोटीकनकज्युं॥ साध
सतीअरुसूर॥५२॥ कंनारणिकूकेघ्रमे॥ तिरीबजायेहर॥ लेछबिधनाआपरिन॥ घनकल
तरयियसूर॥५३॥ घटपटअंतरहरिकरि॥ गिहतेनिकसीजब॥ सतीचलीसलचहनकोंस

ग्रं०ग० १०८ कमला ग्यो सब ॥ ४६ ॥ चौपड़ी ॥ षेरु दर सां कडौ मांड रिया बांकडे ॥ मारि गुरां जां पि
पिय साथि जावे ॥ कूल बंध मैं फूली नहीं निरा कारसौं ॥ पूत न पाली थथ रो दूध पावै ॥ ४
७ ॥ सोरठा ॥ करि सौ नौ कारता र ॥ कर थीये कांमें रूवां ॥ रही नहि कलगार ॥ रहती मारु
तो पछे ॥ ४८ ॥ साषी ॥ कहा प्रीति जलसी नकी ॥ पकड़ लीं हितनेह ॥ प्रीति सूर सकू नीर ॥
की ॥ तूंद घट तजि यू देह ॥ ४९ ॥ सोरठा ॥ तरनौ गुल रे नीर ॥ बेलि तिते जीवानी ॥ चो रे थनि सु
हल्ला सरीर ॥ पाणी ऊंतरियां मरै ॥ ५० ॥ आं जलतौ जीवा दि ॥ अल जातां जीवै नहीं ॥ पछौ ने
म मुण सां हि ॥ पहीं आरिष छूटि रियां ॥ ५१ ॥ साषी ॥ प्राणी पांणि ष आपणों ॥ रष्य सों के ॥ रषा ॥ पे
केयां सौं ऊंतरै ॥ चटै नषर वेलष्या ॥ ५२ ॥ सोरठा ॥ सिर ऊंचो तो जे पाय ॥ राष लियां रत ऊंतरै ॥ पा ग
णी पुरि गमन जाय ॥ आरथि भी जांणी नसे ॥ ५३ ॥ साषी ॥ पूनां पूरां जूं गांवू ॥ दे सींच नाथ के
ड्यो आदरूं बकोंनरां ॥ सोपा धरां न होइ ॥ ५४ ॥ संक रस्व सिव रजे हनो ॥ कांम सुर ग्यांति जे
हिं ॥ यानीच है सु दे धूपर ॥ कटे जु नष केथा इ ॥ ५५ ॥ सूरबीर स सार में ॥ जगनाथ जन जो
गू ॥ आपनपो अरपन नहीं ॥ हरि बिन गाद रस्यां न ॥ ५६ ॥ इति सपूरां ॥ ५७ ॥ २०२१ ॥ कायर राम
अंग ॥ साषी ॥ कांनर करतगु मांमनडे ॥ बैल करि मोहे बीर ॥ सार सगौ जगनाथ ते ॥ देष १०८

तथरत न धीर ॥ १ ॥ फूली न पहूंचैनी यूपै ॥ हथ्यार फाई सात ॥ कायर का चेलो हुअसं ॥ मारयो रे सु
रजात ॥ २ ॥ कायर कौ हथियार कहा ॥ बोझै बंद ईसो इ ॥ बादन बरियां पो सिलै ॥ थां झो और कै
डूा ॥ ३ ॥ पीछे त्या गिन मारिया ॥ आगे भाग्यो जाइ ॥ पांन्यो रहै गमाइ के ॥ गैवर ते सी गाइ ॥ ४ ॥ जद बां
आव हथियार की ॥ सांदि न सकत हैको इ ॥ आं जुम गाभे गायूं दके ॥ गाफर तै गत होइ ॥ ५ ॥ दाइ
मणी मांडि करि ॥ रदै नहीं त्यो लाइ ॥ कायर भाजे जीवलै ॥ आरण छाडि जाइ ॥ ६ ॥ जुध जो वत दी
यंजुले ॥ ७ ॥ सरनडूंपै दोगि ॥ कायर रन ते भागतां ॥ कब हू न फेरै पीगि ॥ ८ ॥ आ घा चलि पीछा फिरै
ताकौ मुष मदी गि ॥ धाइ ढे मै दोइ दला ॥ भाजि दे करि पीगि ॥ ९ ॥ सूरा चढि संग्रांम कौ ॥ पाछा पग
कदे ॥ साहिब लाजे भाजतां ॥ छिगा जी बन दाइ ते ॥ १० ॥ काइर के पहि बाडु रे ॥ देषि अनी घगा ध
रा जगनाथ रज बाहिरी ॥ कौन सहै मुंहि मार ॥ ११ ॥ सौ नौ पद रिव सूर को ॥ कायर रन मैं जाइ
दांमि दामि जगनाथ कौ ॥ फरै छिगो जो णाइ ॥ १२ ॥ सती सिंधी रा दाग थि लै ॥ चली कर रन सद गौ
नां सोच माच दी छोड़ जिनि ॥ सनाहि स नावत सौंन ॥ १३ ॥ लोक लाज भाजे कहूं ॥ हम रस्यो ब
सौंन ॥ जगनाथ छोडे लै ॥ जन भमि गा रह्यो कौन ॥ १४ ॥ कबीर हरि की भगति का ॥ मन में घरा रा
कास ॥ भैड़ा भाजै नहीं ॥ दौर मते निज दास ॥ १५ ॥ घरत जिके बिर कत भयो ॥ जयो भेष बेरा

ग्रं०११ ॥ जगनाथ त्यागी पणै ॥ लगै उरै कुलदाम ॥ ११ ॥ जे निकसे संसार तैं ॥ साईं की दिसि धाइ ॥ जौ काब
१०६ हूं दाइ बाजूं डै ॥ तौ पी छै मारया जाइ ॥ १२ ॥ कबा का चा भगत का ॥ आगै पड़ रन देग ॥ कर हीं चा
लै पूरह लु की ॥ कौ पैसुर ? रांगाने गा ॥ १३ ॥ सूर साध की रीस करि ॥ कायर मन सनि कसे मन ॥ जगनाथ यरतज
न कै ॥ है दल दे बिन संत ॥ १४ ॥ धर मन साधु थे गेह कौं ॥ तजम न पूगी चाम ॥ मन एक टौं ना भांड कै ॥
डु वेगया ड़ें स्नान ॥ १५ ॥ कायर हो इस्नि तौ तड़फड़ सि ॥ धाम सिड़ प सरी र ॥ औ तां डि च हियौ तिडि
च टं सि ॥ जे हो इस्मि साह संधी र ॥ १६ ॥ पारन सल द रिप धु चा लतें ॥ छिंगे मक्र रजन नु मंत ॥ जगनाथ
जो गा हरै ॥ तोय द्या पाटुष्ट ज्ञं त ॥ १७ ॥ इति सं पूरण ॥ १८ ॥ २१ ॥ अथ पूजन वाँ न पोरिख० साषी ॥ उ कायर०
त सी रघुपति सैन मांहि ॥ बल नाटनक रि मांषि ॥ बाज राज के बाल कहिं ॥ लषा दि षाव त आषि
॥ १ ॥ जगनाथ जनह स्नबल ॥ बल मिति द्रोष धरंत ॥ संघ छाव र हिंदे षि जंग ॥ जंबक जो रक
रंत ॥ २ ॥ इंद्र जा जा धुनि बल कीया ॥ मार हिंलम न मांहि ॥ संफरी दे षम सर कौं ॥ यह हे हाल जगनाथ ।
हिं ॥ ३ ॥ पोरष बिन साद सक रै ॥ साध इहै इषयां हि ॥ जगनाथ जं स्यार सुन ॥ मुनि मारन मरि
जांहिं ॥ ४ ॥ बलनांदी असबल करैं ॥ सुतौ बाद रोबोर ॥ बलिवंत सेती बल कियैं ॥ अति इषहो राम
इ सरी र ॥ ५ ॥ नट मरकट कैं मार ई ॥ हाथ पांव सिर फोरि ॥ बंदर बपु री सकरि ॥ फारे तिन १०६

का तोरि ॥ ६ ॥ बलिवंत बैरी बुधम दी ॥ जन जगनाथ बिकार ॥ तिन सौं बलप ड़ जै वैन दी ॥
फरि फिरि मूं दैं वार ॥ ७ ॥ गुन गुन दी गति में न दी ॥ जे है जिय के साल ॥ जगनाथ तन तें जबि
न ॥ ताहि कूंरे बेहाल ॥ ८ ॥ मन सौं पांन न पूजई ॥ अंत प्रांन कालेत ॥ जगनाथ जि जोरका रि पृ
दंड देह कौं देत ॥ ९ ॥ काया कौं कसमी करै ॥ रस मांहि कम न चोर ॥ हरी बरी हरि स्याद मिल ।
दी न सिक प रि जोर ॥ १० ॥ मैथा सी मोटा नदी ॥ अति दी स्नू द्रिम सो इ ॥ तेसी सु द्धिम सो जबिन
कै बसि कर ई को इ ॥ ११ ॥ जगनाथ बलहीन सैं ॥ बलि वंत आगै दीन ॥ बाहरि रावत बंक
रा घर मांहि मसकीन ॥ १२ ॥ तन कौं सब कोत्रा स ई ॥ मन सुन आवत हाथ ॥ गांव घेरि या हली
जियै तबही सब जगनाथ ॥ १३ ॥ सब इंद्रि निं कौं बसि करै ॥ संजम सिर पे सरी र ॥ मन ममनू सा
तब ना संगे ॥ जगनाथ जनथी र ॥ १४ ॥ तन म सि मन बसि प्रांन बसि ॥ इन्द्री सब बसि हो इ ॥
जगनाथ जगदी स जपि ॥ पूजवांन नर सो इ ॥ १५ ॥ इति संपूर्ण ॥ ८० ॥ २२५ ॥ अथ श्री रसना अंग ॥
साषी ॥ श्री रजन तजेन श्री रजन ॥ बिपति मांफ इक टंक ॥ कला कला निधि की घटत ॥ तंत तू
हो तजु बक ॥ १ ॥ कला पाइ स सि सरल है ॥ कला घटै है बंक ॥ श्री रवि पति टेटेरै है ॥ संपति
पो षै रंक ॥ २ ॥ सा ह सि गां म तवा दि यां ॥ श्री रां एक म मां द ॥ इ कैर गा चीत इं ॥ अरङ्फ फोरै गी
अपूजवांनपोरिष०

गुंण अं०
११०

तां ह॥७॥ विपति पखन मधि हो इ गिरि॥ हरि की क्रिपा मनाइ॥ तजै न लता धीरज न॥ विपति
बाइ बहे जाइ॥८॥ सोरठा॥ मिग मिग डोलै पान॥ गरबा गिर फोले नहीं॥ पूरा एपर दान
॥ टो को सो मुदै बोलन्ह॥९॥ साषी॥ जमड घलहरि समुद्र की॥ सिर नाये न इ जाइ॥ औरज तें
न जाको नहीं॥ सहि ओ बको नपाइ॥६॥ बहु समंद सलिता बहुत॥ चातग पिवै न नीर ये
मअटक यनेतन महि॥ संकर सम न धीर॥७॥ धीरज जि आ सब मानि गो॥ सुरति निरति थिर सो इ॥
जगनाथ जगदीश को॥ भजन निरंतर होइ॥८॥ सुमरन सिर जन हार को॥ बिन आ मिस कबि
र॥ कहि न जांनि करिए नहीं॥ जग जगनाथ बधीर॥९॥ धीरज करि करि धारनो॥ कर्ह जन होइ
अधीर॥ जगनाथ फर पाइ ए॥ सी घत सी च न नीर॥१०॥ धीरज सो धुनि होत है॥ उपजत घुद्ध ागि ये
न॥ जगनाथ धीरज कि ये॥ लागत परम धि यांन॥११॥ षेत षिती गढ आवई॥ हरये हरये हाथ॥ दे
ह देस यूं जीतिये॥ जत न बिं जत नि जगनाथ॥१२॥ सहजै सहजै मन पवन॥ इंद्री गुन बसि होइ॥
आतुर ताते मो सखा॥ जगनाथ सिध कोइ॥१३॥ सोरठा॥ जग सत सुध स्यो काज॥ जगनाथ धीरज
कि ये॥ जर जोध न गो राज॥ आतुर ते जानै सबै॥१४॥ साषी॥ अति आतुर नी के नहीं॥ आरिस अंत राम
र होइ॥ जगनाथ ओक बुकरे॥ सहजै सुधरे सो इ॥१५॥ औरि कारिज सब सरैं॥ निरदर तिपरद रत ११०

धी जैता०

मोहिं॥ जगनाथ धीरज गहैं॥ आतुर आरिस नांहिं॥१६॥ आतुरता तें आष रैं॥ आरिस कि ये अ
काज॥ जगनाथ धीरज धरै॥ बरत नि बुद्ध बिराज॥१७॥ धीरज करि ये ध्रम धरि॥ ता को होत न
बाद॥ जगनाथ नहिं आरसै॥ पूजी तिमो बिसाद॥१८॥ कृया केत की केवरा॥ हरि सु षपञ्जय
सुबास॥ करै न कंटक देषि ड्ष॥ जगनाथ तजि नास॥१९॥ करनी बिन धीरज कर॥ जन जग
नाथ अधीर॥ फो आद्यै न नी करै॥ निर्मल जल सुष सीर॥२०॥ चोमुषी॥ धर्म धरै धीरज लयें॥
क्रम करै न करे स॥ जर मन दी जगनाथ जिहिं॥ प्रम पुंज परवेस॥२१॥ इति संपूरण॥ ८२
॥२२॥ अथ कसनी सार अंग॥ साषी॥ पृथुगढ ते गाढे बहैं॥ दहन न दैहि दगार॥ ती न्ये ताइ प
रष ये॥ साध कनक अरु सार॥१॥ जग न जुर सब जकस सदै॥ सर स होइ मो बात॥ एक अ
टनी गुर भयौ॥ आपने में लिबि कात॥२॥ इष आंच सहि दधि जमें॥ मथ्यो सुमाष न चोर॥ जा
मन तक तन पिघ्यो भयो॥ सब भोजन सिरिमौर॥३॥ जगमन बिमल दो कदरस॥ यं अंतर लषि
पाइ॥ इष मध्य आंच हि लगे॥ छाछि छबकि फटि जाइ॥४॥ अति लस रस सौं अरस सी आरिस॥ ओर पा
चई देह॥ उपसी सोई पीडि ये॥ जा मैं बहु तस ने ह॥५॥ का ब क धीर अधीर न र॥ कस्यां बनुपर
अैपेम॥ परस रो म कसनी सदै॥ धीरा ही रा हेम॥६॥ षोटा ष रा परषिए॥ दो इ कसि के लेइ स्याय सि

गु०अ०
१२२

हे सोरा षिए॥ कूडा बरहरा न देइ॥७॥ षरी कसौटी कीजिये॥ बांनी बधती जाइ॥ दादू सांचा पर
षिए॥ महिंगे मोलि बिकाइ॥८॥ हरि मारग मस्तक दे पग॥ कठिन कसौटी बीर॥ जगनाथ जेती सहे
तेती सुष की सीर॥९॥ ज्युं ज्युं कस्त असीन को॥ त्युं त्युं अति आनंद॥ जगनाथ घट के नट
ज्युं गहतार षिंचंद॥१०॥ रांम कसे सेवग षरा॥ कदे न मोडे अंग॥ दादू जब लग रांम है॥ तब लग
संगा॥११॥ दादू कसि कसि लीजिए॥ पडै ताले परवांन॥ षोटा गांठि न बांधिए॥ साहिब के दिवां
न॥१२॥ साध सबै संकट परे॥ कष्ट कुभ एक सार॥ जन हरि अजन जगनाथ जिनि॥ आपद मैं अ
धिकार॥१३॥ करतार लगि कसनी जितनी॥ तितनी सुफल जगनाथ॥ धनि है तस जिनि॥ दरकी या
दिया है तन हरि साथ॥१४॥ मार सही मद दबल लगि॥ काजी भए कसूर॥ मिटया मद दी माथा दि
या॥ महाप्रसाद सम सूर॥१५॥ छिप न बकता तिहिं बचनां॥ साहिब करी सहाइ॥ जगनाथ
जगि जस रह्या॥ सिर सौं बहया षुदाइ॥१६॥ आजु जरुबा जु जज्या॥ सदे कसौटी कोइ॥ जगना
थ तब जगत गुर॥ कूडा न सहाइ कदे कोइ॥१७॥ दादू षरी कसौटी पीव की॥ कोई बिरला पहुंच
हारा॥ जे पहुंचे ते ऊबरे॥ ताइ किये तत सार॥१८॥ दादू साहिब कसे सेवग षरा॥ सेवग को
सुष होइ॥ साहिब करै स सब भला॥ बुरा न कहिए कोइ॥१९॥ बिपति भली हरि नांव सौं॥ काय

राम
१२२

कसनी सार२०

कसौटी छ घ॥ रांम बिनां कि स कांम का॥ दादू संपति सुष॥२०॥ जो मिथि कहीं न पाइए॥ सो
न थिर घिर आहि॥ दादू महिंगे मोल बिन॥ कोई न लेवे ताहि॥२१॥ कसनी जिनि जिनि
जन सही॥ जहां जहां जगनाथ॥ तहां तहां तिहिं कष्टते॥ हरि राषि गहि हाथ॥२२॥ जंस जंस क
सनी जन सही॥ त्यूं त्यूं सही सरीर॥ जगनाथ रहे कसए॥ हरि न दी करी बधीर॥२३॥ जो जो
जे सो कष्ट सहि॥ तिहि तिहि तिसो सहाव॥ जगनाथ जिन्हि सुष जिसो॥ जिनि जिनि कौ जो
भाव॥२४॥ इति संपूर्ण॥८२॥२८८॥ अथ सांच प्रतीति॥ संतोष॥ साषी॥ नैन कूं जोति कहा
भली॥ श्रवन कूं सुनिबो॥ रसन कूं सबद सनमुष गावे॥ तृष्णा इन्ह सूं॥१॥ स्वासु सत्य कीयो नारि
चलै॥ सरी पुष्टी बीर॥ जगनाथ आसा अधिक॥ नैन अंत हरि नीर॥२॥ सही॥ अंग गलि तंप
लित मुंड॥ जात दसन बिहीनं तुंडं॥ वृधो जाति गृहीत्वा दंडं॥ तदपि न मुंच्यत्या सा पिंडं॥
३॥ साषी॥ माया मुई न मन मुवा॥ मरि मरि गया सरीर॥ आसा तृष्णा नां मुई॥ यौं कहि गयो क
बीर॥४॥ कबीर आसा जीवे जग मरै॥ लोग मरे मरि जाइ॥ सो सूफे धन संचते॥ सो कबरे जं ष
इ॥५॥ कबीर हस मनां सी वी नां छुटे॥ दिन दिन बधती जाइ॥ जगवासा का सूष जे॥ घन मे हां ऊ
मिलाइ॥६॥ पति सादी चहुं कंटकी॥ जाक मनां हिस ब लोइ॥ जगनाथ हरि नांव बिना॥ इपतिन

गुं०अं० कोई ही होइ॥ ७॥ चौ० सुषी॥ मापामी नर लोक की॥ जाया दौं हिं अनेत॥ छाया छत जगनाथ मत
१२२ ष्यपात जुन कहंत॥ ८॥ साषी॥ हीरा न गाव कुमोति कै॥ धन संचु नू ए अपार॥ जगनाथ अ
नधन संचै॥ काव कुंन कहत अगार॥ ९॥ सुर संपति सुष्या बिमो॥ नागर नादि परंत॥ ज
गनाथ तनु नाहिनै॥ हूस मां षाम भरंत॥ १०॥ हूस मां ग हरी गा फहै॥ औरे न सुरनर नि जोइ॥ जग
३ नाथ मर दिम करि॥ कैसे पूरन होइ॥ ११॥ पूरन एक संतोष करि॥ जगनाथ कहै हाल॥ और न
तु पाइ मन सुम फइ॥ हूण मां गरत बिसाल॥ १२॥ मरहु सनो अद सुलगरत॥ मरत पु[illegible]त ही जाइ
॥ भरि आवै अन नही भरै॥ जो संतोष हिपाइ॥ १३॥ चौ० सषी॥ जिन कै संपति है संतोष॥ तिन
के मांहि मद्दा लिद घोष॥ जगनाथ अगसों कर षंचै॥ जे जन नाम सहूरी संचै॥ १४॥ साषी॥ नृप
बहनी दिनयम पिरागा॥ जो हजदरद षि जोइ॥ करि संग्रह अरिषपिर है॥ किहं नहपति हो
इ॥ १५॥ आसा को दासी कियै॥ पइ एथ रम प्रकाश॥ दास होत जो आस को॥ सो सबही को दास
॥ १६॥ जे आसा के दास है॥ ते सब जग के दास॥ आसा तजि निरास मन॥ हमगु नवं दित तसि
॥ १७॥ आसा षं फिमपं फिला॥ ते पं फित बुध सांन॥ उरसी जे आसा सुषी॥ ते सब स्वान समान राम
॥ १८॥ कापटि मोयुनि बौ कहा॥ का का षिनै बजरगंन॥ उरसी इकनिर ष्योनबिन॥ मि १२२

लतन ही नगसांन॥ १९॥ सब हिं लोभ तैं अटपटे॥ पंपं भी सुंभी व वेक॥ सुंदर तन न परतनक
जूं एचेत चंडिका एक॥ २०॥ पंडित पंपं भी वउर आति॥ करत हरि संदेह॥ एक लोभ के मोह
मौं॥ जगनाथ उघ देह॥ २१॥ आसा के आधीन नर॥ तिन आदरै न कोइ॥ उरसी मांन महत
बिन॥ आवै सारा लोइ॥ २२॥ घर घर फोलत दीन ह्वै॥ जनजन जाचत जाइ॥ दिये लोभ व सम
चषनि॥ लघ पद सिवछेदि षाइ॥ २३॥ जीवजीविका जुगति जस॥ जो पइ एइ कबीर॥ तो को क
का हेरहु॥ दर दर तन के औरा॥ २४॥ सन्न समान न मंत कोइ॥ सत्न त्वोभ समानि॥ सत तें पत
ति जंलो कमे॥ लोभ घटावै कानि॥ २५॥ बहत बढत संपति सजल॥ मन सरोज बढि जाइ॥
घटत घटत सुनि फिरि घटै॥ बरसम जड मि लाइ॥ २६॥ जातजात बित होत है॥ जो ति
यू मैं संतोष॥ होत होत जो होइ तो॥ होइ घरी मैं मोष॥ २७॥ कबीर आसा काई धनकरी॥ मन
साकरी बिरूति॥ जोगी फेरी फिल करी॥ यो बिन नादै सूति॥ २८॥ इति संपूर्ण॥ छं॥ २८
इ॥ [illegible] सासस तोषप॥ साषी॥ सेक संपति कारने॥ गए समुद्रहि पार॥ ते ई संघ कुफिरि सिले
॥ सुबिध नालिषे लिलार॥ १॥ सेकु संपति बिपति कौ॥ जे करवै सोकर॥ रती घटै न पल बढ
धे॥ जे कहु लिष्या अंक र॥ २॥ मुहर कंम्र का अंनका॥ कोमी होइ न हाथ॥ जिसहि दिलै अंत
आसा इफ्नो लो जस्तो०

गुं०अं० मिरमया॥ तिमहिं तिताहे नाथ॥१॥ जो कछु कल्प मकरी मकी॥ सो पकं चै पर सांगि
२२३ ॥रंचु क घटै मति लव धे॥ सुष दुष मति हांगि॥४॥ कबीर जाको जे ता मिरमया॥ ता प
को ते ताहोइ॥ राई घटै मति लव धे॥ जो सिर कटै को इ॥५॥ हरदप डी जाप लक मैं त
द्दि म लिषि या लेष॥ ज मह त काहे कलपिए॥ सोई हो ता देष॥६॥ अ मनब स मत बक ६
द्दिया॥ गर जिप स्यो जब बिंद॥ जग नाथ घटि बुटि न ही॥ जो लिषि या गोविंद॥७॥ साइ
कं मदं जे मद जे होइ॥८॥ जे जे रचि या राम॥ काहे कलपे मेरे॥ दुषी होत नहे कांम॥९॥ दाइ
साई कि या सु कैर हा॥ जे कछु करे सु होइ॥ करता करे सु हो न दे॥ काहे क ... ये को इ
टै॥ दाद कहे जे तै कीया सु कैरहा॥ जे है करे सु होइ॥ करन करा वन एक है॥ दूजा नांही कोइ
॥१०॥ सोई हमारा सांई या॥ जे सब का पूरन हार॥ दाइ जीवन मरन का॥ जाके हाथ विचार॥११
॥ कहि जगजीवन जे लिष्या॥ विधना अंक लिलाटि॥ औरन की इक रिसक॥ तिल जरि वा
धन घाटि॥१२॥ को कलपे मेका जकों॥ चंचल राषे चित्त॥ मिटत न लिषे लिलाट॥ को तो धीर गहे प
कि न मित्र॥१३॥ कहा होत धीर ज गहे॥ घर घर मागे दीन॥ गहिर हिदा सु बिसास मन॥ दिहै राम
ज नि कलि कीन॥१४॥ घर घर फिरत न पावही॥ मनहो औरम जाए॥ कोहे गुपाल धो अले दहै २२४

अंजर गुदर अहार॥१५॥ तनु कादू कको देषि करि॥ स्वांम पाइ परि जाइ॥ संक रधीर ज के धरें॥
मक्ख रिहस्ती घाइ॥१६॥ बपे पेट को बनो दुष॥ करि संतोष निहाल॥ ज्यों तु का टि हाथि निद्दिये
अधिक काजल हाल॥१७॥ घरे षफे जिन के उदर॥ तिन हिन स्यों तिसु हाति॥ संक र रीते जाम
जं॥ घहर षहर बहसाति॥१८॥ व्यास सिध के जीव की॥ सो जो जन लग देह॥ ता की चिंता हरि क
रे॥ मां न मकि सो अदेह॥१९॥ कबीर भूषा भूषा क्या करै॥ कहा सुनावे लोग॥ भांमा घर जि नि
मुष दिया॥ सोई पूरन जोग॥२०॥ कबीर रस्य न दार कं ची किले॥ पेट को कारोइ॥ विजमदि
रमें पेसि करि॥ सांमि पिछोरा सोइ॥२१॥ काहे कौं कलप्यो मरत॥ मन न किन राषे गोर॥ जुतो बे
दो नो उहि दयो॥ सु तो मलै देषोर॥२२॥ बिन ही बछोपा इ दे॥ जु तो लिष्यो है माथ॥ मन कोग
हो करि राही॥ बही न पंच नि साथ॥२३॥ कोर कोर के कारने॥ दो स्यो दह दिसि जाइ॥ रोटी नीत स
क जाकी दे हें राम पगाइ॥२४॥ जगनाथ जीवन लिष्यो॥ तापेक हाथ पाइ॥ षान पान पज्ं चा वइं अ
पर बलहीं आइ॥२५॥ रक्या जुक करि पड़ु चा वइ॥ षान पान जगनाथ॥ आयर बल अले मही॥ रिम
क मोत माहाथ॥२६॥ बिन ही मांगे आपि है॥ सत मति डाके को इ॥ ना जीद रिजक पहिले कि
पीछे सिर जे लोइ॥२७॥ बिन बला जगनाथ जन॥ पूरे पूरन हार॥ सिर जे पीछे सिर जई॥ पहिले ही

गुं०अं० प्योहार ॥२८॥ जुड़ मांहि पोषै तुहे ॥ उत्पन पुरष तु होत ॥ जगनाथ जिय जो निते ॥ निकसत सुर
१२४ वै सोत ॥२९॥ मानक चिंता नां करि ॥ चिंता उपजै रोग ॥ जिनि दिया आहे सा जिया ॥ साई पूरन जो
ग ॥३०॥ दादू चिंता कीये कछू नहीं ॥ चिंता जीय कौं षाइ ॥ होणां है सो ह्वै रह्या ॥ जाणां है सो
जाइ ॥३१॥ करणहार करतार प्रभु ॥ हम कौं कैसी चींत ॥ सब काहू की करत हैं ॥ सो दादू के
मींत ॥३२॥ साषी ॥ दादू च्यंता राम कौं ॥ समरथ सब जांणै ॥ दादू राम संभालि ए ॥ चिंता जिनि
आंणै ॥३३॥ साषी ॥ कबीर च्यंता मनि चित में बसै ॥ सोई चित में आंनि ॥ बिन च्यंता चिंता
करै ॥ यह प्रभु की बांनि ॥३४॥ कबीर का है च्यंतवै ॥ का ऊ दिचिंत्या होइ ॥ आ[illegible] च्यंत्य
हरि करै ॥ जो तो हि चिंत न कोइ ॥३५॥ कबीर चिंतान करि आचिंत रहु ॥ साई है समरथ
पसु पंषेरू जीव जंत ॥ तिन की गांठी हि साथ ॥३६॥ कबीर संत न बांधै गांठडी ॥ पेट
समाता लेइ ॥ सांई सौ सनमुष रहै ॥ जब मांगै तब देइ ॥३७॥ जन अच्यंता चिंता करै
परमेस्वर परतिपाल ॥ जगनाथ चिंता अच्यंत ॥ जो माता हित बाल ॥३८॥ हिरदै रा
म संभालि लै ॥ मन राषै बेसास ॥ दादू समरथ साइयां ॥ सब की पूरै आस ॥३९॥ राषि राम
हिरदै बिसवास कूं ॥ हरि आगै कौ लोइ ॥ बाजीद बडे दरबार तैं ॥ बिमुष गयौ नहिं कोइ ॥४०॥ १२४

॥ तदै अयो संतोष धन ॥ आपनै हीं तुरन्त आइ ॥ उरस्यो बा लौ पलक पैं ॥ कौन जाचि बा जाइ ॥४१॥ से
ऊ सिलै नकीजिए ॥ जे सोमा की बालि ॥ डर जनिय कौ है बसै ॥ चहरी करसी कालि ॥४२॥ दा
दू मनसा बाचा कर मनां ॥ साहिब का बेसास ॥ सेवग सिरजनहार का ॥ करै कवन की आस ॥४३॥
॥ आप आस करि राम की ॥ जिनि जाचै जगदीस ॥ मांगै पै नहिं पाइए ॥ अन मांगै ऊकतीस ॥४४॥
आस दास मांगत फिरै ॥ नहिं न प्रभु की सर्म ॥ पर घर अनत न सो भई ॥ पाति साह की हर्म ॥४५॥ सद
जैसी सब होइगा ॥ मांब निरंतर लेह ॥ तिन दीनै दर साभया ॥ जब हि कहा कछु देह ॥४६॥ सांई सि
रज्या जीव कौं ॥ सो घर बैठां पाइ ॥ जगनाथ बेसास बिन ॥ है दह दह दिस जाइ ॥४७॥ पर घर जे ता के
मद्दी ॥ तजै न आपनौं थोब ॥ जगनाथ तै नित सुषी ॥ जिन कै है संतोष ॥४८॥ जे मैं कीट पषाण मैं ॥ न
दी आंन कौ पोष ॥ जगनाथ हरि पूरई ॥ ता तैं करि संतोष ॥४९॥ जन आहिरा ब्यौरा कर्म ॥ तिनि मष
भिषि पाइ ॥ जगनाथ संतोष गहि ॥ जन कौं कूं बिसराइ ॥५०॥ अनन्य कौं हरि पूरवै ॥ जे है बिमुष
सदाइ ॥ जगनाथ संतोष जिहि ॥ तिन कौं कूं बिसराइ ॥५१॥ बर सिंध्या सातिम पलक की ॥ भव रा
स्वादिवं भाइ ॥ हंस साध निर्मल सुषी ॥ समाज सदेन रहाइ ॥५२॥ बिना मिताई मित्र पहि ॥ चित जु या
है और ॥ जितै षुरै संसार महि ॥ तिन जइ कसिरि मोर ॥५३॥ जे हरि सन मुष सुर जिम ॥ औ दजे म श्री

गुं०१२०
२२५

साध॥ विमुष जे पैं भव तजे राम॥ मैं कम आव सदाइ॥५४॥ रे मन पीयु की पीति लगि॥ इक्रीन
रहे लिहि गोर॥ जो आहै सो पाइहै॥ जिनि मर मद्दि का जंओर॥५५॥ जीव सुजबै अयांन थो॥ म
दच टेपी पीधीर॥ अब सयान क्यो रेप स्यो॥ दुष काहि या वत मीर॥५६॥ मन रसा जोगी जगल।
का॥ चाले चालि न साइ॥ टाका टूका सहज का॥ आसनि बेगा मो इ॥५७॥ दाइ टूका सहज का
॥ संतोषी जन षाइ॥ मृतक भोजन गुरमुषी॥ काहे कल पे आइ॥५८॥ सूकी रोटी सहज की॥
सोई सुधा सम जानि॥ जगम कपट की कोमरी॥ पाथर सी पहिचानि॥५९॥ सेर क ी की सह
ज की॥ मन विन मन किहि काज॥ जगम न सरस सोई समझि॥ रहै लोइ मां लाज॥६०॥ साधी
कब हूं हि जेत जंतनि बज॥ कब रकटी फांका॥ हरि सु मिरै विसूरै नहीं॥ मुहै सबूर
रांका॥६१॥ साषी॥ फारी द्रा रुषी सुषी षाइ करि॥ ठंढा पांणी पीव॥ देषि बिरानी चोपडी॥
मां तूर सांई जीव॥६२॥ सुषन जो वन समगि या॥ इ स कन पुछी जाति॥ मीदन सधुरस मगि या
किंचे बिहा गी रानि॥६३॥ दाइ अपांण षिमित दका षान दे॥ म र म द्दिं ला गा म न॥ नांव निर
जन लेत है॥ युं विमिल साधूजन॥६४॥ अपणां छेपा आगे पडे॥ पीछे लेन गाइ॥ दाइ केसि ५ १२५
रिदी सयण्हा॥ जे अंछ रामर जाइ॥६५॥ अपणां छेगा आगे पडे॥ घिरत्या बिचारि रुषाइ॥ दाइ राम

फिरै न लोड मा॥ तरवरतांकि न जाइ॥६६॥ दाइ जल दल रांम का॥ हम लेवैं परसाद॥
संसार का समकैं नहीं॥ अबिगत भाव अगाध॥६७॥ जो इ आवे सब जंमैं॥ सोई भी गजे
मि इ जा कड वानी बसा॥ जाषि बैंचा तानि॥६८॥ साध सह त नाजी मली॥ जल दल षे
मरूपांन॥ पीछे अमृत भाव बिन॥ मो हन बिषम मोन॥६९॥ साषी॥ भाव भगति सो भगरि
के॥ घेवर से लागे॥ घटर स जोजन भाव बिन॥ जग जीव न त्यागे॥७०॥ साषी॥ पेम सहि
तका दूक है॥ मिले कजाले भाइ॥ जो हिरदा में हेत है॥ हाथो न तरे आइ॥७१॥ सत के च ना च
बाइ यहि॥ तजि अस्त की दाय॥ जो पंच निम हिपति रहै॥ तो जांनो पायो लाय॥७२॥ बाहिन
इ जीव बिन॥ बस्ती रहे ओ किरानि॥ निर्गुन अगुन बस्त तन॥ अस न अर्थ तां आनि॥७३॥
मगन सुआत्मलीन सो॥ परमानंद समानि॥ जगनाथ गजन मनि का॥ जन मध रूपा परवानि॥
७४॥ जिते ति ते ब्रह्मांड मब॥ श्रीपति धांम बिचारि॥ जहां तहां व्यंतार रहत॥ बेगि इन्दी केबारि॥७५॥
दाइ स्वर्ग भुवन पाताल मधि॥ आदि अंति सब सिष्टि॥ सिर जि सबनि को देत है॥ सोई हमारा इष्ट
॥७६॥ इति सपूर्ण॥ १ ॥ २१०७॥ पोष पति पालरक्षि कण॥ साषी॥ दाइ सांई सबनि को॥ सिर गके सु
बदेश॥ अया मूढ मति जीव की॥ तो भी नांव न लेश॥ ॥ दाइ सिरजनहारा सबनि का॥ ऐसा है समर्थ

वेसाम संतो०

पो०ज० त्य॥ सोईसेवगकौरख्या॥ जहांसकलपसारैहत्थ॥२॥ जौहरिअघसंघरकरैं॥ तोजियमदरमां
२२६ हि॥ षांनपांनरख्यावसन॥ देमेटनसबचांहि॥३॥ संमथसिरजनहारहै॥ जेकछकरैसुहोइ॥
दाहूसेवगराषिलै॥ कालनलुगैकोइ॥४॥ बबीहाबडअंषरो॥ किमराषिसीप्रांण॥ अडेडीसमे
श्र षियो॥ ऊपरिमंडैसिचांण॥५॥ देहीबासदहरिभस्यो॥ बबीहाकेनागि॥ सरचकीमूचीकिगी॥ गोईसि
चांणेंलागि॥६॥ नारथिहरिरख्याकरी॥ अंमालियेनमारि॥ पंजारीसुतअग्निमैं॥ मूषबनफंद
मंऊरि॥७॥ कहिजगजीवनूरांमजी॥ कोसुमरोनूरनारि॥ अप्रहिलादकबीरजं॥ पा करैतनना
रि॥८॥ सेवगकीरख्याकरै॥ सेवगकीप्रतिपाल॥ सेवगकीवाहरचढै॥ दादूदीनदयाल॥९॥ पोष
तजनजीजनकसे॥ जहांतहारक्षिपाल॥ सिरजेकीछत्रज्यावदैं॥ अनूजगनाथदयाल॥१०॥ दाह
जिनिपञ्जंचायाप्रांणकौं॥ उदरमधेमुषषीर॥ जठरअग्निमैराषिया॥ कोमलकायासरीर॥
सोसंमथसंगीसंगिरहै॥ बिकटघाटघटभीर॥ सोसांईसौंगहथादी॥ जिनिमूलैमनबीर॥११॥ बी
लहारीतापुरषकी॥ पेटाकरिप्रतिपाल॥ जगनाथनजिनामिजो॥ औरसकलजंजाल॥१२॥ स्व
थिबिनहरिसिरजिके॥ सेवतसेवगहोइ॥ जगनाथजलदारजूं॥ पोरेतारैसोइ॥१३॥ बीजअग राम
निनांहिनबुझै॥ जलमैजनजगनाथ॥ क्यरनकरूनांनीरके॥ पोषेराषेसाथ॥१४॥ सोषनदीपे २२६

पोषप्रतिपालरक्षिक०
षतरख्या॥ जगनाथनअंतरकीन॥ नीरहिंप्यारोहोतहै॥ प्याइजाइमरिमीन॥१५॥ जंजलु
लज्यापोषकी॥ पुरहजणाकरमाथ॥ सिक्यासबदिसेतोषि॥ जनमारैजगनाथ॥१६॥ हरि
पोषेप्रतिपालहरि॥ हरिदेसदासहाइ॥ जगनाथउमदहनहरि॥ हरिदेहरनबलाइ॥१७॥
इतिसंपूर्ण॥८४॥२२२॥ संमकारहीनषण्णसाषी॥ हरिहरबिधिरचिमंतजिहि॥ बारेसुब
मलफूलगंध॥ हेमदमंतरषोनही॥ नंदबिपतिकसंबंध॥१॥ जागिषिनांपछिकछुनहीं॥ यह
समकोसबकोइ॥ जरेपतंगोपरमहित॥ जोनिरमयोसुहोइ॥२॥ हारिकमनबंछितसबै॥ ब
नअझाकछुमांहिं॥ चकइप्यापषनिसहित॥ पियकोकंसनमिलांहि॥३॥ तुलसीजोमदतब्य
ता॥ तहूसेष्टमिलैसदाइ॥ ताहिदैआवैताहिपे॥ केताहितहोतैजाइ॥४॥ बीतीबकरतमांहिनै
हौनीछंबसमांहि॥ कवनकाजकीजेजगत॥ पोचसोचमनमांहि॥५॥ अतिफूगंधसुंदरसरस
चंपकलीबिलसंत॥ रसिकभवरसोपदहैं॥ बिधिइच्याबलवंत॥६॥ बरिषाघंनबरियंत
२ हीं॥ नवपत्रसदुमदे॥ सहविबिचित्रफूनिअरकतरु॥ प्रथमपत्रसंदेह॥७॥ कबअधौकबआवैये
कवषमोकबलीह॥ दईनदीकांचंदनैं॥ सोहसारीषादीह॥८॥ सोवी॥ कहाकसौंगसिआग॥ निस
दिनसंकसिरबसै॥ करिरकसनअगाग॥ ताहूपरअतिठीनतन॥९॥ साषी॥ देषौदसथैकाडवै॥ पो

पु०अं०
२२७

चौपांकैपांच॥ कामिकर्मिकबनबलपपया॥ औलांदिन की आंच॥१०॥ साषी लिष्योसुषपाइए बिनु आ
बीकछुमांहि॥ अगमनाथ बजपचिमरै॥ आपनि साषी मांहि॥११॥ साषी बसिसब मांमदै सुरनरशिषि
पजेस॥ सष्ठ रादिक आमाल॥ तिंजगनाथ बीदेस॥१२॥ साषी बरिलंतदेसही॥ मोदेषिये बिचारि॥ ज
गनाथ जगदीसबिन॥ सबसाबीतरहारि॥१३॥ अपनैथोरेकरनकों॥ ये ममषपिदेकोइ॥ सबकोथोर
तबजुतकों॥ करताकरेसुहोइ॥१४॥ उदिममनुमयेलघुअलघु॥ साषिजीबजंआंनि॥ घटिबधि
तबकोटिकरि॥ यहमनमिटकरिमांनि॥१५॥ साषी॥ लिषियोलसेनजाइ॥ अरालिषियो आदेस
हीं॥ कासोंपंमिलपाइ॥ यामाज्ञलयहपूछिया॥१६॥ साषी॥ ज्ञानजो तमीपिदम॥ पूछेसामस
वार॥ मरिजदराजबहीबदे॥ बिसरेबिसमनहार॥१७॥ सोपतेरा कछुनहीं॥ बिसरेसा दिबस्यं
म॥ तदेअयांगपदेनल्ला॥ रसमांरटिपरामम॥१८॥ ऐसीमायाजिनिमिलो॥ जासौंबिसरेराम॥ अनम
याहीं अजबदे॥ सादिबकादिएस्यांम॥१९॥ यमगंधपुसोबिरंचिपुधि॥ ज्ञानजोतिमीसाथि॥ यंस
एसजुसंसारको॥ दोतबसाहिबहाथि॥२०॥ जेसिछमंछरिजेसिदिन॥ जिणदेसेजोभेस॥ जोलि
षियोसिदि अक्षरां॥ पांणीतेपांमेस॥२१॥ सोवीमीमेंमिदेनधारि॥ संपतिमहासरीरसुष॥ बिद्या
भजनमुरारि॥ पइएपरंबपुंमयतै॥२२॥ हरिसारेसुषपाइ॥ चतांकोऊनारदे॥ जाकेहोइसुजाइ॥

याकीतेयोहानहीं॥२३॥ साषी॥ जोयजुडुषकोंमांगवे॥ तोसुषकोटिपकार॥ सुषदीसुषचाहत
रहै॥ तोसुषनहीलमार॥२४॥ संधेसमेदीलेससुष॥ निजसुषकोटिकजांहि॥ सोसनेहकबि
जनकहत॥ सबसुषताहीमांहि॥२५॥ दियासुसीसचढाइलै॥ आछीभांतिअयेसि॥ जाकोसुष
चाहतलियो॥ ताकेदुषहिनफेरि॥२६॥ हीरघसासनलेहिडुष॥ सुषसांईजिनिमूलि॥ दुईद्वई
काकरतहै॥ दुईद्वईसुकाहलि॥२७॥ जांजेहतातेतलै॥ धनजोबनज्योसाद॥ त्यांनोतुतेसापडे
॥ आसेतेथीजाइ॥२८॥ केतसुचलेजिहाजचढि॥ सायरपैलीपार॥ कहिमुनिहसोपाइहै॥ जोबि
धनोलिष्यालिलार॥२९॥ साषी॥ बालाबालीलीह॥ अभिकीनेंवोछीनपी॥ जियडाहिवेमहीह॥ थि
रुसाहारथाईरह्या॥३०॥ साषी॥ सोविधिरूठेहंसपर॥ मांनुसलेइछिनाइ॥ नीररुहीरबबेकजु
सुसोपेलिर्योनजाइ॥३१॥ मंत्रसुकरपमावते॥ देवेअजिसअनंत॥ पारब्रधगुरजनअंत॥ बि
रहनिमेटेकंत॥३२॥ अजपआवसंदेहबिन॥ कीजपइएसोइ॥ जगमजांनिअदगुतयुहै॥ समा
फनसमकेकोइ॥३३॥ पहलीथासोअबभया॥ अबसोआगेहोइ॥ साइतीनंगोरकी॥ हकेबिरला
कोइ॥३४॥ कष्टकर्मपहिलैंकिये॥ सोअबभुगतेआइ॥ रासकर्मअबकीजिए॥ आगेमेघरहाइ॥
॥३५॥ बेबसेबनैबिबधिपरि॥ धरेअंगमबजुकाइ॥ जगमाणहरिभजनबिन॥ फुनिफुनिआवेजाइ॥

राम
२२७

गुं.गंण सुखाकूट कर्म अव का ट गैी॥ राम कही सुनव कल॥ ३॥ सेव कहां जगनाथ तब॥ हरि अजि करैं नि समूल॥ ४॥ अ
११८ मरा मो छि दि सि आर सी॥ अधिक अधो गति येत॥ जगनाथ धर बीज जंमें॥ संसकार फर देत॥ ३८॥ संस
कार सो फर रहै॥ याको हरष न सूंका॥ पाप करत पर लै मही॥ पुंन्य कि मैं पर लोक॥ ३९॥ चौपई॥ को
घट पापी को घट पुंन्य॥ को घट चेतनि को घट सुंन्य॥ घट घट दाइक हि समकावै॥ जेसा करै सु तैसा पा
वै॥ ४०॥ साषी॥ करहु ति सम फर पाइ है॥ तुम्हें जु बोवै बीर॥ जगनाथ बकृ जतन करि॥ केरा नदी के तीर
॥ ४१॥ पुंन्य स्वर्ग गति पाइये॥ पापन कै सम जाइ॥ जगनाथ बीरज जिसो॥ बोवै ति सो फर षा॥ ४२॥ कर्म
करै बैकुंठ का॥ सो बैकुंठ सिधाइ॥ करै कमाई नर्क की॥ नर्क ति ते भुगताइ॥ ४३॥ अजर जरट॥ बै पुंन्य तें
स्वर्ग तत विधि अनंत॥ सुकृत आगे अति सुषी॥ कृ कृत अवही अंत॥ ४४॥ जगनाथ सुकृत जोग है॥ सो कृत
एकहृ सत॥ अषे लोक आवत पै मैं॥ अथिर कथी रब संत॥ ४५॥ सीनें मांहे दत करो॥ अब आगे विधि
इ॥ आतम अर्पन अमिट सो॥ जगनाथ थिर थाइ॥ ४६॥ नवसर मैं भ रमै न ही॥ जन जगनाथ जमा स
मजन कि ऐं हरि अगति विन॥ आवै आवै नांहि॥ ४७॥ जगनाथ अमिं बो मिटे॥ भक्ति योग अगवांन
प्राप्ति निह कर्मु कां मते॥ जोति बिनां श्री सिंधान॥ ४८॥ इति संपूरण॥ ... ॥ मह जन सुकृत अंग॥ राम
साध महज सुकृत होत है॥ धर्म अधिक बिनां॥ कन जगनाथ मम धकरी॥ दीजे भिछुक साध॥ ... ॥ सीन ... ११८

सस्कारसोनहि०

गज गा सतैं॥ घटे गो न तास अहार॥ सो ले चली धपीलका॥ पालन कौं परिवार॥ २॥ जंम कृषि करि अवकन
परें॥ किते जीव ष्यों सांहि॥ अंन की मौंज जगनाथ पुंनि॥ सो कलेषा मांहि॥ ३॥ सुमति बेद पुरांन मैं॥ जगना
थ यह जवान॥ स्वारथ परमारथ फलै॥ जो दोइ आक समान॥ ४॥ नर रछ्या रोटी करै॥ पम्सव ठादे पीठि॥ नां
म जमात महिं जांनिये॥ जगनाथ डिगदी ठि॥ ५॥ रोटी अध अहार है॥ करै म है॥ जगनाथ सहज सुकृत ज
गनाथ सो॥ षरचे मोहन मगन॥ ६॥ कोरक पंरका मधुकरी॥ जल थल भक्ति समान॥ बरस मास पष दिन॥
सदा॥ कीजे हित भगवांन॥ ७॥ घर मैं नांहि न मांगि कबु॥ देंत मनोरथ सो॥ ॥ जगनाथ बलि जली॥ स हिम सु
कृत सो॥ ८॥ थोरे थोरो षरच ही॥ अधिके अधिको बीर॥ सत्य सो जगनाथ जन॥ देत न करै षधीर॥ ९॥
मन मैं दाइ दास को॥ नहीं कांमना कोइ॥ पै सो परसिध साधकौ॥ देत भि षेह रिसोइ॥ १०॥ गाजी दई दिज
रूप कौं॥ मन बच देत लगाइ॥ जगनाथ गोबिंद मिले॥ जन कबीर को आइ॥ ११॥ भिषे पार षत षेत म
हिं॥ धनें धंन बपराइ॥ येती निपजी बीज बिन॥ स्वांमी करी सहाइ॥ १२॥ थोरै अथ दाकरि घनौं॥ पुंन्य सम
पै नरांम॥ जगनाथ सुकृत नहीं॥ जो की जै निह कांम॥ १३॥ सहज सुकृत नित कीजिए॥ सुमिरन सेस महेत॥
जगनाथ ताको सदा॥ हरि आपन पौ देत॥ १४॥ इति संपूरण॥ ... ॥ स्वारथ परमारथ अंग॥ साषी॥ सु सजन
साम चदी॥ सबं काल बदंत॥ परमारथ सनेही कंज जल॥ बेमा अंस समहंत॥ १॥ परमारथ खोच न सहत॥ स्वारथ

सहजसुकृत०

गुरुग्रा ११९

अतिही अंध ॥ पीवै के चालें चरवै ॥ अछुटें काम यु कंध ॥२॥ सोरठी ॥ भरिया सा जी देह ॥ सैंगा घणा दी सायजै ॥ अं
वांमा चां छेह ॥ बिरला वे मैं बालहा ॥३॥ साषी ॥ कबीर स्वारथ का सब को सगा ॥ जग सगला ही जांणि ॥ बिन
स्वारथ आदर करै ॥ हरि की प्रीति पिछांनि ॥४॥ दादू आप सवारथ सब सगे ॥ प्रांन सनेही नांहि ॥ प्रांन सनेह
रांम है ॥ कै साध कलि मांहि ॥५॥ सुष का साथी जगत सब ॥ दुष का नांही कोइ ॥ दुष का साथी सांईयां ॥ दा
दू सतगुर होइ ॥६॥ कबीर को कि सको नहीं ॥ सुष देवे की कांणि ॥ ते को बिरला गम मांनई ॥ जत्तु गति मत
पहिचानि ॥७॥ सबै सगा ई स्वारथ की ॥ परमारथ की नांहि ॥ कबीर जन परमारथी ॥ कहुं कहुं कलि
मांहि ॥८॥ सबै सगा तीन्यं तब ढु ॥ सन मिलहिं अनेक ॥ आसों बिल्लि दुष काटी ए ॥ ८ ॥ मैं को एक ॥
९॥ जसी तब खांज मि दिष णि ॥ स्वारथ की प्रीति ॥ परमारथ हरि जन हित ॥ सु तो सांम ककंरी ति ॥१०
॥ परमारथ अरु प्रेम रस ॥ कोंन सुनै सबेन ॥ हरि जो न्यो जांन्यो न हरि ॥ जगत न चाहि चित चैन ॥११॥ पुरा स
हजै गुन करै ॥ मन सन दे षेद्रे स ॥ कंमा आ जे सरमै रे ॥ गा राम मां गे मेह ॥१२॥ साध सरिषे रांम रस ॥ अंमृत बं
णी आइ ॥ दादू दरसन देषतां ॥ त्रिविधि ताप तनि जांहि ॥१३॥ साध सबद सुष बरषि है ॥ सीतल होइ सर
र ॥ दादू अंतरि आतमा ॥ पीवै हरि जल नीर ॥१४॥ संत सदा परमारथी ॥ घन ज्यूं बरषे आइ ॥ त्रिहुं रे
स जीव की ॥ आप मांप रस लाइ ॥१५॥ दादू परउपगारी संत सब ॥ आए इहि कलि मांहि ॥ पीवें पिलावें रांम राम ११९

हि

रस ॥ आप सवारथ नांहि ॥१६॥ सषी ॥ परउपगारी संत जन ॥ साहिब जी तेरे ॥ जाती देषी आतमां ॥ रांम क
हि टेरे ॥१७॥ साषी ॥ कसन चाहैं आप कों ॥ सैंति सु बुधि धन देंहि ॥ उरसी दुषिया जीव कों ॥ सुष सरूप
करि लेंहि ॥१८॥ हरि कियें दुष दुषित कों ॥ ञिंहिं छिन जो फल होइ ॥ सो छि स्वर्ग संसार सुषां ॥ ता सम नां
हीं कोइ ॥१९॥ परमेंद्रा की जे नहीं ॥ परउपगार करे सि ॥ जे घंटा हल बाज णीं ॥ हरे एथ कां सुने सि ॥२०॥
स्वांति बंद समो ती भयो ॥ परयो जु चात्रग हेत ॥ संकर तिन की का कहुं ॥ साधनि कौं धन देत ॥२१॥ दादू द
या है भला ॥ दीया करो सब कोइ ॥ घर मैं धरया न पाइए ॥ जे कर दीया न होइ ॥२२॥ दादू दीये का गुण ते
ल है ॥ दीया मोटी बात ॥ दीया जग मैं चांदणा ॥ दीया चाले साथ ॥२३॥ परमारथ सम को नहीं ॥ सब सारन
मैं सार ॥ या सुष कै कारन धरे ॥ निराकार आकार ॥२४॥ दादू परमारथ कौं सब किया ॥ आप सवारथ नां
हिं ॥ परमेस्वर परमारथी ॥ कै साध कलि मांहि ॥२५॥ इति संपूर्ण ॥ ८० ॥ ३००८ ॥ सुषवासी स्वारथी ० ॥ साषी
॥ तौं जु दरेरे जे गए ॥ फलिया भु मि आसंत ॥ ते पंषी निहिंत रहरे ॥ किमले सुष भावंत ॥१॥ जो लों सुष
तौ लों रहे ॥ कारज कष्ट न संत ॥ जग नाथ ते स्वारथी ॥ संत न तहां बसंत ॥२॥ सुषवासी नर सो करै
आवे कबहुं नांहिं ॥ सार संग्रांम में नीकसे ॥ कायर जं जाजि जांहि ॥३॥ गरज सम मैं मन ओर है ॥ सरै गरज
मन ओर ॥ ज्यें राज मन की विरति ॥ सदा न एकै ठोर ॥४॥ सेवग है सेवा करै ॥ मो हिं बोलि छिडंबे न ॥

स्वार्थपरमार्थ०

गुं०अं० जगनाथ चाही कजे॥ स्वारथ ही लीं सैंन॥५॥ नव निमनें वेबजुभां तिमर॥ गनि का जुंगलतं॥
१२० ना॥ दांमदा बलौं दीमना॥ बीतौं बर तिजुं ता न॥६॥ बाकर चेरी घग कमल॥ जल्व जर जुं जकपो
हि॥ सुखबासी जगनाथ रर॥ स्वारथ लौं ठहरा हि॥७॥ सुखबासी सुखलौं बसे॥ षांनरूपां नणु साल॥ जक
न परें जगनाथ जब॥ टकटें पिंडो बेसाल॥८॥ चस लिपस लिचंचल नहीं॥ बिनां चपल चक चाल॥ जगना
थ तिहिं स्वारथी॥ सुर मिल मांहि कुकाल॥९॥ परमारथ्य कस्योनहीं॥ स्वार्थी सधौं नसाथ॥ बीसल की बीसार
ही॥ जिमी मांहि जगनाथ॥१०॥ स्वार्थी मलौं न सुलपहे॥ बहुत किये बहि जाइ॥ लालच लगि जगनाथ जन
॥ पूरो रूप बिना इ॥११॥ परमारथी योगे घनौं॥ कीयें कारज होइ॥ जगनाथ जन स्वारथी॥ सौ क्यों॥ ये नकोइ
॥१२॥ परमारथ की यो मलौ॥ स्वारथ आपनौं होइ॥ जगनाथ सो सयन हीं॥ करि हित सो जब कोइ॥१३॥ स्वारथ स
रूप अगति हीं॥ मतो बजन मसो आव॥ मोगं नाव बिन सो तिरत॥ नहिं जगनाथ नपाव॥१४॥ अपनों सुख स्व
रथ तजे॥ हिलिमिलि संत सु जाइ॥ जगनाथ सरन रिम हीं॥ ता निधि मांहि समाइ॥१५॥ इति संपूर्ण॥ १॥ अ
थ सगुंना निगुंनो कतयन माषी॥ मूसा जलता दे घि कारि॥ दाइ हंसदयाल॥ मांन सरोवर ले चल्या॥ पंथ
कोटि काल॥२॥ सब जीव सुषमस्वरूप में॥ साध कोटें आइ॥ दाइ बि सद र बिसरे॥ फिरि ताही कौ षाइ॥३॥ सु राम
फल बिषे पमीर थी॥ सुषदेवै फल फल॥ दाइ कपरि बे सिकरि॥ निगुंणां कोटे मूल॥४॥ दाइ चंदन बांवनां॥ व १२०
सुषबासी स्वारथी०

सेव टाअ आइ॥ सुषदाइ सीतल किये॥ तीनं तापन साइ॥५॥ काल कदक हाथिले॥ काट गाल्या मा
इ॥ से सा यहु संसार है॥ मालमूल ले जाइ॥६॥ जद पिंतरे सु फलफल॥ बहु पंषी समांन॥ हियो जुक॥ न
ल्हयन कउ॥ नहिं बिसरत सनस्थांन॥७॥ कबीर हरिया जो नें रूषड़ा॥ उसपां नी का नेह॥ सूका काठ बखं
न सी॥ कहुं सबुं बरसामेह॥८॥ कबीर किरि मिरि किरि मिरि बरषीया॥ पांहन ऊपरि मेह॥ माटी गरि सैं जल
भई॥ पांहन बोही ते ह॥९॥ कबीर पारख महीमोति यां॥ घडिं बंकी सिंघ रांह॥ सगुरां सगुरां चुनि लिया
॥ चूक पडी निगुरांह॥१०॥ कबीर हरि रस बरसिया॥ गिर डूंगर सिषरांह॥ नीर निवांनां ठाहरे॥ नां कं छाप
रडांह॥११॥ दाइ सगुणां गुण करे॥ निगुणां मांनें नांहि॥ निगुणां मरि निर्फल गया॥ सगुणां साहिब मांहि॥१
२॥ कबीर निगुंनां सो गुन की जिये॥ अगुन मांनें सोइ॥ सगुनां सौं उपगार करि॥ अ नत गुनों सुन सोइ॥
१३॥ सगुनां गुन मांनें करे॥ निगुनां करे न मांनि॥ निगुनां ब्रह्म जो दे॥ सगुनां सब की कोनि॥१४॥ सगु
नां सो गुन कंत है॥ सब हिं न कौ उपगार॥ निगुनां लंपट लालची॥ गुंन मांनें न लगार॥१५॥ जे तक जो पै सुष
लहे॥ पाहे सुषधी सोइ॥ जगनाथ को उपकार॥ गुंन मेटा न हिं दोइ॥१६॥ गुरगुन कैसें बिसरिये॥ जिनि तें स
ब सुष पाइ॥ जगनाथ जगदीश लगि॥ जग के दुष बिसराइ॥१७॥ गुरि की नौं उपगार यहु॥ सिजन हार पि
छांना॥ जगनाथ जगधर्मि कों॥ जां न्यों सबज नमांन॥१८॥ मनिषदेह तें देवत न॥ सतगुर पलटे घाट॥ गुंन॥

गुं०अं० १२२

मेटत हीं आपनी॥ निगुनां परै बाट॥१८॥ सतगुर साध सम्हार ई॥ तन मन सबही साज॥ सो गुंन मेटत नांम
रे॥ जगनाथ न रल्याज॥१९॥ अगिनत गुन गुरदेव के॥ समथ टालन मीच॥ जगनाथ कृतघ्न मेटई॥ कृतघ
न क्रपन नीच॥२०॥ सतगुरि दीया रांम धन॥ रहे सुबुधि बताइ॥ मन सा बाचा क्रमनां॥ बिसरे सेबित के भाइ
॥ कियां कृतघ्न मेटै नहीं॥ गुंणा ही मांहि समाइ॥ दादू बंधे अनंत धन॥ कबहूं नहीं जाइ॥२२॥ दादू गोबिंद के
गुंण बजाते है॥ कोई न जाने जीव॥ अपनां बूझे आपना ति॥ जे जक की या पीव॥२३॥ गोबिंद गुन बजु॥
करत है॥ कृतघ्न सकल बिसारि॥ जगनाथ नहिं जांनिये॥ समंद मांहि जंबारि॥२४॥ साखी॥ अन्नपा
नी अरु बस्तर देमां सांई सब ही निपुराये॥ नांनां बिधि मेवा करि संग्रह॥ जिय काजत न रांचे॥ राति
दिन सर किपाल रक्ष्या सो॥ राषे जस सुष पावे॥ गोबिंद गुन जगनाथ न गावे॥ कृतघन कृत बिसरावे॥
२५॥ साखी॥ अरु सम ब सन आगाल सो॥ आदि अंति लो दीन॥ जगनाथ सबुरस का॥ कृतघन नाव
नलीन॥२५॥ हरि निपगारि नरं जिया॥ मर रंजो बिसलो इ॥ येक रलो य रा नाम सजिंद॥ अदन नसंपी को
इ॥२६॥ सांई सो हूं सार दे॥ से रु चहैं तो देवे॥ जीव जसो ट हिया मरै॥ कीडी रै पग देवि॥२७॥ कृत मांन कृत स
त भये॥ मेटत कृतघन सोइ॥ जगनाथ निगुनां घनां॥ सगुनां बिरला कोइ॥२८॥ जिसकौं मीठा सोई ग्रं॥ । राम
गुन मांनै गनि पाइ॥ अरगुन गारी आतमां॥ जगनाथ बहि जाइ॥२९॥ इति संपूर्णी॥ ६॥ १०४ थि सगुरा निगु ॥ गु १२२

सगुणं निगुणं कृतघ्न०

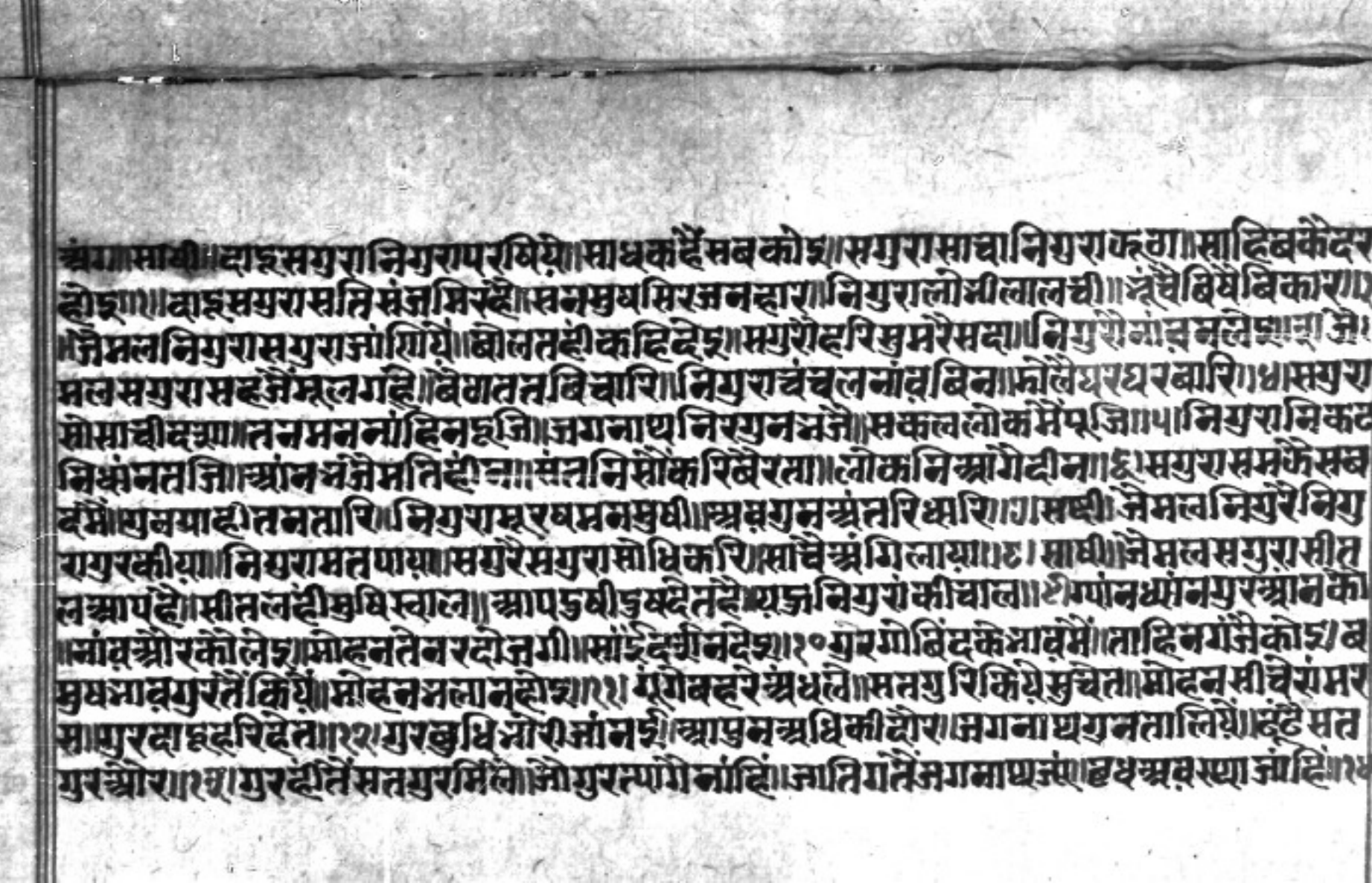

अंग॥ साखी॥ दादू सगुरा निगुरा परखिये॥ साध कहैं सब कोइ॥ सगुरा साचा निगुरा कूडा॥ साहिब के दर
होइ॥१॥ दादू सगुरा सति संजम रहै॥ सनमुख सिरजनहार॥ निगुरा लोभी लालची॥ भूंचै बिषै बिकार॥२॥
जे मल निगुरा सगुरा जांणिये॥ बोलत ही कहि देइ॥ सगुरो हरि सुमरै सदा॥ निगुरो मांड मलेछ॥३॥ जे
मल सगुरा सब है जे मल गहै॥ बेगत न बिचारि॥ निगुरा चंचल नांव बिन॥ फोलै घर घर बारि॥४॥ सगुरा
सो साची कहै॥ तन मन मांहि न दूजि॥ जगनाथ निगुरा नजे॥ सकल लोक में पूजि॥५॥ निगुरा मिकद
निरुंन तजि॥ आंन भजै मति हीना॥ संत निसौं करि बैरता॥ लोकनि आगे दीन॥६॥ सगुरा समझे सब
दमैं॥ सुख पावे तन तारि॥ निगुरा भरम भम सुषी॥ अरु सगुरा अंतरि धारि॥७॥ साखी॥ जे मल निगुरे निगु
रा गुर की या॥ निगुरा मत पाया॥ सगुरे सगुरा सो धि करि॥ साचे अंग मिलाया॥८॥ साखी॥ जे मल सगुरा सीत
ल आप है॥ सीतल हीं सुषि स्याल॥ आप डुबी डुबै तरे॥ यह निगुरा की चाल॥९॥ पांन थ्यांन सगुर आन कै
मांय और को लेइ॥ सो हन तेन रदो जगी॥ सांई दोस न देइ॥१०॥ गुर गोबिंद के भाव मैं॥ साहिब गंजे कोइ॥ ब
मुख आद गुरतैं किये॥ सो दन सला न होइ॥११॥ गुरगोबिंद अथले॥ सतगुरि कियें सुचेत॥ सो दिन सीचे रांम रस
सा गुरसा हद रिदेत॥१२॥ गुरबुधि सोरी जांन है॥ आपुन अधि कीदोर॥ जगनाथ गुन ताल्लिये॥ छूटे सत
गुर ओर॥१३॥ गुर दीनें सतगुर मिले॥ जो गुर त्यागे नांहि॥ जाति यातें जगनाथ उन॥ दई अरस पा जांहि॥१४

गुं०अं० ॥सिरिकारतागुरकौंभजे॥सोसगुराजगनाथ॥औरसकलहींसंतकों॥सुमरिसदांहिमाथ॥५॥सगुरासे
१२२ हेतां॥गिरे॥जोसुमरेसिरजनहार॥जेमूलहरिकेनांवबिन॥निगुरासबसंसार॥६॥साइसगुरासन
मुषा॥सासहिवसुमरेनित॥मनअफोलडोलैनहीं॥चंचलहोइनचित॥७॥निगुरानिहचलनांरहे॥नि
दकनिरदेनीच॥साइसोहरिजननिसो॥बिमुषनसूफेमीच॥८॥निगुरानिरभैभेदबिनां॥निस्तन
नांवैमूलि॥साधसबदमांनैनहीं॥सोदोजगिपरिहैमूलि॥९॥चौपई॥सबदगुरसंनिसगुरतजिथाप
ता॥किरियासिधनकबहूंहोइ॥जसमाद्यानरबिनांग्रंथधरि॥जनजगनाथनबीरसमो॥२०॥साची
सापसगुरसोंहाफई॥थापैऔरअनाद्धि॥जगनाथनिगुरातिहे॥किरियाकरैअबादि॥२१॥परमहिगु
रबिनयतिनहीं॥किरियाकष्टनबादि॥निर्धनकेजगनाथजंस॥सकलमनोरथबादि॥२२॥परत
हिगुरतजिअमसगुर॥भजतकरतअगतूति॥तिनकीगतिगोपिमें॥जगनाथकरतति॥२३॥
ग्रनकीनेंहींआहिगुर॥जनजगनाथपरोछि॥परतहिगुरबिनपरहरे॥तेनरबिमुषनमोछि॥२४॥
गोरषनाथनगणांनदे॥भरथरसमानमानि॥कृपाकरिसबबीरजी॥गुरतजिगुरइनजानि॥२५॥
श्रीमुषबाइककहतहें॥स्मृतिसुमतिमहिसाषि॥सबसिरधरिमोकोंभजे॥गुरबिनमाषनमाषि॥२६॥ राम
साधसदहिरदयरहे॥सोसगुरासंसारि॥जगनाथभोसंधनैं॥होतअवसितेपारि॥२७॥सगुरासतगुर १२२

सबदमैं॥कबहूंपलटैनांहि॥साइदोस्तदिलिबसे॥हिलिमिलिरहितामांहि॥२८॥इतिसगुर सगुरा निगुरा०
रा॥१॥छ०॥अथमधिमअधमकोअंग॥साषी॥त्रिविधिधमेसंसारमें॥अधममधिउतमहोइ॥जग
नाथजोहनबिनां॥अधतेंअधमसोइ॥१॥उतमतेंआतमभजै॥मधमगननकीसेव॥सपदामांगिक
अधमजन॥मह्याअधमअनेव॥२॥अधचौरासीमहिसुर॥उतमनिजअंगमांहि॥अधिकअधमज
गनाथते॥अधअधोगतिजांहि॥३॥मूंघाप्रभुचंघाचतुर॥संघारोबकमूढ॥कंघाडुषीविकलअ
ति॥संघाघोरअलुढ॥४॥मपांनमार्वमतिमंदता॥मितुरबबनगढगार॥रूपभावआतसमधा॥नास
मंघपकार॥५॥चौपई॥उतमसतेमधिधमनधारना॥बरतसजमतेअधमबषांनि॥जगनाथसजाअ
रूअरथा॥करहिसुनिपटकनेएजांनि॥६॥साषी॥उतमममधममअधममविधि॥पाइनसिकतापांनि॥
प्रीतिअनुक्रमसांनिये॥बेरबिडुक्रमजांनि॥७॥उतममधिमअधमकी॥जगनाथहितरीति॥अस्तो
नरपतरापती॥दोषसरसिविपरीति॥८॥मार्तभारजंजांनिलै॥घटिजेतोसुषजांनि॥निपटनहीअतिहीसु
षी॥अधिकैअतिदुषमांनि॥९॥नलोअलाईपेलहै॥लहेनिचाईनीच॥ऊधसरादेअमरता॥मारलस
राहेमीच॥१०॥उतमकरनीनीचकुल॥हरिसुमरेल्योलाइ॥जगनाथउतमसाधके॥सुरनरवंदैपाइ॥११॥मध
मकरनीकंचकुल॥तासौंसबैलजाइ॥जगनाथसोबाहिहीं॥जममैंजनम्योआइ॥१२॥मानिषजिनहीरी

पुंण्यां० किए॥ जुगमिदेषिनिरताइ॥ तत्पमजांनै जगतगुर॥ जगनाथमनलाइ॥ १॥ गंग जलमसुदरिमनन॥ सु
२३३ रमिथलजगबात॥ संसारीसूकरजिसे॥ मलिवनीररुचिमात॥ २४॥ चौपई॥ सांगजथे सोमद्धिमकहिए
सुरयांनतेअछमहइए॥ मासयांहि सो अधअतिनीच॥ जगनाथहुवजीसतमीच॥ २५॥ नांउंएकमैं चौप
द्वोइ॥ तेवाउह जांनै सबकोइ॥ एसा कौमकुपमनदिंहोइ॥ उभेरादमैंतत्पमसोइ॥ २६॥ साषी॥ देपष अ
मजअज्ञांननर॥ घाततेवा पूजलेत॥ तिनकुंजनजगनाथयम॥ नरकिसासमांदेत॥ २७॥ आसन
आदिचंमारत्यों॥ हिमलऊंचहरिलीन॥ जगनाथजगदीसबिन॥ तेनरनीचमलीन॥ २८॥ आसनसो
बमियातजे॥ शुद्धद्विषेसोंलीन॥ जगनाथपदपदहदै॥ नीरनसंतनिकीन॥ २९॥ हरीबं नरनीचक १ साध
जोल्वीजेसे बार॥ नेमधंठ आदेंनदी॥ कोमदिगत्रसेपार॥ २०॥ तिमवचनमयेंदरद॥ नेमषसुरम
नहिंसोइ॥ नंददोलनरनीचकोै॥ कछसीसममदोइ॥ २१॥ पांमपुत्रदेपमेंधन॥ जुगचास्येंपरमांन॥ ध
नरष्यएदोऊनजे॥ नवनमदी नौ ज्ञांन॥ २२॥ बिरधपनैंकाअंतहे॥ पदहिचितविसरांहिं॥ जगनाथमे
धर्म मिनतिमैं॥ धीरधरषमांहि॥ २३॥ कहियतजगत्पमपुरषसो॥ जमीसुतामैंदोइ॥ हरिचितवनद्विनमांम राम
मैं॥ जगनाथपलकोइ॥ २४॥ इतिनसरी दे॥ १००॥ समासिसुमारगअंग॥ साषी॥ रांमनतजेसदोधरी
न॥ चल्योसुभमअमा॥ रांमसुमारगअनुसरे॥ चौपअगोंहनिजमा॥ १॥ जमअपजसनिदं जोकमैं॥ सु २३३

इतिअमविमअधकरनी०

नडंसयांनैंलोइ॥ कासलंकपतिलैगयो॥ कहाकर्मगयोघोइ॥ २॥ चौपई॥ सुजसमाएनौंअपनेंश्रवन
निं॥ सुमतनअे सौधर्मनसुणा॥ जगनाथअपजससांभलता॥ अे सोअधर्मनांहिंनडम्या॥ ३॥ अधर्मदं
स्याकृतयाइए॥ संपतिसंततिबिभेबिलास॥ एतजिजनजगनाथमोगिए॥ मीषमलीमधिगिगुनिया
स॥ ४॥ साषी॥ धांननिमतिअंनपांनले॥ बसनसीतअरुबाइ॥ जगनाथबचसाचकौ॥ सोसबडष
द्विंतिराइ॥ ५॥ ग्यांनपराकमजसलयें॥ द्यादीनताकांनि॥ इनहिंसहितजगनाथछिन॥ जीदेजी
तबज्ञांनि॥ ६॥ मनकीमेटैआपदा॥ नहैंसनेंदीजांन॥ कर्मसोइअपजसनदी॥ बिनांगरबलेग्यांन॥ ७॥
सतसंगतिजसहरिजन॥ सबकिरियाइनमांहि॥ कांमक्रोधअरुलोभए॥ तजेतजनकोमांहि॥ ८॥
सुषदातानदीलोकमैं॥ कांमनदीपरलोक॥ जगनाथनिजधर्मबिन॥ आंनधर्मसबफोक॥ ९॥ अपनें
अपनैंधर्मसौं॥ सावधांनसबकोइ॥ जगनाथजगदीसकौं॥ भजेधर्मनिजसोइ॥ १०॥ अदरदसाकौंअनसरै॥ ज
गनाथतजिइस॥ जगनिनंवसौनांहिसो॥ अधर्मबिसवाबीस॥ ११॥ द्वाइपैमैपायकेै॥ कहेनदीजेपाप॥ जिहिंपै
कैमेरापीरमिलै॥ तिहिंपैंनेकाचाप॥ १२॥ सुकृतमारगचालतां॥ बिघनबंधेंसंसारि॥ दुषकलेसछूटेसबै॥ जेकोच
लेबिचारि॥ १३॥ दाइसुकृतमारगचालतां॥ बुरानकबहुंहोइ॥ अमृतघासापांणियां॥ मसानसुनियेंकोइ॥ १४॥ ध १
रमतबअदआपदा॥ छिमांसेपदादीन॥ पाकमिपुनसंग्रांममैं॥ समासंतपरबीन॥ १५॥ सदासुजससतचितसहिमै॥

गु०ग्रं० क्षिप्र सुख व्याप्ती न ॥ जगनाथ जन सब निसौं नव निगारी बी कीन ॥२८॥ साल बात घटियात छिन ॥ आसन माह
१२४ बिलीन ॥ सो जन सिर जन सार समि ॥ मन बच मन मां हि न भीन ॥२९॥ इति सं पूर्ण ॥२९॥ सुरसं सुख पसं सहन माव
नप साखी ॥ करमां रोक करो हि गुण ॥ एकै अब सुणि जेत ॥ राई मान बहूरा ॥ मंदिर कोटि ध्रम तेत ॥१॥ बहु जग सुन नि
मैं सो तहै ॥ एक हिरदै सोइ राग ॥ जे पर नर सिकि रणि मैं ॥ मां हि नर्त्त कैं ध्यान ॥२॥ बहु जुग मन मिता पाइए ॥ अस
गुंन एक हि जाइ ॥ बात अस्तु सु भिरस समस्ते ॥ काम नत निस स्तु म व्याइ ॥३॥ मातैं बमिता रहन कौ ॥ कारिए अत ब
नपाइ ॥ सिहि गर्ब जन मत्त संगतैं ॥ जगनाथ मह राइ ॥४॥ जन मलमैं बिन चारनी ॥ नख सख भरी कलंक ॥ एक
कएक स न मुष जारी ॥ दाइ क्षो एक अंक ॥५॥ मन सावा चा कर भिमां ॥ सती जब हिं मत कीन ॥ जनम जेन कलंक
को रहे न को कबीन ॥६॥ कर्म तें देह मांह तैं ॥ मा ज्यो बार अनेक ॥ जगनाथ सुधरी कथा ॥ पल का कपाल त
टेक ॥७॥ भाति माजि जो नर सुपे ॥ रस मांहें रस ला ॥ जगनाथ अी है मरे ॥ कोटि कलंक अनेक ॥८॥ चोपई सूरम
ती कौ कार जसी कै ॥ सत्त दल मां हि म क्षिप्रा ति हि बार ॥ लगे कलंक जगनाथ मुचे सब ॥ माग्यो कियो ऊ तो छिन
चार ॥९॥ आरिस करिकि रिजगग मांहे ॥ मां तु सक बहु लेन सगार ॥ धमक्षीक र जगनाथ सलाीमें ॥ हरि हरि
कसत अंत की बार ॥१०॥ साखी ॥ सनजं मत सांगत किए ॥ सब नी अति अपराध ॥ जगनाथ सिमटे कल ॥ ताहि राम
कहैं सब साध ॥११॥ जन मम जन मत मदो मजरि ॥ हरि सम सुख सी केत ॥ सेत गयरि तप नाथ जे ॥ सुकौ तेमपरी १२४

कंत ॥१२॥ इति संपूर्ण ॥१४॥ गरम ॥ निंदा अंग ॥ साखी ॥ दुरजन नी दत सजन कौं ॥ साल करो मां हि नको
इ ॥ बार लग तत जं स्वार सी ॥ तं तं स गुजल होइ ॥१॥ जल सी हरि के देअरां ॥ ता मे लाध करो रि ॥ कां कपे
त निबीरकी ॥ म हि मां जई कि प्यो रि ॥२॥ काल सत पमन बरे सद ॥ बेद चारि सुच पानि ॥ हिए करी हि सब
रे ॥ म हि मो जाई कि नाहि ॥३॥ चौपई ॥ कहां दे जग सिका हू दीसै ॥ कहां को पित्तु रायो आनि ॥ निंदत बिंद
त बार न लावै ॥ ऐसे जगत की कुटी बानि ॥४॥ साखी ॥ मैले दों हिन निर्मल मन ॥ साध करे जो कोइ ॥ बार
परे तैं सार सी ॥ अधिक कजरी होइ ॥५॥ दुरजन कौं अब सी सदे ॥ दिन प्रति सजन मीत ॥ जिहि पर ताप
सुखी रहे ॥ इतरा सुख लेन चीत ॥६॥ कबीर निंदक नेरा राखिए ॥ आंगन कुटी बधाइ ॥ बिन साबन पांनी
बिना ॥ निर्मल करै सुभाइ ॥७॥ कबीर निंदक हरि न कीजिए ॥ दीजे आदर मांन ॥ निर्मल तन मन सब
करे ॥ बकि बकि आंन हि आंन ॥८॥ दुरजन जी मो बज्र रस ॥ जननी हूं तें हेत ॥ बिन साबुन गुजल करै
॥ मल मल रहन न देत ॥९॥ परम पगारी य ज्ञ मपर ॥ सिर ऊपो त्रिभुवन नाथ ॥ मल मल धोवत जीभ सों ॥ तिन र
नप करत साथ ॥१०॥ निंदक सो निय रे नही ॥ प्रीतम मपथ दीमां हि ॥ सजन मलतें सुकचर ॥ मल के धीरज नां
हि ॥११॥ दाद निंदक बपुरा जिनि मरे ॥ पर उपगारी सोइ ॥ हम कौं करता उजला ॥ आपण मैला होइ ॥१२॥
दाद जंजं नीदै लोग बिचारा ॥ त्यूं त्यूं छीजै रोग हमारा ॥१३॥ सजन सार संसहं सेवे ॥ दुरजन दां का भेट ॥

गु०अं० ऋ निंदिया गरे गंनी॥ संकबि धतामेट॥१४॥ कमम चक्रमें मेली जडि अंग्रुरी पसरत मीच॥ यामन सदैं। राजी
१२५ पसारियो फरत है खरा नीच॥१५॥ कमचर्जु करकी अंग्रुरी॥ पसरत मरै न लाज॥ ताके रहपट हाथक
॥कतदी जे बेकाज॥१६॥ नींदक नीदम स्त्रावई जब लगा कहैन सोइ॥ जगमनाथ सुख सोवई कहि केच
रवा होइ॥१७॥ निंदक दौं है मारिका॥ अमली जे सत्रकाइ॥ जगमनाथ निंदा अमल॥ ताबिन रहा न जा जे
इ॥१८॥ दादू निंद्या कीये नरक है॥ कीट पडे मुख मांहि॥ रांम बिमुख जा मैं मरे॥ भगमुष आवैं हि जांहि
॥१९॥ जगजीवन न्यंद्या करैं॥ ते नर नरक हि जांहि॥ खषचौरासी जोनि मैं॥ भ्रमि भ्रमि गोता षांहि॥२०॥ क
बीर जे को नींदै साधकौं॥ संकटि आवै सोइ॥ नरक मांहि जामैं मरे॥ मुक्ति न कबहूं होइ॥२१॥ बा रिया स
नंनी छिपे॥ जो पांइ निंत रि सोइ॥ जमि पर जो आ बिमैं॥ परा इहे ला होइ॥२२॥ सषी॥ जे मल पर निंद्या बुरी॥
कबहूं जिनि निंदा करै॥ मेल पराया आप मैं॥ काहे लेरा षे॥२३॥ जे मल पर निंद्या बुरी॥ कबहूं जिनि निंद्यो रे॥
आपणा हं मैला करे॥ औरन कौं धोवै॥२४॥ चौपई॥ भ्रम्या न साचन आंषि निदेष्या॥ अद्गोबी कहतां मम रे
॥ जगमनाथ जन ते नर निंदक॥ सम्रवी कमैं असमि परे॥२५॥ साषी॥ सकल जन अथ निका मूरहै॥ निंद्या करे ये
काहि॥ तनबादी मरमा रहे॥ निंदक बेपरवाहि॥२६॥ दादू निंद्या नांम मली जिण सुपिनै दी जिनि होइ॥ राम
नांम कहैं न ऊमस ऊ॥ समजिनि भाषे कोइ॥२७॥ जनम जनम मरदे हधरि॥ जन से रा हरि जाप॥ जगम १२५

अंग ११०

थ निःकलंकन तब निघटैं निंद्या पाप॥२८॥ इति निंदा को अंग संपूरण॥ ५५॥ अथ निगुणां को अंग॥ साषी॥ साध मि
लै मल मरदी॥ रांम रमैं समि आइ॥ दादू औगुण काढि करि॥ जीव रसातलि जाइ॥१॥ जगमनाथ सुमिरन
सदा॥ जन सन् मन जरपूरि॥ तिनि संतनि सौं ईरषा॥ करत परत मुषि धूरि॥२॥ कांम क्रोध
अति॥ लोभ भ्रम तन नहि मोह॥ जगमनाथ मछर सदा॥ निज जन तनि सौं द्रोह॥३॥ ते पापी पर ले गए॥ जो
माटी महि लोह॥ जिनि सिर ज्यार जरे तसौं॥ तासौं नयाबि छोह॥४॥ महिमां मिटन न साधकी॥ मछर का
रन जांन॥ खोट खरत का मादरी॥ जगमनाथ ज्ञाति भांन॥५॥ कलिजुग कूकर कलमुहां॥ उठि उठि ला
गे धाइ॥ दादू क्यू करि छूटिए॥ कलिजुग बडी बलाइ॥६॥ दीसे मोरा सपरत चिकाल॥ जं कारि नं क
रिहा हू टाल॥ नो को बैरी ना को मीत॥ दादू रांम मिलन की चीत॥७॥ संतनि के संपति सदा॥ आवै त
र चाहि॥ सुध बुध सौं सेवा करैं॥ मर मन रारी मांहि॥८॥ देखा कोई भी मै नहीं॥ अवगुन रि दैर हां हि
॥ मांनि सदै मांहैं कमति॥ जगमनाथ न जांहि॥९॥ सषी॥ दादू साचे कौं झूठा कहै॥ झूठे कौं साचा॥ रांम दु
हाई काढिये॥ कंठ तैं बाचा॥१०॥ साषी॥ साचे कौं झूठा कहै॥ झूठा साच समांन॥ दादू अचिरज देषिया
॥ यहु लोगों का ग्यांन॥११॥ दाहू झूठ दिषावै साच कौं॥ भयांनक भै भीत॥ साचा राता साच सौं॥ झूठ न
आंणै चीत॥१२॥ जिनि संपति साहिब मिले॥ तिनि संपति सौं बैर॥ हे बिन दे जगि दी जिण॥ षालि कमनप॥
नरक

गु०ग्रं० नषेर॥२३॥चौ०सषी॥संत संतावैं करनी का चा॥जा सरन ही तिहि मल साबाचा॥जगनाथ उ
१२६ रमति केघाले॥श्राइ फलकमें घाली चाले॥२४॥साषी॥दादू जब ही साध संताइए॥तब ही श्रौ धप र
लट॥श्राकाश अ सेधरती विसे॥तीनं लोक गर्क॥२५॥दोषद देश्रा गालगे॥आन रकेन दोइ॥जगना
थनि स्दोष ता॥इषका हंता सोइ॥२६॥पांनी पंतित च उरको॥अन गुण्यें सुष नांहि॥जगनाथजगादीस
सौं॥विमुष मारयम मांहि॥२७॥दास दोष दिल मैं रहे॥तब मन नाहि न चैन॥दादू मूल भरमें सदा॥सुषनं
दिन धरयैं न॥२८॥दादू फरि पली कातै॥कैसा धरै नगाइ॥श्रपा देषी अजगैब की॥ऐसी करें तमासा इ॥२९॥
श्रपादेषा अनरथकरै॥कलिपुष्यमीकापाप॥धरतीअंबर जबलगैं॥तबलग्या करैं कल्याप॥३०॥संतनि
सेती हरिकथा॥करत जु करैं कलेस॥मांहि दोष सुविदीबता॥तिनहिं नहीं सुषलेस॥३१॥जिनि जनसे
ऐसे हुई सुषी॥दुषदेदुषित अचैंन॥निगम पुकारी कहत दे॥फी सुष बाइ कर्भ न॥३२॥इति संपूर्ण॥हे
सूरण॥अमिट पाप प्रचंड॥साषी॥शिष बिरमा पूत्तब ब्रह्मरस॥चंडीधन ज्यो षांहि॥ईश्वर बोलंत पार बती
तैनिरमला जांहि॥१॥माया श्रबल अतीत की॥यो मिलियो मिरियाइ॥षोजी कहे वेकाछि वो॥करि सीब र
काल जाइ॥२॥माया अंतिअतीत की॥राषी करें विकार॥लटौ काहे एर सराम॥साषी जस्यौ अराराउ राम
दाइ सयान लेम ध शिषि श्रा बोले॥निंद्या पर उपवादं॥साचे कौं कगामें दे॥लागैं बड़ अपराध॥४॥करगन १२६
मजारई मी०

कहिरे साच कौं॥साच न कहि परहर॥दादू साहिब मांनै नहीं॥लागैं पाप अछूट॥५॥साषी॥योगी सोइ
यरत्ने व्यापक धे॥सहस्मा सअरमा गाजु अधे॥इकोज सो पुरषा नर कहिं जाइ॥सत्य सत्य भाषंत श्रीमे
रूषपाइ॥६॥अवध्मा सन अषंत दया धर्मि का नास॥सर्पी वे तत हो प्रांण॥निरास॥भांगि सरषंत म्यांन ध्यान
सोलंत॥यम द्वार ते प्रांण रोवंत॥७॥साषी॥सुरापांन चित वन हिये॥मास अहार विकार॥जगनाथ प
रचं भषे॥पाप पलो कहि गार॥८॥अमिट पाप गुरलोय नां॥औसो अघ नहिं कोइ॥जगनाथ तनु नाम
टै करै धर्म धरसो इ॥९॥गोहत्या जु गुर द्रषवे॥ब्रह्म सुख हत्या विसारि॥जगनाथ औसे नहीं॥महापाप
यसं सारि॥१०॥अथिरही ये गुर अयरा॥हिरनब भिये जां हा॥पर द्रव्य रागे लोइ रो॥जगअंथियारो तं
ह॥११॥मोजी गुरगंजन करैं॥ब्रह्म मांनैं कार॥पाछिल पहर अकृत घर॥जात नलागे बार॥१२॥मेटै
गुर के सबद कौं॥रहे अवगया जानि॥जगनाथ पातिग लगे॥कटै पाप वचमांनि॥१३॥दादू साषअग
नि उपजै न सही॥साहिब का परसंग॥विषे विकार छूटैं नहीं॥सो के सामत संग॥१४॥दादू बासरा विषे ब
कार के॥तिन कौं आर दमांन॥संगी सिरजन हार के॥तिन सौं गवि गुमांन॥१५॥जगनाथ अघ जग
त के॥उतरें होत अतीत॥मांव अस रिम लटी गहे॥तास मिन ही गलीत॥१६॥दादू काया कर्म लगाइ
करि॥तीरथ धोवें आइ॥तीरथ मांहें कीजिए॥सो कैसें करि जाइ॥१७॥कमति तिंग्रहमें लगैं॥देवद्वार

गुरुअं॰ नहिं जांहिं ॥ जगनाथ तहं कीजिये ॥ सो कहिक हं मुचे हिं ॥ १८ ॥ मृगधर अरु सती थें निषेध ॥ सतसंग गति
१२३ गुरसाथ ॥ उत्पम अस्थलि अघ कियें ॥ अमिटपाप जगनाथ ॥ १९ ॥ दाहज यों निरिस वृछिण मन
मैं मैला होइ ॥ जहां छूटै तहां बंधिय ॥ कपटि न सीकै कोइ ॥ २० ॥ सरनैं साध न मेल जे ॥ पाप छुरा तन दोष
जांहि ॥ नायें लोई लायरे ॥ जगनाथ चिर थां हिं ॥ २१ ॥ तिलां क पाहक मां दिये ॥ कंठी को फलि यां ह
मं देखि अमलक मां हिंयां ॥ नांम कराई हाल ति न्हो ॥ २२ ॥ पाप कियें करु नां करै ॥ उनकौ कबहु बार
करि अनीति आपो थेरै ॥ तिनकौं वार न पार ॥ २३ ॥ अंत फ लैं जौ कृपजे ॥ मेटन पापप्रचंड ॥ जगनाथ
हरिसुं चिधरै ॥ सतसंग नां मन अखंड ॥ २४ ॥ जब तब हरि के सजन सौं ॥ मन सतसंग मिलांहिं ॥ अमिटपा
पपरबंमये ॥ जन जगनाथ बिलांहिं ॥ २५ ॥ इति संपूर्ण ॥ दोहा २०५ ॥ दुरजय दोष अंग ॥ साषी ॥ जो
बल धन अरु सा हिबी ॥ चौथो बिमा विबेक ॥ सब कंदरु नर णमूल है ॥ जगनाथ जहं एक ॥ १ ॥ दु
रजन की परिखा सबै ॥ कहि थो हिक सो कोइ ॥ जा के जाव का बिरति तिहिं ॥ कहा बनाई होइ ॥ २ ॥ जग
नाथ जहं लोभ है ॥ ता के ध्यान हिं लोइ ॥ डरैन काहू दोष तें ॥ दया हीन नर सोइ ॥ ३ ॥ कांम क्रोध अरु
लोभ मद ॥ इनसम बली न कोइ ॥ जगनाथ दुर्जय महा ॥ जीतै सुधि बल होइ ॥ ४ ॥ मदन मोह माया म राम
ही ॥ मो हापरदा एह ॥ हरिजन सो मरतें नहीं ॥ असी हीर घषे ह ॥ ५ ॥ निंद्या मछर ईरषा ॥ बरि हं तप्रभु पैब १२७

अमिटपापप्रचंड ५०

कोइ ॥ जगनाथ अति माठ तउ ॥ देह दमां न कदोइ ॥ ६ ॥ कांम न सावै रूप कौं ॥ क्रोध दया कौ ना
स ॥ लोभ हरि जगनाथ जन ॥ सब गुन करै बिनास ॥ ७ ॥ मोह भुलावै भजन हरि ॥ माया बिमुष
करंत ॥ निंद्या मछर ईरषा ॥ इन सौं नर कि परंत ॥ ८ ॥ कटि क्रोध मिसु द्रष्ष भक्त ॥ माइ कमसु नफा नकल
गा ॥ होत सयांनें बावरे ॥ अपगौर मन लाग ॥ ९ ॥ पार्णी पाव क संघ पडि ॥ पासा पिसण पसंग ॥ पलान राजा
दूबैं आपरा ॥ मद ल्याइ ल्या सुरंग ॥ १० ॥ मदी नषी सस्त्र रु श्रिंगी ॥ ठग रा जा अरु ज्वाली ना ॥ मुनि पिरागप
लांहिं तौ ॥ तिन बिसास इन कीना ॥ ११ ॥ परमन पर बित पर दसा ॥ परत्री पर दीरां म ॥ एक बिदेस अरु षा
हीर हकला ॥ ए जागता म सांम ॥ १२ ॥ हीर जंमा ठहीर जिम ॥ परम नकर हि प्रवेस ॥ त्यां दक्षणा गं मिक्ष ग मि
है ॥ त्यां द क्षणा देस बिदेस ॥ १३ ॥ आं जी कौ इन महिस कै ॥ फूटी महिसन कोइ ॥ जे आंजी ही महिस
कै ॥ तौ का हे अधरा होइ ॥ १४ ॥ जीतें कां जगनाथ जन ॥ दुरजय हीर घ दोष ॥ आज नमरनर संघतें थ
सत संघकै पोष ॥ १५ ॥ जगनाथ हरि नांव सौं ॥ सतसंग ति कै पोष ॥ प्रणाव साधन प्रांणाकरि ॥ जीते
दुर्जय दोष ॥ १६ ॥ इति संपूर्ण ॥ दोहा २२१ ॥ इस हिं दुराजी इकरजी मीनि ० ॥ साषी ॥ इस हि दुराज प्रज
न कौं ॥ कंस न होइ दुषदंद ॥ अधिक अंधेरो जगु करत ॥ मिलि मावस सिर बिंद ॥ १ ॥ दाइ नगरी चैन
तब ॥ जब इक राजी होइ ॥ दो इराजी दुष दंद मैं ॥ सुषी न देष्या कोइ ॥ २ ॥ इक राजी आनंद है ॥ नग

दुर्जयदोष ५०

गुं०ग्रं० १२८

रीमिहचलबास॥राजापरजासुषिबसे॥दादूजोतिप्रकाश॥२॥कायानगरीराजदे॥केमैबसेव
का॥जगनाथ इकराजबिन॥अहनिसिधकाधक॥४॥षसमकिया थानप्रका॥नयाचाकरी
चोर॥जगनाथकेफाबुरू॥आनिमचायासोर॥५॥पोरिसके जो प्रांनमें॥मनजीतेसिरताज॥ज
गनाथसोपरमानें॥करैनवीताराज॥६॥जौंको जीतेकोमनां॥संकलपबिकलपसाधि॥जग
नाथबसिवासनां॥कोटैकोधम्रसाधि॥७॥मनबिचारैअरथको॥अनरथजानेंसोइ॥जग
नाथतैजोमको॥जीतनसंमथहोइ॥८॥अहनिसिचितवनतनकै॥जगनाथ नासा॥नि
त्यानित्यबिचारतां॥सोकरुमोहबिनास॥९॥महननिकेमतसंगतें॥इष्टदेवजीतंत॥कल
दयोगअंतराइसब॥मूंनिसधंसबीतंत॥१०॥जेतेगुनमेरीतितें॥जीतनबिधिहथियार॥जगना
थगुरसक्तिकरि॥सबहीकरेसुमार॥११॥गुरजांनेंगोबिंदसमि॥आगमसुगमसबहोइ॥साधंमे म
जगनाथबिधि॥जांनराइजनसोइ॥१२॥इतिसंपूर्ण॥१६॥मनहु॥मनकाअंग॥साषी॥दादूएकम
मबरजीबाहरे॥घटमेंरायीघेरि॥मनहस्तीमातावहे॥अंकुसदेदेफेरि॥१॥हस्तीछूटामनफि
रै॥क्यूंहीबंध्यनजाइ॥बहुतमहावतपचिगया॥दादूकछूनबसाइ॥२॥कबीरनागतिहवारासं राम
कडा॥राईदसबैभाइ॥मनतोमैंगलकेरह्या॥क्यूंकरिसकेसमाइ॥३॥मनमतंगमेंमनअति॥च १२८

कमहदुराजीदूकरजीमीति०

पदेसीगलद्वार॥रोससहतजोफिरै॥तोपुनिमिटेबिचार॥४॥कबीरमनकेंमतेनचालिए॥छाडिजी
वकीबांनि॥ताककेरातारजं॥उलटिअपूठाआंनि॥५॥क्यूंकरिउलटाआंनिये॥पसरिगयामन
फेरि॥दादूडोरीसहजकी॥यूंआंणोंघरिघेरि॥६॥जहांतेंमनउठिचले॥फेरितहांहीराषि॥तहांदादू
लैलीनकरि॥साधकहेंगुरसाषि॥७॥दादूथोरैथोरैहटकिए॥रहैगाल्योलाइ॥जबलागाउनमनसों
तबमनकहीनजाइ॥८॥आपादेदेरांमकों॥दादूराषेमन॥साषीदेअस्थिरकरै॥सोईसाधजन॥९॥पंचौं
कामुषमनहै॥मुषकामनुवाहोइ॥एकमनराषेजतनकरि॥साधकहावेसोइ॥१०॥सोईसूरजेमनगहे॥
निमषनचलनेदेइ॥जबहीदादूपगभरे॥तबहीपाकडिलेइ॥११॥हरिसुमरनसोंहेतकरि॥तबमनन
हचलहोइ॥दादूबेध्यप्रेमरस॥बीषनचालेसोइ॥१२॥जबमनदेसाहोइमा॥तबकहियेगीबात॥अब
तौमनथांबीनया॥सबरंगामेंमिलिजात॥१३॥मनषुसालदिलगीरमन॥म्यांमचडरमनकूर॥मनबज़द
ताइपनमन॥मनकायरमनसूर॥१४॥साषी॥एकमनचोरजारमीएकमन॥एकमनसुधमतारा॥मन
मनंकरतासुरनरबिनस्या॥मनकालब्यानधारा॥१५॥चोपई॥एकमनगंजीएकमनसीव॥एकमनपंच
ततकाजीव॥एकमनलेजेउनमनिरहै॥तौतीनिलोककीबातांकहै॥१६॥साषी॥कबीरमनगोरषमनगो
बिंदो॥मनहीओघड़होइ॥एकमनराषेजतनकरि॥आपैकरतासोइ॥१७॥साषी॥मनजीत्यातिनिइंद्रक्ष

गुणअंग मजीत्या॥जीती सुंदर काय॥गलै पावक जौरा जीत्या॥जीती आप बील माया॥४॥जत निपर सैदो क जीत्या
१२९ ॥कदि सुषी माए ए भारी॥विषमक्रम करि सुर्षप सैवीता॥पति सघ रिर स्यादि सकारी॥१६॥साषी॥मन
कै बस सबलोक हैं॥सक जलोक ता मांहि॥जगनाथ मन जीतिए॥तब जीत नकी मांहि॥२०॥मांझको
टमाहव सिकिए॥गढ पति परे मसाथ॥इंद्री जीती मनमछि नो॥काजी त्यो जगनाथ॥२१॥मनहाथैमनघा
रए॥मनजीतैं मनजीति॥परमतत तह पाइए॥मनही की परतीति॥२२॥दादू मनही सम सुष सरदै॥मनही
सन सुषतेज॥मनही सम सुष जोतिदै॥मनही सन सुषमेज॥२३॥इति संपूर्ण॥१००॥रपद॥मनकवि पती
गरि तिस्रा राधफल॥साषी॥आप मनै पन कोहथ्या॥देपूजै इय मीति॥फलै सुमनैं नै की कांमना॥१॥न सीप्रीति त
सनीति॥२॥सुरति पापो घापमां॥कहं देस की षापि॥सुरिता दी सुर मांहिकि॥जगनाथ फल आपि॥३॥जो
जन जिहिं जिहि देव की॥मन रुचि समाति कराइ॥तिनकै जन जगनाथ हरि॥थिर सर सम तुप जाइ॥४॥जग
नाथ सर सम सहत॥देवा सेव करंत॥ता जन की मन कांमना॥हरि सुर रूप हरंत॥५॥मैमें समें सुंदर सवे
रूप करूप न कोइ॥मन की रुचि जेती जिते॥तिततिती सवि सेाइ॥६॥परमतत कवि सदप्र कहि॥ममिमति
अंनें कोइ॥ताको मन जिसिरस मगन॥त्यों सप अंग मा सोइ॥७॥साषी॥जो जाही के जिय बसे॥सो ताही भावे के ।गम
टिक कहैं विरचिए॥ये विरचन आवै॥७॥आलो कम आइ एका॥दिह देषिहे सोइ॥जगनाथ सुतभारज्यं॥ १२९

पति माप्रगट होइ॥८॥गुरसंगति जे सीकरै॥ते सोइ इष्ट आराध॥जगनाथ पापति तहां॥आवधि आपा
साध॥९॥सुर सेवा फल अंत है॥अलप बुधी जावंत॥जगनाथ अविनासहरि॥बुधिवंत जन पावंत॥१०
सुरलोक पर्यंत सब॥पुन रावृत्ति हि आहि॥जगनाथ जगादीस मिलि॥नफिरि जनम न हिं ताहि॥
११॥अविगत अक्षर ब्रह्म गति॥तत्त्वम सुषद सुधाम॥जहां जाइ आवै नहीं॥जगनाथ सो राम॥१२॥अ
हनिसि सो आलोवइ॥अंतरि आतम राम॥अवधि नहीं आश्रम जहां॥जगनाथ बिसराम॥१३॥इति सं मनकविपती
पूर्ण॥१०॥ररह॥मन आसे विश्रांम॥साषी॥जागत जहां जहां मन रहै॥सोवत तहां तहां जाइ॥दादू जे तिस्रा रा धफ
जे मन निवसे॥सोई सोई देषे आइ॥१॥दादू जे जे चित निवसे॥सोई सोई आवै चीति॥बाहरि भीतर देषिए ६०
जाही सेती प्रीति॥२॥सांवरिगहरि याद षिये॥मन चित ध्यान लगाइ॥दादू केते जुग गए॥तो भी हरया न जु
जाइ॥३॥कबीर संसा जीव मैं॥कोई न कहैं समझाइ॥विधि विधि बांनी बोलता॥सो कत गया बिलाइ
॥४॥कबीर संसा दूरि करि॥जांमन मरन भरम॥पंचतत तत हि मिलै॥सुरति समानां मन॥५॥मन मन स ।
का सार है॥अंत फले गा सोइ॥जब दादू बांनक बन्यां॥तब आसे आसन होइ॥६॥जहां आसा तहां
वासा॥तहां जागत जीवत जमै॥सोवत मरतां ताहि॥७॥संसय नहिं दे बो अब हि॥जीवत ही पा
तयाइ॥जगनाथ जागत जहां॥सोवत नहीं समाइ॥८॥जहां मन राषै जीवतां॥मरतां तिस घरि जाइ॥९॥

hundred eight

DΠV 14 B

p 129

गुंअंप नजीत्या॥जीतीसुंदरकाया॥गाढैपावजौराजीत्या॥जीतीअपबीतमाया॥१८॥उत्तमनिपरखैहोकजीत्या
१२९ ॥कदिमुष्वीनाछएनारी॥बिषमजरूजकरिपुर्षपस्यंत्या॥प्रतिसघरिरहसिदमारी॥१९॥साषी॥मन
कैबससबलोकहैं॥सकलत्लोकतामांहि॥जगनाथममजीतिए॥तबजीतनकींमोहि॥२०॥मांड्रको
टगाटबसिकिए॥गटपतिपरेमहाथ॥इंद्रीजीतीमनछिनां॥काजीत्योजगनाथ॥२१॥मनहारेंमनत्यौ
रण॥मनजीतेंमनजीति॥परमततहूंपाइए॥मनहींकीपरतीति॥२२॥दादूमनहींसनमुषमरदे॥मनहीं
सनमुषतेज॥मनहींसनमुषजीतिहै॥मनहींमनमुषसेज॥२३॥इतिसंपूर्ण॥१००॥३२५६॥मनरुचिप्रती
गारे तिआराधफलको॥साषी॥आपनश्रेयमकोहथ्या॥देपूजहैय्यूमीति॥फलेसुमनैकीकांमनां॥जैसीप्रीति त
प्रतीति॥१॥सुरतिथापोथापमां॥कहूंदेसकीथापि॥दूरितादीसुरमांहिंके॥जगनाथफलआपि॥२॥जो
जनजिंहिंजिंहिंदेवकी॥मनरुचिआतिकराइ॥तिनकेजनजगनाथहरि॥थिरमरक्षाउपजाइ॥३॥जगत
नाथसरक्षासहत॥देवासेवकरंत॥ताजनकीमनकांमनां॥हरिसुररूपहरंत॥४॥सबेंसबेंसुंदरसबे
रूपकरूपनकोइ॥मनकीरुचिजेतीजिते॥तिततेतीरुचिहोइ॥५॥परमततकविमद्धेकहि॥समिमति
जांनेंकोइ॥जाकोमनजिसिरसमग्न॥त्योंमममगेगासोइ॥६॥सबी॥जोजाहीकेजियबसे॥सोताहीभावे॥के । राम
टिककहैंबिरचिए॥पेबिरचनआवे॥७॥आलोकनजाइएका॥दिहदेषिहैसोइ॥जगनाथसुतधारजं॥ १२९

प्रतिमाप्रगटहोइ॥८॥गुरसंगतिजेसीकरे॥तेसोइएआराध॥जगनाथपापतितहां॥अबधिअपार
साध॥९॥सुरसेवाफलअंतहै॥अलपबुधीजावंत॥जगनाथअबिनासहरि॥बुधिवंततजनपावंत॥१०
॥बूत्नलोकपर्जेतसब॥बनरावतीहिआहि॥जगनाथजगदीसबिनि॥बज्जरिजनमननहिंताहि॥
११॥अबिगतअकलरपसिमाति॥तरुपमसुषदसुधांम॥जहांजाइआवेनहीं॥जगनाथसोरांम॥१२॥अ
बूझिसिसोआलोचई॥अंतरिआतमरांम॥अवधिनहींआश्रमजहां॥जगनाथबिसरांम॥१३॥इतिसं मनरुचिप्रतीतिआराधफल
पूर्ण॥१०॥३२६६॥मनआमेबिश्रांम॥०॥साषी॥जागतजहांजहांमनरहै॥सोवततहांतहांजाइ॥दादूजे लं०
जेमनिबसे॥सोईसोईदेषेआइ॥१॥दादूजेजेचितिबसे॥सोईसोईआवेचीति॥बाहरिभीतरिदेषिए॥
जाहीसेतीप्रीति॥२॥सांभणिहरियादेषिये॥मनचितलांनलगाइ॥दादूकेतेगए॥तोनींदस्याम उ
जाइ॥३॥कबीरसंसाजीवमें॥कोईनकहैसमझाइ॥बिधिबिधिबांनीबोलता॥सोकंहगयाबिलाइ
॥४॥कबीरसंसाहरिकरि॥जोमनमर्मेअरम॥पंचततततहिमिले॥सुरतिसमांनांमन॥५॥मनमनस ।
कामावहै॥अंतिफलेगासोइ॥जबदादूबांबककन्या॥तबआसेआसनहोइ॥६॥जहांआसाबासातहो
॥ग्रामेंसांसामांहि॥जहांजागतजीवतअमे॥सोवतमरतांताहि॥७॥संसयनहिंदेषोअबहिं॥जीवतहींप
तयाइ॥जगनाथजागतजहां॥सोवतनहींसमाइ॥८॥जहांमनराषेजीवतां॥मरतांतिसघरिजाइ॥दा

गुं.भा.प ह्लासा प्राणका॥ जब ग्रंथ ह्लीर स्या समाइ॥१८॥ जिसकी सुरति जहां रहै॥ तिसका तहां विश्राम॥ सो है माय
१३० मोहमें॥ आसे आतम रांम॥२०॥ जेष लयो घरबार तजि॥ मुई मुई मन मग्ग॥ एक माया मन मुष चलै॥ ये
कनिहीनी पूर्वि॥२१॥ स्वांस स बनि काए का सा॥ बरत निरौरे और॥ जगनाथ इक जबल मिलि॥ एका
आगम को छोर॥२२॥ रहति कहति जगनाथ सभि॥ भलो दुरी नहिं आसि॥ सुरति जिसी जाकी जहां॥ साक
तहां रहासि॥२३॥ आहइ अपणों अपणों घरियाइ॥ आपा आंगम विचारि॥ सद कांसी माया सिलै॥ मिह कांसी
कुस्स से आरि॥२४॥ कबीर नरमन राषई॥ जीवत माया रांम॥ म सांघी छे अब सिसो॥ आसे करि विसरांम
॥२५॥ सुरति तहां विसरांम है॥ कबीर निगम कहंत॥ लांति सुमरन लाइया॥ केचरननि विसंत॥२६॥ ह
रिमिलि हरिके भजन सों॥ अनि चित दब में आंन॥ सुरति जहां जगनाथ जिय॥ ताही मंहि समान॥
२७॥ जहां आसा बासा तहां॥ रांम कि रांमति मांहि॥ जगनाथ जन माघि छमि॥ फेर सार सां नीधि॥२८॥ जो
मति सागति अंत की॥ कहत सयांने रीति॥ जगनाथ करि पहलदी॥ हरि संतनि सों प्रीति॥२९॥ सुमरन
सों सुपि मों मिटै॥ जेलां गे इक तार॥ जगनाथ जनमें नहीं॥ नहीं मृतिय ममार॥३०॥ सुक्रत सुमरन मलन
मदि सुरति निरंतर राषि॥ विश्रांम में जगनाथ तहां॥ निम्म पुरांन विसाषि॥३१॥ इति संपूर्ण॥१०॥ [illegible] राम
मन चित साध सय साषी॥ मन सांमें रहा विहैं॥ में नहिं मन के हाथ॥ जित ही जित मन वां फिरै॥ तित बीत १३०

मन आसे विश्रा.०

ङ तमें साथ॥१॥ जगमन चैं न चित जोर मन॥ चटक चौगनी होइ॥ सब को एकादशा कहै॥ एक तण का हो
ग्धा॥२॥ चंचल मन मन अग्रहि बली॥ अस्थिर कहीं न होइ॥ योग भ्यास सबैरागतें॥ जगनाथ बसि सोइ॥३॥ व
च मचंचल निर्हं न रहै॥ मन थिर सहजें होइ॥ जगनाथ स्वर गुन मंगें॥ साधत सी के सोइ॥४॥ सत संगत
बिन बास मनां॥ उर आतम मां विश्राम॥ यां न पलट जगनाथ ए॥ चित साधन उपचार॥५॥ अगति ग्यान बैरा
ग्य॥ योग भ्यास जगनाथ॥ विधि बिश्राम न मांम न बिछ्या॥ चित सम कौं करि हाथ॥६॥ जप तप नवध सिधांन करि
चित चेतन मि सों लाइ॥ विन मंबा इंछा स्वयं॥ जन जगनाथ कराइ॥७॥ अंमिल बिचार सु आतमां॥ द्रग थद्द कम
नबीज॥ जगनाथ या जगात में॥ उतपति होइ न षीज॥८॥ चित अस्थिति निद्दि रिद्धि रिधि॥ बिनां योग जगना
थाय पूरण करु मां कों सतें॥ जुगति गुरू के हाथ॥९॥ चोपई॥ योग अभ्यास सत अस्थिर चित्त॥ हरि के हेत कम
करि निहए शुभ कर्म निते पाप्रियोग॥ जगनाथ चित अस्थिर होय॥१॥ चित अस्थिर उपजत ब्रह्म ग्यानी
॥ जगनाथ तब निश्चल ध्यानां॥ पाप दोष दुष नांहिं न कोई॥ कारज सिद्ध कहै हरि होई॥२॥ इति संपूर्ण
॥१०॥ अथ जनम मरन का अंग॥ साषी॥ दाष चोरासी लष जीव की॥ पर की रति घट मांहि॥ अनेक
जनम दिन के करै॥ कोई जांणें नांहि॥१॥ जीव जनम जांणें नहीं॥ पलक पलक में होइ॥ चोरासी लष जोग
वैं॥ दाह लेष म कोइ॥२॥ अनिमेष जन सुरति का॥ जीव न जांणें जाल॥ कहै कबीरा इह रिकरि॥ आत्म आह

मन चेत साधन०

करै सु सुमजे मांहि ॥

हकाल ॥ ३ ॥ व्यापि अवस्था जीव कौं ॥ व्यापै पल पल मांहि ॥ जन जगनाथ अनेक रंग ॥ ...

जगनाथ सब कोइ ॥ ४ ॥ तीन अवस्था ... ॥ ... अरिसा ... छिन छिन मरम ...

... कै ते जन मध राइ ॥ ६ ॥ जे ते गुण ... तन ... जगनाथ एक पलक मैं ॥ ...

संमथ सिरजनहार ॥ ७ ॥ सब गुण सबही व्यापै जीव कौं ॥ ते ते ही अवतार ॥ ... कोई न जांणै नाहि ॥ ८ ॥ कबीर ... जीव को ॥ दादू व्यापै आइ ॥ घट मांहे जांमै मरै ॥ कोई न जांणै नाहि ॥ ...

कबीर ... ॥ ...जीव अवतार जांमै मरै ॥ ... ॥ १० ॥ अनेक रूप ... ॥ एक मन आवै जाइ ॥ ...

जांमै मरै ॥ ... आइ ॥ आवागवन मन का मिटै ॥ तब दादू रहै समाइ ॥ १२ ॥ ... छिन छिन मरै जांमै मरै ॥ ...

जगनाथ जन ... ॥ ... सुमरै ... ॥ १३ ॥ ... जगनाथ जन जन ... ॥ सूक्षिम समकिन ... ॥ १४ ॥ ... ॥ कबीर ... संपति बिपति ...

... नीच ॥ १४ ॥ ... ॥ हरिजन ... ॥ १५ ॥ ... ॥ ते बिरला जन जांण ॥ १५ ॥ हरिजन ... ॥ कबीर ...

... जांमै मरै ॥ ... जनम मरन सो हांनि ॥ १६ ॥ हरि ...

देह मांनि ॥ ... ॥ १७ ॥ गुर सति वादी साध जो ॥ करहिं अनुग्रह सार ॥ ... जगनाथ ... ॥ ... अवस्था मांहि ॥ जगनाथ जन ... ॥ १८ ॥ पूरन ... मिटै ॥ ... मिटै ॥ नित प्रति सूक्षम सोइ ॥ जगनाथ ... घट मांहि ॥ १९ ॥ जनम मरन जीव ... मिटै ॥ ... आइ ॥ ... होइ ॥ २० ॥ जनम मरन ... ॥ ... ॥ २१ ॥ इति संपूर्ण ॥ २४ ॥ ... २२ ॥ माया को अंग ॥ साखी ॥ ... ॥ ... दादू ... ॥ ... ॥ २ ॥ दादू माया का सुख ... ॥ ... दादू ... ॥ ... ॥ ३ ॥ ... जे मांही मोदे ... ॥ ... ॥ ४ ॥ दादू ... सब ... ॥ ... मांहि ॥ ५ ॥ ... ॥ माया की जगनाथ ... ॥ ... मांहि ॥ ... ॥ ६ ॥ सोरठा ॥ माया सेती प्रीति ॥ करी सु ... ॥ ... ॥ साखी ॥ माया ... मेल नहि ॥ जगनाथ ... ॥ ... ॥ ७ ॥ ... ॥ ८ ॥ एक सब माया ... ॥ दादू ... दिन ... काइ ॥ ८ ॥

कैं॥ सति करि मो मांस्यो हु॥२०॥साषी॥ कूवा खिणि मिणि मिष्य जल॥ पाणी करि लीया॥ दादू जग णा सामैरे॥
गु०अ० पषु प्यां सीयीया॥२१॥साषी॥ माया मेली ही रहै॥ देष सदी तवि जाइ॥ अरथिन आवै एक दिन॥ मु एक
१३२ माइ कमाइ॥२२॥ जे मन बेरणि को बेसास करि॥ विसरे राम दयाल॥ मन मूरष समझै नहीं॥ माया जोय
को काल॥२३॥ जे मन लवै मेरी के सामने॥ दलन बलकी या जोडि॥ माया कारंक कदी भेदै॥ केते गये चोडि
॥२४॥ जे मन जरं कब छत्रपति आदि है॥ दो इकपका अन मेर॥ काहू के संगि माया लै॥ यहु माया कादे रा
२५॥ ए माया का की हुई॥ चली कोण के साथि॥ जग मी धन दरि को चही॥ जे घर चो अपणे हाथि॥२६
॥ ए सब संपति जाइगी॥ बिपति पडैगी आइ॥ जग जी तन साई भल्या॥ जे को षर वे याइ॥२७॥ घर मैं द
अंग रसुत मारि सं॥ मोह कि या त जिनां म॥ कदि जी घन यें है चिति॥ नाम चो मूरष को मू॥ ॥ अहं माया
तहे मो दहै॥ क्रोध कलप मां कोटि॥ जग नाथ मैं मन की॥ कबहू न आवै टोटि॥२८॥ ॥ लि पंछी म
प सुन रवा॥ मा सभी न जलि मांहि॥ जसां मद्यो धन वंत मे॥ गिरमें कबहूं नांहि॥२९॥ बहू कलेस धन
कप जय॥ अति ही कष्ट रहाइ॥ धारन कुषतन पावई॥ सो कबहूं बिसजाइ॥३०॥ मरषतम न नांहिम
षुसी॥ बांटे मोह बहाइ॥ जग नाथ कबहूं न छिजन कों धन सुष दाइ॥३१॥ धन की गति जग यें द की॥
जग नाथ बिरलाइ॥ कबहूं आवै हाथि सो॥ कबहूं कर तें जाइ॥३२॥ माया बिद्दरूपे भल घटै॥ अंछतन १३२

जांनै को ए॥ जगनाथ माया मिलै॥ उरत पराकम होइ॥२४॥ सब ही आतम मद कही॥ जब ही माया मे
हा॥ जगनाथ कुमिलाइ कूं॥ जिन कें दरिर सतेह॥२५॥ दादू हस्ती देव रथ धन देषि करि॥ फूल्यो अंग
न मांह॥ ओरिद मां मां एक दिन॥ सब ही कामें जाइ॥२६॥ माया देषै मन षुसी॥ हिरदय होइ बिगास॥
दादू सज गति जी वकी॥ अंति न पूगे आस॥२७॥ दादू माया का बल देषि करि॥ आया अति अहंकार॥
अंधलया सूझै नहीं॥ काल करि है सिर जम हार॥२८॥ जांनी के छबि अंधधरा॥ माया मैं रपां जीसा॥ जग
नाथ परि बसि भया॥ सो गिनस कौ पावा॥२९॥ अंन पांणी को आफरै॥ माया के अहंकारि॥ कुहिं आवे सो
ई कहे॥ बोले बही बिचारि॥३०॥ जे मन लरथ का स्वाम जो॥ उन ताकूं दे मारि॥ जो बिद गाति सम कै नही॥ मा
गा फिलत न हारि॥३१॥ जग नाथ जिय धुर्च है॥ जो लौं बिन न बेहि॥ लछ पनत न मैं लछि मिलै॥ मा रमा
अमा जंटे हि॥३२॥ कबीर माया दासी संत की॥ ऊ भी देइ असीस॥ बिलसी अरु लातों छडी॥ सुमरि सुमर
जगदीस॥३३॥ कबीर माया हम सों रे कह्या॥ तूं मति दे रे पूठि॥ औरह मारा हम बलू॥ माया कबीरा रूठि॥३
४॥ कबीर बगली नीर बिटालिया॥ माइर बहु या कलंक॥ औरि रपंछे रूपी गए॥ हंस न बोडे चंच॥३५॥ का
मना कन माइई॥ बहु बलिद ली मारि॥ जीते है हय लोक तिहि॥ सुर नर मांनी हारि॥३६॥ योगी जंगम त
पसी॥ जत बयो सकहा पीर॥ मारे तव ल लब आइ करि॥ जे दोते मद्या मीर॥३७॥ के की कमां न बे॥ जल थल

माया पर्यो तैं पे लहै ॥ जगतें रहे ते

गुरुअंग कौ जिय अंत ॥ सिव बिरंचि नारद कहै ॥ इहि माया बलि बंत ॥ ३९ ॥

१७७ सिर सुद्धी पक करि गोते दये ॥ गया मी बचै न सूर ॥ ३९ ॥ दादू माया चेरी संत की ॥ दासी उस दरबारि ॥ ठ

कुराणी सब जगत की ॥ तीन्यूं लोक मंझारि ॥ ४० ॥ दादू माया दासी संत की ॥ साकत की सिरताज ॥ स

कस्सेती भांडणी ॥ संतों सेती लाज ॥ ४१ ॥ साखी ॥ दादू च्यारि पदारथ मुक्ति बापुरी ॥ अठ सिधि नव निधि

चेरी ॥ माया दासी ताके आगे ॥ जहां भगति निरंजन तेरी ॥ ४२ ॥ चौपई ॥ माया चेरी साध कि सेवै ॥ साधन

ब आद कौं हंं दैवे ॥ जूं आवे त्यूं जाइ बिचारी ॥ बिल सी बित डी मा थे मारी ॥ ४३ ॥ दादू बुध्य बबे मबबल

हरणि ॥ दूत निताप गुपावनि ॥ अगि अग्नि परजालि ॥ जीव ब्रह्म रखारि न बांधनि ॥ नाना बिधि के रू

पधरि ॥ सब बंधे भामनि ॥ जगबिटंब परलै किया ॥ हरि नांव भुलावनि ॥ ४४ ॥ साखी ॥ बाजीगर की पूत

ली ॥ ज्यूं मरकट मोह्या ॥ दादू माया राम की ॥ सब जगत बिमोया ॥ ४५ ॥ साखी ॥ जिस घटि ब्रह्म न प्रगटै ॥

तहां माया मंगल गाइ ॥ दादू जागै जोति जब ॥ तब माया भरमि बिलाइ ॥ ४६ ॥ दादू रूप राग गुन अणसरे ॥ जहां

माया तहां जाइ ॥ बिद्या अछर पंडिता ॥ तहां रहे घर छाइ ॥ ४७ ॥ साधन कोई पग धरै ॥ कब हूं राज दुवारि

॥ दादू उलटा आप में ॥ बैठा ब्रह्म बिचारि ॥ ४८ ॥ कबीर माया मोहनी ॥ मोहे जांण सुजांण ॥ भागा हू छूटै न राम

हीं ॥ भरि भरि मारै बांण ॥ ४९ ॥ साखी ॥ कूद कहैं साची करि पकरै ॥ माया मीठी लोई ॥ जगनाथ जगमोह्या सब १७७

ही ॥ बिरकत बिरला कोई ॥ ५० ॥ साखी ॥ बंसदं सक जो कमे ॥ माया बिसरी मांहिं ॥ जगनाथ जू ए तका ॥ ल

गा निकसि सिष्ट मिटां नाहिं ॥ ५१ ॥ माया त्यागी फूर करे ॥ मांदे मां दिन बास ॥ जगनाथ सो जिय सुखी ॥ साधनि सा

इं पास ॥ ५२ ॥ दादू जोग बिहूंणे जोगी गहै ॥ सो फल नि होके करि सेष ॥ जगत निकौ मगता गहै ॥ करि करि नाना बे

ष ॥ ५३ ॥ साखी ॥ दुस्मन सरीषा ढीपू कहि ॥ माया सों खेलै ॥ दादू दिन दिन देषतां ॥ आप नेगुन मेलै ॥ ५४ ॥ साखी ॥ दा

हू माया मारे लात सूं ॥ हरि कौं घाले हाथ ॥ संग तजै सब झूठ का ॥ गहै साच का साथ ॥ ५६ ॥ हरि बिन रक्षि कौ

कौ नहीं ॥ यहु माया बलिवंत ॥ जगनाथ जो धारनर ॥ केते गए गिलंत ॥ ५७ ॥ माया मगरा मानवी ॥ सरबी सों

रूप ॥ जगनाथ सब मोहिया ॥ करि नाना बिधि रूप ॥ ५८ ॥ संबे संघारया सरपणी ॥ सुर नर असुर बभाइ ॥

जगनाथ तिक बसे ॥ निज अंगि पकरि जाइ ॥ ५९ ॥ प्यारी सबद्यां बीमिलै ॥ करि करि गाढी प्रीति ॥ जगनाथ

जगा की सखी ॥ बिरला यहु जाता जीति ॥ ६० ॥ कपट का राग मोह नगर बन ॥ पायो प्रिया बिछोग ॥ प्रूरम माया जी

बरत ॥ कत्यो पावे सुष भोग ॥ ६१ ॥ दादू सुर नर मुनियर बसि कीए ॥ ब्रह्मा बिस्नु महेस ॥ सकल लोक के सिरि

डी ॥ साधों के पग हेठ ॥ ६२ ॥ ब्रह्मा बिस्नु महेस की ॥ नारी माता होइ ॥ दादू खाए जीव सब ॥ जिनि निरपती जे के

इ ॥ ६३ ॥ माया बिसु की मोहनी ॥ सब घट राषे पोइ ॥ बहु जीव तामें नहीं ॥ निज पर आतम सोइ ॥ ६४ ॥ हद गुर

सी माया मोहिया ॥ सुर नर सब संसार ॥ जगनाथ जो न्यौ बिनां ॥ अजर अमर करतार ॥ ६५ ॥ मोह न छूटै साधु से

गु.७०
१३७

॥सो गंध्रायै जाइ॥ कबीर त्यागि सा॥ चलि हंस जे॥ सो हरि कै रे सहाइ॥६६॥ कबीर माया पापणी॥ फंध ले बैठी हा
टि॥ सब जग तौ फंधै पड्या॥ गया कबीरा काटि॥६७॥ माया मीठी बोलणी॥ मन मन लागी पाइ॥ साईं पे
से पेट मैं॥ काढि कलेजा खाइ॥६८॥ बाबा बाबा कहि गिलै॥ आई कहि कहि खाइ॥ पूत पूत कहि पीमि
ई॥ पुरषा जिनि पतियाइ॥६९॥ जे मन लागै ते मी ... ॥ चाले मधुरी चाल॥ जे नर रखै ते नेह करि
तिन के घुरे हक दाल॥७०॥ जे मन जीवन चलि सके॥ माया रोके घाट॥ साधु पंचे राम कहि॥ जा की
पाडी बाट॥७१॥ माया सायर की लहरि॥ रीक्या सब संसार॥ जे मन राम मिहा जमा हि॥ साधु पंजे घप
रा॥७२॥ सब मन माथ युग पुन मई॥ माया डरत यु सोइ॥ हरि सरणै जन सगति करि॥ तिरिया याति है
पा॥७३॥ सब दीन्ही॥ ढिग बिचि राम सूं ले ला आये॥ आं वन सो नन देहि॥ जहां के तहां सब राखे॥ ॥ पा
माया० रिप हंतै सेई॥७४॥ इति संपूर्ण॥ १०४॥ अथ कनक कामनी को अंग॥ साषी॥ एक कनक अरु कामनी॥ प
रहरि पूजन का संग॥ दाहै सब जग जलि मुवा॥ जूं दीपक जोति पतंग॥१॥ ब्यास कनक अरु कामन
न जिये न जियो हरि॥ हरि सौं करि है गरहरु॥ दे जे है मुखि धरि॥२॥ पामर बिनै गाक पड्या॥ मदे सुरंग नदी
शा॥ कबीर त्यागण गंग नक रि॥ कनक कामनी दोइ॥३॥ संकर सो नै सील नहीं॥ संगत जत सु आंन॥ जुगत नि राम
जिनि नरे संग के यो॥ छेदे नाक के कांन॥४॥ पीपा माया नारी परहरै॥ चित मों धरे न नारि॥ ते नर गोबि माथ अं १३४

॥अमर सरण संसारि॥५॥ माया सौं बिरकत भया॥ गया भगत की बोट॥ त्या राम जी राषि है॥ जया नदी पम
चोट॥६॥ छांडै माया कंचुकी॥ बिसहर ज्यूं जन कोइ॥ जग नाथ निरखि मन पे॥ सो भी अधिकी होइ॥७॥ चो
मुषी॥ बालिक ज्यूं एरता हबिन॥ पालिक अपि जगनाथ॥ त्यां निकलौ को नांहि कछु॥ पालि कथर इक सु
था॥८॥ कमरी राषत सोहनी॥ कमरी छुटै न साथ॥ चमरी तजि चित नि रहै॥ समरी मनि ... था॥ ... कंम
सा छिवि जन धर्म युक्त॥ बांम बिवर जन साथ॥ सो मड गांसी हरि कहि॥ राम जपज जगनाथ॥१०॥ साषी॥ धर्म
लौ को धन को छिनो॥ असौन दी जगनाथ॥ मांतै नका ई नजे॥ बडो धर्म ता साथ॥११॥ गारि खाइ अरु खोइ
कौन सग्यांनी साथ॥ पहिलै ही नहिं खाइए॥ कीच कु संगति साथ॥१२॥ जेतो सुष संसार मैं॥ इक कों किये
मटोरि॥ कनषो रोकां कराधनौ॥ देषौ फट किपि छोरि॥१३॥ दाह दादा हरि कहि॥ बेदा वेदि न कटि॥
कैते मोदा करिया॥ इस पस सारी दीहटि॥१४॥ मांन कच्या सा कामिया॥ स सोमी ताथेरा॥ मांकि सही मोदे
स्ती॥ मांकि सही मोडेरा॥१५॥ कबीर दादै दाफ मिहोत है॥ निरदावेर निसंक॥ जे जन निरदावेर
हे॥ ते गिणें इन्द्र कौं रंक॥१६॥ कबीर सब जग हंढिया॥ मंदल कंधै चढाइ॥ हरि बिन अपना को
नहीं॥ सब देषे ठोकि बजाइ॥१७॥ कांमी अगंमें बाप रा॥ गुन मिलि जिमान समझ्या॥ अगुन मिलौ सजग मि
लै॥ जग मिलि मिलि मिले मरांम॥१८॥ कहा भगत के रूसमे रौ॥ छूटे सेरे न कांम॥ जिहिं कूटे मरि एम सरांम॥ सो जि

गु०अं० निरू होरांम॥१९॥ दादू इस संसारसौं॥ निमष न कीजे नेह॥ जांमन मरन आवटनां॥ छिन छिन दाझै देह॥
२३५ २०॥ सब मम मता जगनाथ जगि॥ ब्याधि बुलाई सोइ॥ दुष संसार अपार युग॥ छाडै ही सुष होइ॥२१॥ बिरंब न
जगनाथ संसारसौं॥ मरन काट्यें सुष होइ॥ सुपिने ज्यूं चौरेल को॥ तिन में आसन कोइ॥२२॥ बिरंब म
करि ए बावरे॥ त्यागन समझे जार॥ छ्यपने की मृग तृष्णं का॥ मांन सहै मिगयार॥२३॥ कबीर मेरे म
न में पर रिमाई॥ ऐसी एक दरार॥ फाटा फाटक पषांन ज्यूं॥ मिल्या न कोई बार॥२४॥ कबीर दुषके जा
व सौं॥ हित करि सुषांन बोलि॥ जे ल्यागे बेहद सौं॥ तिनसौं अंतर षोलि॥२५॥ रहो न जाई संसार बिन
तो सब संसार ति साधि॥ जगनाथ उपदेस तिहि॥ छूटै आंन उपाधि॥२६॥ देष्या ठाकि न जाइ करि॥ स
कल बली माया॥ फाटे मन सब सारहे॥ सोई मांनिहं साध॥२७॥ या की होइ रज मपा न मे॥२८॥ एक
देह सब जगमग॥ कहि कौ देष्यो होरतो॥ मेलि पैधरे पग्ग॥२९॥ भिज करां मके हाथ है॥ दुनियां दे
स वदुष्य॥ जे ता आदेद जगत सौं॥ जे ता जियकौं सुष्य॥३०॥ जगसौं आप बंधाइए॥ जंम बिसहर सौं
अंगा॥ षारु हिया सुष पूब है॥ छुरा घरल कका संग॥३१॥ स्यांम झासम संसारसौं॥ प्रीति जु कीजे प्यार॥ कं
टेरी के पांन ज्यूं॥ काटे हुन्त सो रा॥३२॥ सुमिरण करिए रांमकौ॥ जगतें रहिए दूरि॥ याहरि के रे रूष राम
ज्यूं॥ कांटे है भरपूरि॥३३॥ दुनियां सेती दोसती॥ होइ भगति का भंग॥ लकियापाजा रांम का॥ केस २३५

ऐसे का संग॥३४॥ एका एकी रांमसौं॥ के साधेंका संग॥ दादू अनत न जाइए॥ और काल का अंग॥३५॥ दादू रवि
न दिन जिस की जिप॥ तिनहीं जास अपार॥ जगनाथ तजि बोमलो॥ बारक दो सो बार॥३६॥ दादू सब बात
नि की एक है॥ दुनियां तें दिल दूरि॥ सांई सेती संग करि॥ सहज सुरति ले पूरि॥३७॥ साषी॥ दादू सारौं सौं दिल
तो रिकरि॥ सांई सौं जोडे॥ सांई सेती जोडि करि॥ काहे कौ तोडे॥३८॥ साषी॥ कबीर बिचारा कहि गया॥ ब
हुत भांति समझाइ॥ दादू दुनियां बावरी॥ ताके संगि न जाइ॥३९॥ दादू एक बिचारसौं॥ सबतें न्यारा होइ॥
मांहै है पणि सब न हीं॥ सहजि निरंजन सोइ॥४०॥ दादू गुन निरगुन मन मिलि रह्या॥ क्यूं बेगर के जाइ॥ जहां
मन नांही सो नहीं॥ जहां मन चेतन निज आहि॥४१॥ मीपणु भार सलेरहै॥ पी वे न षारा नीर॥ मांहे मोती नीपजे॥ दु
इ संद सरीर॥४२॥ दादू माल कवल जल क पंजे॥ क्यूं जुदा जल मांहि॥ चंद हि हित चित प्रीतड़ी॥ यूं जल
सेती नांहि॥४३॥ ज्यूं नपारी स्रपन मदेै॥ दी सेन्यारी मांहि॥ अधर धरे दरि जगत यो॥ रंचे जे सपरस नांहि॥४४॥ यूं
जोगी जगतें जुदे॥ जैसें जल हि सरोज॥ जगजघ बिन कल्प जन हीं॥ यं मिले न मिल हिं पिराज॥४५॥ सो मपां नी
पं फित न है॥ अर्थ अर्ष फिल सो इ॥ जगनाथ संसारसौं॥ मन बच बिरकत होइ॥४६॥ सब ही सुष कौ मूर है॥ बिर
कतता संसार॥ जगनाथ जन अंत जं॥ आनंद होत बिनार॥४७॥ जगनाथ जो मांन ही॥ कहत साधि सुष दे
॥ सकल जि के बन कौ गए॥ बिसरि राज नृप के स॥४८॥ चलें होइ तो कां तजे॥ नृप तिन्ह संसार॥ जगनाथ य

गुं०पं०
२३६

कमी निरिदै ॥ या कौ यहै विचार ॥४१॥ तन जिन सकत तबै आवि दै ॥ अब तन तजै सो कौं जाइ ॥ जगनाथ थिर पुर षेदे
न तो मया छिटका इ ॥५०॥ कतो छाम दिसै सुयमदै ॥ वंछा तजे न साथ ॥ जे वंछा विरकत भए ॥ ते त्यागी जगना
थ ॥५१॥ दादू सब मम मांहि ले ॥ तिन का कौ जे त्याग ॥ सब तजि रामरांमसौं ॥ दादू यह जब राग ॥५२॥ सुन अ
तीत सो दरसिंनी ॥ आपा धरै न माइ ॥ दादू निर्गुन राम मयाहि ॥ डौरी त्यां आ का इ ॥५३॥ मोटी माया तजि गए ॥ सू
षिम लीऐ जाइ ॥ दादू को लूटै नहीं ॥ माया बडी बलाइ ॥५४॥ दादू का या लोक अनंत है ॥ घट मैं भारी भीर ॥
जहां जाइ तहां संगि सब ॥ हरिया पैली भीर ॥५५॥ काया माया धार रही ॥ सो अब ज्यु बलि देत ॥ दादू इतर
कू तिरै ॥ काया लोक अनंत ॥५६॥ साध कया संसुर रहे ॥ जंघोडा संअसवार ॥ जे मल मै ... ॥ अ
रु भुदागु त्या अहार ॥५७॥ निदमिसारत देह सौं ॥ जगनाथ सब वैर ॥ तन त्यागी विरकत ... हो तु कहै
है वैर ॥५८॥ तन त्यागी सो जो भिये ॥ देह विसर जब होइ ॥ जगनाथ अंग अरचई ॥ अब यहां को दो को
इ ॥५९॥ दादू माया मन हरये तषर ॥ सदविक दे न होइ ॥ जे वैर ते देखता ॥ रांम सरीषे सोइ ॥६०॥ चोसुष
॥ अरथ न साधहि आपनो ॥ परथ अरथ कज ल्याइ ॥ परथ जांनि जगनाथ सब ॥ वर्थ जे मन जि आइ ॥
दा ॥ दर्सन परहै संपांन माहि ॥ पारस मन त्यागे ल्याइ ॥ पारस मन इंद्री रसन रस ॥ परस न हरिजी होइ ॥६१॥ साषी ॥ जो राम
न अतीत जन होत है ॥ इंद्रि निगति अनुराग ॥ सुनअतीत जगनाथ जो ॥ सो कहिए वैराग ॥६२॥ लोक ला २३६

ज सुमखंड मां ॥ तजै सजै सथवंत ॥ जगनाथ सो जगत में ॥ उपजै न सो ब संत ॥६४॥ जगनाथ सत लोक
सुर ॥ नरषुर मांह न मीर ॥ मम सुष छाडि छरदि जं ॥ सो वैरागी वीर ॥६५॥ बज मे सा मजरी मिले ॥ अ
नजो मैं मन जाइ ॥ जगनाथ जांन तजि कै ॥ सब सुष संविसराइ ॥६६॥ जो कछु कहिए वचन करि ॥
मन जाकुं परि जाइ ॥ जगनाथ मिथ्या सबै ॥ इंद्र जलदर साइ ॥६७॥ जिनि जन पायो परम सुष ॥ तिनि
सुष चाहि न ग्रांम ॥ जगनाथ अंमृत लहै ॥ दोस न और मिठांन ॥६८॥ इति संपूर्ण ॥२०८॥ ॥ अ ह्कना०
थ गति ही न त्या भाण ॥ साषी ॥ दादू आवनि विरंग हीं पृथमी ॥ दयपबिहिणां देसा ॥ जगति न दी मगवंत की
॥ तहां केसा पर वेस ॥१॥ हरि की भगति का ॥ जहां न हि लरहे मा ॥ पांणी तहां न पीजियः ॥ परहरिये वे
देस ॥२॥ आव भगति सेवा नहीं ॥ नहीं संत जि हि गांव ॥ जगनाथ सो छाडिए ॥ दिसा देस पुर गांव ॥३॥ जग
नित परिजिया वीपडी ॥ संत न भरे पाव ॥ परसादी मैं जीवना ॥ सु जाउ न का भाव ॥४॥ साध तहां ही संचरे ॥ जहं
सुष संत की सीर ॥ सके सरवर परसरांम ॥ हंस न वैसे तीर ॥५॥ आदर नहीं भगवांन को ॥ नतो भगति भगवंत
जगनाथ तहां कूं रहे ॥ हैत गराही संत ॥६॥ सेवा चाहि न संत की ॥ जहां न आदर भाव ॥ जगनाथ तहां
लिहुं ॥ जन कोऊ जिनि जाव ॥७॥ जहां साध संचार नहिं ॥ सेवा सक्ति न मुं लिं ॥ बिन आदरि जगनाथ तजि ॥
तहां न जइए भूलि ॥८॥ हरिजन सन्यासि कथा जहां ॥ अरस बेस्न र विश्रांम ॥ बिन बोले ही जाइए ॥ जगनाथ

गुंण्यंग १५७ तिहिं ठांम॥ दीयो पठी हेत रुपी तिहीं नता मांहि न॥ मतो ब संत निका छिफ्रांम॥ तिरिंजन ब्रनिका देकें
जाइ ग॥ जम जग नाथ संगा कि हिं कांम॥१०॥ साधी नमस्कार न हिं बंदनां॥ रांम नांम हृं मांहिं॥ जगनाथ
हिवैं मिण पखकन्ना धतिन मांहिं॥११॥ सगाति न मगावंत नमनकों॥ चीन्हें नहीं चिन्हा शि॥ जगनाथ
मिलें नविम॥ बस्ती ग्रा हित जारि॥१२॥ भगात भगति नगावंत हित॥ साधू नहीं परदेस॥ जगनाथ ते
स्यागिण॥ नरषुर राजा देस॥१३॥ नरपरतिपर ज्ञा नारि नर॥ साव भक्ति जहां हेत॥ जगनाथ तहां न
तरहै॥ साध सिद्ध सुकेत॥१४॥ साव भगति जगनाथ न हिं॥ लाडखित संसार॥ हरि साद रिज हां नजन
दै॥ तहां सुष सिर जंहार॥१५॥ इति संपूर्ण॥१०७॥ अथ माया मोहनी को साषी॥ कबीर एक कनर॥
कामस्त्र कामिनी॥ बिषफलकि ग्रागपाइ॥ देखें हीं तें बिषचढें॥ षायें सो मरिजाइ॥१॥ कबीर एक कनक
ग्रूरु कांमनी॥ दुवें ग्रगा मिकी झाल॥ देषत हीं तन परजलें॥ परसत कीयें माल॥२॥ कालक नकस्त्ररु
कांमनी॥ परहरि इन का संग॥ दादू सब जग जलि मुवा॥ ज्यूं दीपक ज्योति पतंग॥३॥ दादू जहां कनकग्र
रु कांमनी॥ तहां जीव पतंग जाहिं॥ ग्रागि ग्रनंत सूझै नहीं॥ जलि जलि मूएमांहिं॥४॥ त्रिया पार कनम
तंगा॥ देषत ही जलि जाइ॥ कोइक संत तज नकस्त्ररे॥ रांम सुमरि गुन गाइ॥५॥ बनिता बैरनि जीयकी॥ मा राम १५७
या मा न चूमीठ॥ कहि कबीर परतीति हित॥ कारत अधम न रनीच॥६॥ देषन दीयें ज्ञ बाल कहि॥ त्रिय
साङ्गपतिहीमता॥१०॥

न

री तता मांहि॥ कांब रिके भौ रेगढी॥ छाडी बटति मांहि॥७॥ दादू मनमृतक भया॥ इंद्री ग्रपनें हाथ॥ ते
जी कढ़ेन कीजिए॥ कनक कांमनी साथ॥८॥ बेरी मारे मरि गया॥ चित तें बिसरे नांहिं॥ दादू ग्रजहूं सा
लेहै॥ समभि देषि मन मांहिं॥९॥ कबीर कनक ग्ररु कांमनी॥ इन को यहै ग्रचेत॥ जिन बंधन बांधे सबै
मांहि नर सरीर बंध॥१०॥ महली माया मोहनी॥ मोहे मुनि जन भूप॥ कहि कबीर मूह कै कितें॥ पेषत परहं
सुकूप॥११॥ माया सापणि सब डसे॥ कनक कांमनी होइ॥ ब्रह्मा बिस्न महेस लौं॥ दादू बचै न कोइ॥१
२॥ जिहिं माया मुनि जन गये॥ सीगी रिषि से लोइ॥ जगजीवन इस ग्रग संग॥ बिरला बचै कोइ॥१३॥ जिम पाइं
दीपक करि॥ बंधइयां बचुजीति॥ जगजीवन सो परिहरणा॥ माया की परतीति॥१४॥ मन मन सो बेब
सि किया॥ काया गुंन निरजीव॥ जगनाथ कांमनि कनक॥ मिलें होत सरजीव॥१५॥ सहुई जो निहचल
चलें॥ चंचल कपे छिपबांण॥ जगनाथ कांमनि कनक॥ देषत जंगें मसांण॥१६॥ बनिता बुधि सबकी ह
रै॥ मुनिजन मनबसि कीन॥ जगनाथ सिव सुर ग्रसुर॥ रूप मोहनी लीन॥१७॥ कहत मांसु जिनिग
है॥ तिनहीं देषि मलीन॥ निरषत नारी नर ढिमुष॥ कौन नहिं हूं न बिलीन॥१८॥ नारा इन बसि नारि
कैं॥ सोब सकेत कमांन॥ ग्रंतकाल सह पाइये॥ नारि नहीं में प्रांन॥१९॥ जे बीक्षा ते बंधि गलि॥ बाकी पलै नह॥
बिषा व्रबीधां मांनयां॥ हांग्रंत रषहू॥२०॥ दादू केहै भ मिरग्यारे बापरे॥ माया गृह के कूप॥ सो ग्या कनक छिद्र

गुं०पं०
३३२

रु कांमनी॥ नां नां लिखि खि के रूप॥२१॥ कबीर रजनी रजनकी कली॥ ताप रिसा ज्या रूप॥ रांम नांम बिन बं
धि है॥ कनक कांमनी कूप॥२२॥ रातांब स्वप रिकरि॥ काम बांध्या केस॥ हाथ्या मदही लाइकरि
बाध रि मास्या देश॥२३॥ मुंजा बनमें देखि करि॥ कपि करिली की आगि॥ मो ह नमन मायाबंध्यो॥ क
नक कांमनी लागि॥२४॥ आगनि रूप हे आरही॥ नयन रमभि घा हे हा॥ परस्त पांनी कते रे॥ जग नाथ के
देह॥२५॥ हीरा हरिजन हरि कहै॥ जगमा थ प्रकाश॥ तेज हथा परसे नहीं॥ आमर सदा आबिना
स॥२६॥ कबीर कया कपाल की॥ लागे जपतप जोगि॥ ते सो मो हे नां हिनै॥ कनक कांमनी जोगि॥२७॥ त
नित जिम निकरि परहरे॥ कबीर कोमनि दे मा॥ ते मांइ भिमरु के मनहीं॥ जिनके र हि मनरांम॥२८॥ इ
ति सपूरी॥२०॥ १५०७॥ बिषे आंग॥ साषी॥ ग्यांन दीप उद्योत नुरा॥ नमु काटन कलिकाल॥ पलमें बल
चंचल सथी॥ देन षु का डु बिसाल॥१॥ दीप कग्यांन सनारि धरि॥ तन मंदिर के मांन॥ सबल गयिष्ट
लमा तन नहीं॥ त रूनिं द्रि गनि कोपोन॥२॥ ग्यांन गया इ ते लेत हि॥ इन्द्र म धीर ज धीर॥ हयकटा छि कां॥ जी
परत॥ बिगरत सु र त गंभीर॥३॥ चित्त वत सो कर मील गे॥ हयकटाछि असते जा॥ सुर मुनि मोहि न स
हिसके॥ तन कटि जात करे जा॥४॥ जिनि जिनि नजाण्यंते नदे॥ सुर मुनि टारन मांम॥ इक कांमी सी राजबे राम
लिकी॥ चोर थरी धर सांच॥५॥ सोधी॥ ओदधन षधे टुक॥ पनिवि बिमो अरुक्ष अंग करु॥ धीमा बि ३३२
जायामासामोहनी०

धें अचक॥ घायक हीं दी सैं नहीं॥६॥ साषी॥ औं ह धन कमकु रपिनु च॥ बांन बिसाल बरूंधि॥ मृ स नम
नमृग मालु औणा पारधी नैं नत रूंनि॥७॥ रेम न बांमा बधिक रस॥ नैं नबांन मुषपासि॥ मारैं गी बेहाल
करि॥ कुरंग के सब नासि॥८॥ टो मरदसरथ सहूहनि॥ अजैन मम मा अम मग॥ गूढ़ब र षाल धन्न
किनी॥ सुमर त हीं सरल गम॥९॥ छूटमन ही मत संग बिन॥ मदिं निकस न कों जांन॥ केसों बांमो
बधिक है॥ जिम तिम सांधे बांन॥१०॥ नैं न बैं नमुष बिनासिका॥ अधर स धर कुच भीर॥ तद्दा पुन्यो
मन अहमद॥ जैसैं ससा षु दीर॥११॥ पाइन रूनि कुच नंघपद॥ चिरमच ग्यो सब गांव॥ छुटे गोर
रहि है मुद॥ जु दी मोल छबि मांव॥१२॥ देह दी प छबि तिलविय॥ बा ती बचन न ब नाइ॥ बदन जो
तिह गा देषि के॥ परत पतंग मा आइ॥१३॥ बीमा बाजा नाद सुनि॥ तल छ बिजो तिनि हासि॥ जग ना
थ मृग मगन नर॥ लये बधिक जमि मारि॥१४॥ पंक प द्म नी भेम बर॥ कंचु कीजे परिहास॥ चित
गसंद्य हले पर्यो॥ किमनि कसे क बिद्यास॥१५॥ नैं न कु नकि लाप लक पर॥ घरकि तत र
निकता ल॥ निरषि मीन छबि परपरे॥ निकसि न सके जमाल॥१६॥ सलिला हार पहार कुच॥
बे लत कांम सिकार॥ हो बर जत हम मृग निको॥ तहां जिनि जाऊ मंझार॥१७॥ तिरि तिरि तिरि तिरि
रे ग हर तिरि॥ तिरि जि निलावे बार॥ सम द्दिपा सुमि के सधा॥ इयत न नदी अपार॥१८॥ सूपन

सुं०सं० वैसमिल क्रियो॥ नविसेरो वी सकलो वैन॥ वेष चढे फन फनिंग को॥ बचे बाम रे कौन॥१९॥ बिषैक्रमि सों व। अेक
१२९ गिनर॥ मगमन मन जोम नत जंपान॥ जमम रस मोखें नालषे॥ कामा के लिकल्यो न॥२०॥ परहरि प्रानी बिषे
जल॥ प्रांन मुक्ता गहि गपान॥ षीरनीर निर बेंकरे॥ हंस कलिक ल्यांन॥२१॥ केसो मारी मर करे॥ जि
यमैं देषि बिचारि॥ छूटन न हिंस तसंग बिन॥ जितति तगाढी धारि॥२२॥ मत संग मतिबिन केशवा॥ म
छिद्र मकूटि तकसंग॥ छीजत जोगि भूमारहू॥ फनिदे रक्तनंग गमुखेश॥२३॥ सुब रिनोम भिस्य घरी
॥ बिकट सरूप बिकराल॥ देषत ही मब कोंयसे॥ परम रोमय जाकाल॥२४॥ कह करत हर एकोम नी॥ का
टत कुटिलाधक्ष॥ गणनल कुटि बिन के सवा॥ सकेन आपस्तु माइ॥२५॥ केसो इयत नटकरो॥ ह
करलोभी कांम॥ आगे स्रायंत लमिलै॥ यजा मन देषो बांम॥२६॥ मन मन मत्थ्य हि मद॰ कहि॥ कुच
तत थेरतजाइ॥ जो मन मोपे रीचढे॥ मन मंथ देइ गिराइ॥२७॥ जबलगा को मन बोसरे॥ तबलग मन्पर
फलसेव॥ कहि कमाल हरिकं मिले॥ वेनि दकांमी देव॥२८॥ जोगी जंगल मदिब मे॥ सूका तुक
षाइ॥ रेनिम सोदेफ रपता॥ मतिबिषिया गमि जाइ॥२९॥ मापें सुने सिंगार रस॥ मन मथ आमम होइ
मोचो जो गजुगनिको॥ छम यिब हावे सोइ॥३०॥ सिंगार सुणो जो गेमदन॥ सुदरि स्यो देषी ति॥ सजा राम
२ मस्तं दिन पड़े॥ पीछे के बिपरीति॥३१॥ रंचक जे नल ज्ञानियां॥ जो विसदरदाल॥ समोजे नखद नि १२९

यां॥ ति मदे कवन सवाल॥३२॥ फरीदा एबिम यदलो॥ धरियां रवि संवारि॥ जो जां मो दीच षियां॥ ते
तां सों हिहि जारि॥३३॥ मंत्र बांमा यां पलेख गां॥ अलिब लिर षिधियां हा॥ जद क हे ते पात रूपा॥ जे बे सा
सिसांति यां हा॥३४॥ कांम मगो दन्न कांम नी॥ करे मनो रथ आन॥ चंचल ता कहि एक हा॥ जहां यह स
हजसुजांन॥३५॥ सुरपति नरपति अस्रुरपति॥ बली बालक के हाथ॥ मोदे मोदे मांदिको॥ अब
लजगनाथ॥३६॥ सकलछत्रपति बसकिए॥ अपने ही बलि बाल॥ मरम लोगस बलसों॥ अब
लाकहत जमाल॥३७॥ मनमथ साइं जीमारि सब॥ जिनि जीत्या यम काल॥ चित चेतनि लागा रहे॥ ते अ
बला कहै जमाल॥३८॥ सकल करा सब ते अबा॥ जे जन लागे ताहि॥ जगनाथ अबला तिनहि॥ सके न
बल करि साहि॥३९॥ अतन आपरति हय अतन॥ अतन बान सधीन॥ तन धरि ताके बसन को॥ उ
द्यम करहि अयांन॥४०॥ जोगी जंगम तपसी॥ जती सन्यासी सरब॥ देषि बिमोदे नारिको॥ एकदी
रखो म गर्ब॥४१॥ तांम सयांनप तांम गुंन॥ जपतप संजम मांम॥ बंकतिर छे लोइ नां॥ परि नपरी जे जं
मां॥४२॥ जपतप संजम बिधि बरत॥ तोलजं गपांन गुमांन॥ जो लजं मन मथ राजके॥ कर न दिंच हा
तक मांन॥४३॥ या भवपारावार को॥ उलंधि पार को जाइ॥ तिय छबि छाया ग्राहि नी॥ गहे बीच ही आ
इ॥४४॥ चोपई॥ रे मन नरा तो रामां ह्रिम॥ इन सों माते तो वा हे पेम॥ हरि सों नांहि बिषै सों रत्ता॥ एहजमोट

गं०अं०
२४०

ग्यांनी ग्रहन॥४४॥ साषी॥ जीव कमल हरि बारि मधि॥ ससि ज्यूं सींचत संत॥ तकन फल लतं मंद म
ति॥ विषै ज्यांन र निवंत॥४६॥ दाइ आवे स्वाद सनगम नक्रो॥ विषै हलाहल षाइ॥ तहां जन ते रा
रांम जी॥ अपिनै कहे न जाइ॥४७॥ विषै हलाहल षाइ करि॥ सब जग मरि मरि जाइ॥ दादू मुद रांम
मूले रिदै राषि ल्यो ल्याइ॥४८॥ माया ये हे निरबैं बचन॥ और बकत है कोम॥ जंबेध नरां मांस दही॥ मो
अघ मोचन रांम॥४९॥ इति मसपूरा॥२७९॥ अथ कांमी निह कांमी नर को अंग॥ साषी॥ गिरि सिषिर निकर
मांझ रें॥ अमी हलाहल सेत॥ कोपी दंता भ्रमर ज्यौं॥ पग पर सिंजिय देत॥१॥ उभे कल मच्छ मूतमरे॥ ए
कवरनल्यो ह्यर॥ इक परस्तै पेमाल्यम॥ इक पीवत भय पार॥२॥ कबीर नांमी भोजन स्वाद सुष मां
री सेती रंग॥ वे गिछा छिप छिमा हिंगी॥ वे देम्यरति अंग॥३॥ नारी नांमाणि रांमी॥ बाद सि॰ बमी बल्लाइ॥ क
दाइ जे नर रत भए॥ तिन का सर्व समाइ॥४॥ नारी नागणि जे फसे॥ ते नर मुगति दांन॥ दादू को जी वैन
रहे॥ पूछे मब्बे स योन॥५॥ सुंदर षाग एसा परो॥ के ते इंद्रिं कहि मांहि॥ आदि अंत तिइ निसबंधसे॥ दाइ
चेंतैयो हि॥६॥ दाइ पेसे पेट में॥ नारी नागणि होइ॥ दाइ प्राणी सबदसे॥ काटि सके कोइ॥७॥ कबीर क
मनिं काली नागनी॥ तीनं लोक मंझारि॥ रांम सनेही ऊबरे॥ विषई षाए झारि॥८॥ कबीर कामनि मी॥ राम
मी पांन की॥ जे छेरे तौ षाइ॥ जे हरि चरनां राचिया॥ तिन कै निकटि न जाइ॥९॥ सोठो॥ कबीर नारी सेती २४०

विषे॰

नेह॥ बुधि बिबेक सब ही हरे॥ कांइ अमांवे देह॥ कारज कोइ ना सरे॥१०॥ साषी॥ जे हंसा चाहे रांम कौं॥ तो प
कामनी आराधि॥ दादू जाइ रिकारि॥ मन इंद्री करि साध॥११॥ कबीर नारि निसा वे तीनं गुण॥ ज्ञान रया
मेंहोइ॥ भगति मुक्ति निज ज्ञांन मे॥ पेसि न सकइ कोइ॥१२॥ कबीर ओरु ज्यूं जगति॥ जगत की॥ भले बुरे का व
च॥ उत्पत्ति नेरुत्पत्ति मोर है॥ निकट रहे ते नीच॥१३॥ कांम क्रोध जल कां मिलत जि॥ क्रिया कांम की संग॥ जग
नाथ नर सूं बच्या॥ जैसें अगनि पतंग॥१४॥ कांमी मूरषं क्रूरकरो॥ फिर मगन रत निरोग॥ बिदबल
अति रुचि ज्यं सकल॥ लज अशक्ति संजोग॥१५॥ चौपई॥ कांमी नर कटष्ट्रट कांमिनी॥ सुरति रसी सु अ
ंग अग्रटकाश॥ जगनाथ हरिजन नि बिसुषते॥ कह्यि पांदि कंज सकत न जाइ॥१६॥ साषी॥ कबीर य
र नारी रातां फिरे॥ चोरी विठता षांहि॥ दिवस आरि सर मार है॥ अंति समूला जांहि॥१७॥ कबीर य
र नारी के राचनें॥ औगुन है गुन नांहि॥ षार समंद मे माछला॥ केता बहि बहि जांहि॥१८॥ कबीर य
र नारी के राचनें॥ जि मी ल्ह मन की हांनि॥ षांने बैसि रुषाइ ए॥ प्रगट होइ निदांनि॥१९॥ छांनै छांनै
की जिए॥ चोडे प्रगट होइ॥ दाइ पेसि पयाल मै॥ बुरा करै जिनि कोइ॥२०॥ घर घर रांणी कौंत्या मिक
रि॥ और रासे ती न्याव॥ वेरागी सिरि पात नौं॥ सब नाकों नगांव कौन्याव॥२१॥ घर घरनी तजि स्यां
म की॥ देषि मुला वे चित्र॥ ते कलि अंध धिरा गहे॥ नट कर भौ लोनि ज॥२२॥ पति पन पंच निमेंघ

गुंणगं· १४२

टै॥ रही होइ दरबारि॥ पिरागा कस्यास सच जांनि के॥ रहे पराई नारि॥ २३॥ साषी॥ निज असरतारी
बसुती॥ इंछ मोहि माइ कहुरा मो पुरषो॥ देषु सीपि सुणि बयणं॥ सुणि हो के बाई सा दो है॥ २४
साषी॥ मतिहती अस्तुति करै॥ जनि कोइ सुंदर जांन॥ सेष बिसेष जे सषै॥ कोइक गा के स्वान
॥२५॥ जगनाथ षष्ठक सबद॥ बां मांडि षकी षानि॥ परसि पतन नरक पुरि॥ परबसिक
रत पिछांनि॥ २६॥ सीद सप्पि बंबइ गुहा॥ जे भजि भैं न अस्थां न॥ जगनाथ बनिता जहां स्याव
तिस्यो सुरजांन॥ २७॥ चौपई॥ रांछि सदैत अवर तनि चेरा॥ त्यागत जगत रत भेसं सूता॥ अनगता
रजुवती एजो यानि॥ जगनाथ जब रस्म बूझत॥ २८॥ बेद बेद से करि उपचारा॥ सबद रंग औषध लगत
लगारा॥ जगनाथ सरयु नमर कारी॥ यस्यो जगत सब नागिन नारी॥ २९॥ साषी॥ जुवती जन जगना
थ पा॥ डसु दही सप्पिनि जांनि॥ एक दिसु षसो पासई॥ ईजे मुषि याद हि आनि॥ ३०॥ सषी मुष सी संषनी॥ ज
न जगनाथ धिजाइ॥ श्री ष मुषि सोओ दसा॥ बिभा तेअरु उगलाइ॥ ३१॥ चौपई॥ बनिता बीछनि डंक
कटा छी॥ बिषै दरद कबई न सही आछी॥ जगनाथ जगजीव बिदा वै॥ षाइ न हो षाइ का नांवै॥ ३२॥ साषी
॥ कबीर कायादेवल मनधजा॥ बिषै लहरि फहराइ॥ मन चाल्या देवल चलै॥ ताका सर्वस जाइ॥ ३३॥ एक
रांम को मैं नहीं॥ कामे सकल बिकार॥ इजा सद है तो होइ सब॥ दाहु का मत सार॥ ३४॥ कबीर कांमी कद

राम १४२

स

न हरि भजे॥ जपै न केसो जाप॥ रांम कह्यांतैं जरि मरे॥ को पूरबले पाप॥ ३५॥ नर नारी सब नरक है
॥ जब लग देह सकांम॥ कहै कबीर ते रांम का॥ जे सुमिरैं निहिकांम॥ ३६॥ जाइ बकर मन की बिया
॥ कीनै करम अपार॥ जत सत औषध तिपा लिया॥ बांध्यो सब संसार॥ ३७॥ कबीर निरबैरी निहिकांम
ता॥ सांई सेती नेह॥ बिषिया सौं न्यारा रहै॥ संतनि का अंग एह॥ ३८॥ कबीर जब बिषिया री प्रीति सें
॥ तब अंतरि हरि नांहि॥ जब हरि जी अंतरि बसे॥ तब बिषिया सौं चित नांहि॥ ३९॥ चौपई॥ रिग संघ
में सुभट नर घणा॥ सहस्रनारि हस्ती तणा॥ कैं कप कपट ज जीते जो॥ बसुधा बिरलो दीसे ते॥ ४०॥ साषी
मुकत कहत मासा बिषै॥ निपानियां न रांहि॥ मोह्त नियां ते दिपति॥ अधर निअधर रहांहि॥ ४१
॥ जो भ्रमत कत बंध उठ॥ एक पोपयाल म यंक॥ नवत होत तन पुग सैं॥ कहा राव का रंक॥ ४२
॥ जिन रूषे बिषै रस॥ चिकने स्वामि सनेह॥ तुलसी ते प्रिय रांम को॥ काननि बसो कि गेह॥ ४३॥ मी
त्वंत सजनी क को॥ जगनाथ जग मांहि॥ तिन के दरस न परस ते॥ अघ दारन हुअ जांहि॥ ४४॥ ओ सेव्य
षि कदयाल हरि॥ जगनाथ जगदेव॥ सुषी होत नर बिषै तजि॥ मांनत अपमी सेव॥ ४५॥ गोरषा दि
जगनाथ जन॥ जती साधि सुषदेव॥ सम रस साधि सुमर मलथै॥ एद प्रापति यासेव॥ ४६॥ इति संपूर्ण
॥ २१॥ अक्षर॥ बिषिया अपपतिंग॥ साषी॥ छ्या बिषम हे संतो॥ सुर नर रवर काया॥ बिष का अमृत
कांमी निहकांमी न०

गुणगंज
१५२

नांउंधरि॥ सब किसही थाया॥१॥ साषी॥ जीव गहल्या जीव बावला॥ जीव दिवाना होइ॥ दादू अंमृत
छाडि करि॥ विषपीवै सब कोइ॥२॥ साषी॥ विष का अंमृत नांव धरि॥ सब कोई खावै॥ दादू षारा नां
कहै॥ यहु अचिरज आवै॥३॥ साषी॥ व सूक्ष्म की छिमिया ते जे॥ सगी विष बांछंत॥ जगनाथ नाव
कहा॥ काढ कहू काछंत॥४॥ माया व्यापे सुलप सी॥ टहल तफिर रसांमा॥ जगनाथ संत जि विषै
बांछंत च्य ह्या स्वांग॥५॥ विषै जोग सब ठोर है॥ संत जिते नर काहि॥ मनि पदे द्व धरि खक्छोई॥ ते
मद माती बाहि॥६॥ मुयुमरी मेकै रहै॥ जीव न की क्या आस॥ दादू राम बिसारि करि॥ बांछै भो
गाविलास॥७॥ अंमृत रूपी आपहै॥ और सबै विष काल॥ राषनहारा राम है॥ दादू छूटा काल
॥८॥ घृत या लत जो त्रिपति है॥ [illegible] जगनाथ॥ तो नर विषि सा भ्रमत ते॥ अ टेक
हिसु तिगा या॥९॥ माया अग्नि ज्वाला मुषी॥ आगनि नं कांम सुष फाइ॥ करि हार रस अज्ञ सकरै॥ जग
जगनाथ न पाइ॥१०॥ विषिया मुयां तो बटतरे॥ सुक चय हो त विना स॥ जगनाथ सुक चत सुषी
जगनाथ न सकै निरास॥११॥ जे जे नर विषिया नजे॥ ते ते विषै अपार॥ जगनाथ जो दषिया॥ अ
हरि है ही आधार॥१२॥ विनिहिं को मीं विषिया तजे॥ भजै निरंसन नाथ॥ तिन हिं ह्य पति नरमें नहीं॥ स
दा सुषी जगनाथ॥१३॥ जगनाथ जिन कैन ही॥ विषै वास मना मूरि॥ ते नर निष्फल राषिया॥ हरि

राम
१५२

विषिया अरुचि

जी आपस ऊपरि॥२४॥ इति निंसंपूरण॥ २२॥ [illegible] विषिया विरकत॥ साषी॥ अदम द सब फंद का
टकै॥ जन सब बाज बिहंग॥ छांडि सय गोपि ज रा॥ फेर कुपके संग॥२॥ तपांन घटे दसैन किये॥ क
साध या घटे रति केलि॥ [illegible] मृत ढारिये॥ तो हर विष की वेलि॥३॥ वनिता विष की वेलि है॥
ज जिणता को साथ॥ ओरु करदो ष लगे बदै॥ जहर रूप जगनाथ॥४॥ नर वरपे वि सुषा सरां॥ उ
या देषि न [illegible] विषफल लागि यही फल॥ विष मासा विष मूल॥५॥ नारि न काहू की सगी॥ घात
कस्ते तिनि सार॥ कपरि मुष सों मंपानु जै॥ मांदि वरणा हर धार॥६॥ [illegible] रमन्नतीन [illegible] हिय
डुष की षांनि॥ विर सकि ये प्यासा वटे॥ रसमें जिय की हानि॥७॥ मुहा [illegible] सुतां जनाहगा॥ ता
ननी गुनस्यारि॥ [illegible] रांम एय मत रहारि॥८॥ साषी॥ बहुमन वीर करि देषिए॥ ना
री अरु अरमार॥ परम स्वर के पटका॥ दादू सब परिहार॥९॥ साषी॥ जघ सम जिमी सो जिए आ
मी॥ वीर एक करि एमाइ॥ जगनाथ मन विसुरी न चित लो॥ ओसी समकि मगाइ॥१०॥ साषी॥ बहन सु
त पनि [illegible] की॥ जन मीं जन में संग॥ जगनाथ कहै की जिए॥ इसी सगाई संग॥११॥ जिनि अंचल
अंमृत पाया॥ तिनि विजन स्वाद न लाइ॥ जगनाथ जन मी सबै॥ जनम सो मिं जिनि जाइ॥१२॥ जिन
थांन जै पै प [illegible] किए॥ तिनि सी विछि न घात॥ जगनाथ करि वंद मां॥ थांन थांन सब मात॥१३॥ प

गुं०ना० रघरपरहरि आपणी॥ सबये कैतराहार॥ यणु पांणी समकै नहीं॥ दादू सुगध गंवारा॥ १३॥ काघ
१५२ रकी क्या पारकी॥ नारी नरकसमांन॥ नाथ कहै ते कबरे॥ जिनि पायाब्र्ह्न गियांन॥ १४॥ क
बीर पर नारी पर सुंदरी॥ बिरला बंचै कोइ॥ षातां मीठी षांड सी॥ अंति कालि बिष होइ॥ १५॥ क
बीर नारि पराई आपणी॥ भुगत्यां नरकहिं जांहि॥ आगि आगि सब एक है॥ तामैं हाथ न बाहि
॥ १६॥ साषी॥ दादू जिनि बिषषा याते मुये॥ कामि राते राम॥ आगि पराई आपणी॥ सब करैनबेर
॥ १७॥ साषी॥ आपणां पराया षाइ बिष॥ देषत ही मरि जाइ॥ दादू को जीवै नहीं॥ इहि भोरैं जिन
षाइ॥ १८॥ दादू जिनि बिषपी वै बापुरे॥ दिन दिन बाढै रोग॥ देषत ही मरि जाइगा॥ न जिबिषिया
रस भोग॥ १९॥ दादू जिनि षाया ते मुए॥ जीवै नांही कोइ॥ के पपराया आपना॥ मरन ज वकोहोइ॥
२०॥ दादू जिनि बिषषा याते मुए॥ जीवन कोई न होइ॥ जुरी पराई आपनी॥ मारि मरै सब कोइ॥
२१॥ दादू स्प्पि पराया आपनां॥ तोडि जीव कौ षाइ॥ लहर्यु चढै तब हीं मरै॥ नारी नेहन लाइ॥
२२॥ पर आपनी तैं क्यं जे॥ देषत ह्यत न माप॥ बिटिया हूं सौ नां करै॥ कारज बिन आलाप॥ २३॥ ग
रही मन नि बेराग की॥ बैरागी अति गाढ॥ दित करि कै देन सो सूनें॥ जगनाथ ह्वयपाढ॥ २४॥ सायर राम
रूपत रांड़ छि॥ नासिक सहूजु साढि॥ बिरही बी हिय बचमन लिया॥ फोल्लत करम कताबिरयाबि १५२

षि सुत आली बदन परि॥ सो नासैं लटकंत॥ मन नधु जासि कंदरी॥ पंछी कौं बरजंत॥ २५॥ शाष्टी॥ अ
वधूत रकांकै सूर॥ जहं दिहू के माइ॥ बदन कै म्याई ला जोगी के सबै माइ॥ सत्य सत्य भाषंत श्री बालगु
कांइ॥ ती नत्त्र त्रषणु तो भष्या न जाई॥ २७॥ साषी॥ सुनि सुनि बात न कौं की॥ मन मैं षरा षराइ॥ बिद्याइ
नी मूरहै॥ घर मैं घरनी लाइ॥ २८॥ दादू फूटे तैं सारा भया॥ संधे संधि मिलाइ॥ बाड़ डि बिषै न सूचिए॥
काब ह्त्य फाटि न जाइ॥ २९॥ दादू नारी नैं न नदेषिए॥ मुष सौं नांव न लेइ॥ कांनो कौं मणि जिनि सुरो॥ यहु
मन जांण न देइ॥ ३०॥ पुरष पलटि बेटा भया॥ नारी माता होइ॥ दादू को समकै नहीं॥ बडा अचंभा मो
हा॥ ३१॥ माता नारी पुरष की॥ पुरष नारि का पूत॥ दादू ग्यांन बिचार करि॥ छाडि गए अवधूत॥ ३२॥
जे जन कांम निपरहरैं॥ ते हरि है ग्रहदास॥ दादू बांधे मुषि नहीं॥ रहै निरंजन पास॥ ३३॥ तिरिया त्याग तह
सु वन॥ जगनाथ आधीन॥ नारि नेह मन र कर तहीं॥ जन जन आगै दीन॥ ३४॥ या सुष सर भरि नांहि सुष
त्याग तत रूनी साथ॥ दिल दियैं हूं जांनहीं॥ दुष दीरघ जगनाथ॥ ३५॥ सत संगति गुरु सरलयें॥ सुमर
न सा संसास॥ छस्म मयतिजगं नाथ लगि॥ करै बिषै का नास॥ ३६॥ चौमुषी॥ नारि नेह नांहि न करै॥ ग्या
रि गुमान न जाइ॥ नारि अपुन जगनाथ जन॥ चारि पदारथ पाइ॥ ३७॥ साषी॥ जाइ कोटि ब्रह्म मछिन॥
इहिं अनुकम मंके आइ॥ तक न भंपै भोग सुष॥ हरि जन जिवमैं न पाइ॥ ३८॥ कबीर कांम निस्लंग बिकै

सिसियाविकृ०

गुणअंग नभया॥ रस भया हरि नांइ॥ साषी गोरषनाथ जं॥ सिध सदा कलि मांहि॥ ७९॥ कांम मिल्या वैराम कों जे
१४४ कोजांनै राषि॥ कबीर विचारा क्या करै॥ सुषदेव बोलै साषि॥ ८०॥ विषिया विरकत ब्रह्म व्रत दि
ढ़ि रहै निजजन साथ॥ जग मैं सुष सुष सौं मिलै॥ जित इंद्री जगनाथ॥ ८१॥ इति सपूर्ण॥ १९॥ छद
पद॥ सील महिमा मसाल्मण॥ साषी॥ नमो नमो गुरदेव कौं॥ जन मन पोषै सोइ॥ महिमा सील समात
मैं॥ जगनाथ जपि होइ॥ १॥ चौमुषी॥ सरै कांम मन्या हिन सरै॥ धरै धर्म जगनाथ॥ करै मरै रे सुष मां नर्दै॥ मैरे म
जनका माथ॥ २॥ साषी॥ परि अरियारि षरियौ भलो॥ मस्त रस रुविषषाइ॥ स्यांन घात जगनाथ वर॥ ३॥ य
होन सील मिटाइ॥ ४॥ सील मग ऐन रपर दै॥ सुजन गुरगोविंद॥ जल बिन सर जगनाथ तजि॥ षष जरन
चरस रिबिंद॥ ५॥ हरि सन मुष नर सील सौं॥ विमुष सीलकौं लोपि॥ जगनाथ संसार मैं॥ सी... जवंत जन
कोपि॥ ६॥ जती रेत वृंदा चिगै॥ सूरमी रसुष जाइ॥ जगनाथ महिमा मिटै॥ मेरे सुजन जन पाइ॥ ७॥ ब
दन मरिषी वस्त कौ॥ राजत तन मिस्रा नंद॥ निसमौ जगनाथ जं॥ पूरन निरमल चंद॥ ७॥ जत राषै
जग दी मधै॥ ज्यागुरकर माथ॥ सुंकाकल संसार की॥ सोकधनि जगनाथ॥ ८॥ सुषदा मा सब लो
ककौ॥ सील विराजत काहि॥ अगनि नीर गिरि सिंघ सर्प॥ विष व्यापत नहि जाहि॥ ९॥ साधु पुरष पि राम
रयो म दी॥ सब प्रीतम मुष तांहि॥ सीलवंत जगनाथ जन॥ सो अजरा मर आहि॥ १०॥ मीच मुष तें दे १४५

सील सौं॥ भीष मजन किन जो इ॥ जगनाथ जन सुजतं मैं॥ अरु अजरा मर होइ॥ ११॥ किरिया जगत जम म
हि जे॥ सो न सीलकै साथ॥ जगनाथ जाहि जे दन॥ मातिसति गोरषनाथ॥ १२॥ जगनाथ प्रगट स
दा॥ गोरष जती अनादि॥ जन सत जपि निजु जनकि तै॥ उधरे ति निपर सादि॥ १३॥ स्वांमि कांम मैं
नित रहै॥ जन मम जती हनवंत॥ जगनाथ ज्यां घ्यों जुली॥ जत बल जम अनंत॥ १४॥ जती रत्ती राज
त सबै॥ साषि सकल संसार॥ जगनाथ हनू सेवजन॥ इष्ट अधिक अधिकार॥ १५॥ लछिमन लछि
जगनाथ नर॥ सदई सत संतोष॥ महिमा लोक परलोक मैं॥ रहति सदा निःदुष दोष॥ १६॥ नर धरै
यरा तिनु रथ कौ॥ अरथ नहीं परवेस॥ जगनाथ सुष सुषु धिक्र ति॥ जनक मांनि उपदेस॥ १७॥ पर
रजती गोविंद हित॥ मुनि रिषि धर्म नध राहि॥ जगनाथ सुर सीलतें॥ सब समांन कराहि॥ १८॥ जत र न
षत मेटी जुरा॥ मन मथ सेवग सोइ॥ जगनाथ जपि हरि अम्र॥ षड मुष षट बिन होइ॥ १९॥ इंद्री स
मट तन सील सौं॥ मन सो कहीं न जाइ॥ सुरति निरति जगनाथ थिर॥ अगवंत सजन कराइ॥ २०॥ सु
मरन सो हत सील सैं॥ सुफल तप्य स्याहो इ॥ आदि क जगनाथ जग॥ जत पूरै सब जोइ॥ २१॥ चै
बोल्या॥ मन मथु राषे जीति बसि॥ जन का सील सुभाव॥ माया जाया नां तगै॥ द्वारिका लम दिहाव॥ २
२॥ साषी॥ सील वंत जगनाथ जो॥ मस्त रहै ताहा थ॥ कालर जानत मांहि निति हिं॥ महाराज जिहिं मा

सीलमर्दि मोमहात्म०

गुं०अं०
२८५

थ॥२८॥दूनिसंपूर्ण॥ ९ ॥ श्रु० ८० बेपरवाहदार सां ॥ साखी ॥ एकै सबद अनंत सिष ॥ उसम
तगुर बीले ॥ दादू जड़े कपाट सब ॥ दे कूची मोले ॥ १ ॥ साखी ॥ बिनही की या दो इ सब ॥ सनमु
ख सिरजनहार ॥ दादू कारिकारि को मरे ॥ सिष साखा सिरभार ॥ २ ॥ सूरज सनमुष आरसी ॥ पावक का
याप का ॥ ३ ॥ दादू सांचे साध बिचि ॥ सबद जै निपजै दास ॥ ३ ॥ दादू पंचों एप स मोथिले ॥ इनही को नृप देस
गुरु मन अपनां साथि करि ॥ मोचेला सब देस ॥ ४ ॥ मांन सरोवर मांहि जल ॥ प्यासा पीवै आइ ॥ दादू दो
स वहीजिए ॥ घरिघरि कहन न जाइ ॥ ५ ॥ सूकल सिरोमनि रांमधन ॥ पोतो दियान जाइ ॥ जल प्यासा
कै जाइ घरि ॥ किप्यासा पीवै आइ ॥ ६ ॥ डरनि बिवड़ा न बुध्या रयी ॥ कहुं अनपूरे घरि होइ ॥ जेमल छांदे
पाइ ॥ ७ ॥ देत न फिरई कोइ ॥ ७ ॥ सुफल बिरष तादि अमर फल ॥ जेमल लागा होइ ॥ पिषे घरिघरि देत
फिरे ॥ किहं हे पावे कोइ ॥ ८ ॥ मांणिक मोती नीपजे ॥ जे मल समंदर मांहि ॥ समंद को कूआ निदे
॥ किके ई लेबा जांहि ॥ ९ ॥ इत्र दरियाव लेतिरे ॥ नाव उतारे पार ॥ आइ बैठ मांहि लेतिरै ॥ किलाया के
लेवा सा ॥ १० ॥ घरिघरि कहता फिरै ॥ पारस पूरा साध ॥ छीवत लोहा कनक कहै ॥ कटै बड़ अपरा
ध ॥ ११ ॥ ८८ ॥ इं० ८१ बेपरवाह जाचक मांमिण ॥ साखी ॥ मांन राखिबौ मोगिबौ ॥ पिय संग नित मखूने
इ ॥ उरसी ती न्यो तो बने ॥ ओ चाहत गभ्रत लेइ ॥ २ ॥ जल संग्रह जाचै नही ॥ सीस नाइ न हिं लेइ ॥ अंबे

मां नी मांगि नै ॥ को बाधे बिन देइ ॥ ३ ॥ साची सब संसार महिं ॥ चातक को अभिमांन ॥ कै जल जाचे इंद्र
कं ॥ कै दृषा बिसू चै प्रांन ॥ ४ ॥ अभिमांन रसन मांनये ॥ जाचि कत दांन जोनि ॥ जगनाथ को जांचि
के ॥ मुड़ं देस की कांनि ॥ ५ ॥ जो अजे जल कपि बहि ॥ जिन हिं न अमी पियास ॥ जो मिरा सप्रभु तैं भ
ये ॥ तिनहि की नकी आस ॥ ६ ॥ कंचर वोहन बेमसन ॥ कृष्ण चरन चित गाइ ॥ दर दर मोलन मह्न
कहि ॥ साधी चढै पोति कांइ ॥ ७ ॥ आन्नि अतिनी कीन ही ॥ जाचंपा जगनाथ ॥ घरघर की भिक्षा मन
लये मवरी हाथ ॥ ८ ॥ कौरपंच लेजार कटी ॥ केवल हरि सो प्रीति ॥ मन मोजन आधीनता ॥ जग
नाथ बिपरीति ॥ ९ ॥ तिन संथ रप्रान्नि नहीं ॥ जगनाथ पद लीन ॥ मोरि सपे दी सुष कहा ॥ जन जन
के आधीन ॥ १० ॥ जगनाथ आधीनता ॥ एतै बिपति न काइ ॥ महा अमोलिक आदमी ॥ कोमी को दर
जाइ ॥ ११ ॥ कबीर सत गांठी को पीन हैं ॥ साधन मांनै संक ॥ रांम अमल माता रहै ॥ गिनै इंद्र कों रंक ॥ १२
॥ कबीर सीगा गयो नां म मधुकरी ॥ भांति भांति कानाज ॥ दावा किस ही का न ही ॥ बिन बिलाति बड़राज
॥ १३ ॥ मांगन मरन समान है ॥ बिरला बाचै कोइ ॥ कहि कबीर रघुनाथ सो ॥ मति रु मगावै मोहि
॥ १४ ॥ जाचें कछु न पावई ॥ अन जाचे सब ही इ ॥ जगनाथ परतक्ष्य है ॥ कर कर अंजर जोइ ॥ १५ ॥ कबी
र ॥ नगनाथ जाचि
कर कस्मात कौर कौ ॥ जगनाथ को देइ ॥ पौवर रहै गुमान मैं ॥ ले हल लेइ न हिं लेइ ॥ १६ ॥ जगनाथ जाचि

गु०अं० गत गोंं ॥ निफ्वल रहेन चित्त ॥ पूर्व जैप छिम फिरै ॥ कारी कों न जैमित्त ॥ २४ ॥ त्यावब बच न की त्यों लग
१४६ ॥ नां हि न मिकट सुझान ॥ जगनाथ जगमाहि को ॥ त्यावरजगनिसिदिजाम ॥ २५ ॥ त्यावली नृसब दो
तहैं ॥ नांहि नांहि सोदीन ॥ जगनाथ कुग दैष्यै ॥ सत सुष दुष आधीन ॥ २६ ॥ पंमित अरु ग्यांनी गुनी ॥ अ
तिजगनाथ प्रवीन ॥ जो न पनैं जगादी सबहि ॥ सब माया आधीन ॥ २७ ॥ जन मसुफल जीत बने है ॥ पर आ
धीन न सो इ ॥ जगनाथ जीव न हथ्था ॥ परतंत्री नर सो इ ॥ २८ ॥ ब्रह्म विष्नु सकल साम्रा मिहि ॥ पराधीन सो
वाहि ॥ अयत निमैं जगनाथ तै ॥ सुतंत्री सबका दि ॥ २९ ॥ मन जीते जगनाथ सो ॥ माया दासी ताहि
ताके तीनू लोक बसि ॥ जो मारे मन चाहि ॥ ३० ॥ कबीर जाचन जांण ॥ आगे मिल्या अजहु ॥ लेचा ल्य
घरि आपनै ॥ मारी पाया सद्ध ॥ ३१ ॥ इति संपूरण ॥ ३१ ॥ छ ॥ अथ जाचक अंग साषी ॥ सम्म म बरु जंगम आद्य
मांगण कौं परद्वार ॥ मति कम्हू किसम ति घटै ॥ सांई के दरबार ॥ १ ॥ व्यास आस के मांगि ॥ हरि हरि हर
सो होइ ॥ बांवन क्षे बलि पै गये ॥ जांन तहैं सब को इ ॥ २ ॥ मांगें गोरा तन घटै ॥ मांधे मांगि न धीर ॥ हरि बिस्वंभ
र मांवतौ ॥ सुबांवन धरयौ सरीर ॥ ३ ॥ मांगें नली न हो इगी ॥ मांगें हो इ सरम ॥ अजित अरसं क जु होवली
मांगत लगान रम ॥ ४ ॥ म सत दसू सर मांगणौं ॥ बसंत जग निकस इ जीष ॥ पांनि प चा है आपनी ॥ तो पांन
मांगि न पीव ॥ ५ ॥ जग न सम ही पीव दन विथि ॥ कंच हि ल्या ज सुबैन ॥ जजं जाचै जीम कछु ॥ सत्त सक १४६
बेपरवाह जाचक मांगि

चहि नैन ॥ ६ ॥ जब लग मीत न मांगई ॥ तब लग अधिक सनेह ॥ कडुवा लोगे नीब सा ॥ जब हि कहे कछु देह
॥ ७ ॥ मांन महातम पेम रस ॥ अरगार दात न नेह ॥ ए तौ तब ही तै गए ॥ जब हि कह्या कछु देह ॥ ८ ॥ मांहि दिव
कौं मालू म सब ॥ अवन अदर सौं अषि ॥ मांन रतन नृ निर मोल है ॥ बज्जत जतन करि राषि ॥ ९ ॥ मांण मम्
किसि यत्ति मरि सि ॥ मरि सि सिम म् किसि मारण ॥ ताक बिह कबि तो लियो ॥ तक मो लि मह गो मांग ॥ १० ॥ दे
हन रहै संदेह नहिं ॥ देहन कहि कछु देह ॥ जगन लैन की लाल सा ॥ तौ रांम नाम कि बलेह ॥ ११ ॥ सदं
॥ देहदेहन आषे ध्रनी ॥ नांना कारन लेव ॥ बेपरवाह परम सुष जोगी ॥ अलष निरंजन सेव ॥ १२ ॥ साषी
॥ सब तै लघु वो मांग णौं ॥ सम मन य दे हि विचार ॥ मांगण की मन सा करै ॥ पत कनत मे पद्धा र ॥ १३ ॥ मांगें एती कहै
लिहै ॥ कहि की ल्हा सम काइ ॥ अन मांगै पर बतत है ॥ मांगें हल तल्या इ ॥ १४ ॥ बज्जत गई थोरी रही ॥ ता हू
मांक घटी इ ॥ सम मन ए ते कौ जक्को ॥ को का हू के जाइ ॥ १५ ॥ जाचिग अरु आधीनता ॥ जाय टि बासो होइ ॥
जगनाथ जीवत न दं ॥ मतक समिहै सोइ ॥ १६ ॥ चाहि आहि संसार मैं ॥ पांन घात नी बीर ॥ आप ड षी जगना
थ जे ॥ कंमे टै पर पीर ॥ १७ ॥ साषी ॥ इंद्री का आधीन मन ॥ जीव जंतु सब जाचै ॥ तिणें तिणे के आगे दाइ
॥ तिहुं लोक फिरे नाचे ॥ १८ ॥ साषी ॥ इंद्री अपनै बसि करै ॥ सो काहे जाचन जाइ ॥ दाइ अस्थिर आतम
॥ आस गिंबै से आइ ॥ १९ ॥ चौपई ॥ साध स्वरयं षी अरु पंमित ॥ दुष सहै किं हिं काज ॥ जहां रहैत हां आदर

गु०३१० महिमां ॥ सदविद्या सकसाज ॥२०॥ साषी ॥ सिंघ भोमि सैरि नहीं ॥ मणि गुंमतक कछु नांहि ॥ परि जकहै
१४७ सिमिलाप की ॥ साधन सोचै मांहि ॥२१॥ दादू राम बिनां मन रंक है ॥ जाचै तीनूं लोक ॥ अब मन लाग्या
रांम सौं ॥ तब भागे दालिद्र दोष ॥२२॥ इति संपूर्ण ॥२२॥ ॥१२७६॥ चितवनदार दातारण ॥ साषी ॥ स्रष्टा श्रीरा
साधु रस ॥ जे ब्रितहीणां होइ ॥ सुक्रत तबा सन छाडई ॥ सूका संदल जोइ ॥१॥ नूर हरि यां बिंदलि छब सि-
कर्ड़ी तज समंपीन जोग ॥ जो षनदी जल सूकि गो ॥ छुवांष नै सब लोग ॥२॥ सबदी ॥ दाता डबरीया इस मिमं
गि मबछरा थ्रमसदी ॥ दरबि हृषि जौ दीनषी ॥ तकं पुंन्य पपावदी ॥३॥ साषी ॥ दाता दीन न न्यामई ॥ संप
नि बिपत्ति नुदार ॥ कबीर रन्मा पन पेकछ ॥ देत न न्यां देवार ॥४॥ दाता के दूजो नहीं ॥ उररसमां तपय
रे दाद्य मन्म्रहदै दांनतै ॥ गिमै म बारक बार ॥५॥ कबीर दाता दिल मही ॥ मति सुनदार न्यापार ॥ योम
क सब निज बिरछ जे ॥ बहु बिधि सुषतप गार ॥६॥ आसन देता मासन दै ॥ अन न मईवेब... ॥ घडवडै
को नांपये ॥ किम जतणी तुतेत ॥७॥ सोरठा ॥ कोई मांगे हाथ ॥ करन लेइ सो मंहिरौ ॥ चित नउदार जगनाथ
मिथिन छिप्रबके नहीं ॥८॥ साषी ॥ ब्योमधोर को सबनि को ॥ दोहि मांगु दे हाथ ॥ धरदि सिकर सम सुषकै रै राम
नेबिरला जगनाथ ॥९॥ सतगुर रन्पस्वांमी बदि ॥ करहि तुकर परहाथ ॥ लेहि सुलप बजंदै नकै ॥ अरु दी पृ १४७
रछि जगनाथ ॥१०॥ करपर करकी मो सही ॥ लोमो हि बुचा जोइ ॥ दीमो दादू दास कै ॥ दसदीर छिलगोइ

॥२१॥ सोधी ॥ बहु जगबालीतांह ॥ बालीती बोलीनहीं ॥ तैं नूं दसं की नाह ॥ कलीधरन्याएकरमा ॥२२॥ चोमुष
॥ कपिमन स्त्रहटौ दांनतै ॥ करन कियो जगनाथ ॥ कसी सुमत सबि सबदयो ॥ कमीक दत तिन हाथ ॥२३॥
साषी ॥ नथिमजिधन न्यागोध रूपो ॥ प्यारो भयो सु आइ ॥ जी सन्न्रषथदातार कै ॥ दद्दो रहत इहिंभाइ ॥२४॥
देह बचन दातार समृ ॥ निजपत्ति बसेसु कांइ ॥ तन धन न्याग समरुछि छुया ॥ जगनाथ इहिं भाइ ॥२॥
या जगनमांनिकी कांमिनी ॥ मांनत स्पो इहिं भाइ ॥ नांहि सुहातिन मांहकै ॥ शिसिभैं करही सुजाइ ॥२॥
नमन्नहिर सबतैं निरस ॥ सुनत तरुपजि श्रमहेत ॥ पतिब्रिनयत नी मुखे जगनाम ॥ सो मन सो सादेत
॥२७॥ एके नांमप्रणामपृथ्य ॥ एके मातस्त्रमेर ॥ घरदीये स्त्ररुक्करदीये ॥ कजुलनजुलफेर ॥२८॥ देव
संत ज्ञाचक प्रगट ॥ दीन हरूदे पात ॥ तातैं फूलत फलतु है ॥ दयो स्त्रनंत न दी जात ॥२९॥ दयोहा
थ के रेमीया ॥ काबकं न निपटत धन ॥ ब्याख रिजन तैं नां घटै ॥ बांधन बाढेतन ॥३०॥ धनीं का है धन
बांटिये ॥ जैं कू वाका नीर ॥ घाटी साधुरिसां तरीं ॥ सबका दूकी सीर ॥३१॥ संतिकै मारगि चालतां
सत्पञाघ मांन्याव ॥ आवैलछी बाजुडे ॥ आवै लछी जाव ॥३२॥ चौपई ॥ घातक पूर दांत जो छुटै ॥ अं-
जन करत नैं न जो फूटै ॥ घरचत षात जाइ जो लछी ॥ तौ जाजु जाजु जि भिक्षा बोपछी ॥३३॥ सा-
षी ॥ माया देषि सधरिमी ॥ घरचत संचै नदा थ ॥ मन मुष मेलै नां करे ॥ चित नउदार जगनाथ ॥३४॥

ग्रं॰पं॰ १४८ पुर्ष

दोषौ त्याटि न मांभिकालु ॥ चित उदास विन त्याग ॥ जगनाथ सनंद नेनको ॥ मन में अधिक अनुराग ॥ २५ ॥ चित उ
दास चिंता यूं है ॥ कबहो टै कछु देव ॥ नाहि वंछा जगनाथ यह ॥ अब दे अगो लेव ॥ २६ ॥ पूरन सतगुन्य पिछ व
करि ॥ जगनाथ जे पूरा ॥ तिनका कंवछ न करि सके ॥ अघ उ बमृति विशेष ॥ २७ ॥ इतिसंपूर्ण ॥ २४ ॥ ३
न दक्ष ॥ बकुदंन संकोची रीफ दत ॥ साषी ॥ साधु रिसांसे दंत का ॥ समीं दस अ समीं कोइ ॥ बामनि पैरांम
बनी षग ही ॥ जो दंत किये सु जोइ ॥ १ ॥ ति एपोहलिपत्र पांगु रषिां ॥ दलेफलो सुअहार ॥ इणिं अस स
हरि लेकटो ॥ राषो कछि बि आचार ॥ २ ॥ बसकान पहर न फास अघन ॥ तिण सि ज्पाबन प्रीति ॥ तणिं समय
लेकाद है ॥ रघु कलियां सरी रीति ॥ ३ ॥ देत सकल सुष साहि ही ॥ सौं तिहजरि नखंनि ॥ यातें अंमें गांम
प्रभु ॥ मैं सं कोची दांनि ॥ ४ ॥ सूर असें जल वोट घन ॥ सम क्यों जगनाथ कि मांहि ॥ बकुप्रताप परिषत त ।
नका सु कवि सो तन मन मांहि ॥ ५ ॥ दरिवद रद श जचम को ॥ रीझिकदा देरंका ॥ जगनाथ सो नांकरे अ
यो सो पत संका ॥ ६ ॥ रीझि दाहि जे देत है ॥ ते न रज गमें जांन ॥ दांन मांन संसार में ॥ दे लो कपरवांन ॥ ७ ।
जगनाथ सबै सत जे ॥ देही दे निदांन ॥ सो पटतेरि मंदी और को ॥ जन जगदीस समांन ॥ ८ ॥ रतन अमो
लिक राखि को ॥ जतन करै जो कोइ ॥ तन धन जियमो बेस है ॥ जगनाथ कर षोइ ॥ ९ ॥ रीके श्री गोरख जती राम १४८
॥ मन बच किर पा किइ ॥ जगनाथ औघर भए ॥ अनंत सिद्धां में सिद्ध ॥ १० ॥ पर सिध साध कबीर जी ॥ पी

पो पन करि सी कि ॥ जन जांनै जगनाथ जग ॥ रांमानंद की रीझि ॥ ११ ॥ रीक मांन छै देत किये ॥ बाबे बहै
सो इ ॥ दीनों स्याइ दास कों ॥ दयाद तस अति सोइ ॥ १२ ॥ रीके जि मिय रिसाध गुर ॥ सिष से वग जन कोइ ॥ ज
गनाथ नधरे किते ॥ सास धांन सब दोइ ॥ १३ ॥ बमीरीक जगनाथ यह ॥ हरिजन गुर मि जदेत ॥ इ त
आयो आपु मन सों ॥ बांन अभेमा देत ॥ १४ ॥ इति संपूर्ण ॥ २५ ॥ अथ ॥ किरपन अंग ॥ साषी ॥ जे जलबा है
मार में ॥ ते धन बाढत धांम ॥ दोऊ हाथ उलीचिए ॥ यहै सयांनों कोम ॥ १ ॥ जे से मोरी माल की ॥ पालि न
फूटन देइ ॥ ऐसे ही धन धमते ॥ चोर न राजा लेइ ॥ २ ॥ छूटै बाढ़ें अंचनां ॥ काटे बाढे बेरि ॥ दाता बा
है देवही ॥ यहै कहत हूं टेरि ॥ ३ ॥ सेक संपति बेलडी ॥ रही सकल जग छाइ ॥ एक गुणी जे काटि ए ॥
सदेस गुणी गह राइ ॥ ४ ॥ आवे किर षि दिन कंवरा ॥ सुकृत बीज सुफाल ॥ जदं जदं करकाया
काया ॥ लहल हे परिया ई गाल ॥ ५ ॥ परनुपगार न करि सक्यो ॥ गहरी राषी गांमि ॥ दाता दे पैले गयो
से सच ज्यो सब छामि ॥ ६ ॥ माया गाम्री संसकी ॥ सकै न आन गमारि ॥ पांनि पर्दै सय दै स कों ॥ कबहूं नां
हिमिका रि ॥ ७ ॥ कारि पकरत करपा कोरे ॥ मूढ़ीत जप साथि ॥ जगनाथ न रहा टे फी ॥ कहू गांठि को मारि
॥ ८ ॥ नी सकी कोडि परमार थि षरची ॥ आंने पंछी जाइ ॥ बीमल दे की बीस कोडि ॥ रही जपृथी मांहि ॥ ९
॥ माया संचे मांमवी ॥ षरचि न षाइ जाइ ॥ नौ निधि राजा नंद की ॥ रही जपांणी मांहि ॥ १० ॥ लछमी लेषरतीध

गुं०४० १४८

री॥ अथ दासे रव समंद॥ सो निधि भर श्रेसे न जे॥ जैसे मत्र नृप नंद॥१॥ पे निधि मांहि पवे सको॥ किपि
न मनि सो ली न॥ मंद अध जगनाथ जलि॥ स्वारथ समें सही न॥२॥ देष म छंदरी मीन दी॥ गाहरी य
श्री गोइ॥ पापी पूर्व जनम को॥ कदे पुंन पको होइ॥३॥ और रंक कों उपगार कछू॥ मते न षाई आप
॥ माया ऊपर वेलि है॥ किपि न को के साथ॥४॥ मुहर सुमाता करि गने॥ पिता रूप यों श्रेन॥ जो लोंद सीम
दे पड़ी॥ तो लों दी चित दें न॥५॥ दिन तो रोषे दृष्टि मंहि॥ राति न त्यागहि श्रषि॥ छाती तरे धरे रहे॥ अ
श्र मनि कों पषि॥६॥ ग्रां म नगारे पद्म मी धरे॥ को लेंदे संगदांम॥ संकार पूत न बली अली॥ इहां मरे कछु कां म
॥७॥ किपिन को कस दे सदे॥ बात विचार ज देव॥ दाम मूढ के मांझ है॥ माया निकसे कीव॥८॥ मान
रूपन को वा दुहे॥ सो साढे न दिं को इ॥ मेलि कर समें मूढ हुी॥ प्रमन्न जु संगमलोइ॥९॥ क संगा कदु
द्वे मांपरे॥ श्राइ वे विवि विजा इ॥ माया कारे सापसी॥ जे छेरे तो षाइ॥१०॥ क्रपन माया आपरा॥ छुबन
न काहू देइ॥ प्रमि दे मांथे म पके॥ मारि सलें को लेइ॥११॥ क्रपन को धन क्रप जल॥ दो क्रप के दे वीर
॥ गोरो बांधि श्रों षे चिप॥ तो कछु निकसे नीर॥१२॥ जगनाथ धन क्रपन को॥ कठिन करें जे जांनि॥ उपा
मों तें ग्राज ॐ ग्र कों॥ पस्यें परत है पानि॥१३॥ माया निकस्त विषम है॥ अदली दिल ते बीर॥ जैसे याद री राम
पूरी की॥ जगनाथ जलसीर॥१४॥ रीक्त न भीजत न मांहि नै॥ अ [illegible] इति अ सम अत्र नेहि॥ जैसे हिरा मछु वे १४६

न॥ सकें न को कुछे दि॥१५॥ दयें क सों टी आ जइ॥ पाथ र पर घलु होइ॥ क्रपन मरि फैर्वे कलिम दी॥ ज
ग नाथ न हिं को इ॥१६॥ क्रपन सोंदा राम सों॥ कियो न सुकतें मांनि॥ ल्या हे कारनि आपनों॥ मूलय
ग्राये जांनि॥१७॥ सोंगे॥ गोरी गोरस रांद॥ वा सो आइ वे वें न ही॥ संपति सो जमगांह॥ दाटो आधी दाद
वा॥१८॥ सषी॥ षाटि भ जो नां ग मिया॥ जिमि ष दा मांहे॥ वायु लि होइ बिलं बिया॥ न को धरमांहे॥ र
॥१९॥ साषी॥ माया का या उग्रिया॥ साहू जे रम मांहि॥ आडि जवा अ लि बिद रसे॥ छाती ह्नगी मांहि॥२०॥ भ
नेले धरती मंहि धरयो॥ क्रप रि दी मो धूरि॥ बाजी दवात पुनि दांन की॥ क्रपन कें न हिं मूरि॥२१॥ सो
यो॥ दी जा बिरा गी मूलि॥ घरिगां गामी पोप रसदी॥ नरा मु मिया दी धूलि॥ घण त जे षे वी आप दिस॥
॥२२॥ साषी॥ जग मन जा निं जि हि लद्दभी॥ नदी नदी के ती र॥ ता तेता तेते फिर हे॥ लटे फटे तन चीर
॥२३॥ नदी बहंता दपडं॥ पषालिया न जे रो॥ तन मन धन जो बन गयो॥ कैप छि ता वो तेरो
॥२४॥ सषी॥ राति अंधेरी वी षलो॥ आ टो बी घरि यो॥ जो पी संदो फकि यो॥ वो टा कव रियो॥२५॥ साषी॥ कव
जन करंजे वो करे॥ क्रपन संचे वीर॥ मांम कजा नों बेपा ठि कैं॥ पायो देव सरीर॥२६॥ अदाता रां की आपडी॥
चकूपर कारें जाइ॥ तन मकरम सु से कि धरर हे॥ राजा लिए किल्लाइ॥२७॥ कट कस अली तो रान मंड॥ चोर मुसेम लाइ
रि जाइ॥ पलाइ मडु नियां सदे॥ हरि मंड सथान जाइ॥२८॥ क्रपन अपनें हाथ करि॥ को मी केज नदेइ॥ चोर

गुंभो॰ जाइ भ्रम का इके ॥ केरा जामंड रते ४॥३८॥ कहूं बिका सराष्यो मही ॥ कपन संची कोरि ॥ ताल जब हिंस
२५८ प्रसरयो ॥ पाल जे लिय यो फोरि ॥४०॥ अदत और के सुमन तही ॥ आनंद अदती सोइ ॥ द्यामा देषत भरह
जगनाथ जो होइ ॥४१॥ अदेवां अम्मर सम्मर ॥ ताषी इम लामंत ॥ आपण को अलषां वणी ॥ जेम मधु देणं
की कंत ॥४२॥ देहव च न टयू सं मकी ॥ कहे न आन हिं एह ॥ जगनाथ हित पीय के ॥ नां तबि माल्यौ
देह ॥४३॥ कपंन काया कष्ट सहि ॥ माया मिल सत जाइ ॥ असमबस न जगनाथ मन ॥ पहिरे बाइ मुभ
द्राव ॥४४॥ कपन मरयज्ञ कपज्ञ ॥ अन्नपानी भले छैं तेज ॥ मति कं इपघटि संचरै ॥ मन आदे कहुं देंज ॥
४५॥ सूंम सम दूयू सो संग्रा मरै ॥ सब डुष अंगीम सहाइ ॥ प्रतित्याग सुत कपजे ॥ मो संचो धन घाइ ॥४
६॥ दुहुं भांति छोल तफिरे ॥ आने यो कछु राष ॥ फोरे कल्पफल गोनितें ॥ तासों कहा बसा ॥४७॥ वो जांमो वार
लोक हा अदे सांघरां ॥ जा सी मांव निघट ॥ जांणि पपे रूप क्रिया ॥ ताली इडी मन बेट ॥४८॥ लालकं ॰ इकताल
मैं ॥ मया भिरां णां माल ॥ बिमत गेन माग या ॥ अमकुर साह ज ल ताज ॥४९॥ कपन धन नालेर गिर ॥ जीम
तकहीन देह ॥ मरति संग तै होइ जब ॥ सब को ई बिल लेह ॥५०॥ धन माया जो होइ घर ॥ लछमाया
सों मेल ॥ जु जब तिका पै अपै ॥ अपबा म सों केल ॥५१॥ मोषी ॥ लागै लोत तणां हा ॥ अरला दीर्घा कंति प ग्रम
मनमी सरिमूकां हा ॥ पारा प्रपै से कही ॥५२॥ श्री मरि आ थिथि यां हा ॥ नी गमियें निर सामीयां ॥ मांक २५०

हा हिग यांद ॥ बले वि सा होला सती ॥५३॥ साषी ॥ पले होइ सुद थकरि ॥ हयो होइ सुमेह ॥ औ दटन
बांणियां ॥ मंन कलेणां होइ सुलेह ॥५४॥ साषी ॥ जेहि तातें जिता ॥ जसु लिंइ कितां ॥ जेसास्यो तें हारुयां ना
कज सेषफरी दपियां रुयां ॥५५॥ चोबोल्या ॥ देहदांन कर दो हिंमे ॥ बाइ कगुर के मांनि ॥ मन सामाया ॥
सुफल सो ॥ मीरम जय में जांनि ॥५६॥ साषी ॥ अरथया इधरम हिंथरे ॥ कांम सरै जगनाथ ॥ मोछिम हाम
वा रगिर है ॥ चारिपर्थ हाथ ॥५७॥ रक्या सज्जधम दयौकी ॥ करि एक्क तदांन ॥ स्सर मर उअ आदि कअल्प
काहि दसैं बहरांन ॥५८॥ बूंद बूंद जं घट भरै ॥ तिलतिल बंबी बढाइ ॥ जगनाथ धम धमेंय ॰ नी मुबच
न बिरक्षाइ ॥५९॥ इति संपूर्ण ॥२१॥ ... मन मुषी मांनि बडाइ ए ॥ साषी ॥ अपनी कीरति आप मुषि ॥ री
सया बक्जन कहंत ॥ फीके लागत कमचकहि ॥ जं कचहया गहंत ॥१॥ घो जी आपसरा हतां ॥ ती निंघो
क की घात ॥ बुधि वो ढी बाचा अफ्ष ॥ आसरव्या घटि जात ॥२॥ बहकिब माई आपनी ॥ कत राचित म
तिसूल ॥ बिन मधु मधुकर के हायें ॥ गमेन सुइहलपफल ॥३॥ जिन दिन दे षे दे उन मा पाई सुबी तिब
हार ॥ अब आलि रही गुलाब में ॥ अपतिकाटी री मारा ॥४॥ बसे बुराई जासु तनु ॥ ता हि कौंन सम्मांन ॥ भले न
भलो कहि छांफिये ॥ छोटे गृह जप दांन ॥५॥ दिन दस आदर पाइकै ॥ करि लै आप बषांन ॥ जो लगि का
ग सराध पष ॥ तौ लगु तौ सन्मांन ॥६॥ मरत प्यास पंजर परयो ॥ सुवा समै कें फेर ॥ आदर दैदै बोलियत ॥ बां

क्रिप२७

गुं०ग्रं०
१५२

य सब लिके बेर॥७॥ कबीर स्वप नैं जी सतें एकै बोनैं खोइ॥ लो सब माई कारनें॥ अछता मूल न खोइ॥८॥ कबी
र केवल रांम कहि॥ सुध गरीबी झालि॥ कूड़ बड़ाई बूडिसी॥ भारी पड़सी काल्हि॥९॥ मांनि मिः छिको पाटहै
॥ जो मनि मिली जे मांनि॥ मांन मोचि जगन्नाथ जन॥ साध कहैं सो मांनि॥१०॥ मांनि मन मुषी पीतरा॥ मिलु सुमां
हैं चाहि॥ मिलु सोइ रिस्त्रिगि नां मता॥ जगन्नाथ तत्रिता हि॥११॥ गुर संतनि के चाहु स्यो॥ उपजे अमृत भेग पांन॥ ज
गन्नाथ रे च कहि नं॥ मिमैल ब सत मांन॥१२॥ पूजा मांनि न माइयां॥ आदर मांगै मन॥ रांम भगद है सब पर हदै
॥ दादू सो ई जीन॥१३॥ दादू जहां जहां आदर पाइए॥ तहां तहां जीव जाइ॥ बिन आवरदी जे रांम रस॥ छा
ड़ि दादू सो ई जीन॥१४॥ दादू पोइ आपणी॥ ल्यपा जतन की कार॥ मांनि बडाई पति गयी॥ तब सब सुष मि
लि रह्या रांम॥१५॥ चौपई॥ मांनि बडाई पूजा आदर॥ चाहि बिकात सुष न्याया आदर॥ जगन्नाथ॥ बिगरंरुकी
॥ ड निया दीन बोध सुषि मो॥१६॥ साषी॥ मांनि पाप को मूर है॥ हरि बिन हरि षै मन॥ जगन्नाथ गुन अ
मृत सुनां॥ सत अपांडव मन॥१७॥ आदर की ऐं अति सुषी॥ बिन आदर सुर काइ॥ जगन्नाथ कि ठाहिरा॥
नर निरास हुय पाइ॥१८॥ जकारे कहत कारू र अति॥ बसत कुबकै बिगाड़ा॥ चेले की मन मैं नहीं॥ गुरु है
न की आस॥१९॥ कबीर जग की को कहै॥ सो जल हूबै दास॥ पारब्रह्म पति छांमि कै॥ करैं मांनि की आ
स॥२०॥ सिष सा षा बडजे तें किए॥ साधो कियां न मिले॥ चाले ये हरि मिलन कं॥ बिच हीं अटक्या चित्त॥ राम १५२

॥ दस्यादी नीं देचा मैं॥ करम माथें सुजकां नि॥ हरि गुर साध न मांन है॥ सुसी कबीरा मांनि॥२१॥ पुस
तन कों स्वांमी घनां॥ बहिक रांव न मांनि॥ पूजन कों पिरथी मही॥ जगन्नाथ को जांनि॥२२॥ अरेला
॥ राज्य सीमि धिया रिपू जिजग मैं सब॥ जगन्नाथ बिन नांई दिव सबि रघा गए॥ सत गुर कहें देम स्यांम
बो रिस्वे सी कही॥ या को कहि रक सा सुर र लज्ज पस दही॥२४॥ साषी॥ घो जी व केमद वं तके॥ जाते मांन
को मेख॥ इजे न तें सह मन गए॥ किरो करम को भेद॥२५॥ मांनि हरे गुर ग्यांन कौं॥ वि सरे हरि कों ध्यान
॥ आदर कारनि आदरे॥ जगन्नाथ जप ध्यांन॥२६॥ आदरि स्वाल सब सुषी॥ मन आदर करि को है
॥ जगन्नाथ गृह लगा न जं॥ सीता रांम बिछोह॥२७॥ करत पंच मिलि निपाप नां॥ पुण्य होत पाषां गा॥ ज
गन्नाथ सो कम नहीं॥ चाहत मन मुष मांन॥२८॥ कैरे पतिहा पर म गुर॥ संत सिरो मनि हैं न॥ जग
न्नाथ हरि साध बिन॥ मन मुषि मांनि स्वैंचैन॥२९॥ मन मुषि मांनि सलैं नहीं॥ गुर मुषि नीके होइ॥ गु
र मुषि मांनें देषसा॥ मन मुषि कोइ स कोइ॥३०॥ सत गुर मोनें मांनि सो॥ कहि कबीर हरि आप॥ सत
संग मिलें हों इ जो॥ मांनि सुषीन संताप॥३१॥ इति मन मुषी॥३२॥ मांन अमांन साषी॥ से
जन सेत नाइया॥ जहंन आदर कंन॥ मांन सहित पांनैं तलो॥ नां गज मांन बिहून॥१॥ अमी पियारी
दमांन बिन॥ संकर मो हिन सुहाइ॥ मांन सहित मरिबो भलो॥ जो बिष दे हिं बुलाइ॥२॥ सो मीं॥ आदर

मन मुषी मांनि बड़ा०

गुं०अं० मोहि सुहाइ ॥ विषय न रिदै देवे मान सौं ॥ अंमृत दे इक्ष घाइ ॥ मान बिना जो बीष कहा ॥ ३ ॥ साषी ॥ सुमे
१५२ ओड मुष दीन हो ॥ नाम लेत क्षमी सो सुष्य ॥ माथो जा ज्यो नाक सं ॥ परिमाकन जाज्यो दुष्य ॥ ४ ॥ सेऊ
सजु न बाहरे सोइ रीछ मांगे मान ॥ पीहन को पानी नहीं ॥ चोहें सिर को न्हान ॥ ५ ॥ सेऊ सजन बाहरे कु
भेमान कराहिं ॥ देषि हंस बैन नहीं ॥ हिरदै कहां समांहिं ॥ ६ ॥ बसन बिना बानी बिनै ॥ रुप सुंदर आका
र मद्ध जु हांसत हां मानि ये ॥ जहां के पंच बकार ॥ ७ ॥ लघ दीरघ आगाल मों ॥ मांकी जे आहमेव ॥ एकन
केरज चबिकी ॥ एकनि के गुरदेव ॥ ८ ॥ करम न करम न आप जहा ॥ दरष समरघ निमान ॥ तुलसी व
हत साध सुर ॥ सब सनेह सन मान ॥ ९ ॥ आदर सों आनंद न ॥ राव रंक को होइ ॥ मन साबाचा मिटन
हे दुरजन हू को दोह ॥ १० ॥ आदर आपि अपां हे ॥ संपति अति सन मान ॥ पइए हार बपुन
तैं ॥ संत समस्त परसान ॥ ११ ॥ तुलसी हरै कदत है ॥ सुनियो संत सुजान ॥ सोमिदां मगज दांन तें ॥ [illegible] दांन सन
मान ॥ १२ ॥ इति संपूर्ण ॥ १२ ॥ अथ आदर सुष दुष अंतराइ ॥ साषी ॥ तजि सुभाव न रहरि सुकहि ॥ आ
दर सुरी मिष्टांन ॥ जो माहि पूजी लागे जहां ॥ नरियर को हुतपांन ॥ १ ॥ पतिष्ट पूरन पाए है ॥ आदर सों अंतरा राम
दू जगनाथ जह सहीजसं ॥ सेवा सुर मकरा इ ॥ २ ॥ मांनि नहीं मरजाद को ॥ आदर अरथन सीकि ॥ पूजा १५२
पाति मन मांमुचें ॥ जन जगनाथन रीकि ॥ ३ ॥ सोर्ठा ॥ संष बजे सैं पांच ॥ सिष साषा कि एकौ रिदाइ ॥ वाजीद
मांन अमांन ता ॥०

एक छिन सांच ॥ सबे पिछोरे थोथरा ॥ ४ ॥ साषी ॥ कंचन तजिबो सुगम है ॥ सुगम तजन त्रय नेह ॥ निंद्या
अस्तुति त्यागिबो ॥ तुलसी दुर्लभ एह ॥ ५ ॥ प्रभुता कों सब को भजे ॥ प्रभु कौं भजे न कोइ ॥ तजि प्रभुत
प्रभु कौं भजे ॥ तब प्रभुता दासी होइ ॥ ६ ॥ बनिता कों लोचत सकल ॥ घटि न कहावत कोइ ॥ नरहर
बनिता ताम की ॥ जो हरि हरि माहु भ होइ ॥ ७ ॥ कलह कपाल आसा कंम ॥ शोक त्रास आहार ॥ लोभ
नींद न्यंद्या विषे ॥ रिस से ये घटि बार ॥ ८ ॥ मांमात मिरच सुकाचि भय ॥ मांस न अंगुल नाम ॥ पाये को सुष न
बलकहि ॥ नहिं दुःख संम समान ॥ ९ ॥ इक छान न भोजन सभे ॥ घटि बधि होइ न गार ॥ रामदास धीरज न
हो ॥ साला को सो ही बार ॥ १० ॥ मांनि लिये अनद मदुषी ॥ अन मांन तउ सुष रूरि ॥ छती भी बचि सरे सुषी ॥ सो
चिति सुष दुष दूरि ॥ ११ ॥ सुष दुष दोक जो नि दुष ॥ सुष के बल हरि मांह ॥ अष्पा सगर मीष को ॥ ज्यों
लहिर बई छांह ॥ १२ ॥ इति संपूर्ण ॥ १२ ॥ अथ देस सुकी मंजन मन सबे व्यापक नांव ॥ साषी ॥ किसकिस ये
मन क्याय जंपा ॥ किस हि न गुप जपा जाव ॥ सम्मन तेकवन रूषरे ॥ जेन क को रेवाव ॥ १ ॥ हं जांन मोतनेब
रव बिरद सबा गज गप ॥ पाली लीयें में फिरी ॥ घरि घरि बाही आप ॥ २ ॥ बेद आदि सब रिषि बचन
अ रूचौरासी जंत ॥ घरके भरके सब कहै ॥ हरि भजि होसुष वंत ॥ ३ ॥ आपे मारे आप कों ॥ आप आ
प कों पाइ ॥ आपे आप न सों कालव है ॥ दादू कहि समझाइ ॥ ४ ॥ साषी ॥ आपे मारे आप कों ॥ यह जीव बिचा
आइ सुष दुष अंतराइ ॥०

गुं०अं० ॥ यज्ञ रूप दाई आपको ॥ ते मोया दिन और आ
१५३ रा ॥ साहिब राखणहार है सो हिरदै मारा ॥५॥ साषी ॥ कहणां न सोमत वार ॥ अपनों आ
रथ को काहू दयो ॥ सब सूं बोलि हिंगौर ॥६॥ जा घटि ग्यान सु मांन है ॥ विमल ब्रह्म कविचार ॥ प्राणी प्रीतम
सूं सो आप ही ॥ नहिं जगनाथ छण बार ॥७॥ जाके बोध सु बुध्य है ॥ चौपई ॥ आप आप कों धरै आतम ॥ जन जगनाथ सुगति ले
प्राण करि ॥ जपि जगनाथ सब बार ॥८॥ आपनां बैरी आप हि घात ॥९॥ आतम बंधु आतमां तिनके आ
जात ॥ अपनां बंधु आप हीर रूप का ॥ बसि कीयें बिन बैरी होइ ॥१०॥ जगनाथ जि
तन आतम जीत्या सोइ ॥ जन जगनाथ अनातम आतम ॥ सीत उष्ण सुख दुख हरि आये ॥ अमांन मांन तिन के
नि आतम जीत्या ॥ मांति थिर पर आतम जांन ॥ सगे जीव को अनहित
सामांन ॥११॥ साषी ॥ मन न यग आदि अमीलयज्ञ ॥ उदर स्वादि लिगि हारि ॥ जगन यपद पाइ
सो न पुरा संसारि ॥१२॥ जन मन रतन मन राषिये ॥ मांडु निरंतर लाइ ॥ पोते को प्रीतम गहै ॥ साचेली जी साध स
॥१३॥ इति मन पूर्ण ॥२३॥ ग्रं० २६० ॥ उपजनि लगनि अंग ॥ साषी ॥ साचा सतगुर सो धिले ॥ दादू साचा मांहे
चा साहिब सो धि करि ॥ दादू मति आमाध ॥१॥ साचा सांई सो धि करि ॥ साचा राषी भाव ॥ सो दादू पूरा ॥३॥ राम
॥ साचे मारगि आव ॥२॥ साषी ॥ सांई सों साचा रहै ॥ सतगुर सों सूरा ॥ साधों सों सनमुष रहै ॥ साषी ॥ लाल मिष्ठ कोरस १५३
सनमुख सतगुर साध सों ॥ सांई सों राता ॥ दादू प्याला प्रेम का महारस माता ॥४॥
सुकी मंत्र मत सबी व्याप नां०

नि मैं ॥ पहले साधि कजाइ ॥ छांनि मांरदी जे जिस हि ॥ सोकं सोरह थाइ ॥५॥ राम आ शक्ति अति बिमन
अगति सुती नि प्रकार ॥ अन सी जल सी प्रांन सी ॥ नि जं बिधि लयनि बिचार ॥६॥ प्यासे कों सायर मिलै
तो काहे प्यासा जाइ ॥ जैसे मल प्या सा नीर का ॥ पीवत बार न लाइ ॥७॥ भूषे कों भोजन मिलै ॥ बेगि न क
है षाइ ॥ जैसे मल दीपन की जिये ॥ मति षुध्या मिटि जाइ ॥८॥ आरति बिन उपजै नहीं ॥ ब्रह्म अगति नि
अआव ॥ त्रिषावन्त ही छदि सि ज्यू ॥ निरमल जल दरियाव ॥९॥ आरति बिन उपजै नहीं ॥ ब्रह्म नांम स
हेत ॥ नांनां बिधि भोजन किए ॥ षुध्या बिनां न हित लेत ॥१०॥ आरति बिन उपजै नहीं ॥ ब्रह्म बिरह तनि
पीर ॥ बूंटी निकट सजीवनी ॥ दरद बिनां मन धीर ॥११॥ आरति मनि उपजै नहीं ॥ पर वाके से होइ ॥ जगना
थ औसर थके ॥ गाफिल रहइ सोइ ॥१२॥ आतम बोध बेक का बेटा ॥ सुरमुखि उपजे आइ ॥ दादू पंगुल पंच ब
न ॥ जहां रांम तहां जाइ ॥१३॥ साषी ॥ आतम मांहैं ऊपजइ ॥ दादू पंगुल ग्यांन ॥ कृत्म जाइ उलंघि करि ॥ जहां निरं
जन थांन ॥१४॥ आतम उपजि अकास की ॥ सुनि धरती की बाट ॥ दादू मारग गैब का ॥ कोई लषैन घाट ॥१५॥ जे
सी उपजै पेम सों ॥ तिसी निब है बोरि ॥ पैका पैका जोरतां ॥ जु रसी लाष करोरि ॥१६॥ कलि जुग मांहैं मनिह
की ॥ छंम छरसत आव ॥ पूरी सुगति एक को ॥ से जगनाथ हरि भाव ॥१७॥ नरउपजनि है अथिर थिर ॥ मारि की
लका मेर ॥ जगनाथ हरि भगत जन ॥ है है भै बहु फेर ॥१८॥ उरि उपजे सो मिरबंद है ॥ देषा देषी नांहि ॥ जगम

सुं०अं०
१५४

थ जैसें आलसी ॥ जैसें अग्नि गरद रांहिं ॥ १९ ॥ साची कहे तो गादरें रोम समाई मांहिं ॥ जगनाथ जैसें अमसे को अ
धार अमिट न जांहिं ॥ २० ॥ ज्यूं जो निबदे तंमचले ॥ धीरे धीरज मांहिं ॥ परसे गम्यभिमुष एक दिन ॥ दादू यां को
मांहिं ॥ २१ ॥ एक मन मांला मार दें ॥ अमिमिलि गासो ह ॥ दादू जा के मनि वसे ॥ ता को दरसन होइ ॥ २२ ॥ ध्रुं के
उपजे पोषमतो ॥ दिन पर मोध सुनीति ॥ जगनाथ ममार ददया ॥ पा ॥ त्रिपद परतीति ॥ २३ ॥ विरकम जनन
बचन लगि ॥ राजा गोपीचंद ॥ जगनाथ सुषअमृत के ॥ निरबासी निरदंद ॥ २४ ॥ सम सद गरोटी का ढकी ॥ ष
राबसत रपात ॥ उपज निअथिक फरीद की ॥ सुपदे सक मिजमात ॥ २५ ॥ दादू सुधसुध आतमा ॥ साधपर
में आ ह ॥ दादू भ्रंगी कीट ज्यूं ॥ देषत ही हि जा ह ॥ २६ ॥ दादू जे सा ब्रह्म है ॥ तैसा आतम ओउपजी होइ ॥ जेसा दे
तै सा कहे ॥ दादू बिरला कोइ ॥ २७ ॥ कबीर अमृत ली ओ सा नया ॥ निरमोलिक निज नांउं ॥ पद हली का चक
थी रथा ॥ फिरता गांवें गांउ ॥ २८ ॥ इति [illegible] ॥ २२ ॥ [illegible] आतम [illegible] रण ॥ साषी ॥ दादू [illegible] ली आतमा
सहज फूल फल होइ ॥ सतगुर जस सहज मतगुर कहे ॥ बूझे बिरला कोइ ॥ १ ॥ अमर बेलि है आतमा ॥ षार स
मंदा मांहि ॥ सूके षारे नीर सौं ॥ अमर फल लागे मांहि ॥ २ ॥ बहुगुण बंती बेलि है ॥ कमी कालर मांहिं ॥ मी
ठे षारे नीर सौं ॥ ता तैं निफल जांहि ॥ ३ ॥ बहुगुण बंती बेलि है ॥ मीठी धरती बाहि ॥ मीठा पांणी सीचिये ॥ दा राम
दू अमर फल षाहि ॥ ४ ॥ अंमृत बेली बाहिए ॥ अंमृत का फल होइ ॥ अंमृत का फल षाइ करि ॥ मुवा न सु १५४

सुपजीलयानि०

गि ऐ को इ ॥ ५ ॥ बिष की बेली बाहिए ॥ बिष ही का फल होइ ॥ ६ ॥ [illegible] पय बंद ॥ कुबुधि भो मिम न मूल
न हो कभी बिष बेली ॥ सा सा के जालि सीची काम की कूपल मेली ॥ पापपोन पांगारी मनमिता के फूल
फूले ली ॥ मद की बिषे सुबास सूंघ्यां जीने डष देली ॥ ज्यां पाह ज्यां ह भौंरा भो गई ॥ कलि थिर रह्या नके
ह ॥ बष बां बिष की बेलि का ॥ फल हला हल होइ ॥ ७ ॥ चौपई ॥ सुबुधि भो मिन ह्यां अमृत बेली ॥ सतसी
ल की कूंपल मेली ॥ दया धर्म का पांणी रली ॥ प्रेम प्रीति सो फूली फली ॥ ८ ॥ संत सु भौंरा भोगवें वा
ह ॥ कलि थिर रह्या बा का लन ही षाई ॥ सतगुर सींची स्त्र किम जासी ॥ बष बां फल ल्लामा अबिनास
॥ ९ ॥ साषी ॥ काया बेली अमृत जरा ॥ संमि कल पनां बाहि ॥ अधर्म जल आगि नां नतरा [illegible] दुबिहुगी
ता हि ॥ १० ॥ पर पंच पान निगद बरी ॥ फूली फल नि बाहि ॥ लागे फो कट सो कफरा ॥ सुष दाइन हि
का हि ॥ ११ ॥ जगनाथ जो पावई ॥ सो डष ब्यापे जाहि ॥ ता की छाया छरि मरे ॥ षात कों न चिर आहि ॥ १२
॥ देहल ताजर सुमति दे ॥ धृति धरनी मैं रोपि ॥ नीर मांहि कुमग पांनलो पि ॥ १३ ॥ पात सघन जन प्रीति ह
रि ॥ पक्ष पये सम अमृत [illegible] षोपि ॥ निरसं सय पर स रूपफर ॥ आनंद हित सब वोपि ॥ १४ ॥ जगनाथ निरभै भये
छाया प्राप तिसो पि ॥ भगवंत दत्त संत संगतें ॥ अमगति चिरंजीको पि ॥ १५ ॥ दिदबुध्या आतम बेली ॥ जग
नाथ जन ल्याइ ॥ जे सी धरती सी बहै ॥ फूलैं फरें सुभाइ ॥ १६ ॥ अबनि अमृत धन हे रोपई ॥ ते से ई फरषा

गुंथो· १४५

ह॥ प्रकाह्ह्हसंसारसौं॥ लाग्यो लिलता सुरफाइ॥१७॥ बांधे बसु थाविसु धपरि॥ सींचे सुधा स्त्रधाइ॥ जगनाथ दूइ॥ प्रकाहूहसंसारसौं॥ त्यौंबिलतासुरफाइ॥१८॥ बांधेबसुधाबिसु धपरि॥ सींचे सुधासुबाइ॥ जगनाथ रस्व रिमलै॥ पांन फूल फरबाम स्तिसिंचहै॥ बेलि अमरफर पाइ॥२०॥ हरि तरवर जर साध हरि॥ हरि अछर नी हरि मूल॥ नाम सो सुकै मोजरै॥ नोंद्दिम हरि॥ हरि मृत हम हरि ए जाइ॥२१॥ हरि मना पछि विस्तार हरि॥ हरि जारी हरि छूल॥ नाम सोमूं केम जरै॥ तो हिम हरि॥ हरि मृत दम हरिए जा॥२२॥ इममाना पछि सार हरि॥ हरिसारी हरि रूल॥ जेबेली तासों लाग्री॥ तेबेली अबिनास कब इन्हर त्व॥२३॥ जगनाथ ताबिरछका॥ दो इन काव इन्ह नासा॥ जे बेली तासों लागी॥ ते बेली अविनास कब हूं न हूं॥२४॥ जगनाथ ता बिरछ का॥ दोइन का बहूनासा॥ जेबेली नासों लगी॥ तेबेली अबिनास कव हूं नहूं॥२४॥ जगनाथ ताबिरछका॥ होइ न कब हूं नास॥ जे बेली तासों लगी॥ ते बेली अविनास

(above lines as best read)

कवहूं नहूं॥२४॥ जगनाथ ताबिरछका॥ होइ न कबहूं नास॥ जे बेली तासौं लगी॥ ते बेली अबिनास॥२५॥ आतम बेली फल मिल्या॥ फल लो रिकैमारिस॥ बेली बिरधकरा इ॥२६॥ आतम रस॥ जेसू जप तप प्रकाशि छै॥ नूं बेली कुमिल्या इ॥ फल लेतो रिकैमारिस॥ बेली बिरधकरा इ॥२७॥ आतम बेली फूलि फलि नहीं ॥२८॥ कहि जगजीवन सबेली अभि बढे॥ फल को मनो जाइ॥ जगनाथ तततरि चढे॥ प्रूसाका लनथाइ॥२९॥ कहि जगजीवन सबेली अमिबढे॥ फल को मन जाइ॥ जगनाथ तत तरिचढे॥ मूसा कालनथाइ॥३०॥ आतम बेली रामजल प्रेम जल॥ बीर सनो मसुर सीर॥ आतम बेली सींचिए॥ बिरधि करे बिन नीर॥३१॥ आतम बेली राम जल प्रेम जल॥ बीर जनो मसुर सीर॥ आतम बेली सींचिए॥ बिरधि करे बिस्तार॥३२॥ हरितरवर ततस्व्रा सतगुर सीचणहार॥ कहि जगजीवन फलि फूलि॥ बिरधि करे बिस्तार॥३३॥ जे साहिब सींचे न ॥ तो बेली बेली करि बिस्तार॥ दादू लागी अमरफल॥ को साध सींचणहार॥३४॥ जे साहिब सींचे न॥ तो बेली ॥ बेली करि बिस्तार॥ दादू लागी अमर फल॥ कोसाध सींचण हार॥३५॥ पांनहद्दसमनमालता॥ परआतम धर मांहि॥ कुमिल्याइ॥ दादू सींचे सांई यां॥ तो बेली बधती जाइ॥३६॥ पांन हद्द सम नमालता॥ पर आतम धरमांहि॥ रमथी सींचे अमृत आतमा॥ जगनाथ फूफरथां हि॥३७॥ प्राण तरवर सुरति जड॥ ब्रह्म सो मिलता मांहि॥ रमथी सींचे अमृत आतमा॥ जगनाथ फूफरथां हि॥३८॥ प्राणा तरवर सुरति जड॥ ब्रह्मसो मिलता मांहि॥ रमथी सींचे अमृत आतमा॥ जगनाथ फूफर थांहि॥३९॥ प्राण बिरष पीदेमधा॥ दा वैफूलेफला॥ दादू सुके मांहि॥४०॥ सतगुर सगाति नीपजो॥ साहिब सींचणहार॥ प्राण बिरषपीदे मधा॥ दादू फूले फले अपार॥४१॥ सतसों बधता जाइ॥ संतो क्षमों फूले फले॥ दादू अमर फल षाइ॥

राम १४५

आत्मबल्ली२०

॥१॥ मनमुष बेली सकई॥ हरी हला दल होइ॥ जगनाथ तापरस्मये॥ जियत न देषे कोइ॥२॥ परमुष लेषे सदा रूबी॥ सच्चा सुरंगी सोइ॥ जगनाथ ताबेलिकै॥ फल अबिनासी होइ॥३॥ इति अंग॥

अथ भेष कौ अंग॥ ... माषी॥ जप माला छापे तिलक॥ सरे न एके कांम॥ काचे मनु मांचे बिरछ॥ साचेराचे रांम॥१॥ माला तिलक सौं कछु न दें॥ काह्र सेती कांम॥ अंतरि मेरे एक दें॥ अहनिस ध्या॥ साचे राचे रांम॥२॥ माला तिलक सों कछु न दें॥ काहू सेती कांम॥ अंतरि मेरे एक है॥ अह निसि उसकांम॥३॥ दादू ए सति सों हिली॥ छाया तिलक न जाइ॥ हंसा मानि जो हरि मिले॥ का मा कम तिक माइ॥४॥ दादू छाया सोछो दादरी॥ तिलक करां मग रधारि॥ दादू एक गति देस की॥ काया केलि संसारि॥५॥ पर साधीन मआपणी॥ ताकों निस दिन टेरि॥ माला फेरयां कछु नहीं॥ जे मन न फिरै तफेरि॥६॥ माला पहरि न विषत जे पा॥ विषम सजि न जे पा न रांम॥ परमाजिव दो जगि चल्या॥ बाट तषा तद हरी मा॥७॥ कर मांहै माला फिरै॥ जीभ फिरै मुष मांहि॥ मन फिरे चाहूर दषरा॥ ये षम नांय जतो सुमरी नांहि॥८॥ मनपदमन अरु सुरति थिर॥ पंच उपधिर होइ॥ तो बषमांड सपलक को॥ बरषन न पूजे कोइ॥९॥ कबीर कर पकरे अंगुरी गिने॥ मन धर्म्स्यो चहुं वोर॥ जाहि फिरायां हरि मिले॥ सो भयाकाठ के ठोर॥१०॥ माला फेरै मन मुषी॥ तासों कछु न होइ॥ मन माला कौ फेरतां॥ उजियारा होइ॥११॥ कबीर माला पहरे मन मुषी॥ बहुतै फिरै अचेत॥ गांगी रोले बहि गया॥ हरि सों नांही हेत॥१२॥ कबीर माला काठ की॥ कहि समझावे

सब जिम बढे मनमेढ़ा मूंढा ॥

गुण ॥ तो हि ॥ मनन फिरावे श्रापमां ॥ कहा फिरावे मो हि ॥ २२ ॥ तुरसी औ पैरां मन सौं ॥ श्रौर मिसौ सुधमाइ ॥ नांवि लेवे को

१४६ मुकाए का अयोध्या ॥ मांफ़ ज्वोल तजि गेह ॥ २३ ॥ कबीर मांई मेरी मन बसि ॥ जिमूके मो बार ॥ मनकं काहिनमं फिर

सा कम्रि ॥ मावे घुरड़ि मुकाइ ॥ २४ ॥ कबीर के सौं कहा बिगारिया ॥ काम क्रोध के कैसे ॥ राइ बिषै बिकार सब ॥ मनगु

ना मे बिषै बिकार ॥ २५ ॥ मनका मस्तक मूंडिये ॥ कंमे से सोमं ज्यों का उपदेस ॥ मं मेनन दी ममम र्द का मोन ॥ बि

मंगे र के उपदेस ॥ २६ ॥ चोपई ॥ मनन हिमं मैं के सा ॥ के सां मं ज्यों का उपदेस ॥ मं प्रभु का इमजं किसि काया ॥ मन मेरा

लोच रपट तन सिंगारिया ॥ २७ ॥ साखी ॥ तनमनि सा समन मं मेमा या ॥ भेषलिया सो जन्म पाया ॥ घर बार छाडा पारिस औ मम

समकाल रससो गी ॥ कहे मरघुराने नरयोगी ॥ २८ ॥ चोपई ॥ मन कं र ज्यों कस्वा सा

या मा थबि सारिबि मरजगा जोग ॥ स्वांग बना इ सुषी दे सोया ॥ आन चि ह देषन कं अ

सुक्षिने ॥ तनर ज्या बसे निबर सामि ॥ अ मन न बसन बिद्या पन पोषका ॥ श्रा न चि ह देषन कं अ

हि ॥ २० ॥ साखी ॥ दयादीन ना हरि नया लिलेला ये प्रेम पार ॥ मो हन माला तिलक सौं ॥ का को अयोग ध्यार

२१ ॥ जोजन सौं सुध्याइ है ॥ बस्तर सौं सी जाइ ॥ पगाय नदी कोटा टले ॥ मं मैं सुरमन सा हा ॥ २२ ॥ कंम सु

न सौं जलपी जिए ॥ मन रिह षा सुकाइ ॥ कर जमटी क माट ले ॥ फो ली बरत नि माइ ॥ २३ ॥ गुद्रि थे

नी बांधि कमर ॥ पोथी मैं बिधि सार ॥ दो ति लेबिर रज्ज मलि षै ॥ बांनै ज्या उपमार ॥ २४ ॥ जे यज्ञ बां मांहं

राम १४६

सका ॥ तो मो ती कं नचुगां हि ॥ मुकताय रह रि मलुचुगे ॥ तो एहं समा नां हि ॥ २५ ॥ बां नां पहरै हं सका ॥

चालहं सकी नां हि ॥ अ सेन र जग ना थ जन ॥ ब गबक बगुभ्रम मां हि ॥ २६ ॥ साधस्वांग ब कु दे सू ये ॥ म

नमरालनि जधर्म ॥ जगनाथ देषे सुनै ॥ चरचाते चित रांम ॥ २७ ॥ भेषब रा बरि करि मिले ॥ आ से मिल प

न जाइ ॥ परसा मोती हंस रुचि ॥ बगम छली चुगि षाइ ॥ २८ ॥ कहि कल्यान बिपरीति मैं ॥ बांनै सर

मकाज ॥ पग पाये नां ब नृप ॥ का भुगत्यो सुष राज ॥ २९ ॥ भगत कहा ये भेषध रि ॥ गुरमुषि गमो न गप

ना पाइयौ ॥ गनं यति कसो ॥ अ बुधि जन कल्यान ॥ ३० ॥ सत कनो जस्य स्पष्ट का ॥ स्वामी स्वां गबन ६

ग ना नाथ हरि नगति बिन ॥ भेष जमन हिं जाइ ॥ ३१ ॥ सारहल की स्वांग करि ॥ कूकर की करहति ॥ ज

रसी नाथ चाहरी ॥ की रति बिजै बिसूति ॥ ३२ ॥ बां नौं पहरे स्पध को ॥ चले स्वां नकी चालि ॥ सोमाल

हैन परस रांम ॥ जी वजगत मैं गालि ॥ ३३ ॥ परसा बांनो स्पध को ॥ पहरि जी वहतरा श ॥ बो ल्यो भेष पि

छो लि पै ॥ स्वांम स पूछी षाइ ॥ ३४ ॥ बर्ष पलट जस्या लकौ ॥ दिन दिन लौं अधिकार ॥ जग नाथ जग

दीस बिन ॥ बांनै नदोष बार ॥ ३५ ॥ नील रंग पो तनपरसरांम ॥ जब कज स्र सभाल ता ॥ राजा जदोव

रन मिलि पि बांनि स्याल को स्याल ॥ ३६ ॥ दसनदी मदया ल बिन ॥ भजन बिना को भेष जग नाथ

सो भेन दी ॥ कारज सरत न देष ॥ ३७ ॥ भेष बरा बरि परसरांम ॥ गुलाका जुदा ब षांण ॥ सीषो भिलिसी

गुण्यो मीर सौं॥ षि लैन फट कप षांरा॥ ४६॥ कहि सुमिंत्र मैत्र्या प्रण॥ मिटै मतन की पीड॥ परस्या प्रेम न ऊपजे॥
२५७ मैषिन साजे भोड॥ ४७॥ मै सुमाये का भया॥ जो मन सम्रस्या नांहि॥ जगत रिझाया स्वांग धरि॥ पति सौं
सूते नांहि॥ ४८॥ बांनौ ये है दयाल कौ॥ निमैं त्यौ षि षै निराल॥ जगति मिस जगजगनाथ हरि॥ तिन तैं
स्वरपे काल॥ ४९॥ भजन मन नहीं बांनौं मांहे॥ तिलक छापा माला॥ जगनाथ जगदीस बिन॥ कबहुं
न सरपे काल॥ ५०॥ बांनौं गहि हि षिषियां भजै॥ तजै इष्ट यां हित श्रोर॥ षिना सुरगते अगत जन॥ मुष
मैं पूजी भोर॥ ५१॥ जाल भेष की नेक रा॥ जो मन आगति न मुत्या॥ पूजा को मिन त्रा वई॥ जैसे बहु
त कै फल॥ ५२॥ कोरा कलस अवाह का॥ ऊपरि चित्र अनेक॥ क्या की जै दादू वस्त बिन॥ ऐ
से नां नां भेष॥ ५३॥ बाहरि दादू भेष बिन॥ भीतरि बस्त अगाध॥ सोले हिरदे राषिया॥ दादू सन
मुष साध॥ ५४॥ कबीर स्वांग पहरि सोह्या भया॥ पाया पीया छूटि॥ जिहिं मेरी मा [illegible] नी स स्या॥ सो
ती मेल्ही छूटि॥ ५५॥ परदा दीया भेष का॥ कीया स्वाद अनंत॥ जगनाथ नरदी वर जं॥ चित चारै
मैं मंत॥ ५६॥ दूर सन मैं दर सन न दी॥ कसन कि ऐ करे स॥ पूजा नहीं पुजाइया॥ जगनाथ धरि भेष
॥ ५७॥ जगनाथ जग रीति तजि॥ भजि नगा वंतस लेष॥ जगति यं है अरु भगत सो॥ स्वलेना दिन राम २५७
मै भेष॥ ५८॥ बांनौ गहै बप स्वाद करि॥ बिसर्या सिरमौर॥ जगनाथ मन के मतै॥ कारज कियानको॥

स॥ ५९॥ इंद्रीनि सुष बसि स्वाद कै॥ इंद्री या अरथी भेष॥ इंद्री बसि जगनाथ जिनि॥ सो सुष नांहि
न सेष॥ ६०॥ इंद्रिनि कै बसि होत दुष॥ दुष नहू सा जग मांहि॥ बसि कियें जगनाथ सुष॥ तास म
मुष कहुं नांहि॥ ६१॥ हरि पारस मौं परस रांम॥ लग्यौ नहीं मन चेहि॥ साध भयौ नौका भयौ॥ मांहि टेटे ही की
टेहि॥ ६२॥ दादू स्वांग साध बहु अंतरा॥ जेता धरणि अकास॥ साध राता रांम सौं॥ स्वांग जगत की आ
स॥ ६३॥ दादू स्वांगी सब संसार है॥ साध समंद्रां पार॥ अनंत पंषि कहां पाइए॥ पंषी कोटि हजार॥ ६४॥
॥ दादू स्वांगी सब संसार है॥ साध कोई एक॥ हीरा दूरि हि संत रा॥ कंकर और अनेक॥ ६५॥ दादू स्वां
गी सब संसार है॥ साध सोधि सुजांण॥ पार सपरदे सौं भया॥ दादू बहुत पषाण॥ ६६॥ दादू स्वांगी सब
संसार है॥ साध बिरला कोइ॥ जैसे चंदन बावनां॥ बनि बनि कहीं न होइ॥ ६७॥ दादू चंदन बन न नहीं॥
सूरन के दल नांहि॥ सकल समंदि हीरा नहीं॥ साध कलि मांहि॥ ६८॥ पंषी नीपकि तब हुत हैं॥ ध्यान
सूर अनेक॥ दादू भेष अनंत है॥ लागि रह्या सो एक॥ ६९॥ पसु पंषी नर छोड सुष॥ बन बन रहु मत्र
छि रांम॥ सो तरु बिरला जांनिजे हा॥ करै करी बिसरांम॥ ७०॥ साषी॥ मन बैरागी धष्ष कार॥ पेट बैराग
कंथे भार॥ सो गंबैरागी को धअपार॥ पंपा न बैरागी छुछुमन सार॥ ७१॥ साषी॥ दषिणी जोगी रंगीचंगा
पूरबी जोगी बादी॥ पछिमी जोगी बाला भोला॥ सिधयो गीउतरा धी॥ ७२॥ साषी॥ कबीर तन कौं जोगी सब

पुं०अं० करैं ॥ मनकैं थिर ल्या कोइ ॥ सब सिधि सहजैं पाइए ॥ जे मन जोगी होइ ॥ ८५ ॥ योगी न सो बनाइया ॥ सु
१५८ गति मन आई हाथ ॥ जगनन थि मां गति योग की ॥ कूं पावै जगनाथ ॥ ८६ ॥ न्यास लिंओ मन्यास लै ॥
न्यास मन हीथ रि लैस ॥ जगनाथ मनक चित्त है ॥ सोज मसर रमैं देस ॥ ८७ ॥ जे न्यास मसंजम नांहि सें ॥ म
संमासम मनपंच ॥ गरै ल्यंग जगनाथ ल्यो ॥ सांम चांम सरि अंच ॥ ८८ ॥ जैन फैंन बहुतें करें ॥ धरैं भेष मत
त्रिधांन ॥ जगनाथ पट भलि न तन ॥ मन सुषिध तरगयांन ॥ ८९ ॥ सो धवलिं मल खुष्टिमा हिरी ॥ मा
हरि पट मकर रांहि ॥ जगनाथ धर कार ही ॥ धरी सलिं न ता मांहि ॥ ९० ॥ भेष भेष बषपरधरहि ॥ करव
कहून बवेक ॥ जीव दतैं डबिधाडरी ॥ जगनाथ सुषिएक ॥ ९१ ॥ भेष न सो बहि जगत के ॥ भगतेन
ही लेवै लेस ॥ जगनाथ सुषमाथ कै ॥ मतिबिन सुफवै केस ॥ ९२ ॥ भगत भेष देषत भले ॥ भजन बी
जनर मांहि ॥ गराकोरी बालिजं ॥ कन सुमहीनि न मांहि ॥ ९३ ॥ दरसनकं थाकेजट ॥ के सुद्र
भेष ॥ जगजीवन छापा तिलक ॥ खुंचित सो पी मेष ॥ ९४ ॥ कान फडाया मूंड मुंडाया ॥ जटा बढ
ई केस ॥ कहि जगजीवन बाल भुलाए ॥ नर भ्यां देस बदेस ॥ ९५ ॥ जे दरसन गोरष लीया ॥ सो जे
पहरै कोइ ॥ जगजीवन कहै राम रमि ॥ सिधसाधि कतै होइ ॥ ९६ ॥ दिल मदिं दरसन पहरि करि राम
॥ हरि का दरसन पाइ ॥ जगजीवन तेदरसनी ॥ देषत आनंद थाइ ॥ ९७ ॥ नांनां भेष बनाइ करि अ १५८

इंडी या अरथी भे०

पा देषि दिषाइ ॥ दादू जाका हरि करि ॥ साहिब सौं ल्यौ लाइ ॥ ९८ ॥ जे सांई का ह्वै रहै ॥ सांई तिसका होइ
॥ दादू इंजी बात सब ॥ जे बिन पावै कोइ ॥ ९९ ॥ इति संपूर्ण ॥ २५ ॥ ४०४५ ॥ आतम अरथी भेष ० ॥ साषी ॥ दा
दू सतगुरि माला मन दिया ॥ पवन सुरति सौं पोइ ॥ बिन हाथौं निसदिन जपै ॥ परम जाप यूं होइ ॥ १ ॥ सबद
सूई सुरति धागा ॥ काया कंथा लाइ ॥ दादू जोगी जुगि जुगि पहरै ॥ कबहूं फाटि न जाइ ॥ २ ॥ गयांन गुरू
का गूदडी ॥ सबद गुरू का भेष ॥ अतीत हमारी आतमां ॥ दादू पंथ अलेष ॥ ३ ॥ जगन्नाथ सो दरस
नी ॥ बहै भेष की लाज ॥ काछ कछै सो नाच नचि ॥ करै सु फल घट साज ॥ ४ ॥ चौ० सषी ॥ जोगी सो जो म
न जोगवै ॥ बिन बिला इति राज भोगवै ॥ कनक कांमिनी त्यागै सोइ ॥ सो जोगेस्वर निरभै होइ ॥ ५ ॥ सं
न्यासी सोई करै सर्ब नास ॥ गगन मंडल मैं मांडै आस ॥ अनहद सौं मन उनमन रहै ॥ सोई सन्यासी
आगम की कहै ॥ ६ ॥ दरवेस सोई जो दर की जांनै ॥ पंचे पवन अपूठा आंनै ॥ सदा सचेत रहै दिन र
ति ॥ सो दरवेस अलह की जाति ॥ ७ ॥ मुंडी सोई सुआसा मांडै ॥ पंचों इंद्री का मदै मांन ॥ सो मुंडी का
दि एतत्त समान ॥ ८ ॥ पाषंडी सो जो काया पषालै ॥ उलटा पवन अगनि परजालै ॥ अंदन दैई
सुपिनै जांन ॥ सो पाषंडी कहि एतत्त समान ॥ ९ ॥ साषी ॥ जोगी जुरा न ब्यापई ॥ काजी काल न षं
इ ॥ मुला मरै न जीव ही ॥ ता का बंदा पाइ ॥ १० ॥ सषी ॥ इंद्री का जती सुष का सती ॥ इंद्री का कमल भुका ॥ इ

गुण्यां १५५ अवरवो लंनपारलवी ॥ ते जोमी जो मजुका ॥ ए ॥ माखी ॥ मुद रामालस्थ [illegible]
हे जगनाथ सो ॥ हो इमजन मत सील ॥ ॥ चौ मसी ॥ अ [illegible]
रई सुर आई ॥ जगत मांहि फिरि जो निज आवै ॥ जगनाथ सो [illegible]
राखे ॥ निमदिन आए जो म अ जि गा मे ॥ ॥ पिछै मजन मगवन [illegible]
॥ भेष में मगाहि साच मत री ॥ ६ ॥ ईद रो म धु धु धिक रिहरी ॥ [illegible]
वाद पिछां में ॥ ॥ जगा तडे जो ने भगावं ॥ जन मम ता हि [illegible]
ले ॥ जगनाथ अं चेय म जा जे ॥ ॥ माखी ॥ जगनाथ जिन के [illegible]
कुदलु कंदो ॥ जो मी जन संन्यास ॥ ॥ दादू सोई जो मी सो [illegible]
मी मेव डे ॥ जिन केण क अ जे ष ॥ ॥ दादू सोई काजी मुल्लां [illegible]
॥ जे रते रहि मांन ॥ ॥ सोई जन साधु सिध मो ॥ सो मत वा [illegible]
मद सूर ॥ ॥ दादू सोई जन साचे मो मः ॥ सोई साहि के [illegible]
गा वान ॥ ॥ मांहि मे गिनि जम ह ख कै ॥ ॥ जीन भरमे [illegible]
गोर ॥ ॥ अरे ला ॥ सुघ निधि देव द गोर ॥ गोर का ध्यम हूए [illegible]

छि सब साध वेद गु निकदतदे ॥ सछि आ मिली मम [illegible]
४० ६८ ॥ आ ति पा ति बिष जी तण ॥ ॥ चाह मा क्षम [illegible]
ते अपइयो ॥ नें न निंह्य को बारि ॥ ॥ आ ति का मल्ला न [illegible]
न बोल सां ॥ आ ति की न ल्ली न कुष्प ॥ ॥ ह्रु मे ना चि [illegible]
चित धरे ॥ ते चूक दि ओ सांण ॥ ॥ आ ति आ दर आ [illegible]
तदे ॥ के सब चै चल चित्त ॥ ॥ आ ति प ति दो नव [illegible]
नाथ निधि ॥ निक मो बिषब लिवंत ॥ ॥ आ ति ल्या [illegible]
ए मोग यो ॥ पंहो यें क न टी न ॥ ॥ कै रो कि रय न आ [illegible]
की बो धी मैं रू ॥ ॥ रावन के रन वा स ख क ॥ ॥ रघु नी [illegible]
छे प्रांन ॥ ॥ आ ति अ नी ति तें कथ रे ॥ ॥ अ सुर ई स ज [illegible]
॥ बड बिब कें छल कि यो ॥ ते जन म क नो मे दे [illegible]
इ ॥ ॥ वक सुंदर अ रुक र आ ति ॥ बा म बि सो [illegible]
मूल ॥ ॥ ज सो ई र षा आ ति द या ॥ आ ति ट म नो आ [illegible]

p 129

hundred nine

DMV 14B

p 158

गु.ग्रं० करै॥ मनकं थिर ल्याको इ॥ सब सिधि सहजैं पाइया॥ जे मन जोगी होइ॥ ६४॥ योगी बसै बनाइया॥ गु
२५८ रूगति मआई हाथ॥ अलन नाथि मां गति योग की॥ करू पावै जगनाथ॥ ६५॥ न्या सहि मांस न्या सलो॥
न्या मन हीथ रि भेस॥ जगनाथ मनरू चित्त भेै॥ सो जन सर मैं देस॥ ६६॥ जे न्या समं जम मांहि मैं॥ मे
संयम सम न पंच॥ यों रहै गजगनाथ ल्यो॥ प्रेम चां मन थिर रंच॥ ६७॥ जे न फेरै न बहु तें करै॥ धरै धमैत
त्रिधा न॥ जगनाथ पट मजि न तन॥ मन सुषिधूत रगत्या न॥ ६८॥ बोध धरि मन ल्हुधि माहि री॥ बा
हरि पट मकरा हि॥ जगनाथ धरकार ही॥ धरी मलि न ना माहि॥ ७०॥ भेष भेष बनपर धरहि॥ करहू
कलू न बेबेक॥ जी वदतें डुबि षंड री॥ जगनाथ सु थिर एक॥ ७१॥ भेष बनो दृहिं गगनके अपतेन
ही लहै ते स॥ जगनाथ मुषमाथ के॥ मतिलिसमुझै के॥ ७२॥ गगनतभेषदेषतस जो॥ जनबी
जतुर मांहि॥ परा के री बाहि जं॥ कन सुमही ति न मांहि॥ ७३॥ दरसनकं था के जटा॥ कै मुद्रा
हु भेष॥ जगजीवन गाथा तिलक॥ लुंचित सो फी भेष॥ ७४॥ कोनफ डारा मूं मुस्त्या या॥ जटा बढे
ईके स॥ कहि जगजीवन बाजेषु सा प॥ नरम्पा है सब देस॥ ७५॥ जे दरसन भोरषली या॥ सो जे
पहरै को इ॥ जगजीवनक हैं राम रमि॥ सिध साधैक ते सोइ॥ ७६॥ दिल मधि दरसन पहरि करि राम
॥ हरि का दरसनपाइ॥ जगजीवन तेद सनी॥ देषत आनंद पाइ॥ ७७॥ नो मां भेष बनाइके करि अ २५८

पावे थिर हि थाइ॥ दाइ दूजा बहुरि करि॥ सा हिबु सौं ल्यो लाइ॥ ७८॥ जे सां ई का हरि रहै॥ सां ई ति सका दोइ
॥ दाइ दूजी बात सब॥ ते धिन पावै कोइ॥ ७९॥ इति समपूर्ण ॥ २४॥ अथ ग्रारथी ग्रं थ ऐषण साषी॥ द
इस तगुरि मालाम नहिया॥ परन सुरति सो पोइ॥ बिन हाथों निशदिन जपै॥ परमजापरे होइ॥ १॥ सबद
सुरति सुरति धागा॥ काया कंथा ल्याइ॥ दाइ जोगी जुगिजुगि पहरै॥ कबहुं फाटि न जाइ॥ २॥ ग्यां न गुरु
का गूदडी॥ सबद गुरू का भेष॥ अतीत हमारी आतमां॥ दाइ पंथ अलेष॥ ३॥ जगनाथ सो दरस
नी॥ बहे भेषकी लाज॥ काछ कछे सो नाच नाचि॥ करै सुफल घट साज॥ ४॥ चौपई॥ जोगी सो जो म
न जोग वे॥ बिन बिला इ तिराज भोग वे॥ कनक कांमिनी त्यागै दोइ॥ सो जोगेश्वर निरभै होइ॥ ५॥ सं
न्यासी सोई करै सब नास॥ गगनमंडल मैं मांडै आस॥ अनहद सौं मन राषै बंध॥ सो ई सन्यासी
अगम की कहै॥ ६॥ दरवेस सो ई जो दरकी जांनै॥ पंचे पवन अपूरा आंनै॥ सदा सचेत रहै दिन र
ति॥ सो दरवेस अलह की जाति॥ ७॥ मंडी सो ई जु आसा मंडै॥ पंचों इंद्री का मद षंडै॥ सो मंडी क
हिए तत्त समांन॥ ८॥ पाषंडी सो जो काया पषालै॥ उलटा पवन अगनि पर जालै॥ मंद मदै ई
सु पिनै आंन॥ सो पाषंडी कहिए तत्त समांन॥ ९॥ साषी॥ जोगी जुरा न व्यापई॥ काजी काल न षू
इ॥ मुल्ला मरै न जीव ई॥ ता का बंदो पाइ॥ १०॥ सषी॥ इंद्री का जती सुष का सती॥ सब दा का कमल मस्त॥ ई

गुरुग्रं· आरसीलेनपारखमी॥ तेजोमीजोमजुक्ता॥ ९४॥ साषी॥ सुंदरमात्राधरिजस्या॥ लुंच्यतपटविजसीतन॥ भेषस
१५९ देजगनाथसो॥ होइमजनमततसीलता॥ ९५॥ चौपई॥ अकलपअकलकल्यानहिंजाई॥ जनजोगसु
रईसुरआई॥ जगनमाहिंफिरिजोतिनआवै॥ जगनाथसोनाथकहावै॥ ९६॥ सासमसासमन्यासग
राम॥ मिसदिनअरूजोमअखियासं॥ साषिके अवनगवहकरिजोने॥ जनमगनाथअवनअवेने॥ ग
धा॥ ९७॥ तेवनेषगाहिसाचमनूरी॥ इडेदरोगसुबुधिकरिहरी॥ जगनाथसबदमसोजोने॥ दरवज्रदअ
रादपिठोंनोपा॥ ९८॥ अगनतदेजोनेआगवंते॥ जनमनतादिनरामहिंअते॥ सुमरनस्वासाकरिजपमा
ले॥ जगनाथअंचेयमजाले॥ ९९॥ साषी॥ जगनाथजिनकेमत्या॥ मजनअनपलजअन्यामॅ नामसेंको
कुकलुकदेयो॥ जोगीजनमंन्यास॥ १००॥ दोहा॥ सोईजोगीसोईजगमा॥ सोईसोफीसोईसेष॥ सोईसंन्या
सीसेवडे॥ जिनकेएकअलेष॥ १०१॥ दोहा॥ सोईकाजीमुल्ला॥ सोईमोमिनमुसलमान॥ सोईसयानेसबकलै सो
जोरहेरहिमांन॥ १०२॥ सोईजनसाधुसिधसो॥ सोमतवादीसूर॥ सोईमुनियरदाइवमि॥ सतनमुषरहा
नदजूर॥ १०३॥ दोहा॥ सोईजनसाचेसोसती॥ सोईसाधिकसुजोन॥ सोईग्यांनीसोईपंडिता॥ जेरतेभ
गवान॥ १०४॥ सांहिमूं छिनिजमसदकी॥ तोनरमेंआर॥ जगनाथलदेजाइए॥ सुषनिधिदेवसु॥ राम
वैराग॥ १०५॥ अरेला॥ सुषनिधिदेवदवोरअरकाधमइए॥ जगनाथजगसीसईममनल्याइए॥ एकोसुस॥ १५९

धिमवसाधवेदसुनिंकदतदै॥ सतिताभिलीसमंदफेरिनदिंवदततसै॥ २३॥ अतिसंपूरी॥ २४॥
१५७॥ अतिगतिविषजिनण॥ साषी॥ चाहमधमसमूदलषि॥ धमवेतधमजनदारि॥ निकटयाये
तेजाइयो॥ नेनमिहंकोबारि॥ १॥ अतिकामजानवरसनी॥ अतिकीसलीनधुपा॥ अतिकामज
नवीलमं॥ अतिकीसलीनसुपा॥ २॥ बडमेताचिरजीवरां॥ बडनोलगांदषांरां॥ बडरसमदेली
चितधरै॥ तेचूकदिअेसांण॥ ३॥ अतिआदूरअतिलोअनै॥ अतिसंगतितैमम॥ साधनिंहकेदे
तदे॥ केसवचचलचित्त॥ ४॥ अतिगतिदांनवदेसजंण॥ लसोलोमफरअतम॥ मथनमथतजग
नाथनिधि॥ निकसेविषवलिवंत॥ ५॥ अतिलालिचलीयेमेरे॥ जरजोधनधरलीन॥ जगनाथजु
थसोंगयो॥ पंतीयैफनदीनाथ॥ ६॥ कैरोकिरयनअतिमण॥ पंदैदईनपैम॥ जगनाथजोधजलो॥ जिव
कीवांधीमेंफा॥ ७॥ रावनकेरनवासमवड॥ रखनीरामहिरांन॥ दशसिरविनजगनाथसो॥ सीतासे
षेप्रांन॥ ८॥ अतिअनीतितैंकधैरे॥ असुरईसजंजोत॥ जगनाथबरबजनदे॥ नयोवेरीदांअंत॥
९॥ बडविवमेहुछलकिये॥ तेजनमकनीमेंदेहोश॥ उलसीविजावमनूदरि॥ अरुबलिवांवन से
श॥ १०॥ बडजसुदरअरुफरअति॥ बामविमांजंफलाइ॥ मनतीमूंकोगेरमहि॥ वेखाअरुबद
सूला॥ ११॥ जसंईरमाअलिदमा॥ अतिदसमोअतिकेौध॥ बडचितविरआगकी॥ आसाकर॥

सुं०मे० मनआबोध॥२॥आपकपकउथमरहै॥जगमाथनहिंबोध॥एषैसबजायघटविषै॥ताकौंकैसौबोध॥ ८
१६० ॥३॥किरियाकष्टकछूकरै॥सेवासुमरनयोग॥आतिमतितैंजगमाथजना॥उपजेआरिसरोग
॥४॥आतिसइचनिग्रहनलौ॥आरिसमोटीमला॥जगमाथजुगज्ञानिकै॥लाविचारिमूला॥
५॥आतिगतिआरिसकाकिकै॥गुरबचमनिसनदेक॥जुगतियहैजगमाथलगि॥अनम
जीतिकरिलेऊ॥६॥आतिगतिमलीकहतहै॥जुगतिसुमतसबसंत॥जगमाथमीकीछु
री॥मदीमिनाकुआमा॥७॥कदाछुरीमीकीकदा॥आतिगतिदोकसाला॥जगमाथसुधरम
ला॥छुरीकरेपैमाला॥८॥धीरजसोंमीकीगहै॥छुरीनछुसहाथ॥पमका पक्षपापतिम
दी॥जबलबजनजगनाथ॥९॥इतिमसपूरा॥१२॥४०८२॥मथिमिरपषअंग॥साषी॥मौमिग
हैतेवासरा॥बोलैपरेअयांन॥सहजैरातेरामसों॥दादूसोइसयांन॥१॥मतिमोटीउससाधक
हैपषरहितसमान॥दादूआपमेटिकरिसेवाकरैसुजान॥२॥आपामेटैमतका॥आयाप
रेकाकास॥दादूजहांजहांदेहनहीं॥मध्यानिरंतरबास॥३॥कछुनकहावैआपकौं॥काहूसंग
नजाइ॥दादूनिरपषकैरहै॥साहिबसौंल्योलाइ॥४॥नांघरिरहांनबनिगया॥नाकुछकियाक
लेस॥दादूमनहीमनमिल्या॥सतगुरकेउपदेस॥५॥कादैदादूघरिरहै॥कादैबनषंडिजाइ॥घर १६०
आतिप्रिपिबर्तितं०

बनरहितारांमहै॥ताहीसौंल्योलाइ॥६॥दादूजिनिप्रांणीकरिजांणियां॥घरबनएकसमांन॥घ
रमांहैबनज्यूंरहै॥सोईसाधसुजांन॥७॥सबजगमांहैएकला॥देहनिरंतरबास॥दादूकारनिरा
मकै॥घरबनमांहिउदास॥८॥घरबनमांहैसुषनहीं॥सुषहैसांईपास॥दादूतासौंमनमिल्या॥इनतैं
भयाउदास॥९॥नांघरभलानबनभला॥जहांनहीनिजनांउं॥दादूउनमनमनरहै॥भलातसांउथ
॥१०॥कबीरपूरबपरहरै॥पछिमहूंनहिंजाइ॥॥जसपांनीदीजिए॥तामसआगमिलग्याइ॥११॥के
कासीकाबाकरै॥दिसिबदरीपूनमंत॥जगमाथजगहरिभजै॥सारगमध्यरमंत॥१२॥काबाफिरि
कासीभया॥रामभयारहीम॥मोटचूंनमैदाभया॥बैठिकबीराजीम॥१३॥हिंदूमुसलमानकहि
सुसलमानमुदादू॥काहिकबीरसोजीवता॥दुहूंमैंकदेनजाइ॥१४॥सषी॥दादूअलहरामकाहै
पषतैंन्यारा॥रहितागुणआकारका॥सोगुरूहमारा॥१५॥साषी॥रामरामहिंदूकहै॥तुरककहै
मरहीम॥जगमाथदुहूंनांमका॥पायैमरमफहीम॥१६॥कोऊपढतपुरांनकौं॥कोऊकथतकु
रान॥जगमाथजनमआनन्दहै॥अनभैकरतबषान॥१७॥हिंदूहरषतहरिकहै॥तुरककहुदाइ
सुसाला॥जगमाथउलटीछुरी॥लागतदुहूंकौंकाल॥१८॥हिंदूहरिगुनउचरे॥मुसलमांनम
मिसिदहरि॥कहिजगजीवनदरदसंद॥रामअषंमितलहरि॥१९॥मांदमहिंदूनाउरका॥मोदम॥

गु०ग्रं०
९६२

सत नगुरु॥ हम निरपख निर्मल भया॥ अगा जी घर मसि रहा॥२०॥ दादू नो हम दिहु कूं हिंगो॥ म
हम मुसलमांन॥ षट दरसन मैं हम नहीं॥ हम रहे निरदिमांन॥२१॥ मत दो हिंदु दे कुरांण॥ नते दादू
र कम सीति॥ दादू आप आपदै मदी नहां रद रीति॥२२॥ दादू हिंदु लागे देहुरे॥ मुसलमांन म
सीति॥ हम लागे एक अलेख सों॥ सदा निरंतर प्रीति॥२३॥ कोई हंदु अतदे कुरांण॥ कोई मसीति मिहा
ज॥ कदि जगनाथ हरि रांम बिन॥ सुरति भैजे बाजा॥२४॥ कोइ कतीदे मूलगी॥ कोई मुल्लगे दिया ल
जगनाथ जन जगत गुर॥ निरपख लगे निराल॥२५॥ कोई पूजे देहरा॥ कोई मांमें पीर॥ जगनाथ
मत संत हरि॥ जीवन तत सकल सरीर॥२६॥ साखी॥ केई तैम सीति हि मांये॥ के मूरति सों लाग॥ कहि पु
थी नाथ ए सोवत देषे॥ कुछ बिचिर दे सु जांगे॥२७॥ साषी॥ दादू करनी हिंदु तुरक की॥ अपनी अ
पनी ठौर॥ दुहूं बिचि मारग साध का॥ यहु संतों की रह और॥२८॥ दादू हिंदु तुरक का॥ दे पष पंथ
नवारि॥ संगति साचे साध की॥ सांई कौं संभारि॥२९॥ हिंदु देतनीर थोलाया॥ मुसलमांन हजक
ने॥ जगनाथ दोऊ मधि मारगा॥ मदा गुरु रक्ष मनत फावे॥३०॥ साषी॥ हिंदु को हिंदवी नांमा॥ तुर राम
क निकों तुरक का नांमा॥ जगनाथ दोऊ सो न्यारा॥ गुर रष पंथ मन मांनां॥३१॥ साषी॥ हिंदु हद विधि कि
यहै॥ तुरक मरहैम दराह॥ मधि मारग जगनाथ जन॥ निरपष चले अराध॥३२॥ बात एक दे कार ९६२

रहै॥ पष मिलि बिधि नांव कहैं॥ कासी कौं को हक हे॥ कार जल लागे अनेक॥३३॥ दोऊ की करनी तजै॥
जे निरंजन नाथ॥ मधि मारग की नो बिषम॥ चलि पड़ै से जगनाथ॥३४॥ नो हम छाड़ै नांव दैं॥
से मार्ग मन बिचार॥ मधि आइ से वै सदा॥ दादू मुकति द्वार॥३५॥ तरवर पंछी दहूं कौं॥ परमा एक मु
मारग पंछी कौं हैं न जांनहो॥ तरवर के देन आवे॥३६॥ पेड़ा हुनि पिर थी करे॥ पाप कि या तुनेह
श्री यादरूप करसार हतिहै॥ सासमि श्री रनको॥३७॥ यी पाप मन की जिए॥ लोप मिकी यासो बार॥ का
हु को लीजै नहीं॥ तोही यो बार हजार॥३८॥ मासा मासि सामरि आई॥ नपांन पुत्र न यो सो ई॥ सूतक सूत
ग दोइ मैं॥ नातें ह्रियाम नक्षो॥३९॥ कबीर स्वर्ग नरक तें रहया॥ सत गुर के परसादि॥ चरन कमल
की मौज मैं॥ रहिहुं अंत र आदि॥४०॥ बेऊं बसि सतस दामनहीं॥ दोजक नरक न कोई॥ जगनाथ दे
पष बिनां॥ बस्त अस्त नहिं होइ॥४१॥ दादू पथि चलैं नेपांगि सोय॥ नेतां जल बोडारा॥ निरपष म
ध्य सो सही॥ जिन केरए कअधारा॥४२॥ कबीर हद रदी पीय री॥ दं नौ जल साइ॥ रांम सनेही संमिले॥
स्वर्ग नरक मांमाइ॥४३॥ इति सपूरण॥२२॥ ४२०॥ देह दागअंग॥ चौपई॥ देह दाग डनियां मैं जो
नो धरतल अनल पवन अस मांनें॥ दो घनि दो घर है मांमाने॥ जगनाथ पंच भपर धांनें॥ १॥ मधि
मुसलमांन रह मूतिकां॥ हिंदु हहद सो कां॥ जगनाथ बिरजन निकां॥ इन सों पांच मपांच॥ २॥ अस

मधिनूपष०

गुं०जं० ही॥ जारौं पष दिंष्ट का क दिय॥ गामें मुसल मांनं॥ जगनाथ दोऊ सौंप्यारा॥ महापुरष मेंदांनं॥ ३॥ चौप
१६२ ई॥ जारें जीव्रहतन को जाई॥ पामें लगो किरम अस्थि का ही॥ जगनाथ जगदिस पगारी॥ साधपुरष य
ज्ञ धर्म बिचारी॥ ४॥ साषी॥ रजब साध सूर का॥ मसांण में दोनु॥ पसु पंषी षाय॥ बहि अषै॥ नो दी गोरम
सी ना॥ ५॥ गोरम सांमनतिमकुं को॥ जे शप डे मंषो मि॥ रजब सो भ्य सवर ही॥ सरब सस्त्रायां को मि
दा॥ ६॥ साषी॥ जिसका साहिब तुरक नाहि हु॥ दहुं पषां ते न्यारा॥ षष मांव दा थोडे धरियो॥ जहांलग है सं
सारा॥ ७॥ चौपाई॥ नीरबिन उपनतब थे निदोनां॥ मुनिजन अत्रच वे केरे रहमान॥ व हतो सरिमा हो प
रवे सं॥ जगनाथ कछु बरन उपदेसं॥ ८॥ साषी॥ चारि दाग यह कुंतु गनि मैं॥ चंत रवे दकी साषि॥ जा
लिमा फि पर वा हि जल्प॥ आवै चौडे राषि॥ ९॥ चौडे राष्यां ब कुत सुन्या॥ जालयां जी सु जला॥ आगा झ्या गं
फ पडे मरें॥ जंत्यसे जल सडि जाइ॥ १०॥ क्या जौ गाप्या जालिया॥ क्या जल जंगल मांहि॥ म जन सील स
त साच बिन॥ कोटि करै गति नांहि॥ ११॥ चौपाई॥ ब्योम बरा गाम दा सुन्यन पापं॥ सुषद षमेटि मिले॥
हरि आपं॥ जो मन मस्सैन क ब रहे दोई॥ जगनाथ ओ सा जन कोई॥ १२॥ साषी॥ ब स सम्रगनि का दाग
दे॥ जीवत मृतक गोर॥ दादू पहली घर कीया॥ आदि हमारी गोर॥ १३॥ बस सम्रमनि दे दाद गी॥ पांन राम
न पालैंनी न॥ क्या जारे क्या गाडिए॥ पपन जेषे क्या मीन॥ १४॥ जन दादू गति युक्त नहीं॥ कहे कबीर॥ १६२

सो पीना॥ जगनाथ जुग जोवतां॥ आगम पयां वांदीम॥ १५॥ साध सिद्ध जे तेम रा॥ तिन कैयु जनि
रधार॥ जीवत मुक्ति हरिभजन है॥ जगनाथ उपगार॥ १६॥ दागगु रिका आदि दे॥ जाइ करत
तन संक॥ जगनाथ जग कुं याहे॥ मन मैं होतनि संक॥ १७॥ गोर गोरगल गातप रा दे तष सी
दरवे सा॥ दादू तत चेतन मिचाम री॥ को नगपां म जुप देस॥ १८॥ जी दत गति दी मैन दी॥ म्हे दे मुक्ति
न कोइ॥ दागअं के कार जु म रे॥ तो है गो कुके होइ॥ १९॥ दया दी न दे ही दरी॥ दीन ली न हरिनो
ते॥ त्याग तत तन बाधन दी॥ जगनाथ बन गांइ॥ २०॥ जगनाथ जीवत जदै॥ मृ वां मुक्ता सरीरा॥ अ
सैं जनाद्व रहो सल्ते॥ आगा नि मत का मीरा॥ २१॥ हरि भजि साफिल जीवनो॥ परउपगार स माइ॥ द
हमरनो तहां भल्ला॥ जहांप पु पंषी षाइ॥ २२॥ कबीर मरमांत हां भल्ला॥ जहां न आपनां कोइ॥ अ
मष भषै जनावरां॥ मुवांन रोवै कोइ॥ २३॥ श्लोक॥ अथ मत्र वाचो॥ जत्र कत्र मत्रे बे ष्मा वा॥ भक्त ते
क स्वानकावत॥ न्यंदते सकल संसारं॥ बुद्धि मुक्ति कंच के सवः॥ २४॥ श्रीभगवान उवाच॥ जत्र कत्र म
त्रैवस्ता॥ कयाकतेपं क्ति दे शा॥ परमस्थ्या से गतेषांम॥ मुक्ति रेवान संशयः॥ २५॥ जहां तहां ज
नतन तजै॥ किरिया जोवक राहि॥ जगनाथ आतम मुक्त॥ नीरण संशय नांहि॥ २६॥ चौपाई॥
प्यांनी गत जगनाथ बासनां॥ नेदा भेदल जाके कोइ॥ कासी अरण वा आंन सुपच घरि॥ मरन मुक

गुं०णं० ॥मांहिं सुषसी सुद्वा॥२३॥ पुरांन कुरांन सांधमत॥ दोइ बसे ता ये ग्रास॥ जगनाथ नर जीय का॥ बाल
१६४ नकै रे बिनास॥२४॥ चौपई॥ सांतन फाड पेट देषा मांही॥ दुस्या संता ये ग्रास ब मांनि॥ अन जगन
थ दया बिन दोऊ॥ बात निस्चै सो बात बंषांनि॥२५॥ चौपई॥ पढि कुरांन पुरांन बषांनै॥ मिहर दया द
ल मे सुदि आंनै॥ हिल मुगरी बीग दी नमाज॥ तिनिं आतम अरषाद संता ई॥२६॥ साषी॥ दाडू मास अ
हारी जेन रा॥ ते नर सिंघ सियाल॥ बग मंजार सुनहां सही॥ एता पातबि काल॥२७॥ मुई मार मांरा सघ
गोंत प्रतषि जम काल॥ मिहर दया नहीं सिधु दिल॥ कर कर कागसियाल॥२८॥ दाडू मुए को कास
रिणमी यो मुई मार॥ आप स को मारे नहीं॥ औरों को ऊ सियार॥२९॥ आप स को मारे नहीं॥ पर को मारै
जाइ॥ दाडू आपा मारे बिना॥ कैसे मिले षुदाइ॥३०॥ भीतरि दुसमन रहे॥ तिन को मारें॥ हिंसा देष
कौ अरवाह कौं॥ ताकौ मारण जांहि॥३१॥ दाडू जे गैब मांहे जीव जे॥ जग तेर है ते सा॥ ऐसी तजयां न कर
तिदिन॥ निस्चल नांही बासा॥३२॥ बांधे जीव सब॥ भोजन यांसी ग्रास॥ आतम घयां नन कुपजाय॥
दाडू करहि बिनासा॥३३॥ कहा च बहु गिरयुली॥ सब पक हा मोर॥ जीजे सब की हाथि दिल॥ की जेजु॥
ल्लन जीरा॥३४॥ तिमिं लोग निते हरिहे॥ निकट न आवदि पास॥ यो घर्दिं अपनी आतम मां॥ हतहिं पराये॥ राम
जीव॥३५॥ यो घरहिं अपनी आतम मो॥ घात करैं पर प्रांन॥ जगनाथ नर सु गति है॥ जंज कर षेत रहांन॥३६॥ चौ १६४

पई॥ प्रांन घात प्रांनी जे करई॥ मुक्ति नहीं ते जो मै मरई॥ जगनाथ जहां स्वास रु मे सा॥ श्री मुष क
है सु बिजन मन्त्र सा॥३७॥ साषी॥ जगनाथ जगदीश सब॥ जो देषे सो मांन॥ सो आतम मांहिं न हते॥
वेद सकल के ल्पांन॥३८॥ जे सी आतम आपनी॥ तैसी जानै और॥ जगनाथ मो मांहे ते॥ हत्या न ले
ई कोर॥३९॥ मिहर मरहत बिना हरी॥ मुक्ति कहां है बीर॥ भ्रमे भुल्यो नै लोग सब॥ बांधे करम सरीर॥
४०॥ स्वारथ सु कृत अमरथा॥ देषि बिबिदं गाबिचारि॥ बाजपराये पांन परि॥ हेप ली निज मारि॥४१॥
क्यों न काटे सम मज फसुहि॥ कौं न काज के जज्ञ॥ अमु अजा औ बिप कौं॥ हति के होम हि अग्य
ध्री॥ घय्य नर अस्व मेदादि ते॥ अदंस्या अध्य कार॥ दया धर्म जगनाथ जन॥ अधरम अदया मा
रा॥४३॥ जुमाल पथ य मजो कंते॥ स्त्रुति स्मृति जन भाषि॥ दया स्वरी जगनाथ जे॥ अदयान रंक
नराषि॥४४॥ जीस्व जो वहि हारि कै॥ बलि बसु यन कों देत॥ धन्य मजा रयौ हाथ तैं॥ पाप मोलि कै ले
त॥४५॥ देव दिहारी पूजई॥ जे देषत निरजीव॥ तिन आगे जगनाथ जम॥ हतत है सरजीव॥४६॥
चौबोला॥ पूजत भैरूं भूत कौं॥ पर ज्यो घात करंत॥ कहा बिलावल तिन घरां॥ दिल न हिंद याव
संत॥४७॥ साषी॥ पशु पे षत है मनि षकौं॥ नर निरषत पशु अन॥ जगनाथ जगदीश सुर॥ अंछत
हतत नहिं चैन॥४८॥ मास अहारी मद्यपी॥ बिषै बिकारी सोइ॥ दाडू आतम रांम बिन॥ दया कहां थी

ग्रं०१०० सोइ॥धरी रे षता॥ बे मिदर गमरा हरामफिरवा॥मो स्त षुदि मी॥ बेदिल बदकार श्रालम॥ ह यात मुर
१६५ हनी॥५०॥साषी॥ जेरतन्न छ यै क प्प डे॥ जो मां हो इ पलीत॥ सोरतपी वहिं मां रंद् वा॥ मानक विन्क
ल को कंपु रजु चीत॥५१॥ निज तन ची मारगु मरा॥ ता ह्वि देषि सु गांहिं॥ जगनाथ हति पारको॥ रकत
मो मको षो हि॥५२॥ जीव दया पालैन ही॥ मारन ही को ज्रोहि॥ जगनाथ श्रम कानि के॥ सा समु ढम
रवांहि॥५३॥ फेर मारन हिर श्रमै॥ मा मजुवे मी ध्यात॥ जगनाथ पर श्रापड़क॥ घात नन ने क संकात
॥५४॥ जगनाथ रजरे तको॥ श्रमी गंदी देह॥ श्रातम हति कै षाड़ण॥ कौन मयान पगह॥५५॥ बेरन
ही कछु जीव मो॥ मोक श्रा हिम्र नाथ॥ श्रबल सुबल मा हिन करै॥ ते कृ हति ये जगनाथ॥५६॥
बेरीति मदंत निगहे॥ ता हिन मारै कोइ॥ जगनाथ षरचर मषे॥ तिन हि क दा गति होइ॥५७॥ गरी
ई श्रापुन सुष मै॥ देइ पार को रा॥ जीव दत तहै पाव के॥ मी निलो कन हिंगो र॥५८॥ दाइ कोई का
हु जीव की॥ करै श्रातमो घात॥ साच कहु सत्रा य न ही॥ मो पापी दोजगि जात॥५९॥ जगनाथ ती
रथ उ वा॥ तप जप जग्य श्रमु श्रांन॥ इन कै सुष सब मां हि नो॥ जीव दया सा मांन॥६०॥ जीव घात स
म दुष नहीं॥ सुष न हि दया समांन॥ जगनाथ जन कहत है॥ श्रापुन श्री भगवान॥६१॥ इति सुप
॥६२॥धर ररा॥ दया न बेरता॥०॥ सो वी॥ हि ये प स्यो मुहि म फि॥ सं कर पी बिन स फ ई॥ को श्रप मो ध्ये राम
श्रदया ॥ १६५

र कि॥ उ व न सु व न स्हवैं जहि॥१॥ साषी॥ उवन सुवन पजुए क गिनि॥ हेत लेत हचि जीय॥ सं
क जी स न मुष रहै॥ यह भक्ति निज की या॥२॥ श्रापा मेटै हरि भजै॥ तन मन तजै विकार॥ निरवैरी स
ब जीव सौ॥ दादू यह मत सार॥३॥ निरवैरी निज श्रातमा॥ साधन का मत सार॥ दादू जारा मनि
ना बैरी मकि बिकार॥४॥ साषी॥ निरवैरी सब जीव सौ॥ संत जन सोई॥ दादू एकै श्रातमा॥ बैरी न
ह कोई॥५॥ साषी॥ सब हिन सौ निरवैरता॥ थिर जग मनि ये कोइ॥ जन जगनाथ जु झंत है॥ श्रंत जो
मी सो श्राद्दु॥ घट घट श्रपनी श्रातमा॥ परमातम का बास॥ जगनाथ हू जान ही॥ करै कौन का
ना स॥७॥ सकल श्रातमा सी चिए॥ श्रपनी शक्ति समांन॥ जल दल श्रा सन बसन करि॥ दया दी
नता दांन॥८॥ पशु पंषी श्रादमक हा॥ किन हू सौ न हि बैर॥ जगनाथ निरवैरता॥ याही मो
टी षेर॥९॥ जीव दया मरि षो न ही॥ उनि यां मैं को दांन॥ जगनाथ जन वंदगी॥ मान तह रि सा मा
ना॥१०॥ श्रंतर जामी श्रातमा॥ व्यापक सब ही देष॥ जगनाथ घाली न ही॥ जगमम मांहि विसेष॥११॥
श्रपनी परपी रा लहै॥ निरवैरी सं मारि॥ जगनाथ निरदोष जो॥ करि नरी स क हि मारि॥१२॥ गोम
करै यह जरकै है॥ मारन कह है सो मा स॥ बुरे बैन नहि बैरता॥ जगनाथ तजिया स॥१३॥ तन मे गणे मन ह
मार दै॥ मार गैर है गारि॥ गारि त हांडि या बेक क रि॥ इहिं बिधि री स बि सारि॥१४॥ साषी॥ साधत री

ग्रं०पा० सुषि मारन कछिए॥ मारै ते साध के ह्वा॥ गुर का सबद पिछांणैं नांही॥ सहे सब घाट की चेष्टा॥ ६६ सामा
१६६ षी॥ दाहू दया जिन्हौं के दिल नहीं॥ बहुरि कहावैं साध॥ जे मुष उन का देषिए॥ तौ लागै ब
हु अपराध॥ ७७॥ दिल में सोई सब रा षिए॥ सब आतम सम भाइ॥ ए दया निरबैरता॥ जगनाथ सु
षदाइ॥ ७८॥ जिनि अपने आं गुन तजे॥ उर तैं धरे उत्ताइ॥ उरमी सो कैं मंग है॥ दोष परा ए जाइ॥ ७९
॥ किन हूं दुष न दीजिए॥ करै कबीर न घात॥ सब साहिब की आतमा॥ मनि पकृत रपात॥ ८०॥ ई
सर अपणें भावतैं॥ दुषी न कीजे कोइ॥ सब ही कूं सुष दीजिए॥ जे अप नांव सहो इ॥ ८१॥ दाहू पूर
ण ब्रह्म बिचारिलै॥ दुती भाव करि दूरि॥ सब घटि साहिब देषिए॥ रांम रह्या भरिपूरि॥ ८२॥ दाहू
मंसा आरसी॥ देष तहू जा होइ॥ भरमत ग्यान बिधा मिटी॥ तब दूजा नांही कोइ॥ ८३॥ दाहू मद की
यका॥ मर्कट सुन हां जाइ॥ दाहू एक अनेक है॥ आप आप कौं षाइ॥ ८४॥ दाहू आतम देव आराध
या॥ बिरोधि एन हिं कोइ॥ आराधै सुष कृपजै॥ बिरोधे दुष होइ॥ ८५॥ काहू कौं दुष दीजिए॥ घटि घ
टि आतम रांम॥ दाहू सब संतोषिए॥ यहु साधौं का कांम॥ ८६॥ साहिब जी की आतमा॥ दीजे सुष सं
तोष॥ दाहू दूजा को नहीं॥ चवदह तीनूं लोक॥ ८७॥ सषी॥ दाहू जब प्रांण पिछांणें॥ आप कौं॥ आ
तम सब भाई॥ सिरजनहारा सबनि का॥ ता सौं ल्यौ लाइ॥ ८८॥ सब मंत्रनि की साषि यहु॥ जे पहुंचै

सा
१६६

नि जनेर॥ जगनाथ जिन के रिदै॥ होइ दया निरबैर॥ ८९॥ काल झाल तैं का ढि करि॥ आतम
अंगि लगाइ॥ जीव दया यहु पालिए॥ दाहू अमृत षाइ॥ ९०॥ दाहू बुरा न बांछे जीव का॥ सद
म जीवनि सोइ॥ परले बिषै बिकार सब॥ भाव भगति रत होइ॥ ९१॥ जगनाथ गुन वेष के॥ ति
नहीं कौं दुष देइ॥ औरस नी की आतमा॥ तिन सौं लर जु सनेह॥ ९२॥ पोषै आतम एक कौं॥ या
सम पुंन्य न कोइ॥ जगनाथ संरच्या नहीं॥ त्रिपति आप हरि होइ॥ ९३॥ षोन पान अरु बचन करि
॥ अंतर गति तिनि रहो ष॥ जगनाथ निरबैर सो॥ धरै न काहू दोष॥ ९४॥ सब ही कौं सुष दीजिए॥ ड
रलाइ कन हिं कोइ॥ जगनाथ दुषि दुष सही॥ सुषि सुषिया दी होइ॥ ९५॥ साषी॥ दिल है दरपन अ
रु चिंतामणि॥ जो बांछे सो पावै॥ मार भला सो मार पहूंचै॥ दया की यांद त पावै॥ ९६॥ चौपई॥ दिल
यें
र तौ डर बाक रो॥ बैर किलौ का जनम रै॥ दुष दीयै तौ दुष ही पावै॥ सुष दाता कौं सुष बहु आवै॥ ९७
॥ साषी॥ जे सी चित इनि दिल में राषै॥ ते सा ही फल पावै॥ महल करै पम बोलै जंह ही॥ तंह ही उतर आवै
॥ ९८॥ साषी॥ निंदा स्यालच अषलि सा॥ दुष सुष मांनि अमानि॥ जो कछु व्यापै॥ आप मदि॥ सो मन औरत
न जांनि॥ ९९॥ अपनी व्यापति देषि कै॥ दोष दया करि बीर॥ जगनाथ जे सी इहां॥ उहां तहै सुषपी
र॥ १००॥ जे आप देषै आप कौं॥ एं जेइ सर होइ॥ तौ दाहू जानै ही॥ दुष न पावै कोइ॥ १०१॥ दिल न दु
जगनाथ तनकी लषै॥ ते कै सकल सरीर॥ अपनी ही सम कै नहीं॥ का जांनै पर पीर॥ १०२॥ २॥

गुंष्यं० यो ऐ बचन करि॥ का हू की जगनाथ॥ वमी दयायह्न कसतु जन॥ कंहु निये निज हाथ॥७४॥ देह
२६७ मह षेदी मता॥ यान दिस कलप्रतिपाल॥ भया वंत मन मे रहै॥ ते जगनाथ दया ल॥७५॥ दया नी न
परकार की॥ मन बच कर रिये काइ॥ दते न चित मे चिंतवै॥ सबद न कहै ठाइ॥७६॥ तन करे म
न करि बचन करि॥ देत न का हू दुष्य॥ हरसी पातिगना सहै॥ देषत न का मुष॥७७॥ वेदप
दे ति नियम किया॥ पुनि तीरथ स्नांन॥ जगनाथ कर बचन मन॥ दया बिन निदान॥
७८॥ इति संपूरण॥ रूरा धरहु॥ साच नृदेस का अंग॥ साषी॥ गुंजाहली न गर्व करि॥ कंचन समित
लियं ति॥ सम तु म लांने पटंतरो॥ कुता सामि ये संति॥१॥ चोपई॥ गुंजाहली गर्व कर बोली॥ जे सो
नां की सर लरिती ली॥ घन बे संद रिये सिनूआरे॥ तौ कालेमु हफे कां इप मांदे॥२॥ जा सबांति
न हि सर सबिला सा॥ जा सषत गान रिषके ना सं॥ लागत सुराण तन ष्यूणों सी सा॥ नसो धरणी का
धरन सो काबी सा॥३॥ साषी॥ दादू सो ना का रणि सब करें॥ रीजा बंग नि रा जा सुत्तान एके आ
हि सो॥ जेडक सादि बसती काजा॥४॥ हरी जन हजरी होइ रहु॥ का हे करे कलाप॥ सुलतान हांपुका
रणा॥ जनदो अरस हला ही आपणा॥ आपयाद कंछु वेकरे॥ मन साअरथ दाबाचा॥ बस लयें जगनाथ से ।राम
पि बिव्या बोनी साच॥६॥ मांन की रतन करिक थां॥ अपथ बाग हिर दिमांन॥ वह्ना बस्तर को पीन हि २६७

न॥ बन मैं बसो कियों न॥७॥ सुध हिरदै से मथे मजे॥ मन करि किरिया कों न॥ जगनाथ जगदी
श जन नारी केन दे स त्यों न॥८॥ अरु ज्ञ कव्य की आयु जद॥ अगम बसे जिहि देस॥ अयदास बणी ब
टव॥ कलप किये उसके सा॥९॥ साषी॥ दादू कूग साचा करि लीया॥ बेष अम्रत जो मा॥ भंषको सु
ष सब को कहै॥ अैसा जगत दिवाना॥१०॥ साषी॥ साचा राता साच सौ॥ कूगरा ता कूग॥ दादू न्या
व नवे रिए सब साधों की पूछि॥११॥ सुक्ष मारग साच का॥ साचा होइ सु जाइ॥ कूग कोइ नां चले॥ दा
दू दिया दिखाइ॥१२॥ कोमल मन लोचन का बिवचन॥ तेती सब्द न रिध॥ केपसु सी मां बाहिरा॥ के पर
चा सो सिध॥१३॥ मन मासा मां मीन ही॥ चंद मंद क्या ताहि॥ मन कौ फेरि न जानई॥ मनि के फेरत आ
हि॥१४॥ मनहीं मंजन की जिए॥ दादू दर्पन देह॥ मांहैं मूरति देषिए॥ इहि औसर करि लेह॥१५॥ दा
दू जिस का दर्पन ऊजला॥ सो दरसन देषै मांहि॥ जिस की मैली आरसी॥ सो मुष देषै नांहि॥१६॥ जब
पो सोका आपणी॥ पदरि कि यादु क कोम॥ बषनां बांदी कुंकरे॥ पतिबरता की होम॥१७॥ सोमी सा
चो सब ही गाहि॥ माने वो महिपाल दे॥ नांणो मांणां मांहि॥ कडो होइ सुका हिए॥१८॥ साषी॥ दादू कूग
बद लि ये॥ साच न बदल्या जाइ॥ साचा सिर पर रिरा षिए॥ साध कहै समकाइ॥१९॥ दादू साचा अमर नूरी
लए॥ साहिब मानै मांहि॥ साचा सिर पर रिरा षिए॥ मिलि रहिए ता मांहि॥२०॥ दादू जे को मैले साच को॥

गुं०गं० १६८ तौ साचा रहै॥ कोमी बरकों दीजिए॥ रतनस्री मोजिक जाइ॥५॥ कांमसरत है साच सौं॥ सइयो साच
सुदाइ॥ जगनाथ मोसाच ग्राहि॥ साच हि मांहि समाइ॥८७॥ इति संपूर्ण॥ स्तु॥ अरह६॥ करतमक
रताण॥ सोरठा॥ हरि ग्रर दे नास ताहा॥ केचीम सिदेरां बस्ना॥ तेकेरुता ताजाहा॥ कथह॥ सीग्रक
मेतरा॥१॥ साषी॥ संकट सेवग का हरै॥ सोइ सिरजनहार॥ जगनाथ जन ममरै॥ केम कहिय क
रतार॥२॥ दादू माया वेगी राम की॥ ताकौ लषै न कोइ॥ सब जग मांने सत्रिकरि॥ वका ग्रसमाभो
दाइ॥ साषी॥ माया रूपी राम कौ॥ सब कोई ध्यावै॥ अलष आदि अनादि है॥ सो दादू ॥ द्वे॥४॥ अंज
न किया निरंजना॥ गुंण निरगुन जांनै॥ धरचा दिषावै अधर करि॥ कैसे मन मानै॥५॥ साषी॥ निरंजन
की बात कहि॥ आवै अंजन मांहि॥ दादू मन मांनै नहीं॥ सरगरसातल छिजांहि॥६॥ कांमधेन के पा
टतर॥ करै काठ की गाइ॥ दादू दूध दुहै नहीं॥ मूरष देइ बहाइ॥७॥ चिंतामनि कंकर किया॥ मां
गै कछू न देइ॥ दादू कंकर डारि दे॥ चिंतामनि करि लेइ॥८॥ पारस किया पषांण का॥ कंचन कदे
न होइ॥ दादू आतम रांम बिन॥ भूलि पड्या सब कोइ॥९॥ सूरज फटक पषांण का॥ ता सौं तिमर न ज
इ॥ साचा सूरज प्रगटै॥ दादू तिमर नसाइ॥१०॥ कागद का मांणस किया॥ छत्रपती सिरि मोर॥ राज पाट राम
साधै नहीं॥ दादू परहरि और॥११॥ मूरति घड़ी पषांण की॥ कीया सिरजनहार॥ दादू साच सूझै नहीं १६८

॥ मूंदबास सारा॥१२॥ पांहन पूजै पृथमी॥ मोहि भ्रम्यो भौ आहि॥ जगनाथ आपन मूंदबसौ॥ सुतौ निराव
तका हि॥१३॥ हरि फूटै का टैको कटै॥ मनिष सवारे ताहि॥ करता करि न्यारा भला॥ जगनाथ कौं
दूका हि॥१४॥ संग त्रास घडि संग किया॥ मांन सके न न हार॥ जी हैन दीन रखुधि बिना॥ मांन तसिर
जनहार॥१५॥ सेवैं सिरजनहार करि॥ जो मैं लूके गाइ॥ मनषि मंत्ताख्या सब कहै॥ फिरि है मन को
नास॥१६॥ सावनही यूजा भरम है॥ नय ति जुई भगवंत॥ जगनाथ इस न्याइ करि॥ जगमा न की दे सेत॥
॥ साथ कहै भगवंत का॥ पूजै आंन अनेक है॥ जगनाथ पारस बिना॥ पथरि न पलटै लोह॥१८॥ आ
न देव की सेव करि॥ सुष चाहत पुनि देह॥ यो मन्ख मैं जात रथ सौं॥ ता सौं नैक न नेह॥१९॥ सकल
भुवन मांने घड़े॥ सब रच लांवनहार॥ दादू सो सूझै नहीं॥ जिसका वार न पार॥२०॥ ग्यानी पंडित ब
हु गुनी॥ परमोक्ष आतिजांन॥ उरअंधियार अग्यांन करि॥ परमेसुर पावै न॥२१॥ जगनाथ याजग
त को॥ ग्यानन कछू है स्वाद॥ करता करि सूजै नहीं॥ चरनांमृत परसाद॥२२॥ जनमे बालिक ज्ञानी
है॥ अस्मान तक बसि होइ॥ जगनाथ जन सब कहै॥ करतम करता सोइ॥२३॥ उपजि बिनसि जो
मैं मरै॥ फिरि आवै फिरि जाइ॥ सिकि ग्रधिक करता कहै॥ माया दियै भुलाइ॥२४॥ सिरजै ता सौं मन मुघा
नि ॥ पै दोइ सि रहो थि॥ जगनाथ ते सही सौं॥ पारे पांवन मोषि॥२५॥ इति संपूर्ण॥ स्तु॥ अ॥२३॥ अ॥ बिश्राम॥

गु०ग्रं० १६७ साध

समता गुन भिन्न ण॥ साखी॥ हरि अरु जांनें ओं नियउ॥ हरिआं नैंन समाइ॥ यां हरि जगसौं एक सा॥ की
जे कोनें आइ॥१॥ समअपां न जग जीव गुना रखोउ तो सब रोकि॥ प्रगट अए हरिआं न कौं॥ यां बिन स
ब अव लो कि॥२॥ मैं तिदेक बिरकाति विषे॥ हरि अनिति परि राम॥ अदिस्त्रेत नाको न ही॥ जो सम
ख़ुसंइक नाम॥३॥ रांम कहा बैअति न मां रामझंडि यां राम॥ असी बहा इएक ता॥ युन भिन समत
ना म॥४॥ राह निम र में कौ कहता॥ गहत जुक दावतं आवा॥ अैसी समता एक दें॥ सुखभिन समत
न जांन॥५॥ गुनी गुनी मनकौ कहै॥ निरगुनी गुनी न होत॥ सुन्यौ कहंत तरु अरु कहै॥ अकि समो न
उदोत॥६॥ कै सौ अटेमर रलिपे॥ सरतम मनिके कांम॥ मह्यो द मां मो जात कर॥ कहि है॥ हाके चाम
॥७॥ कनक कचवक ते सो गुनी॥ मांदकता अधिकाइ॥ ऊहिं खांसे बौरायहिं॥ यह पासें दो बौराइ॥८॥ बा
केन ह्वे जतगुन न बिन॥ बिरहबहा इपाइ॥ कहत धहूरा कौं कनक॥ या हमौं गहयो न जाइ॥९॥ सबे
द्रस नक तीउ दे॥ ना गर ता को नाव पा डेमरख गुनके बसें॥ गए गधारें गांव॥१०॥ मदही मेखी धेन अज
अकें स थ्यो हि लखी॥११॥ बरुसि एक काल कहे॥ भिन भिन ता सी र॥१२॥ इनि सेज॥ गुन पा धहूर पा कस्तूर
या चिन्तमण॥ साखी॥ दादू घटि कस्तूरी मिर्ग कै भमत फिरे उदास॥ अंतरगति जांनें नहीं॥ यातें
सुंघे घास॥१॥ दादू सब घट मैं गोबिंद है॥ संगि रहै हरि पास॥ कस्तूरी मृग मैं बसे॥ सूंघत डोलै घास॥२॥ राम १६६

ज्यों नैंन हीं सूंघत फिरै॥ ज्यौं रवजमुनां कहै॥ कस्तूरी कुंडलि बसे॥ मृग न जांनत मूल॥४॥ कुंड
लमांहि कुरंग के कस्तूरी का बास॥ जगनाथ जांनें नहीं॥ छती वस्त सो पास॥५॥ समझि नहीं सूंघत
फिरे घर रवदा बन मांहि॥ जगनाथ मृग अमि मुवा॥ आपुन खो ज्यां नांहि॥६॥ कस्तूरी कर मांएं दा
मि कवन्ह हरिनां च॥ नर देहें ज्यौं मैं नहीं॥ गयौ गुर बिन गांव॥७॥ कबीर कस्तूरी कुंडलि बसे॥ मृग ढूंढै
बन मांहि॥ ऐसे घटि घटि राम है॥ दुनियां देखे नांहि॥८॥ कोइक देखे संतजन॥ जाके यही दात॥
जाके यांची बसि नहीं॥ ता हरि संमान साथ॥९॥ दादू सब घट मांहें रमि रह्या॥ बिरला बूझे कोइ॥ सोई
बूझे रामकौ॥ जो राम सनेही होइ॥१०॥ व्यापक तत जिके कुंठ में॥ अछत फिरत अरु प्यांन॥ वस्त बि
रा जत सब निमें॥ करतत जु बेद बखांन॥११॥ हरन कसि बु कुंसं बह्यरमुख॥ हरि निरंहत अरु आं न॥ जगना
थ जग रहें सम मैं॥ सो गत जल पाषांन॥१२॥ कन्हड़ नामि सुवंग मणि॥ तिम आतम या सि अंतर॥ गंध गहे
गिंदन बन बन में॥ पाप रवांति न मंत॥१३॥ अछत आतमां रांम निर॥ जांणो बिनां नि रास॥ गुर बिन ते ग्रा
मैं नहीं॥ कहि सां वलियो दास॥१४॥ सोरठा॥ गुरतें गोविंद पाइ॥ गोबिंद बिन गति नां लहै॥ आवे तेती
जाइ॥ सु रमहु सांवलियो कहै॥१५॥ साखी॥ दादू जीव न जांनें रामकौं॥ रांम जीव के पास॥ गुर के सबदों
बाहिरा॥ तातें फिरै उदास॥१६॥ परमे सुर पासे थकां॥ भमत सकल निरास॥ जगनाथ कोपाव हीं॥ द

सुं०अं०
१२०

रि तरनदी सिमा सा॥२०॥ हरठग दंहुं रा माम दै॥ कांबे का सी लो झा हिर दय सिद्धि बो जे बिनां॥ सुमिड्या ही
ही झा॥२१॥ चौमुखी॥ पासी परी जु पाहि की॥ ना सी ग्रा तम मांहि॥ का सी के कावा कि ये॥ वा सी व दन मांह
॥२२॥ साखी॥ के का वा का सी कि ते॥ कि ते जां हि के दा रि॥ का ह्रे का ह्रे के ने फिरे॥ कि ते गवन गिर ना
रा॥२०॥ गिरा नह्रों हरि गुर कहै॥ सो जग ना थ वि सा रि॥ ठिग ठंढै पा वै नहीं॥ बो जे पर दि स्ता रि॥२
३॥ दाइ जा का रणि जग ढूंढिया॥ सो तो घट ही मांहि॥ मैं तैं पर दो भ्रम का॥ तातैं जा नत नाहि॥२४॥
दाइ के ई दौडे द्वारिका॥ के ई का सी जांहि॥ के ई मथुरा कौं चलै॥ साहिब घट ही मांहि॥२५॥ साखी॥
गपूर ब दौ रै पछिम दौ रै॥ दौ रै दछिन उत रा॥ जग नाथ दौ रै दिसि सब ही॥ रहै रा म तर स्थान॥२६॥ धान
रे कौ कौ बिरला जांनै॥ हरि सकल ही ठांव॥ जग नाथ ते रा श्रबि नासी॥ हरि सब ही बिलानै॥२७॥ माया
हरि हिर दय मैं लेइ मैं॥ गोरे सी मधुरि श्रारा॥ मन दके बिन वे मा सन॥ राम सत्ता गोरे वी रा॥२८॥ कबी
र अंसे वे बामें पू तली॥ तूं प्रा लिक घट मांहि॥ मन रख लोग न जांनई॥ बाद रि है हु पा जो दि॥२९॥ श्रोर वे
रस टक त फिरे॥ बि कट तप रिवै मी रा॥ मुइ निसाइ मैं दवी॥ मांन सरोव र तीर॥३०॥ दाइ उल टि श्रप
वा ग्रा पमैं॥ ग्रन रि मो थि सु जांन॥ मो हि गते री बावरे॥ तजि बाहर की बांन॥३१॥ पिशुप ग्रूप दपंक
जय मक्रि॥ जे सं च रुया संसार॥ भवरि गिं मनवं सा न ग्रणा जिमा॥ पंगो मप छि या पार॥३२॥ तर हेम हरि केचर राम
१२०

मस्त री पराचेतनम०

नगाहि॥ वर्हे ई कस्र रु राव॥ नृपती रथ श्रोगा हैं नैं॥ भले य रे बपाव॥३३॥ फिरि फिरि राइ फल वहत नैं
फिरि चै फिरि रा ये फेरा॥ ही ये रहो हिरा इद धि॥ हि ये श्राप नै गोहै रा॥३४॥ ब स्ना मी अंत सुसर कैं॥ केते का
ल पब नी त॥ जग नाथ अंत रि मि लै॥ बाद रि भ्रम श्रनी त॥३५॥ कबी र तिर दके बोले रां म हैं॥ पर स नत
मेरे मांहि॥ सतगुर मिलि पर चा मया॥ हरि पा या घट मांहि॥३६॥ इति भेष की अंग॥ अथ पतिब्रता के अंगलि
ख्यते॥ साखी॥ पूजन प्यारे पामि रै है॥ देही मांहै देव॥ दाइ ताकौं छाडि करि॥ बाहरि मांडी सेव॥३७॥ क
बीर सेवे साहिब राम कौं॥ मन की श्रांन न जाइ॥ सीतल तासु पिवैं नहीं॥ दिन दिन भ्रधिकी ताय॥३८॥ चेत
नि सौं पर चौ नहीं॥ कहा किये ब्रत ध्यान॥ श्रंतर विहुं नां चेत की॥ हरि थान मांतव ना रि॥३९॥ परस्ना तन मपूजे
नहीं॥ पूजै देवी देवा॥ कैंसे परिचि सौं च लता धकौ॥ जग नाथ हृथ सेव॥४०॥ देवी देवा पूजि या॥ ग्रन मि पर मे
श्वर हा रा॥ जग नाथ पावै नहीं॥ मन सा मोछि पर हार॥४१॥ सेवा पूजा सब करै॥ घरि घरि पूजें देवा
जो जी घन नि जब स्त का॥ को इ बिरला जांनैं भेव॥४२॥ ती कौं ती न सं लोक मै॥ पूरि ते मो पूजो कौ इ ज
न ग ये ग त न पू जइ॥ त ब लय ग न गति न दोइ॥४३॥ चौमुखी॥ सेवा मांहि संत की॥ देवा पूजा जाय॥ सेवा न
की जग नाथ मनिरि वा सुचहि म पाप॥४४॥ साखी॥ पूजि वा तो श्रात म देव पूजि वा॥ चेतइ व श्रमना दि
पाती॥ चरण ठ कहै कहं सठ कि म मजी॥ घट ही मीरथ जाती॥४५॥ साखी॥ नां म कहै रे पो थि यां॥ नींदन कौ

पु०सं० कछु मांहिं॥ कबन मां त्रिहरि मे द्रष्यारां म सबनि हीं मांहिं॥१०॥ सम कया घट कौं संबने॥ यकु ते ब
१३२ तम्र गाध॥ मिर जे मां मिर बे रता॥ पूजन कूं य साध॥११॥ कबीर कुनियां दे कुरे॥ सो मन सांबनूजा
सूहिर दामीन रिहरिष मे॥ नूता दी मो ल्यो ल्या इ॥१२॥ दा ह यू कुम मी ति यु कु दे कुरा॥ सत गुरि दिया
दिया इ॥ जो तरि मे रहा बद गी॥ आप हरि का दे जा इ॥१३॥ च्यां न देव के जाप सों॥ ताप न कबहूं जा इ॥ जा
ग ब्यां प मन मांहिं लो॥ मुझे मनती र थ न्हा इ॥१४॥ दौ म प्राधि कहरि मिलन की॥ भजन करै जा कि ष्र
म॥ सी च तन नर तर बीर की॥ चाव्यो चादत तन त्राता॥१५॥ चो मुषी॥ ताप सो मत न मत या कि यें॥ आप जर मिन द
जा इ॥ पाप कटै हैं जग ना थ कहूं॥ ताप स बन्त अन्त राइ॥१६॥ गी॥ जप तप ब्रत न महिं हरि॥ जा प्रभि नित
दे स की॥ मह जिर त्या भर पूरि॥ सा ब धंबन क बिम हक्ल कह॥१७॥ सा षी॥ मन कैम जग बं धिया॥ यंकिन द
या कुल्या इ॥ ह्वा इ स त गुर सां मिले॥ मारग देइ दिखा इ॥१८॥ कबीर जप तप ती मैं थो छ रा॥ तीर थ बरन
किया मान्नबे मैं बल भेद था॥ ते जग बल्या निरा स॥१९॥ पों नी ही की मछली॥ पों नी हीं महिं ब्या इ॥ पोंनी मू
त कमरि रह्या॥ पोंके कि म बिधि न्हा इ॥२०॥ चौ पई॥ न्हा वण च ले तै ते ब्रत सों॥ दिलि खोटे मन चोर॥ बार हरि
धो ती ते बडी॥ ष्यंत हरि छि समि को रा॥२१॥ दो भा ल गी न्हा दियां॥ दस भा लगी हीर॥ साध मले ले अरणक्रो
दियां॥ नोंम क चोर स चोरा चो रा॥२२॥ सा षी॥ कबीर मन मथुरा दिल द्वारिका॥ काया कासी जांणि॥ दस १३२

अनिश्चिंमरा०

गुणगंज १७२ वंन्नईपी टहिबादि॥२४॥अबुधि अबलपोरिमथका॥अगममबसिधोण॥सेयमतकसोहसिध रवै॥जगनाथ पद दत्ता॥ण॥चुप॥ओरेला॥कमे भमे सबन मिजु करिए हरिवि मों॥तयतीरथबंदो न जायप्रजादि बो॥चाहि मांहि मिजगामसांमसोनांथिया॥आगरघीवांथो न कहे॥ कि निजदिपीया त्रहसाषी॥नारहरिहइसुबदरमुरख॥हरिभत्तरी सनमुरख॥जगनाथ यूं जन कहैं॥मति को मां नैं दुरव॥२२॥कपरिकअनमसबक रै॥साध जन घटमांहि॥दादू गता ओर तरा॥ता तें बूणती नांह त्रट॥दादू पड दा भरमका॥रह्या सकल घटछाय॥गुर गोविंद कृपा करै॥तो सहजें ही मिटि जा इ॥४२॥इति संपूरण॥ट्ग॥अथण॥अनि अनि पांनविरोधण॥साषी॥ बुद्धा एक न अतिकरि गुरोजुरो अयनाइ॥बिन विचारजगनाथ जन॥मरम लाग्यिं भर माइ॥ इकपांइनकैदेगामधि गी दुपांइन को॥अरुमतन नहि बफतनमए॥यों अदेतीदोइ॥२॥इक निरगुन आराधई॥इक सगु न सिरिराधि॥मति विरोध मूलाइ है॥जगनाथ जन साधि॥३॥निरगुन सगुन रांम की॥मरति अ विसेष॥ब्यापक ता गुन संत अति॥जन जगनाथ अलेष॥४॥की निरगुन सरगुन कहैं॥को कुरा मरही मा॥वस्त जोनि जगनाथ जन॥चुपमहि रहे फरहीमा॥५॥दादू निरगुन सगुन है रहै॥जे मांहै ते साली नांह रिसुमन लपो॥लाहूए॥काजो नों का कीना॥६॥साध बेद सबक हत हैं॥वस्त सुबिनां बिरे १७२

॥जगनाथ सो जांनई॥हरिगुपं जे निज बोध॥७॥निरगुन तो बिंदै कहा॥सरगुन सब सति जांनि॥अगम थ जगदीस बिन॥दृष्टि न हजा आनि॥८॥निरगुन निज सो बस्त है॥सरगुन ब्यापक सो इ॥जांनें तें जग नाथ इका॥कहिबे ही को दोइ॥९॥निरगुन जांनें नाइ लागि॥सरगुन सुमरन साधि॥जगनाथ इक बस्त बना॥इजी औ न उपाधि॥१०॥हरि न गमो लप वांन नहिं॥परषें बुधि इन मीन॥तातें मत न्यारि भय मां नां व च म ब षांन॥११॥रिधि पूणी मत मति सब॥न्यारे तेंमि के नाइ॥जंजब जमो जिकलाल की॥का मति सब घट॥१२॥जन जगनाथ निरंजनी॥निजतत चीन्हे सोइ॥बुधि ही न समतफिरे॥उदै अंज नी होइ॥१३॥निरगुन जो निरंजनी॥सरगुन समके संत॥वस्त बिचारे मन मंहीं॥अरमें इतरअनंत ॥१४॥जोगी जंगम जैन मो॥उदि सन्यासी सेष॥अरमें नोंदी जगत भजि॥जन जगनाथ अलेष॥१५॥इत मंदूणी॥रत्नुट॥अथ अप॥हारि जीति हिदन॥साषी॥संकर षेल जुपेमको॥तामें एक बिपरीति॥जीते ही को हारिबो॥हारे ही की जीति॥१॥जगन सद्धि तबलजो चिके॥त जे ते जकी बांनि॥ ह्हारयो जोई कहै॥सोई जीत्यो जांनि॥२॥पालिबिनां उपनै नहीं॥काल कष्ट अरु मीच॥हारि चलै ते हरिभगत॥ जगमें तेनी चा॥३॥और रहि चाहै जीतिबो॥ए दिलक्षापा मे हि॥मलहिं मिलन बोला चहै॥बिन मिटि मि कै न नेहि॥४॥जगन सुगति को षेल है॥षेलत सव संसार॥जीते जिनजिन अ सुलयो॥हारे अप जस हार

अनिअनिपांनविरोध०

हरि जी सति क्रिन०

गु०अं० ॥ पा बसु धा मैं बिरला बहुती ॥ जीते जिनि मैं ज सली ना ॥ संत सकल मैं दीनता ॥ गर्व गु मानन कीना ॥ ह
१७३ ॥ जिन के सुख तसे ए की ॥ कब हूं उपजै नांहिं ॥ ते द्वारे हरि सौं बिमुष ॥ जे स्राग तें जांहिं ॥ ए ॥ द्वा
रे ते हरि ते बिमुष ॥ जीते जपि जगादी सा ॥ जे सरस कै पारथी ॥ बेगो धे रौं सी सा ॥ ट ॥ हरि सुमरन जन ब
दगी ॥ करि कार ज जिनि कीन ॥ ते जीते जाय रटै ॥ करम कलेक बिलीन ॥ ट ॥ जीते जिनि गुन
बसि किये ॥ गुन के बसि ते द्वारि ॥ श्रुति सुमृति मैं साषि यहु ॥ संत नि कही बिचारि ॥ १० ॥ पद्म नगर
न गोबिंद जी ॥ सम रो के रटि रा सा ॥ गुर संत निय रसा पे ला ॥ जीते जीते को म ॥ ११ ॥ उनि मेस ॥ सु
धी सधर ॥ आपा मिर सै यथ ॥ साषी ॥ सन मुष सौं सन मुष र है ॥ ये हि गुरा त म चाल ॥ पी छि दै ये बजे म
र्क सौं ॥ पर म न सुगुपा ल ॥ १२ ॥ बिमुष सनमुष तो ॥ बिमुष ॥ जर यो धन हरि ना ॥ १३ ॥ सनमुष बेमुं तो
सनमुष ॥ पी छि दै ये बलि पाइ ॥ १४ ॥ बिमुष कव ल सौं रें म सर सा ॥ अलि गंन अति लपटा ॥ हि ॥ सनमुषक
वल सुगंध बिन ॥ संगी कव ल लत्तां हिं ॥ १५ ॥ साध सुरति जग नाथ लगि ॥ तन ज पगार स लोभ ॥ सनमुष ये न
री नाह को ॥ पीछि दैये ही सौ ॥ १६ ॥ जगनाथ गुर साध सौं ॥ कथा कहन कौं धीगि ॥ जे पितसौं सुतबस
त कौं ॥ ऊगा रत कर री ठी ॥ १७ ॥ सषी संत मिलि आपमैं ॥ कथा बारता कीन ॥ बौरी बैर निहेत सौं ॥ मैं तें बच्च ॥ राम
मप बीना ॥ १८ ॥ अंतर गति आपा मही ॥ ब्रुष सौं मैं तें होइ ॥ दादू दोस मदी जिया ॥ ये मिलि षेलें दोइ ॥ १९ ॥ चर १७३

चाकर तें जो कहै ॥ मैं तैं मन मैं मांहिं ॥ दादू दोष न लागि जन ॥ अदे म मत बिसराहिं ॥ २० ॥ रसन री स
सी जां बिछिम ॥ गोष्टि करत जु दोइ ॥ जन आपो निरमूल करि ॥ दादू दिल मैं षोइ ॥ २१ ॥ आपा सौं मुष
बारता ॥ अंतरि आपो नांहिं ॥ दादू साध जो निके ॥ साहिब सबदी मोहिं ॥ २२ ॥ बचन कहे की दोष न
हिं ॥ जो उरि होइ न दोष ॥ २३ ॥ सु साध जगनाथ जन ॥ पापमि निजु सुषपोष ॥ २४ ॥ चौपई ॥ जे सुमेर र
सनो सुषक दिये ॥ तिन के करे नांहिं न रहिये ॥ श्रुत्र अष्ट उर हिरदै करहता ॥ जगनाथ करता मल
पूता ॥ २५ ॥ साषी ॥ दादू मुष की नां गदै ॥ हिरदै की हरि लेइ ॥ अंतरि एक अ गकसौं ॥ तीनो न्यो दो सन
दे इ ॥ २६ ॥ दोष न दी मुष बचन न का ॥ फुरि है अंतरि सोइ ॥ जगनाथ धरबी जजे ॥ परदै परगट हो
इ ॥ २७ ॥ मुष रसनो कछु बेकहै ॥ अंतरि सुद्ध सरीर ॥ जन जगनाथ करी महित ॥ कहत करी रकरी
र ॥ २८ ॥ जगनाथ नरकी फरे ॥ जे सै क्रीटी जीग ॥ नर न धरयो हित मो हिले ॥ कहत मैं मि को सीग ॥ २९ ॥
अंतर की परस्रा न मो ॥ अंतर जो मीलेत ॥ मुष रसनो जगनाथ जन ॥ कहै ति सो फर देत ॥ ३० ॥ दादू
हिरदै की हरि लेइ गा ॥ अंतरजामी राइ ॥ साच पियारा राम को ॥ कोटिक करि दिखलाइ ॥ ३१ ॥ इति स
पूर्ण ॥ ३२ ॥ ४४४ ॥ पतिव्रता निपात्र कप ॥ साषी ॥ श्री मुषबोगी अवरै ॥ राजा अछि रदो इ ॥ अरथ ब
चारे जैसभा ॥ दादू जाद सुषदो इ ॥ १ ॥ अंनदवैन अैसैं कहै ॥ पति सा दी पति सा ह ॥ पतिब्रिनय तिन दिया ॥

आपा मृदो ग्य

गुं०अं० १७४ दूषण कारि दै यो अौगाह॥२॥पति सौं सनमुख ह्वै हु पति॥जगन सु जांमे सेव॥मो की ता की कांरहै॥मो
की हरि की सेव॥३॥साधन साधन सो करै॥पर सन पति घति पाइ॥जाति जाति रीझे नहीं॥जगन
जगन मन काइ॥४॥भ्यान का ढूंढ कहि सके॥मो सु राम किस ही अरु॥जे पति लोइ॥आपणी॥
तो पति पराई रष॥५॥पर की पति तमार ता॥पहल आप की जाइ॥अरु जगे वी अस मांनकी॥जा
गो मडु पर आइ॥६॥फल हित पन अपन है॥लागि नजे फल सो इ॥दृढ अपन तमि मिलि जपमो
लातें कहा पति ही इ॥७॥चौपाई॥सेष फरीदन बोली कोही॥श्रेष्ठ कि सी सोषो लीनो ही॥सो
रास मास॥सश्र तर है॥को हीरा को मंक रहै॥८॥साखी॥निंदै ति सको बेदिए॥गिर स रण कहै
ब सैप॥श्रेष्ठ न कि सका षो लि षा॥जो त मब भ्याएक॥९॥ गुरु कहे को आप को॥आपन लाक हि
ताहि॥आ तम मनत्य म ज्ञानि सब॥मध्य मन कहे न का हि॥१०॥पति छामे संपति मिलनता॥बिपति गुन
तमन मो॥११॥पति संपति जिन के नहीं॥बहि बो यहै कि सो रा॥१२॥पृथ्वी मैं सन पुरष सो॥सोई है प
ति संत॥हरि भजि आप मती भला॥जा नै तत्य मंमत॥१३॥छति संपूरण॥१४८॥४४४४॥अपार
मण॥साखी॥जा ण अजा णि न जो णि यो॥तो नाकं जा ण अजा ण॥चे ष्ये गैरी पर हस्यौ॥तो नाकंम
ष्यौ मांण॥१॥सबैइ स्त कर ता र है॥मा ग र ता को मा ग॥२॥यो गब ग म है सबै॥मा यै गवा रै गांव॥३॥ राम १७४

विपतिपालकं०

॥चल्यौ जाइ ह्वां को करै॥हाथिन के व्यौपार॥नहिं जांनत इहि पुरब से॥धोबी ढोर कै भार॥
पर साखी यो ग्रम रस॥उरि श्रौ गुन कौ की चा॥पहली पूजे बस करि॥पीछे निंदै नीच॥४॥द्वाइ
पर घ न ही बे सा स बिन॥आवत्य री सा नां हिं॥संगति करि को रा रहा॥जंपत्य रयों णी मां हिं॥५॥
दोराघ परखे जो हरी॥द्वा मडु गा नी ली इ॥जग ना थ निज देह का॥पा रख बिरला को इ॥६॥जे स भन
गो साध कौ॥तो सई म निं लाल॥बिन जांन्यें जगनाथ समि॥कपटी कपट निराल॥७॥उलसी त
दो नसन कब बे का॥रूप रांग रू वा गुवा॥स्वेत स्वेत सब एक॥८॥त्यागी के दो जग है॥मिसरी असम
अजांन॥भेद बिनो जगनाथ सो॥नी के बरै न जांन॥९॥जांने एक अरण्य मनुरा॥दूधत के समिस्वाग॥ज
गनाथ पारखन ही॥रूपो ते मो रांग॥१०॥साखी॥धो लो दूध छाछि भी धोली॥धौ लो सी षमसोरी॥परखपो
मग ला मारी घ॥॥बष नो बिगति न जांणी॥११॥चौपई॥उजल है स बगा उज्जल होई॥बषनां पर षक
रे न को ई॥वो चुंच भर भरि मोती धारे॥वो धान न धरै अरु जीव संघारै॥१२॥साखी॥बग मरा ल उजल भे॥जं
ने मूढ समांन॥समझि बिनां न कै न ही॥सी ध व फ टक पषांन॥१३॥पिक बाइस दै षे इक है॥स्यांम बरन स
म ला गा॥जगनाथ जांने नहीं॥को कोकिल को काग॥१४॥चौपई॥को इल स्यांम काग भी कालो॥भे
घ एक परि लष णा निरालो॥काग करै कपरि कर्रै कराली॥वह बोले अंबा की डाली॥१५॥साखी॥चंदन ध

गु०अं०
२७५

हरी होई सब गा॥ षलि पुरुष कंचन काच॥ एकै आघन की जिये॥ पर साक्ष गरु सा च॥ २४॥ कहि जगजी
वन पर ब तें॥ भ ष्या बिरांणी आषि॥ बिन हरि पारष सुंगसे॥ ता तें बूफा लाष॥ २५॥ कबीर हे
मडो सोमल रांण को॥ लषिय डि यो पलि यां स॥ बगुलो करि करि मारियो॥ सेक न जांणयो से
हा॥२६॥ परषबि हूंणां ञांणियो॥ पांतरि याजगनाथ॥ हरिजन को सेग ञाणिकै॥ ग्या ड ष्का
॥ कबीर पाइ पदारथ पेलि करि॥ कंकर ली या हाथि॥ जोडी बिछुरी हंस की॥ पर्‍या बगां के सा
ष्याँ॥२८॥ गुंन गन घट हिन मा धन गा॥ परषि परहरि को ला॥ डलमो पुनम हं गोकि ये गुंजा ब छ्या न
मोला॥२९॥ को डि कियं दे मोल को॥ घणें के लो आंकसहार पंमरूया॥ लगं हो सन को फा रु
॥ कबीर पेकर च सो देषि या॥ हीरा हाटि बिकाइ॥ पर षन हारै बाहिरा॥ कौडी बदले जाइ॥ ३१॥ र
तन हीरे को कंकर कहै॥ परष लोक अजांन॥ दादू हीरा हाथि ले॥ पर षे साध सुजांन॥ ३२॥ हीरा के
रही मोल सु है॥ परष हाथि गवार॥ पाया पारषि जोंहरी॥ दादू मोल अपार॥ ३३॥ अबे हीरा पर षि या॥
की या कौ मो मोल॥ दादू साधू जोंहरी॥ हीरे मोल न तोल॥ ३४॥ साषी॥ पर षबि हूंणां षोटा षाभ॥ [illegible]
गियाषोटे नाणों॥ षोटा षराड हिकी बष ना॥ तुगाति जो हरी जाणो॥ ३५॥ साषी॥ पर षबिना जगनथि राम
२७५

जग॥ पुरकरि सेवैं साध॥ निरषि आंक नां णां गहै॥ लहै न अरथ की आध॥ ३६॥ जेष देषिम लै ढुंमी॥ धरम
कै आघ अजांन कै॥ जंपी नारितं हे मा॥ ३७॥ जगजीवन सल लाक है॥ सार सबद सां बि
न मम हे बे मा॥ एके आघ अजांन कैं॥ जंपी नरितं हे मा॥ कबीर पारिष या इ पा॥ नजरि हो सजन साष्टी॥ बोट
धि॥ षोटा नां णां हरि करि॥ षरा गांठडी बंधि॥ ३९॥ कबीर पारिष या इ पा॥ सबे पर ष आसान॥ अंतर
षल कनक रछु है॥ हरि ही रा गाहि हाथ॥ ४०॥ सत संगा सिंह हरि भजन तें॥ पाक षआं गा॥ साषी॥ हेता
गति घट अग्रम की॥ जगनाथ जन जीन॥ ४१॥ इति संपूर॥ ४२॥ अथ मटकी पाक ष अं गा॥ साषी॥ दे ता
हया ली पर षि ये॥ सलवे ते जल मा झ॥ सत्राजण दो ज्यो पडे॥ सूर बसे तेथा झ॥ १॥ स्वाद कसोटी जीभ
रस॥ श्रवन कसोटी बेन॥ बास कसोटी नासिका॥ जगनतक सोटी मेना॥ २॥ बो नो दी मे जो षिल॥ पा केां
आवे नांहि॥ कहि काल छानो नही॥ आदिजि सो घट मांहि॥ ३॥ सानों सायर हू फिरी॥ जेहदी पय इब
तालि पराई ना करे॥ सो मैं कोइ कदी॥ ४॥ कछ दहा कर बर मणां॥ चित चोषा सुष मिछै॥ ५॥ सू
राज मिलल हा॥ सो मैं बिरला हि॥ ६॥ कबीर हरि हीरा जन जो हरी॥ लेले मांडि मह हाटि॥ जब रुमेले
मायारूप॥ तब ही रांकी साटि॥ ७॥ साषी॥ पां गा पारषू जौहरी॥ मन षोटा ले आवे॥ षोटा मन के मांहे
मोरी॥ दादू हरि सिर फावे॥ ७॥ दादू षोटा षरा करि दे वे पारिष॥ तौ कैसे बनि आवे॥ षरे षोटे का न्याव नं बे
रै॥ तो साहिब के मनि भावे॥ ८॥ साषी॥ मगनो णो॥ निरषत रहे॥ सबद सुरति महराइ॥ जगनाथ जन
अपारिष०

गुणगं ज्यौं हरी॥ षोटा कावड़ा नै न षाइ॥२॥ थी आं क मेषरी कै न हीं॥ बिन सुख स्यमबमां न॥ जगनाथ जन पार ष्या
१७६ पारष पुरष पड़ां न॥९॥ जगनाथ जन ज्ञां न सो॥ ज्यों ने तन मन प्रांन॥ परषे निज पर आतमां॥ पारषपु
षि सम नां न॥१०॥ हीरा जांनै ज्यौं हरी॥ मांणां परष सराफ॥ तन मन जन को पारषू॥ जगनाथ दिल साफ॥
प्राकम ११॥ सायर सारू जल समौ॥ पिंड सारू परकता॥ क्या बर मारी ज्ञ सथ ले॥ दिल मारी बरकता॥१२॥ कबीर
लहरि समंद की॥ मोती बिषरे आइ॥ बगुला मेम न जांन ही॥ हंस चुगि चुगि षाइ॥१३॥ सार न सा बी
रा कजु ला॥ हेम न छूटै दम्या॥ सुहड़ नत के आ मिरा॥ सीह न पूंछे मया॥१४॥ चंद कलंक जु बाद
ली॥ माइ कलंक ये दीनि॥ कांम बि कांम कलंक है॥ सुनि जन कलंक गुमांन॥१५॥ कहि बारयर
षिषा परषन बा सूबा॥ सेज्ञ न कि रबकरी॥ जो छांणो सो बारा॥१७॥ एरषि पई सो बधिए॥ जगनाथ
गहिं गंभि अं से दी गुर साध सौं॥ सम कि समाई सबि॥१८॥ घर बरनी के निरषि कै॥ देहिं न चन त
बहा थ॥ बिन परषे क्यूं की जिये॥ सत संगति जगनाथ॥१९॥ पांच सात फिरि हाटरी॥ लीजे कछु
बौपार॥ कीजे कां पर लोक का॥ सो दाबि नां बिचार॥२०॥ बरतनि ली जे देषि कै॥ मति कछु षोटा
षां॥ जगनाथ सो शबद गहि॥ जो भि सदरि का नां॥२१॥ सुष मन न सचो च वाण॥ बिन तबी लांरंग॥ स राम
स्रा ल सरीहै भोर मा॥ सो नै मारब देग॥२२॥ अ साध साध की पारषा॥ कंचन हदि पया लोइ॥ मनि षदेह मर १७६

दे तन निंदे॥ सर भरि बांनी सोइ॥२३॥ संत सकल मत लोक लौं॥ नहीं कल्प नां कोइ॥ जन जगनाथ
अ मंत सौ॥ परष सब रत निह होइ॥२४॥ पारस पथर पारिषा॥ लदि यत लो है लागि॥ वाण रस तका
लम रहै॥ या सो चमक के आगि॥२५॥ चोण माहि॥ हीरे जै सा कंकर और॥ हि केन ही जद क सी वै
रे॥ वा कों घर वे षलक अघा वै॥ वे ब ज्ञ मोल सुलप ही आवै॥२६॥ पारस सौ नौ सांनो और है॥ दी
क कौ राषे इक गौर॥ जगनाथ बज्ञ षरच न टरु॥ ता कौ बितरन होत अषूट॥२७॥ कांम धेन पर स्या
इ गि नां दै॥ कल्प वृछ तर और क दै वै॥ इनते कफ्ल्ध फरपाइ॥ उन के निकट कल्प नां जाइ
॥२८॥ षीर समंद्री महि सो मज्ञी दं॥ पुन न्यारी न्यारी ही स्वाद॥ इम देस तनि लामत सो गं॥ छांडि छीजे वै
हषन सो गं॥२९॥ मिसा संध ममि स्वाद मण कां॥ जगनाथ जुजु दो बबेक॥ सीधन कछु मांगै ज्यूं पावै॥ भि स
रीग छी बिन हाथ न आवै॥३०॥ बिधि बिबाद न बा दी कसत॥ सिंनसु न्या संत्र संन मंत्र निहँत॥ जगनाथ
येमुक्ता हंस॥ बगुला भोजन मछरी मंस॥३१॥ जे सीपि कतै सो ही कांम॥ बरन एक पर बचन बिनांम॥ अ
हके कोकिल सब निष्फ हावे॥ बाइ स क्ररन कक्लं दन मावे॥३२॥ चतुराई मति नाग भे॥ बचन कहत नहीं
जानं॥ षीर जल अरु निर्दिग रबना॥ पदेषें प्रवांन॥३३॥ बांनी इर जन साध की॥ सुन त पिछांनी जात॥ जग
नाथ सब की जधि॥ प्रगट मिम्मा कसमान॥३४॥ साध सबद की पारिषा॥ बिरला पारै कोइ॥ कहि कबीर॥

गुं०पं० १७१ सो जांनि हैं॥ हरि गुर किरपा होइ॥ ७॥ इति संपूर्ण॥ १४७॥ ४पर४॥ अंतःकर्णपाकूमंष्णा॥ साषी॥
॥मन चित आतम देषिया॥ मांगे है कि सरीर॥ जं दे तामाने साजांनि ये॥ कहे ये दादू भोर॥१॥ दादू
मन की देषि करि। पीछे धरिये मांउ॥ अंतर गति की जे लषै॥ ता की मैं बलि जांउ॥२॥ दादू जे मैं मांहैं ज
र रहै॥ ते सी आर्दै बास॥ मुषि बोले तब जांनि ये॥ अंतर का परकास॥३॥ बंधन कटत दी जांनि ये॥ कर
ज को सबै पसार॥ हरिया दीपक प्रज्जत्या॥ ये तें मुरदगार॥४॥ कदत न कोंन साह हिरदे॥ कस्म करत अ
लि सों बा जी जाके जिय कुटिल ता॥ कहे देतर दे औहा॥५॥ तै मांवे मांहे दगाति॥ आतम परस्या होइ जु
मांहे बाहरि ति सी॥ जगनाथ नहिं दोइ॥६॥ चौपई॥ भी को मन की को जानै॥ पंच न मैं पृग नब वांनै
जगन्नाथ जिय की जब पावै॥ तैसी कर अंकनि सम का वै॥७॥ साषी॥ मन मांहैं जैसी कहै॥ सम परस्
न आइ॥ बौराई मति बाहरि जैसा॥ सुन बातन पगटा इ॥८॥ हिरदै दीठ सुपाइ॥९॥ कन्य्क आक समा न अ
गनाथ जं नी दमै॥ रिर की मुष कहि जाता॥ भड़ पदी षांग दिन मुष स्यो॥ जांन पेतें मृम लेत॥ इस मद्दन
इ जनदी यो॥ दी या स्तु पे कहंता॥ अरथ छा कि अनरथ गहे॥ ता तें नी की मीन॥ बांधी मुठी लाष की
लिविय रूचे कौन॥११॥ बोले ही पहिचांनि ये॥ साध चोर को घाट॥ मन नमहि की वस्त बाँ॥ निकस्त मुष की म०राम
बाट॥१२॥ मन मीन लषन वचन मुषी॥ मन वाके तन लाइ॥ जगनाथ भीतरि तिसी॥ बाहरि प्रगटे आइ॥१३॥ १७१

अंतर गति जे सी बसै॥ ते सी मुषि कहि देइ॥ जगनाथ परदाय है॥ मोब और का लेइ॥१४॥ चौपई॥
॥ दृसम अनिअनि है सी दापया॥ जिय की जि स्पालषि जगनाथ॥ पो से बै है गोबिंद बांनी॥ मन की
मृति कहत ही जांनी॥१५॥ साषी॥ मन की जांनै मन इन करि॥ को कसम कैसे न॥ जगनाथ उपमन ल
षे॥ ता सौं गोपि न यें ना॥१६॥ मन मंज सम मन की लषै॥ इंद्रिय निंइ डी जीति॥ जगनाथ आप मल दे॥ पर
आतम प्रतीति॥१७॥ इति संपूर्ण॥ १४॥ ४पद्म॥ पारषा डी अंग॥ साषी॥ जब विचरत सुन सं धसौं। प
र हरि वारै नीरा॥ पर मा सी गी मन्हजं पीव तमी ही सीर॥१॥ जब मांन मसौ परयाइया॥ तब छी लर कौं
छट का॥ दादू दे सा हरि मिले॥ तब कायागरि बिलाइ॥२॥ जब साधू संगति पाइया॥ तब इंदर हरि
न साइ॥ दादू बो हित्य बैसि करि॥ फुंडी षि कटिन जाइ॥३॥ जब परम पदारथ पाइया॥ तब कंकर
दीया डारि॥ दादू सांचा सो मिले॥ तब कूड़ा काच निवारि॥४॥ जब जीवनि मूरि पाइया॥ तब म
रबा कौं न बिसाइ॥ दादू अमृत छाडि करि॥ कौंन हलाहल षाइ॥५॥ सजन तें गुन कौं गहै॥ अव
गुन हरि करि रेइ॥ जे संमध मा घी सो घिस बा॥ त जि विष अमृत लेइ॥६॥ कबीर अवगुन नां गहैं॥ गुन
ही कों लै बीनि॥ घट घट मन्न के मधुप ज्यूं॥ पर आतम सो चीनि॥७॥ अमृत काटे विषम दी॥ ऐसा
जन कोय क॥ जगनाथ विसमस्त कौं॥ निज से नां ति अनेक॥८॥ जैमल औगुण पोंविन बंधिया मांमम

गुं०गुं० भरि मन स्पृधा ॥ जिहिं बिधि है सा का हितैं ॥ नीर मस्यं सों दूध ॥ १९ ॥ गुनं सब दी को संग्रहै ॥ औगुन
१७८ कौ रे न कोंनि ॥ पञ्ज कर परम तत्त सार से ॥ ते ई हरि जन जांनि ॥ २० ॥ औगुन तजि भर्म रहै ॥ जो दाडू
बिरष बंछ ला ॥ गुन मनी जे कालूक है ॥ नहीं कोठ है सू ला ॥ २१ ॥ अस गुन छाडै गुन गहै ॥ एह है सं
त की रीति ॥ जब दीपक लै की चंद है ॥ तजन चकोर न प्रीति ॥ २२ ॥ दाडू औगुन छाडै गुन गहै ॥ सो ई म
रो भनि साधु ॥ गुन अवगुन तें रहत है ॥ सो निज ब्रह्म अगाध ॥ २३ ॥ सार संग्रहै सुपज ॥ त्यागै फ
टकि असार ॥ कबीर हरि हरि नाव ले ॥ पर सेन दी बिकार ॥ २४ ॥ दाडू साध गुन गहै ॥ औगुन त
जै बिकार ॥ मांन सरोवर हंस ज्यूं ॥ छाडि नीर गहि सार ॥ २५ ॥ हंस गियानी सो भला ॥ अंतरि राषै क
॥ बिष में अंमृत काढि लै ॥ दाडू बडा बबेक ॥ २६ ॥ पहली न्यारा मन करै ॥ पीछे सहज सरीर ॥ दाडू
हंस बिचार सों ॥ न्यारा कीया नीर ॥ २७ ॥ आपे आप प्रकासिया ॥ निरमल ग्यांन अनंत ॥ षीर नीर न्य
रा कीया ॥ दाडू भजि भगवंत ॥ २८ ॥ षीर नीर का संत जन ॥ न्याव नबेरे आइ ॥ दाडू साधु हंस बिन ॥ से
ल सबै लै जाइ ॥ २९ ॥ सार गहाही संत जन ॥ षीर नीर ज्यूं हंस ॥ जग माया निरवारि लै ॥ बिष मध्य हि
अंमृत अंस ॥ ३० ॥ कबीर षीर रूप हरि नांव है ॥ नीर आंन ब्योहार ॥ हंस रूप कोई साध है ॥ तत्त का राम
जांननहार ॥ ३१ ॥ कहि जगजीवन हंस मयाति ॥ षीर नीर निवेरि ॥ पीवै निति राम रस ॥ हरि भजि १७८

परहरि बारि ॥ ३२ ॥ कहि जगजीवन हंस की ॥ चंच बिवेक नबेक ॥ नीर षीर निरवारि करि ॥ ह
रि जन राषै एक ॥ ३३ ॥ नीर षीर न्यारा करै ॥ हंस बबेकी होइ ॥ अवगुन छाडै गुन गहै ॥ तिन सम ओर सा
धु सो होइ ॥ ३४ ॥ जे सत साधु हंस का ॥ देषौ एक बिचार ॥ हंस न मोती परहरै ॥ साध न छाडै सार ॥ ३५
एक एक गुन सब निमें ॥ ग्यांनी लीया सोइ ॥ अवगुन लाय करो रिहै ॥ तिन सों काम न कोइ ॥ ३६ ॥ बे
मुषाब न बफ भांति है ॥ फल पेफल्यो आगाध ॥ मिलि सु बास कबीर गहि ॥ बिषम कहें नहिं साध ॥ ३
७ ॥ दाडू गकद्ध काग्यान गोहि ॥ हृधर है ल्यो ला इ ॥ सीगपूं छ पग पर हरे ॥ अस्थानि लागो धाइ ॥ ३८
॥ दाडू कों मस्पष्ट के हृष मैं ॥ दाडू चांम सो नांहिं ॥ इंहि बिधि अंमृत पीजिए ॥ साधौं के मुष मांहि ॥ ३९
॥ दाडू साध सबै करि देषनां ॥ असाध न दीसै कोइ ॥ जिहि के हिरदै हरि नहीं ॥ तिहि तनि टोटा
होइ ॥ ४० ॥ कबीर साषित को नहीं ॥ सबै बैस्नौ जांनि ॥ जा मुष राम न ऊचरै ॥ ताही तन की हांनि ॥
४१ ॥ कबीर गुन गाहि सब निमें ॥ दीरघ लघु बिन संक ॥ सरबर जन सा षित न का ॥ जल लै जन न मि
न संक ॥ ४२ ॥ रोम रोम चषि गुन निकौं ॥ अवगुन लौ चन अंध ॥ स्यांति बंद सों कांम है ॥ पर और है ज
ल संध ॥ ४३ ॥ चाह गजांनै पांनिपी ॥ निर्मल बंद सु टार ॥ पीछे ओर ननि बिकार रयु ॥ पी वैसब सें सार ॥ ४४ ॥ ने या
दी जन मगर ज्यूं ॥ सुष दाई जहां जांहिं ॥ सार बस्त निज बासना ॥ जग माया मोमा हिं ॥ ४५ ॥ अवरंग न केस्व

मं०मुष १७९

देषई॥ गुन ग्राही गुन देत॥ जिमि जांन्यौं जगनाथ जन॥ भज न भजति भगवंत॥ ८९॥ इमि संपूर्ण॥ २५४॥ अ
थ ग॥ सार असार को अंग॥ साषी॥ दादू हंस मोती चुगै॥ मांन सरोवर जाइ॥ बगुला छीलरि बापुरा॥ चु
णि चुणि मछली खाइ॥१॥ दादू हंस मोती चुगै॥ मांन सरोवर न्हाइ॥ फिरि फिरि बैसै बापुरा॥ का
ग करंका आइ॥२॥ दादू हंस परषिए॥ उत्तम करणी चाल॥ बगुला बैसै ध्यांन धरि॥ परतषि कहिए काल
॥३॥ उज्जल करणी हंस है॥ मैली करणी काग॥ मध्यम करणी छाडि सब॥ दादू उत्तम भाग॥४॥ जगज १
गुन गहि रिस भंगन॥ कहै नरायनदास॥ छुरी नली समभै भए॥ चंच बिरी निबेस॥५॥ बांइस देस समीप
जै भांन सरोवर मांहि॥ कहि जगजीवन हंस लुहै॥ सो गति बाइस मांहि॥६॥ मधमांषी [illegible] संपदे
॥ सार संत जन सोइ॥ कै सम लषि षिषियां बिषतंजे॥ जगनाथ जहं दोइ॥७॥ सलुमां मीजै [illegible] नर
बुरी बस्त सौं हेत॥ अमृत रस सुष परहरै॥ बिषै मललिम [illegible] लेत॥८॥ जदारौं नगर गृसरा॥ म
ल भाषी चलि जाइ॥ जगनाथ जो बिमुष नर॥ अवगुन ही मुष पाइ॥९॥ [illegible] नगर गृसरा॥ अ
रूता गौ षुपीवि॥ [illegible] सौ काग मांषी जहां॥ तिं जायं [illegible] नहिं दीठि॥१०॥ बौमुषी॥ देषू नीर कौ पान
करि॥ देषु नीर लौ गंहि॥ देषु चीर रत नपहरि कै॥ देषु सीर जन ज्यौं हि॥११॥ साषी॥ नीच समनि षय राम
ति नीच सब॥ पांन पांन पहिराव॥ नीच दसा कौ अनुसरै॥ नीच गैर ही आव॥१२॥ हंस न भष मुष॥ १७९

मेलई॥ मुक्ति बिवर जतन आंन॥ जगनाथ कब हं न दई॥ पैबिन हू जौ पांन॥१३॥ मुक्ता मुक्ता दे
इ जौ॥ तिन दिस चित बत नांहि॥ सफरी देष तदी फरे॥ पांनी बग मुष मांहि॥१४॥ मीनी नीतजै
मराल अष॥ मुष परै जौ दीठि॥ पुं अवगुन गहि गुननि कौं॥ देत मंद मति पीठि॥१५॥ राजबाग
महिं मैं [illegible] अरुदी जैसु कराइ॥ कंटक कूट बकुआंति कै॥ छाडि करै जौ षाइ॥१६॥ दादू करनी
ऊपरि जाति है॥ दूजा सोच निवारि॥ मैली मध्यम है गए॥ उज्जल ऊंच बिचारि॥१७॥ दादू निरम
ल करनी साध की॥ मैली सब संसार॥ मैली मध्यम है गए॥ निरमल सिरजनहार॥१८॥ सकल स्वाद
सुष नां रहे॥ साधर है ल्यौ लाइ॥ जगनाथ तिहि गनि कै॥ जिन माया मैं जाइ॥१९॥ सारग है जगनथै अन
लै असार संसार॥ भाव भजन पै बछु जे॥ चीच रुधिर बिकार॥२०॥ इक अवगुन इक गुन गहै
ले ले स्वाद संसार॥ बढ छिड़ी अरु रुस्तप जे॥ जगनाथ मो सार॥२१॥ पंडित नगदे षरा न मत॥ जो आवै भ
गवंत॥ जगनाथ निज धर्म बिन॥ छाडे और अनंत॥२२॥ अवगुन आंन अनंत तजि॥ गुन रंच कसो
लेइ॥ जगनाथ सुष आपकौं॥ और नि दुष देइ॥२३॥ इति सपूर्ण॥ २४॥ [illegible]॥ मति सबद संग्र
ह षा साषी॥ मोरे है की भली भूमि॥ राषै सीष समीप॥ जहां पक का सम सरकौं॥ करै उज्यारो दीप॥१॥ मो
ही मरत रमन [illegible]का॥ कहि लें अंगीकार॥ सब घट व्यापक ब्रह्म है॥ गुर सिष कहा बिचार॥२॥ मात पिता

गुं०ग्रंथ
१८७

गुर नृपति कों॥ सबद बलोपे कोइ॥ जदपि जो मां नें नहीं॥ यम सम निति हिं होइ॥ सुतमिषम्रतिजेय
रु धरे॥ सबति सुक्र तनप गार॥ गहे परस्रेत कैरें॥ तोमां मिये नकार॥ सु चीबे दगुरली मिजो॥ नें
बोले प्रिय म्रास॥ राज धर्म तबली निकों॥ होइबे गिहीं नास॥ हरि सज्ज सज्जि हिं कविन नहि॥ सु मैं
कौन फल मांहि॥ मच्छ कच्छ फलरी सेग धरि॥ सो एकौ फल सु आहि॥ म्रतल्पे गोजो जन मिलै॥ को न
कसबदो इषा॥ बङ्गभो जनको और हैं॥ जदपि जी भ्रलल चाइ॥ कबीर सोई अषिर सोमयगा॥
जन तुज्ज साच वेत॥ कोइ कमेलेके लवनि॥ अमी रसोइ मदे सा॥ सुबैनु अषर मी तसुषा॥ तेईसुनें सबगो
रापगे जु निक सैपैमु को॥ बी सहा दकछु औ रा॥ दाइ रां मरि देरस मेलि करि॥ को माध॥ बद सुगाइ॥ जो
नौं कर दीपक क्षिप॥ अर्मतिमर सम जाइ॥ दाइ रां मर सांइ नअरिधरूया॥ साधनि सबद संकारि॥ कोप
रवपी वैपी तिसों॥ सम के बचन बिचारि॥ सबदो मां दे रांमधन॥ जो को लेइ बिचारि॥ दाइ इमससार
में॥ कबहुं बआरे हारि॥ सबद अमोलिक बस्त है॥ जतन निराषे सोइ॥ ऐसो या से मारमें॥ नहीं
पदारथ कोइ॥ चौपई॥ सबद मांहिं सब सुष हैं सही॥ कूरनहीं मतिसंतनिकही॥ जग नाथ म
न निहच लला वे॥ तिंहि षोज तपरमार्थ पावे॥ इतिसंप॥ रस न बवन साध
मण॥ साषी॥ सगुन दो सपरमा अमति॥ जाचनेहं थाश्रलाप॥ रसमां पषटमौं न गाहि॥ निमदिन

निमबदसंग्र १०

राम
१८०

करि हरि जाय॥ गसतिमअक्षर प्रियहित बचन॥ दूषै कहि परकोम॥ मुषकपाट नहिं षोलिय॥ रस
नो बिन हरिनांम॥ हिरसमां तो हि सी षहूं॥ हरित जिग्राम न माधि॥ कहि जग जीवनपि मरस॥
छिन छिन चित दे चाषि॥ कहे सुनैं बांनी कहूं॥ रस रोचक तनि ताप॥ जग नाथ हरि संत बिन
इथा सकल आलाप॥ बांनी हरिके नांव बिन॥ मो न तमो नवअ स॥ काग केलि तह करवे॥ जग
नाथ जन हंस॥ काबि कंचतें काढि॥ पहिर हिरसमां रोम॥ तिनिं हीं सब की यो कप्पो॥ जग नाथ
न हि कांम॥ हारस जबरस मां हरि कहै॥ अनरस अनिभाषन॥ मरन होइ बिषपांनतें॥ अमरअमी
चाषंत॥ मों नयहे मिथ्यात जो॥ जिप्पा जपि जगदीस॥ तिनिं हीं छिप्पा चतुर हज्ञा॥ सीषी दि सराही
साट॥ बपबलन छिनयदे मोलिबो॥ रसमां हरि मनलीन॥ कथा चउरअ रूसाधिकौ॥ सोई जांम प्रबीन
बांचे माया छिषे जिनि॥ बांचे बेदपुरांन॥ जग नाथ हरि शहिपडो॥ बिद्या सकल सुजांन॥ अरे
गाहारथि तिश्रबद की॥ सबद हारथि ति नांम॥ कहि जग जीवन नांम रटि॥ रिदे बिराजें रांम॥ जगज
बन मुषमांहिं तैं॥ मिथ्या सब्द न बोलि॥ नरजे शबद चढाइ कहि॥ बस्त बराबरि तोलि॥ इतिसं
॥१४८॥ अथ सबसुरकां बिनिर्णिषण॥ साषी॥ अरबी को नारी पुरिष॥ कं ही संत नचार॥ जो मां येंषु
लि है नहीं॥ चाहत अमम प्रहार॥ तन मज्ज सगुन रतन नरि॥ बुपदहै मिंहिं ताल॥ साहा सजुन के मि

१ पू

गुं०अं०
१६२

तें ॥ कंची वचन रसाल ॥२॥ साषी ॥ सबद ही मालाग्र सबद ही कंची ॥ शबद ही सहजगाय ॥ सबद ही स
बदजतनपर चाकृतरा ॥ तसु सबद ही सबद समझाय ॥३॥ साषी ॥ रसम्र नरस ही रू जगन ॥ मन कव
चन ही मोहि ॥ ताकहिबे मैं परम सुष ॥ नो कहिंबे मैं नो हि ॥४॥ जगन सब मिद्ध सिबोलिय ॥ किता दिशि
हपे मोन ॥ बुरो बचन मुष काहि करि ॥ बुरो कहावे कौन ॥५॥ काहू ङ्घन ही दी जिये ॥ बुरी जीवू की
आहि पूत कथाल की पफ कते ॥ जीदन समझे जाय ॥६॥ ध्याइ सबदै ही सुक्का अयो ॥ सबदै सुरफै धं
न ॥ सबद ही सूफै सबै ॥ सबदै समफै जांन ॥७॥ ध्याइ सबदै बंध्या सबर है ॥ सबदै ही सब जाय ॥ सबदै
ही सबै कुपजै ॥ सबदै सबै समाइ ॥८॥ ध्याइ सबदै दं सचु पाइयो ॥ सबदै ही संतोष ॥ सबदै ही आ[illegible]य रस
यो ॥ सबदै भागो सोक ॥९॥ ध्याइ सबदै ही सुदम सुयो ॥ सबदै मदजसमोन ॥ शबदै ही निर्गुन मिलै ॥ शबदै
निमल गुण मान ॥१०॥ परन बंध के कालू कहे ॥ आवे चंदन बास ॥ आपणी मांहि बिचारि लै ॥ परन बुरुस्पर
काज ॥११॥ जगनाथ स्वारथ सधै ॥ परमारथ फर देह ॥ सप्त त्रि सुध धै मेह ॥१२॥ मिथ हो त देश हुसे ॥ मा
षिक श्रेष्ठ हास ॥ जगनाथ जगदीस मिलि ॥ सुमिलो नी आकाज ॥१३॥ सबद समफि थिति पाइए ॥ पर
चै हो इसनेहा ॥ प्यान रूप कालू कहे ॥ उद्दे बुस की देह ॥१४॥ जगनाथ निज ब्रह्म की ॥ चानख ब्रह्म देस
हैं ॥ जग आगन जं ब्रह्मस्य धर ॥ शबद देहरी ईवें ॥१५॥ इति सबद पूरण ॥ अथ ॥ बचन बंध बिकलन ॥ ० १६२

सबद सुजांग निनिधि०

साषी ॥ जिनके बोलें बंध है ॥ तिन कौ करिए संग ॥ जगनाथ ले निरबहै ॥ सदै कमोटी अंग ॥१॥
जाके बोले बंधन ही ॥ ताकौं केसी साथ ॥ जब तब की करि ही अजंग ॥ डहु हाई जगनाथ ॥२॥ ज
की गिरा गरिष्ट है ॥ बोलै बचन विचारि ॥ जगनाथ सिध साध जन ॥ मो हिन कौ अटारि ॥३॥ बाचा
ता की ही न स्रुति ॥ बोल तत सोधी नो हिं ॥ ताकौ कहै नमांन ॥ बादहरि अरुघर मोहि ॥४॥ मांन स
मैं सूद कालि मां ॥ रूगे बोले बोला ॥ जंस क्योपा निपहरै ॥ उनरि जाइ सबमोल्या ॥५॥ साचसरी घानय
न ही ॥ रूट सरी घापाप ॥ रूगासं हरिहरि रहै ॥ साचा मैं हरि आप ॥६॥ जगनाथ जाम निषकी ॥ वां बी
आहि अमोला ॥ सुरनर सुभिं जा कौ प्रियो ॥ कौन नमा नै बोल ॥७॥ बचन बिकल जाए उरषकौ ॥ ता
कौ की जैत्याग ॥ ईद ईद जगनाथ जंस ॥ जब तत बल छिन लाग ॥८॥ अभिमा किरी मन हिं शबद जीव
यम सुतन मरे बंधां रा ॥ जगनाथ तिहि जमा तमें ॥ देह धरे पर बांरा ॥९॥ जाकी बांणी चंचल बिचलत
पत कपल कम हिंओ रा ॥ ताकी दाहिन देह कौ ॥ जस जाइ जिहि ठौर ॥१०॥ पदल शब्द औरे कैदे
पलटि करें कहु और ॥ जगनाथ चंचल गिरा ॥ न ही बचन कौ ठौर ॥११॥ सोधी ॥ बोले मोटा बोल न
हीचै निरवा है नहीं ॥ तिण मांणस री मोल ॥ कौडी का पड़ी यो कहे ॥१२॥ बोले थोडा बोल ॥ पतिबृत
पालै घणों ॥ जी अंमत णां दिहि तोल ॥ जण जण सौं बस्यां करै ॥१३॥ साषी ॥ अमिट बचन कहि आदि ही ॥

गु०ग्रं० हँ चेतन कबहूं न दै ॥ जगनाथ यारे माहि मैं ॥ नरस रूप देसी ॥ बांनी बिकल जा मनि षकी ॥
१८२ कहि बे कौ न रस सो ॥ जरं सनिपाती कछु कहै ॥ बचन न मांनै कोइ ॥ जाके बाचा व भिनदी ॥ य
लप लम द्विपल टांम ॥ ते घर बाहरि एक से ॥ नांहि न कछु बंधांन ॥ बोलै ताकौ पनर है ॥ सब
द स रीत रतीम ॥ नांत रषाली कै म जरं ॥ बदै बचन बे कांम ॥ चौमुषी ॥ नरसो बोलै बचन ध
बरसो बिरबन दोष ॥ नरसो अमन व्यापई ॥ घरसो तुं नक मिट्टै ॥ साषी ॥ धीर बचन सुतथ
रम जं ॥ प्राह नरे ब बिचारि ॥ जगनाथ जर जो धनी ॥ बाचा बारू बारि ॥ साध गिरा गिरा
थरस दा ॥ आंन बो निरगि द संग ॥ जगनाथ बकु मो ख बिन ॥ कहां तो रापे कहै संग ॥ इनिमषु
रा ॥ धदद ॥ कछु सु आक्ष अंग ॥ साषी ॥ सेक घाव कु मेल के ॥ दिन दस पांच पिरांहि ॥ अपस घो
बकु जीभ के ॥ मन मिन पीरै जांहि ॥ उपकत्ती रत रषारिके ॥ घास परे मिलि जांहि ॥ सेव दसु मे
लरू है नु दी ॥ जे लागे जिय माहि ॥ कर बचन मिटु मति बढे ॥ कढे मूरष धो सार ॥ जगनाथ मूड बांनि
तै ॥ बा जे परी पहार ॥ अमी बचन जिहि रसन है ॥ दशानु सो मइ नास ॥ जगनाथ कटु आक्ष सै
परस्याउ न का नास ॥ सेक मिमटा सारकी ॥ बी बदभा जे पीर ॥ अपस रु बुरे कु जीभ के ॥ मरस १८२
लर है सरीर ॥ दारू दे सारा किया ॥ जे दाधा था आप ॥ जीभ दाधा मो नहीं ॥ बकडि मनि लई ब

प ॥ जीभ पत्ने आप्ने ओषुरां ॥ दाधा इरिया यांह ॥ कपरां ही सीचियो ॥ बलेन पल्लरियां ह ॥ बैन कटु
क बिष रूप सो ॥ लागे जिहि मरि जाइ ॥ अमी बचन जगनाथ रस ॥ पीवत लेत जिवाइ ॥ अमृत रस
न ज बदन ॥ साधक है निसेक ॥ सब दिदते जगनाथ जे ॥ अमर कैरै निकल के ॥ कटूक बचन व
षसी मदी ॥ घात कहत मुरझाइ ॥ वोषद तलटि कमाइ ॥ खे जगनाथ जिवाइ ॥ दोइ न लाई नै
ग मैं ॥ न वा माघ तै बीर ॥ जगनाथ सी तल सुषी ॥ पर आप नो सरीर ॥ कि सदा मो हन प्र न बचन ॥ यु
बटो न सत भाइ ॥ आगि जरयो फिरि यल्है ॥ जीभ जरयो कालि जाइ ॥ जि न्यास कर जिभ ड ह्वा जी
न पियारी जग ॥ जीभै सजुगा रलि मिल हिं ॥ जिभ्या छ गे अग ॥ जीभडि यां अंमृत बसै ॥ जे को जांणे
बोलि ॥ बिस बासिग को कनरै ॥ जीभां तणी हि लोलि ॥ सीवा बो लक बै च लज्जा सुन कु मन्याई कां
नि ॥ जे बरसां सो जीवणां ॥ मकब सि रोरा नि ॥ नलेहो हि जगनाथ जन ॥ बिष मस सबके घाड स
दशा षसर जिनि लगो ॥ तिन कौ नांहि नु पास ॥ जगनाथ को परई ॥ बुरे बचन के बोर ॥ बांनी बिम
ल बषां निके ॥ चितवन सी तल स्यो रा ॥ ताकी चोट सुपूर नी ॥ जुगति जांन ई कोइ ॥ कारीगर जगना
थ सो ॥ गिरा गधि दे यो इ ॥ डघ श पजनं दे सबद सो ॥ ग्राम दहि ते सुषपाइ ॥ जगनाथ जं अग निके ॥
मोटे सकसि रा ॥ मलबै रोग के ऊपजै ॥ नां कं बो गि बलाय ॥ स जण हीडजे राग मैं ॥ अबूली जीभ ग

गु०ग्रं०
१८७
उदास

लोदास॥२०॥ धर्म सर्म मैं लीनें बचन॥ अंगन सुभाव सुभाव॥ एहें तें साधे सदा॥ कब हूं न बैठे कुभाव॥
२१॥ मधुर बचन अति मृदु धुनि॥ जथ पाप कटु बैंन॥ कहै सुमैं तासी सर्मे॥ सुषदे दे षे अैंन॥ २२॥ म ब
धुर बचन कटु बोलि बो॥ बिन फल मरा आगम आग॥ कहत कहत कर नेक मरस॥ कोकें कुरर सकाग
२३॥ जे घघस सुल बसी॥ तकहां हरी मास॥ अबकार अमृत बचे॥ कारी दीक बिदा मा॥ २४॥ अहरद
नाई अदिक सै॥ सदह जिसद जिलद रात॥ जगनाथ एषि बचन॥ रस मर सत द्रहि जात॥ २५॥ सद
रत हरि दास हरे॥ जगनाथ अमराइ॥ बिषम बचन बिमल हरि की॥ औषध मांहि न काइ॥ २६॥ ओबे
ष अ तो रस मद॥ बच मपल ट जब देइ॥ जगनाथ बिषक तर॥ अमृत सर दे मोइ॥ २७॥ मो बी ओ म जा
त्या इस च कोई सूझे नहीं॥ सुंब बेरी माथा सह॥ माथे मों दसे षाम मे॥ २८॥ साथा॥ पांचो मांहे अेसि करि॥ बे
लेनहीं बिचारि॥ हतेपराई आतमां॥ थापि बिनां तसो रि॥ २९॥ रमने भ्रमतोडं फिरि॥ माहलाइ निसांमांहि
षट पद कांटाजी मका॥ किस हिंच भोई नांहि॥ ३०॥ अग्या मरमी लीर स नमों॥ बोलि सुबचन बिचारि॥ पारस
बत जहिं संकिप॥ जीभ ल्या इरगारि॥ ३१॥ कोमल करक स बचन के॥ जगनाथ फरस॥ रोरन सुगतें सुगत
शी॥ बभी छन यादे स॥ ३२॥ कूर सबद स रस्वांतिकी॥ गति जगनाथ परी बा॥ मर दिशा रागो दासरी॥ ३३॥ रधरे
अ एंगरीबा॥ ३४॥ बचमिं रसा तलि माइ॥ ३५॥ बचमिं स्वर्ग एदगाइ॥ जगनाथ मातें सदा॥ बिवजबोलि सुष राम
१८९

कुमदस्त्रात्रह०

दास॥ ३६॥ इति संपूर्ण॥ २५२॥ ५८८५॥ कुशाबद समहनताण साषी॥ अगनिं मदे हैस रत्त रमदे॥ संदेसएव
षबीर॥ चोट बिषम अति सबद की॥ को सहिमके कबीर॥ १॥ अनी सुहेली सेल की॥ परतां लेइ सम
॥ चोट सदा रे सबद की॥ तासमरहूं मैं दास॥ २॥ कबीर षूंद नतौ धरती मदे॥ बाह मदे बनराइ॥ कुस
बद तो हरिजन मदे॥ इजे सहा न जाइ॥ ३॥ बुरे बचन मेंदे महीं॥ सोई जन मुज नी का॥ जौ भेदें तौ सुलप
से॥ ज्से पानी परलीक॥ ४॥ बुरे बैन बाहू रुष्न॥ लागी सी तल जल बारि॥ स नैं शष्ट सुनि अन सुनें॥ ब
रले बचन बिचारि॥ ५॥ कबीर सीतल तातें जांनि एैं॥ समितार हैं समाइ॥ पष छाफे निरपष रहै॥ अ
षिन हृषा जाइ॥ ६॥ कबीर सीतल सा सहज॥ पाया बदहागियां न॥ जिंहिं बैसंदर जग जले॥ सो मेरे उदि
कसमान॥ ७॥ कोऊ केमेंदी कहै॥ शाष जरे सो संत॥ जांनी हुआ नां गहै॥ षपै गक अनंत॥ ८॥ सष्ट
॥ शष्ट सबद जरे सो मिलि रहै॥ एक रस पूरा॥ काइर भाजे जीर हे॥ पग मांडे सूरा॥ ९॥ साषी॥ शष्ट जरे
सो सिध है॥ अव्याप कअषलत॥ ता दिन कोई छिरि मकें॥ योग गणि अेसंन्त॥ १०॥ बुरे बचन व्यापे न
हीं॥ सोई संत सुजांन॥ सुमृति बेद पुरांन तिहिं॥ सुर मुनि करत बषांन॥ ११॥ इति संपूर्ण॥ २५२॥ ५८९०॥
मों निमहिंमां महात्म्य साषी॥ इन सबहीं लों रसरहे॥ म षेप मितराजा॥ तमतहां अगि मों नयहिं
॥ चुपबिगिमें हसमाज॥ महसत्रा मैं बैसिक रि॥ सहलम दे मुषमों न॥ काम अजुहत्व करिरहे॥ त

कुशाबदसमहनता०

गुं०मं० २८४

हां कोइ लखपुरी कौं नाय॥२॥ कहवा कहकें सठी कहगा॥ अधिकाई जिहिं ना लया॥ कवित दास तदां मन तरट
जाप करज मं भि मराला॥३॥ कोधी नर ज्यूं उप्पन्न॥ मध्धर वचन महिमा सि॥ तेउ चरे ज्वाला कौरे
॥ चुप कौ रासि निधा सि॥४॥ अन बोल्यां आनंद बहुट॥ कटि ऊ मति करि मौन॥ जगनाथ जगदीस
जपि॥ लेधे अभेअबु मौन॥५॥ अप समके ज्यौ बोलगा॥ जुगति अजीर न भाइ॥ बिस बपुडे की
क्या चले॥ धीर ध्यान मरि जाइ॥६॥ बजन दोन तपधी नकरि॥ अवचन उचरत आं ना॥ अे सम संधे
मुनि सदे॥ उलटे कहि न सुजांन॥७॥ साषी॥ बालक बध्धा की गति देषो॥ चुप रहें रस आवै॥ बो
ल्यां सेती अरस्य नछूटै॥ दूध कदे कौं पावै॥८॥ साषी॥ मौन पूरन अनबोलनो॥ बके अपूरन सोइ
पूरन कौ अनबोले नहीं॥ घाली घट कौ नि होइ॥९॥ साषी॥ धलि पडे मुंह लांवणा मीठे॥ जीव्हा बोल
न हारा॥ अनबोलन अंग जे मारवग ना ला॥ महिमा बहुत पियारा॥१०॥ साषी॥ निर्मल सुक्ता हल
र चित॥ धारर सौ हिय आइ॥ नपर हे तिय पावसे॥ बहुत नवचन फल पाइ॥११॥ मौनि बधी वे मा
नता॥ मूरख ता सुर जाइ॥ जगनाथ जामा जुं ज्यों॥ चुप सौ कोचिर आइ॥१२॥ मपां मी गुं नी चुपचा हिबि
न॥ निश्चल सभ निमयांसे॥ अमिनो नी अन बोल मुष॥ मांमें कहे मदंत॥१३॥ अक्षर पाट मुष कोटर
॥ वचन रतन तिहिं मांहिं॥ याते बैन न काढे॥ प्रथि विरांने मांहिं॥१४॥ सोरठा॥ बोल हिं नांही मोल॥ २८४

जीको कजां मैं बोलिके॥ जीय तराजू तोलि॥ तो मुष बाहरि काढिये॥१५॥ साषी॥ जगनाथ जन बुच
न कौं नहिं पमी नअमोल॥ तातें समय बिचारि करि॥ तब कछु कहियो बोल॥१६॥ सोरठा॥ अनुस
री बुरहान॥ तन मन लस बचुप में॥ यो गामर महि मोन॥ जनमि न बोलि बिम सइ॥१७॥ साषी॥ कोध
न बे ध्या मन नहीं॥ करै न तृष्णा आलाप॥ मौं नयु है जगनाथ कहि॥ मौनक ध्याव रिजाप॥१८॥ च्या
करे कै कीरतन॥ के व रिनाम सु बोल॥ इन बिन नहिं जगनाथ कहि॥ सोई आहि अबोल॥१९॥ मौन
याल मनु सारि पट॥ देषूं छे जो बात॥ बिन सुष रहसि नक्रय जे॥ सुत वले जो तात॥२०॥ अग्या औ स
र के बोलणें॥ सू होइ मोगा सरह॥ चलो भलो सब को कहे॥ सर औसर घर मदं॥२१॥ सोरठा॥ मांझल
कहि एबात॥ बात कहे ते चलि परे॥ जीव भौ नर यौ जात॥ तो कहि एबात बिचारिकै॥२२॥ साषी॥
के नी को अनबोलिबो॥ किनी के मध्धर बैन॥ मी कोई भी को लषै॥ जगनक ह्वै बिधि चैन॥२३॥ जगन
थ जगदी सलगि॥ भलौ बोलिबो मौन॥ गोबिंद गुन बिसरे नहीं॥ बेगी गहो गौन॥२४॥ इति संपूर्ण
॥२५॥ धरणा मणं न कया सिद्धि॥ साषी॥ घर चंदन अरु कपजल॥ भछि भछि न बिन गांगि॥ कौन
ल संग छा लाप मनि॥ एं तन बिन की ये मांगि॥ तन बिन कर भी कछु नहीं॥ कर भी बिन तन बाइ॥ कं
मी है एकि बाहिरी॥ कं रव गामन जाइ॥२॥ ग्यांन निपुन किरिया नहीं॥ क्रिया नर बिन ग्यांन॥ पंष अ

मानि

गुं॰ग्रं॰ २८५

कजगनाथ कं॥ ए कीकर तप यांना॥७॥ करनी नाहि हि चारबिन॥ बिन करनी गुविचार॥ जगनाथ
पंथ कं चले॥ पहीए करथ नाश॥८॥ करनी करै बबेकबिन॥ हिबबेक बिन करमि॥ जगनाथ करहै छि
नो॥ सब सारी नहि समि॥९॥ सुबिबेतन बहुतेतबो धबडा॥ करनी बिना नहिंमूरि॥ जगनाथ करनी करै॥ त
त बिन तत ते दूरि॥१०॥ जथा अंध के कंध पर॥ चढै पंगु नर कोइ॥ वाके द्रगवा के चरन॥ दोंहिं पथ
कमिलि होइ॥११॥ चोपई॥ जो बिन मांन क्रया अो मासे॥ जो बिन क्रया गोकिय पद चाहै॥ जो बिन मो
क्र कंद में सुधिया॥ सो अज्ञांन मूढ हनि में सुधिया॥१२॥ साषी॥ करतब मां काया मिले॥ ग्यांन परम नत मे
ह॥ जगनाथ जुग जुग मिज ब॥ तब हियो बासि ध्रिदोइ॥१३॥ छत्रपति तत करत निते॥ जगनाथ निज
जोति॥ दर्पन दिनकर के रनिसं॥ तं तमुक पगट होति॥१४॥ ग्यांन पनो करनी बिनो॥ करनी अा
हम्र गांन॥ अग्नि कहो जगनाथ है॥ च कमक नहीं पषान॥१५॥ करनी संगति साध की॥ हरि सुमरन
मो ग्यांन॥ जगनाथ या यो गासों॥ जन जगदी सममांन॥१६॥ आरंभ मारग मोक्षि का॥ मिथ्या नहि अबि
नास॥ जगनाथ अघ सिंधु तिरि॥ सुष सागर में बास॥१७॥ इति संपूर्ण॥१८॥ अथ ॥ छिमां अंग॥ साषी
॥ कोलरूप संसार सक लय इज॥ कदंतें कलमक हि बा॥ सुषतें बचन बिकलता मल बुरा॥ जन जगना
थ समहिवा॥ १॥ साषी॥ देषि सो चिनी में बुरै॥ करिए कोध विचारि॥ सो क्रम सहि छिम उ रतहीं॥ जनज

राम
२८५

गनाथ विसारि॥ २॥ छिमां करत लछी जे न हीं॥ बरितं तम के न मारि॥ जगनाथ जिन क बरै॥ तरकै
न षे बसारि॥३॥ अस मारं छि यां स रिया लोइ॥ बदतो बजुबला बई॥ जापे छिमियां होइ॥४॥ जि
हि बच टत बजु अनल कर॥ जिहि न च टत बिष कप॥ संकर तिन कछु नां चटै॥ जिहि न चटत रबि रू
प॥५॥ जहां छिमां तहां हो मद॥ छत्रपति छिमियां पास॥ जगनाथ जग में नहीं॥ जन का करै बिनास॥६
॥ छिमा सरीषो छिम नहीं॥ जगनाथ या लोइ॥ जाके बसि संसार सब॥ सुहै छिमा बसि होइ॥७॥ छिमा को
ध के दोष गुन॥ सुनि मन मां नी सीष॥ तुलसी हरि श्रीपति भए॥ भ्रसुर लहे न भीष॥८॥ छिमां क्रोध के दे
ष गुंन॥ कैरौं पांडो सीष॥ पांच हिं मारि नि सो सके॥ पें सो उ मारे भीष॥९॥ छिमां छीन करि डारई॥ करै क्रोध का
नास॥ जगनाथ जहां सूर है॥ तहां न तिमर निवास॥१०॥ घट में क्रोध अंधेर है॥ सूक न आपन अांन॥ जग
नाथ तब सूक ही॥ उदै छिमा जब भांन॥११॥ क्रोध अनल जल सांति सो॥ सीतल सम कै नाहि॥ जगनाथ
प्रगट सही॥ अंतरजामी मांहि॥१२॥ जगनाथ सत बरषलों॥ जप तप ली रथ न्हांहि॥ क्रोध अगनि बरती
सुषे॥ ताकी मर अरि मांहि॥१३॥ जप जाप उलत पकरे॥ जीत न भो गउ पाइ॥ छिमा होत ही बढत है॥ जग
नाथ सुष आइ॥१४॥ सकल तपनि कामू रहै॥ सुफर होहिं सब जाय॥ जगनाथ जर्दे हैं छिमां॥ नहां नय
र सै पाप॥१५॥ छिमां मारि घोछे मकडुं॥ नहीं अस्त्र समि नाम॥ निरअंसे सी अास नहीं॥ संग्रयमो नरेराम

गुंथग्रंथ
१९८

॥१६॥ छिमां न सरिषौ को अनलौ ॥ क्रौध न सम मि को नीच ॥ छिमा करत जगनाथ सुष ॥ क्रौध अन्यांन का
मीच ॥१७॥ सहन समो अस संसार मैं ॥ मिटै आरति मीत ॥ क्रौध भीड रत गरी बहै ॥ जगनाथ जन बमीत ॥१८॥ ज
गनाथ सहिबौ अनलौ ॥ सत्तौ पंद सुत का जा ॥ क्रौध किये कलमास करि ॥ जरै योध न गौरा ज ॥१९॥ सहे न
ती को क्रु कहै ॥ लहै बमाई आंन ॥ जगनाथ या जगत मैं ॥ सहिबौ आगि समान ॥२०॥ सहन सील ता ज
गत मैं ॥ एहै बमारत्न ॥ जगनाथ इहै नग मिंका ॥ करि यवज्ञ नत्त ॥२१॥ सहन सील मारत्न का ॥ जतन सु
गति संन्यास ॥ जगनाथ दिढ ता ग्रहै ॥ मतसंग बोध अभ्यास ॥२२॥ पराधीन कै सहत है ॥ छिमा न करि य
सोइ ॥ जगनाथ काया जडै ॥ सील सहज दौ होइ ॥२३॥ पूजवांन बसि मकल जिहि ॥ ... राजन पते
ज ॥ छिमा न्है आधीन जे ॥ जगनाथ सहिलै ज ॥२४॥ इति निसंपृहता ॥२५५॥ ॥ करणी बिना कथणी
ग ॥ साषी ॥ साषी सब्दी होत हैं ॥ बैठे ही घट मांहि ॥ कहि एतैं रहि एनहीं ॥ तातैं कहिए नांहि ॥१॥ बाजीद
फरै बाहरी ॥ साषी पढ़ की जोरि ॥ रहस वान मैं भिक पटै ॥ बात कहै को उ कोरि ॥२॥ दादू वैदै पद किये सा
षी सीदै चारि ॥ हम को अनुभै रूप जो ॥ हम ग्यांनी संसारि ॥३॥ दादू सुणि सुणि पचे ग्यांन के ॥ साषी
राषी होइ ॥ तबही आपा ऊपजै ॥ हम सा और न कोइ ॥४॥ दादू सो चपजी किस कांम की ॥ जे जरा
जे ग करै कलेस ॥ साषी सुणि समझै साध की ॥ जंग रसना रस सेस ॥५॥ दादू पद जोडै का पाइए ॥ साषी

राम
१९८

कहें का होइ ॥ सत्य सिरोमनि साइयां ॥ तन्न नची नां सोइ ॥६॥ दादू रांम कहंते जोडि बा ॥ रांम क
हंते साषि ॥ रांम कहंते गाइबा ॥ रांम कहंते राषि ॥७॥ कबीर पद गाया मन हरषिया ॥ साषी कह्यां
अनंद ॥ सो तत्त नांउं न जांणियां ॥ गल मैं पडिया फंद ॥८॥ बांनी जिन की बीगरी ॥ बांनी गावन आंन ॥
बांनी कौं बांनी चहै ॥ रूप रांम कै गांम ॥९॥ करनी हूं का कोनहीं ॥ कथनी अनंत अपार ॥ दादू यूं क्यूं पा
इए ॥ रेम न मूठ्या गारा ॥१०॥ कबीर कथनी कथी तका भया ॥ करनी नां ठहराइ ॥ कालकूत के कोट ज्यूं
देषत ही ढहि जाइ ॥११॥ कहैं सुनें कहा होत है ॥ रती नरी कहि रांम ॥ कथनी रही अलाहिदी ॥ करनी
सेती कांम ॥१२॥ दादू कहि बे सुनिबे मन षुसी ॥ करिबा औरै षेल ॥ बातौं तिमर न भाजसी ॥ दीवा बा
ती तेल ॥१३॥ साषी ॥ बात निहीं पड़ै चैन ही ॥ घर हरि षियां नां ॥ मारगि पंथी ऊ षिचलै ॥ दादू सोई मर्य न
॥१४॥ दादू बातें सब कहु की जिए ॥ आंति कहूं न देषे ॥ मनसा वाचा क्रमनां ॥ तब लागे लेषे ॥१५॥ दादू म
सरी मिषी की जिए ॥ सुष मीगा नांही ॥ मीगा तब ही होइगा ॥ छिटका ही मांही ॥१६॥ दादू मनसा के पकवान
सौं ॥ क्यूं पेट भरावै ॥ ज्यूं कहिए त्यूं कीजिए ॥ तब ही बनि आवै ॥१७॥ साषी ॥ नांनां विधि के सालनें ॥ परिनि
कौ से सब मांहि ॥ स्वाद न समझे कहु लें ली ॥ जो नहिं जे नर षांहिं ॥१८॥ कहि सुनि बातें बेद की ॥ पंडित बैठे गो फली
ला ॥ षा ली बाम न बाजई ॥ बसन न या मकहिं सूलि ॥१९॥ सजा म्यै बैसर्या न है ॥ नहीं आपां नां कोइ ॥ कहत सुनत

गुं०ग्रं० अस्मकरत्तैहैं॥ तातैं अचिरजहोइ॥२०॥ पीपियमीरथकथ्या॥ सुषसागरकामूल॥ स्वारथसकौ रूषडे॥ले
१८७ हविहूं ऐसो सूल॥२१॥ सोरठा॥ पंमित कोडंकोडि॥ जो या ग्रंथ जो स्यां घणा॥ एहजु मोटी खोडि॥ के छिम
ई कै लोभिया॥२२॥ चौपई॥ कृपाहीं मशब्द कासूरा॥ कार्यसिधिमप्रवृत्तिपूरा॥ सीषी साषिहिं सायु
सी०म षरा॥ नाथकैं हैं पूरा घोटानषरा॥२३॥ चौपई॥ कागदमें जरणां कागदमें बिचार॥ कागदमांहैं ग्यांन॥
अपार॥ कागदमें तत्तमेल्याया डि॥ कागदवस्ती घटांउजाडि॥२४॥ कागदमांहै सबयसैया॥ कागदमें
सुमरणकौ अंग॥ कागदमांहैं जोति अपार॥ घटमें दीसै धीरस्यंधार॥२५॥ कागदमांहैं लैका अंग॥ काग
दमेंसाधौंका संग॥ सब लिषि मेल्या कागदमांहिं॥ कागदमें सो घटमें नांहिं॥२६॥ साषी॥ मैं साषी सयानी
सुणी॥ बिचारी मन मांहि॥ कागदमें जरणा लिषी॥ पणि घटमें जरणां नांहि॥२७॥ कागद ॥ निरवैरता स
बसायांकी टेर॥ हिरदा मांहैं बैरता॥ कोई बात न कहणा का फेर॥२८॥ सो बातौ की एकटै॥ सब साषौंकी स
षि॥ गुरि कागदमैं लिषि दीयो॥ सो नुष नांहिं रिदय राषि॥२९॥ मन कटया कागद किया॥ मसिके मांहैं चंम
॥ तिसकौं यहियें दितछूरा॥ जगासे की या कैका॥३०॥ चौपई॥ सणका कागद पुस्तक पोथी॥ औंधी सुरति र
हैं नित थोथी॥ पढिगुणि अंधल्या मन मैं न सूझै॥ ताकूं ग्यांन कहांतैं सूझै॥३१॥ साषी॥ किती अंधे डीचीक राम
ष्यी॥ कोमलहृदय इस्यो र॥ तिसतैं लेके सीधडे॥ वषनो सहसाक गोर॥३२॥ धरती ऊपरि भाग मीग न दीं॥ पेटायोप १८७

डीपचास॥ नैमैं धारा जलथल भरे॥ कहि जगजीवनदास॥३३॥ साषी॥ पढिगुणि चातुर होइ करि॥ रसमां
रोमन आषै॥ अंकूकर की पूछरी॥ हकैन माषी रोषै॥३४॥ साषी॥ अषिर आगमकी बात कहि॥ पंमित
मैं सैन राम॥ षैत कमाया जुगति सैं॥ बीज बिनां बै कांम॥३५॥ सोरठा॥ कथ्यां कमाई होइ॥ तौ कवित
करतनिरैं॥ देम अबसिमसिजोइ॥ साजपषैं सांजतिकरैं॥३६॥ साषी॥ बजतपरैंका पोडं णो॥ सुमरैं नां
सैं रांम॥ साधू सेती बैरता॥ माया सेती कांम॥३७॥ बाजी दाविसवासका॥ ऐसे अषिर सीष॥ क्या जो बेद
पुरांन पढि॥ घरिघरि मांगी भीष॥३८॥ चित्र मांहिं केहरि किये॥ तासौं डरै न कोइ॥ यौं मोहन कर रांगी बि
नां॥ कथणी तैं का होइ॥३९॥ हस्ती मांड्या कागदै॥ जगनाथ चौदंत॥ जियकरणी बिन कहू सब॥ छिरथ
चित्रकदंत॥४०॥ दीपक कौ आकार सब॥ कियौ चित्र में सोइ॥ मोहन जोति प्रकाश बिन॥ तिमर न दूर
कांहे होइ॥४१॥ चित्र मांहिं जुरनी लिषी॥ नषसष अंग सम्हारि॥ मोहन का रस नां सरै॥ का करिए सो नारि॥
४२॥ चित्र मांहिं चित्रीइ रसा॥ अमृत की घन हारि॥ बिन रवनेक कथणी इसी॥ मोहन देषि बिचारि॥४३॥
बैल सुल्ली ऐंगेल करि॥ पुस्तक पोथी लादि॥ अंति फलै गीभीतरां॥ बाहरि की सब बादि॥४४॥ पढिपढि
गुनि गुनि रैनि दिन॥ ऊंजर पुस्तक लादि॥ बिन मद्दकायें के मग॥ सबै मसांन प बादि॥४५॥ पढैं नणं वेप
रमगति॥ पढैं न लंघे पार॥ पढैं नपजे प्राणियां॥ दाइपीड प्रकार॥४६॥ दाद सूतां घट सोधी न हो॥ पंमित

गुंज्ञ° १८८

छुस्यापूत ॥ आगम निगम सब कथे ॥ घर में नांचै सूत ॥ ४७ ॥ सिंधी मोमी ॥ जुज्ञ बार हरनम ॥ कोडि कतेबां जोय
हैरा हहस वाई सिच्या ॥ जो जो पिरियां न मिडे ॥ ४८ ॥ सिंधी साषी ॥ कंज कंज रूत्यां की फिसां ॥ किकि न पढियां भि
॥ सोडे होई को बिये ॥ जो ई पिरी लषां मि ॥ ४९ ॥ साषी ॥ दादू काजी कजा न जोण ही ॥ कागद हाथि कतेब
पढ तो पढतां दिन गए ॥ भीतरि नांही भेद ॥ ५० ॥ दादू सब हम देख्या सोधि करि ॥ बेद कुरानों मांहि ॥ जहां
रंजन पाइए ॥ सो देश हरि इत नांहिं ॥ ५१ ॥ दंत पढंतां घसि गए ॥ लिखंतां कर में पषी नाए ॥ एक न जांनी पर्म कल
॥ कहा आइ कलि कीना ॥ ५२ ॥ पढि पढि पढियें ठित भए ॥ तपि तपि पित न छीना ॥ किन जंनची को पर्म गति
॥ कहा आए कहे लीना ॥ ५३ ॥ दादू केते पुस्तक पढि मुए ॥ पंडित बेद पुरांन ॥ केते ब्रह्मा कथि गए ॥ नांहिंन
राम समांन ॥ ५४ ॥ पणो न गांन गुंन सब सुभै ॥ फुनि निंसी खे प्रति जोन ॥ भात गार दरजि एक लबरि [illegible] बिम गो बि
दकी आंन ॥ ५५ ॥ चत्र रघष्ट न रमो रबि ना ॥ अष्टाद समुष पाभि ॥ जगनाथ बांदे न रष्टा ॥ जन हरि बिसरु
साभि ॥ ५६ ॥ निगम आगम कहि कथहिं सन ॥ चत्र दस बिद्या बिसाल ॥ सो बिद्या जगनाथ नहिं ॥ जो ते बंधे
काल ॥ ५७ ॥ स्म्रुति सुमति श्रो माहि के ॥ पढि पुरांन परबीन ॥ जगनाथ करह बिबिन ॥ ५८ ॥ पमजं आथी
न ॥ ५९ ॥ कारनी बिनक पनी कहा ॥ मिल समस्त सहिं पीत ॥ हरिजन संग फी को लगे ॥ जैन दिवा लेहीन ॥ ६० ॥
॥ कहा का बिचारनी बिन ॥ करिये कथनी सो ज ॥ कहा कहि बोपी रकै ॥ कहा मसरी रोज ॥ ६१ ॥ पहेरो ॥

। उपनिषक

राम
१८८

अपढ हूं कगंड़ समन ॥ हरि मच रतते हिंमार ॥ कोटि कबि यां भजन बिनां ॥ भ्रयो नीक सागार ॥ ६२ ॥
दादू अषिर प्रेम का ॥ कोई पढेगा एक ॥ दादू पुस्तक प्रेम बिन ॥ केते पढें अनेक ॥ ६३ ॥ बाचक ग्यांनी
जगमसम ॥ लछि ग्यांनी पर काथ ॥ बाचक बांनि लिसामे है ॥ लछि ग्यानी सो साध ॥ ६४ ॥ कहां लगि जियक
रनी करे ॥ कथे कहां लौं ग्यांन ॥ एक नां बसी लगि रहे ॥ तो भर देस बकामान ॥ ६५ ॥ कथणी जतेसु कथ
गए ॥ सुणि ली ज्यो सबको ॥ कहिमुकंदकरणी बिनां ॥ कथणी सिद्धन होइ ॥ ६६ ॥ हेम गगयां कथ्यांसु
गयां ॥ सहरि मेटे मांहिं ॥ कथि पंचौं नि गृह करें ॥ स्वांमि मिले घटमांहिं ॥ ६७ ॥ कादे कों पढिया ढि मरो ॥ को
टि कग्यांन गरत्थ ॥ आया छांडो हरि भजो ॥ सबको यहै अरत्थ ॥ ६८ ॥ अरथ करे बहु ग्रंथ का ॥ भ्रमे दिंमां
लि बढांहि ॥ कां मबि दस्त रिक यजो ॥ रज्ञो स मोक्षि चमांहिं ॥ ६९ ॥ ग्रंथ सुनै पुनि पाव मुधि ॥ अरथ सहस
श्रो मांहिं ॥ स्तत बिना बिनपीवका ॥ पद जगनाथन पांहिं ॥ ७० ॥ अध्यक्षा ॥ अरथ आयात बज्ञांणिये ॥ जब
अनर थ छूटे ॥ दादू मांडा न मेंका ॥ गिरि चौडे फूटे ॥ ७१ ॥ किरिया के बल नां सुंदरि ॥ मिसन पांन समसा
धि ॥ जगनाथ परबीन सो ॥ पंडित लगे समाधि ॥ ७२ ॥ क्रया अभेष जबे दगुर ॥ जुगति सुपल रसरा षि ॥ बि
था मांन सी जाइ मुचि ॥ जगनाथ जन साषि ॥ ७३ ॥ क्रया रोषद सों भय ॥ आधि ब्याधि सब जाइ ॥ जग
नाथ बिसरा स धरि ॥ साधे जुगति बनाइ ॥ ७४ ॥ कहैं कहैं सौ कैन हीं ॥ का यें की ऐं दोइ ॥ बाट बनि अ रोष

गुणगंण १२६

स्कूरण॥ करसनअरुकूतकोइ॥२४॥ इतिसंपूर्ण॥ २५६॥ ५८४८॥ कथनींबिनांकरनीं०॥ साषी॥ क
बीरसैं जांन्योंपढिबौनली॥ पढिबांतैंनलाजोग॥ रांमनांमसौंप्रीतिकरि॥ नलनलनींदीजोग॥१॥
कबीरपढिबाद्दरिकरि॥ पुस्तकदेइबहाइ॥ बांवनअषिरसोधिकरि॥ रेंमेंमैंचितलाइ॥२॥ पोथी
अपगांण्यंभकरि॥ हरिजसमांहेंलेष॥ पंडितअपमांपांनकरि॥ दादूकथजनअलेष॥३॥ कबीरपोथ
पढिपढिजगमूवा॥ पंडितभयानकोइ॥ एकैअषिरपीवका॥ पढैसुपंडितहोइ॥४॥ दादूकायाअमारी
कतेबबोलिया॥ लिषिराषौंरहिमांनं॥ मनहमारामुलांबोलिए॥ सुरतांहैसुबिहांनं॥५॥ दादूअलफ
एकअलाहका॥ जेपढिजांणेंकोइ॥ कुरांनकतेबांइलमसब॥ पढिकरिपूराहोइ॥६॥ साषी॥ दादूयह
तनपिंजरा॥ मांहैंमनसूवा॥ एकैनांवअलाहका॥ पढिहाफिजहूवा॥७॥ साषी॥ दादूसबदौ॥ दसुरांनप
हि॥ नेतिनांवनिरधार॥ सबकुछइनहीमांहिहैं॥ क्यांकरिएबिस्तार॥८॥ दादूअषिरजांनिसब॥ को
टिग्रंथकिहिंकांम॥ कहिजगजीवनसबपढ्या॥ जेचितआएरांम॥९॥ जगवेतसजनसुभागवत॥ सुर
थिरआगमपुरांन॥ नवेंनिरोधैव्याकरण॥ पढिजगनाथसमांन॥१०॥ जोतिगजोनिजगलगुर॥ चीन्हैंतत
सुतंत्र॥ नरकयहैजगत्यागसो॥ रांमनांमनिजमंत्र॥११॥ ग्यांनींपंडितकविचतुर॥ बेबेकीसुधिवंत॥ आ
गिवंतजगनाथसो॥ जोजनकिरियावंत॥१२॥ किरियाग्यांनींनांरहैं॥ करमकाटबीमूल॥ जगनाथकहि

काम ८में

राम १२६

कंडैरे॥ सब्यासुबासीफूल॥१३॥ निगमसुगमसुमतपढी॥ कियाव्यांनपुरांन॥ जगनाथजनजांन
सो॥ जिनिजांनेंभगवांन॥१४॥ बिद्यासाषीसकलहीं॥ पढेसपूरणपाठ॥ कहिकबीरजिनिंअजमैं
॥ कीनेंमनबचगाठ॥१५॥ मारूतमनजिनिंबसिकीया॥ नांवनिरंजनलीन॥ साषिसिलोकगरंथति
नि॥ जगनाथसबकीन॥१६॥ साषिसुनारापदमहला॥ संतचलैकरिबाट॥ ग्यांनींचालैएककौ॥ उलटा
औघटघाट॥१७॥ कथनीकाजेहोतहै॥ कथनीमेंरेनकांम॥ कथनीकथनीअंतरा॥ निजकरनीहैरांम॥१८
॥ कुयाकरिजगनाथसो॥ कायाकमेनहोति॥ पांवनखेतुरियगटे॥ प्रमपुरषपदजोति॥१९॥ इतिसंपू
र्ण॥२५७॥५८६०॥ निजपपमोक्षण॥ साषी॥ काजेकारीसेतको॥ साषिसपूरोगाहि॥ कौरेकटारीबियर
की॥ जबलगअपनैंबाहि॥१॥ परषमोक्षपोनबजा॥ आनसाधीमृत॥ आप्संगहेआंनकौ॥ उसहण्यारज
मूत॥२॥ काबिकटारीबिषकी॥ बजतनरजहथियार॥ तीरहोजबंदकची॥ पजगनाथअपार॥३॥ सी
रोसीत्रकसभस्या॥ सराकूअनटेक॥ औरोकौंघाइलकरै॥ दादूअंगिनएक॥४॥ आंनजीवसबबसि
किए॥ आपजीवबसिनांहि॥ पनपिरागनिजपतनबिन॥ स्वरनसुरपुरमांहि॥५॥ हजगाजोनिजिश
बसिकिए॥ बलिछलिसतबोध॥ तेधनिजन जगनाथकरि॥ सुकीआतमांसोध॥६॥ अपनींसुधिम
अपांनकौ॥ जगनजांनघरकाज॥ जैमैंगघरेअंगकी॥ आंषिनअपजेतलाज॥७॥ सोधीनहीसरीरकी॥ औरोंकै

कुमारी का कथन

गुणगंज उपदेश॥ दादू अविरल देषिये॥ ऐसा हिं गेकि मदेश॥८॥ दादू का परमोधे आंन को॥ आपन वहिया जा
१८० त॥ औरों को भ्रम तक दे आप॥ तरा दीवे मझवान॥९॥ कबीर रष्या सके हे॥ सीतरिये दे मो हि॥ औरों कथा
कों परमो धतां॥ गया सुंदर क्यां मांहि॥१०॥ कबीर रा सिपराई राषतां॥ घाया घर का षेत॥ औरन
कों परमो धतां॥ मुहमें पडि गया रेत॥११॥ दसों दिसा भ्रटकत फिरे॥ आपन आ तम गेरा॥ पोथे पो
थी पक रि कि॥ परमोधत हे औ रा॥१२॥ मुक्ती गे रहिन औरकों॥ उपदेश त करि हेत॥ मि मुष्टो रोजल
पी हनी॥ आप दोष परदे त॥१३॥ पंडित किथ्यो चिरा क ची॥ क्यों न कहे मो हि बात॥ दिया दिया द
त औरकों॥ आप अंधेरे जात॥१४॥ नानक ज्ञाई नीर त जि॥ जड पिलागत कीच॥ और दिषा रमता र
के॥ आप रहत जल बीच॥१५॥ धर्म अवर के कहन कों॥ देपकिन मन कोइ॥ जगनाथ मन करम
कों॥ कहूं एक के दोइ॥१६॥ जगनाथ के मे लगे॥ जन कों जन परमोध॥ औरनि कों कहि भ्रम क
व पर्वा मी न हिं सो ध॥१७॥ जगनाथ करनी करे॥ तब उपदेश अमोल॥ जे में गुरि गुरत जि कहे॥ बा
लिक लाग बोल॥१८॥ इति संपूर्ण॥ २५॥८२॥८८॥ चौंपदि नचौंपचरचा॥ साषी॥ दादू सुरता घरि
नदी॥ वक्ता के सु बादि॥ वक्ता सुर्ता एक रस॥ कथा कहां है आदि॥१॥ वक्ता सुरता घरि को दे सुन नदी
कोरांम॥ दादू यह मन थिर न हीं॥ बादि बके बे कांम॥२॥ बाजीद सुरता बादरा॥ बिरषा मन ओ मन १८०

तिनपप्रमो॥४०

॥ करि कटाछि मो देव क्रिडि॥ पति के नांहि न नेंन॥३॥ चरनच लहिं के हदि सा॥ कतहं मोख हि नें न
॥ सुरता सो परमो दि नें॥ का सों कहिए बेंन॥४॥ जगनाथ सुरता बिना॥ वकता आहि अनेक॥ दादूय स
री सब निंदी॥ नदी बिसाहूए का॥५॥ वकता बिनि जब वेक बिन॥ सुरता बेपरवाह॥ बिनां बिसाहू कं
बि निष्ठ॥ चरचा बिग सु साह॥६॥ वक्ता बस्त न संग्रहे॥ सुरता छुछे न मेलि॥ लाभ लुब्ध बिवे से मेले॥ जगना
थ जन फली॥७॥ स्वार्थ की चरचा जहां॥ वक्ता सुरता षुन्य॥ जगनाथ रुचि बाहिरी॥ ताकों पाप न पुंन्य॥
८॥ दादू सुर्ती मन ही रांम का॥ सो मुक मिल सकुं आणि॥ तिस आगे हरि गुण कथं॥ सुणा न न कहई कांणि॥९॥
जगनाथ वक्ता उदे॥ साचा सुरता सोइ॥ सुर्ति मिति मन कों लषे॥ जब पंचल दोइ॥१०॥ प्रम कथा उस एक
की॥ इन्ह मांहीं आन॥ दादू तन मन ल्याइ करि॥ सदा सुर्ति रस पांन॥११॥ चर्चा चोषी चौंपसों॥ चित मे चित न
को॥ जगनाथ सुरता सुषी॥ वकता आनंद होइ॥१२॥ बाजीद बिर्था प्रमो धई॥ पाइ नि पाकों दास॥ मुषम
कोइ॥ जगनाथ सुरता सुषी॥ वकता आनंद होइ॥१३॥ बाजीद बिर्था प्रमोधई॥ याइ निया कों दास॥ सुषम
परिणी रीपरी॥ नतो बसी री मास॥१४॥ कथा कलेवर की मरे॥ वक्ता सुरता सोइ॥ जगनाथ सब बात हैं॥ मोलों
जक नहि होइ॥१५॥ कथा अथा सुषदेव की॥ कहत सुनत सब पार॥ आन बात की बात हैं॥ जगनाथ रु
जमार॥१६॥ चर्चा कहि सुनि चौंपसों॥ सोन कादि जे सुनि॥ जगनाथ सुनि ब्यास सुं॥ कपिल देव देहूति॥१७॥
हुति संपूर्ण॥ २५॥२८॥ सुती सुधि पकांग॥ साषी॥ सोई जल प्यासे रमन रुचि॥ सोई जल गरमी न्हाइ॥ सोई जल
चौंपदि नचौंपचरचा॥०

गुं०पं० हरि

हिं मद्योदासु तन॥ ९ ॥ श्रोता तिहूं भाइ ॥ २ ॥ सु तिम सु ती स्वांतिमा ॥ मध्यम राज सजां मिं ॥ अथ श्रोता जगनाथ ज
न ॥ ता मसता कतहै मि ॥ ३ ॥ स्वांतिग सुती सबमिकै ॥ सुषदाई जगनाथ ॥ राजस श्रोता मांम्मनिं ॥ तामस
तरक तगाथ ॥ ४ ॥ जगनाथ जनसबसुनै ॥ धरे अधरको धाम ॥ रुचि हिदै अमरु चिमनै ॥ बचनमचा वैध
ता ॥ ५ ॥ श्रोता सांत्रोत विम स्वादी सबगा हि मार ॥ सुषरूपी जी धनि जिती ॥ श्रोता सुमिल विचार ॥ ६ ॥ म
ध्यम विचरषी करै ॥ बक्ता बचन कपास ॥ सुरत नपति राषे सुई ॥ तज्जै का कराय सा ॥ ७ ॥ इक सुरता धुन
कोषरी ॥ इकजंत्रन करषेत ॥ इक बरधरमी बीज ज्यै ॥ इक काजरतरेषा रेत ॥ ८ ॥ अससबो लितिम सुनै
मधिम बासरु मांहि ॥ अधम सुनें जलली कज्यै ॥ जगनाथ बजमांडि ॥ ९ ॥ उतिमरे बाअसमानंरे ॥ सुरता सुन
संवाहिं ॥ जनमिरषे जगनाथ जन ॥ हरि अजिहिर वा मांहिं ॥ १० ॥ मध्यम सहिं मां मसकी सार सुनें सुमाइ
रेतरेष जगनाथ जन ॥ विक बिनबहिरहराइ ॥ ११ ॥ अधम सु रोता सुनिकथा ॥ जगनाथ जलली का
आपदरबक्ता बकै ॥ रहै मता हिरती क ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ अस भी नमदीचर भीची नं ॥ जगनाथ सुती जरि
मती नं ॥ कहै न समकै सुन न तनल हहीं ॥ जंकीलंबिरखे घटि रहई ॥ १३ ॥ साषी ॥ सुवि श्रोता चौगांन जिम
खेलनकौं सबकोइ ॥ कायरलग त्यागैन ही ॥ सोवहब हती होइ ॥ १४ ॥ श्रोता अधघट सौ बिमुष ॥ बक्ताय
नघनधार ॥ फरतालेंबरस्तवज्जन ॥ तहां न हे हलगार ॥ १५ ॥ कथा परीछनरिषि निं सुमिनि ॥ बिसरि संभारे

राम
हरि

अ
जीन ॥ रामायन जगनाथ रहि ॥ हकौ रा षिसकौन ॥ १६ ॥ उत्पम चरचा गुरिधरे ॥ मध्यम सुषिचा हेत ॥ अ
धमा श्रोता अधम ॥ कौन कौन का हेत ॥ १७ ॥ कोउ इक जाच क किपन पे ॥ मचला संक रिलेत ॥ श्रोता वक्त
हो इयं ॥ जहां जो निद रिदेत ॥ १८ ॥ चौपई ॥ उत्पम सुरता अग्र लम अर्थी ॥ सुनितन कथा करै सु जांम ॥ ज
गनाथ जग दीसनि मत जच ॥ मन मैं म्हलि न बंका श्रोन ॥ १९ ॥ साषी ॥ तंत्र ग्रंथ निं सा षि सुनि ॥ मजन सुरु
तकरि कोइ ॥ हरि अर्पन जगनाथ सो ॥ सुफल सजीव निंदोइ ॥ २० ॥ इति संपूर्ण ॥ २१ ॥ ५ ॥ २ ॥ सुचिया
क का विण साषी ॥ जे मी जाकी शक्ति है ॥ ते मै जोरत अंक ॥ एक निं बे सरिकनक की ॥ एक तनक तिमन
क ॥ १ ॥ सोठी ॥ बुधि मारु खरबीर ॥ कवि जन मन रंजन कला ॥ षटबदरा बड़ भीर ॥ करै सु किम कै सो क
है ॥ २ ॥ साषी ॥ पञ्जे पे वा स अनूप है ॥ चाषों तें कर बाइ ॥ ऐ बांमी गोपाल कहि ॥ देह गुमां नें जाइ ॥ ३ ॥ सब
अपनें गुन मांन की ॥ साषि कहै पद का हि ॥ जिहि लोग परक रलें ॥ सो अपनें कर माहि ॥ ४ ॥ शास्त्र जो इह
रि मांदु सौ ॥ संस्कृत प्राकृत कोइ ॥ जगनाथ जन कहै ॥ बचन सिरोमनि सो इ ॥ ५ ॥ जेक गुरथनां सबद
की ॥ करैं धरें तन आंनि ॥ जगनाथ अष्परहे ॥ उहे सबीर जबांनि ॥ ६ ॥ सोठी ॥ प्राकृत पल हिं नपाप
संस्कृति मरैन का जको ॥ जिहिं हरि रीझें आप ॥ सनि बांणी जगनाथ सो ॥ ७ ॥ साषी ॥ संस्कृति सुनि सु
मनै करै ॥ धरे ध्यांन कहि श्रोर ॥ जगनाथ मिजनो रविमा ॥ देक कमका कोर ॥ ८ ॥ प्राकृत पहि पदचिंत

मुं०ग्रं०
१९२

हैं॥ चितवन मन दत पहाड़॥ जगनाथ सोई सुफल॥ नांऊ खायी बाड़॥२०॥ छंद दीन अक्षिर चलनि॥ आसूभं
ग जुर जोग॥ कोकाहि कबिबेक बिना॥ काबिस्न सरगुन्न रीग॥२१॥ साषी चांनदी सोरठा॥ गाहा अरिलमले
का॥ दोहा भूहा कबितगुन॥ बस्त सबइया थोका॥२२॥ छंद गुंथ पद मैं धरे॥ रांमनांम निज नीक॥ जग
नाथ जे कछु कथे॥ काबि प्रगट तिजीक॥२३॥ साषि मांहि साहिब कहे॥ परमे स्वर पद मांहि॥ सि
रजन सार श्लोक मैं॥ नावु बिन्न कछु नांहि॥२४॥ सकल काबि मैं सांइयां॥ कहत सुनत सुष जांनि॥ ज
गनाथ जगदीस बिन॥ सबै थोथरी बांनि॥२५॥ पाठ तनै पटि नो बसौ॥ नाद जोड मन हिं नोम॥ नरकै नर
जगनाथ जन॥ सुमरै केवल रांम॥२६॥ इति संपूर्ण॥ १८३॥ ४९१८॥ अथ मन बुधि अबुधि को अंग॥ साषी॥ जि
हिं की यो मन दरषही॥ सोई करिये कांम॥ जिहिं करतां सुकचै हियौ॥ सो तजि राबे कांम॥ ॥ जो मति पी
छे ऊपजे॥ सो मति पहली होइ॥ काज बिग्गन होवे जीउ दुषी॥ दादू सुषिया सोइ॥१॥ कबीर पहले कूप जो
सुधि सुजांन सो जांनि॥ पीछे उपजी अग्यांन कें॥ मां नें दुष परिक्षानि॥२॥ जे सी पीछे संचरे॥ असी पहली
कोइ॥ काज बिनठै रे मना॥ बुद्ध घने री होइ॥३॥ कबीर बुधिवंत सो सही॥ जाके उपजे आदि॥ कारजो
समरे चेत ही॥ तिस की बुधि ते बादि॥४॥ करि सम कें बिन काज कें॥ बिगरें सोच करंत॥ अंतर जारी परि सि राम
है॥ काटन मूढ परंत॥५॥ समकि सारथी सकट मन॥ मारग बेद गवार॥ सोर थ ग्रहा के कु बुधि नर॥ कट १९२

मारग नहिं बार॥६॥ पहिलै जो परखां नहीं॥ पछैन सो पछिताइ॥ जगनाथ जब जीय कै॥ बिध्न नां बुंगय धि
ज्ञा घाट॥७॥ पूरन बुधि जिन उपजै॥ तिन सुष अति आनंद॥ जगनाथ पछिम बुधी॥ ते कहिये मति मंद
८॥ आगम बुधि ते आदमी॥ पीछे आदि परे त॥ चेतनि सो निनहीं सुषी॥ डषीया सदा अचेत॥९॥ आद
ऊपजे अ सुर सो॥ अबुधि आंनडषपाइ॥ सुर सुधि आगम कबीर कहि॥ उपजि सकल सुष दाइ॥१०॥ जि
न के आगे आ हिंदी॥ अकलि कला जगदीस॥ जगनाथ सो नर सही॥ सुर है बिस रावीस॥११॥ जगनथ
जा कै रिदै॥ आदि बुद्धि प्रकास॥ जहां बिबेक बिचार का॥ होत निरंतर बास॥१२॥ मोह कों मन ज्यों
पड़ै॥ न तो कलप मां हीय॥ जगनाथ जो जन मई॥ धुरि धीरज सो भीय॥१३॥ बिकल बुधि निज आतमां॥ आ
गम उरि उपजाइ॥ जगनाथ जन जांनिजे॥ गुर गोबिंद सहाइ॥१४॥ जगनाथ आगम यहै॥ सुमति सबै आवे
मा॥ तब हिं जांनियें आइहै॥ भाव भगति भगवंत॥१५॥ इति संपूर्ण॥ १८२॥ ४९४४॥ अथ रस अंग अरुचि अंग
॥ साषी॥ जगनाथ रस अंग मैं॥ असै सो दोय न कोइ॥ जे नर मनि बंछै करै॥ नर्क पाति की होइ॥१॥ सुमरन से
व समाधि मैं॥ धारन ध्यांन करंत॥ समये बिन ही क्रोच कै॥ अंतर दोष रहंत॥२॥ चोपई॥ जगनाथ अथ
मैं सुष मां॥ मुदित मौन डबि ध्यान गनांही॥ पैंम मगन सा हकै सूमर॥ पीर मांझ मैं एही सूसर॥३॥ जन लागे नि
रोन सुनि गाथा॥ जोति सरूपी निज जगनाथा॥ सनि ता समकि सुमाहे ध्यसर॥ पीर मांझ मैं एही सूसर॥४॥

गुं०ग्रा० ग्रेघ सेपर मोषिकरे ता॥ अति ले ली नविबर जित जंता॥ तीसर आो भिंक दे बिधि इ सरा॥ षीर षांड मैं एही सू
२६५ सरा॥४॥ इल हाइल इव निके छि करां ही॥ इनि चु नि क्षाय षि रै जी सां ही॥ सषी एक आ ग्र प छे क सरा॥ षीर
षांड मैं एही सू सरा॥५॥ कथा की रत न जसां जगनाथा॥ श्रोर नि कां न लगै गदि माथा॥ बालक दहि
घास र षू सरा॥ षीर षांड मैं एही मू सरा॥६॥ ग्रग म दो छा मं मल हा रा॥ सो ज न पांन करत श्राचारा॥ बुध
नवी चि बो लै न रस सरा॥ षीर षांड मैं एही मू सरा॥७॥ साषी॥ उपजै सुक्त तन जन की॥ करिए कासैर
हा जगनाथ मन नमगा करे॥ रस अंगी नेर ते हु॥१॥ जगनाथ उपजे भली॥ करत भला ई अंगार सम नो
मन षनै न तिहि॥ दे षै कंदे न मंगा॥२॥ मनि षदे ह धरि मो किसो॥ अजन सुकृत सम न संगा॥ जगन
थ या बिन कहो॥ श्रोर कहा रस अंग॥३॥ सुकृत रूप नर देद ल हि॥ किसो न हरि सो नै ॥ जग
नाथ अनरस पदै॥ बहुरि न बरि सांपे हु॥४॥ रस अंगी पर आप मै॥ हो न होय बहु लागि॥ ज
गनाथ नर मैं जरै॥ सो दो जग की आगि॥५॥ म नि ता सुमर न सम किये॥ कदेव है जन को छ
जगनाथ गिर दी षते॥ रस राषत निज सोइ॥६॥ चवं पाई॥ अगत भगति भगवंत भजन सो॥ सा
धु भांन आतम गिरदोष॥ जगनाथ रसर क्षिक जन सो॥ पापनि निज पक्ष निश्चल घोष॥१४॥ राम
इनि सं पूरा॥२६॥ ध२६१॥ कुसंगति अंग साषी॥ कुसंग न कीजिये॥ किये कुसो ना होइ २६६
रस अंग सम्पूर्ण०

पे
ग
मि

॥ सज न सं गति ब्याधि की॥ उस्मन कहि सब कोइ॥१॥ संगति सा ध असाध की॥ उं मस्य घटि ज लगे॥
॥ सज न संगति ब्याधि की॥ इस्मन कहि सब कोइ॥१॥ जनि जि ते नर अंग॥ घ न प्र
ग॥ ब्यास न सो भापा घ इ॥ उर सी जै म अंग॥२॥ बास दे षबं द हि स कल॥ अ हि षलल पटे अंग॥ सी तल प्रम सु
मिर्प रिस ह्यो॥ नीच लो द के संग॥३॥ मतु न जन चंदन इ छ॥ अहि षल लपटे अंग॥ सी तल प्रम सु
मध्य अति॥ किहि बिधि की जे सबा॥४॥ षल सं गति तिस क ल षु न॥ करि म ही सके प्रकाश॥ जैसे पाप क
दार के॥ मांक करम घु न बास॥५॥ की ज्ह क्ष णा करि न दी॥ असं त जन नो को संग॥ वपा ज्ञा इ सब घा वि
को॥ श्रो सु मति को संग॥६॥ भाव भगति का भंग करि॥ बट पार मा हि बाट॥ दाहु हरा म जि का॥ घो
लैजडे कपाट॥७॥ कहि अगा जी दमरां मजी॥ कालक्ष संगति दुष्य॥ बहु बंधन अगणा न घट॥ हरि रस
स्यां ति नसुष्य॥८॥ संगति की जे तास की॥ जो स्प दो ए ल घ होइ॥ त्याग संगति सब की॥ अवलो सुबी
न कोइ॥९॥ सब संगति कहि के सबा॥ फल निर्फल न पक्ष जोनि॥ पेपरे ह को जी मिले॥ भई मूल मै हानि
॥१०॥ कबीर निर्मल हूं दअकाश की॥ परिगई जो बिकार॥ मलि बिगांग मोम दी॥ बिन संगति भव छार
॥११॥ नषसिष कांटे पेपलौ॥ न हि फर न हि तिन छांह॥ के सब कहा सुष पाइए॥ यो हरि के ब न मां दा॥१२
॥ दाइकुसंगति सब पहरी॥ मात पिता कुल कोइ॥ सज्जन सबे दी बेधना॥ भावे आपा होइ॥१३॥ श्लोक॥ अ
जां न म्र षिहितो कारी॥ सज्जनो सम मोरिपः॥ पणा त्वा स जेत्पते॥ निराम ई म नो जितः॥१४॥ साषी॥ कबीर कहि नै॥

गु०अं० कंू बनें ॥ अनमिलते सौं संग ॥ दीपक कै भागें सदा ॥ जरि मरि मरैं पतंग ॥१५॥ दादू संग न कीजिए ॥ या हिला
२६४ तजि संसार ॥ साध संगति सौं छिलै ॥ कुसंगति संग निवार ॥१६॥ इति संपूर्ण ॥ १६॥ ७६४॥ अथ संगति अंग ॥ साषी
कबीर करिए तौ करि जानिये ॥ सारी या सौं संग ॥ लीर लीर छोई थई ॥ तऊ न छाड्यो रंग ॥१॥ कबीर यहु
मन हा जैसा सकै ॥ सुमिसे संग न होइ ॥ सिर कपर आरा सहै ॥ तऊ न दूजा होइ ॥२॥ कबीर तासौं प्रीति
करि ॥ जो निरबाहै ओरि ॥ बनिता छिव धिन राषिए ॥ देषत लागै षोरि ॥३॥ कबीर देषा देषी पाकरै ॥ जा
इ अपरचै छूटि ॥ बिरला कोई गहरै ॥ सतगुर सांम्ही मूठि ॥४॥ कबीर तन पंषी भया ॥ जहां मन तहां उडि
जाइ ॥ जो जैसी संगति करै ॥ सो तैसे फल षाइ ॥५॥ बिनु परिवार षमण्य सौं ॥ कालू पासि नहीं इ ॥ सैफ तड
तें बाहिर ये मावो थें कोइ ॥६॥ सुरैन कौ ऊ कहि सकत ॥ बनि बैंस की कांनि ॥ अजौं नहें ॥ सब कहि
मुरत फूं वा आ कौ जोनि ॥७॥ संगति सो आपाइए ॥ जो निकट्यौ कबि बैंन ॥ जोई का जरथी करी ॥ सोइ
कागैं मैं ॥८॥ संक सजन कै मिलै ॥ दुर्जन कूं बहि दी होइ ॥ ज्यूं लोइ न संग बकस्त ॥ भली कहै सब कोइ ॥
९॥ नीच हिं सो ना हो तें ॥ उत्तम संग बसंत ॥ कंच न संगति काच जिम ॥ मरकत संग बिलसंत ॥१०॥ पीपा
पारस परसतां ॥ लोहा कंचन होइ ॥ सिध की संगति बैसतां ॥ साधिक भी सिध सोइ ॥११॥ जल जग नाथ आ बै राम
र को ॥ सुर सुरि मिलत पवित्र ॥ जाइ कालि मी लोह की ॥ पारस परस बिचित्र ॥१२॥ केसव लहरि जा उरव से २६४

॥ सो सब कै उर होइ ॥ जंगरा व संग देस कै ॥ जातिन पूछै कोइ ॥१३॥ इति संपूर्ण ॥ १३॥ ७७७॥ कुसंगति
कुसंगति ॥ साषी ॥ दादू सभा संत की ॥ सुमति ऊपजे आइ ॥ साकत की सभा बैसतां ॥ ग्यान काया तें जा
इ ॥१॥ दादू आ साध मिलै अंतर पडै ॥ भाव भगति रस जाइ ॥ साध मिलै सुष ऊपजे ॥ आनंद आगि न भइ
॥२॥ दादू साध संगति पाइए ॥ राम अमी फल होइ ॥ संसारी संगति पाइए ॥ बिष फल देवै सोइ ॥३॥ सांई
रूष राइ जेती संगि होती ॥ तेती कूं गुण दीया ॥ बष नांदे षि बांदे नैं बेदनि ॥ आप सरीषा कीया ॥४॥
रूष राइ सब कल ऊंचा गुण नीचा सिहि हि मैं ॥ तिहिं की संगति टाव्वी ॥ बष नां देषिबा सकी करणी ॥ बष नां बा
बाली ॥५॥ साषी ॥ जिहि कुलि चंदन ऊपनौ ॥ आणंदी बणराइ ॥ संगि का मूंहगा कीया ॥ बष नां बा
सल गाइ ॥६॥ बां सबिडौ जब ऊपनौ ॥ तौ बष नां बिरष हराइ ॥ अलष णा ऊंचो बधे ॥ परिहर सी
सह बणा राइ ॥७॥ मरपेहं टे बा स कै ॥ भार अगराह्य ॥ बष नां बलि कारि बालि सी ॥ कुसंग डो ऊरूष
ग ॥८॥ हिक ना ग पडी जरे ॥ इक हर कंगी भी नाग ॥ इक बाडी गा जर मूलि ये ॥ इक पनां बाडी भी बाग
॥९॥ इक चौ पद सुरकां मणी ॥ इक गाइप सू कछा ग ॥ एक पंषे रू हंस हें ॥ एक पंषे रू का ग ॥१०॥ नालि ऊ
संगा वे सिया ॥ ऊछ पल ऊं भी पडि जाग ॥ साधां संगति जाइए ॥ सब कलूप ले पाय ॥१२॥ जिन्हां मिलियें
चहल बदहं ॥ बिछुडियां बैराग ॥ बे साध संरषि यें ननि ॥ नांनक जेनां अणराग छिमाग ॥१३॥ संगति भली

गु०ग्रं० २८५ सुसाधकी॥ हरै औरकी ब्याधि॥ नीचे केसंगबैसतां॥ आवै पदरतु पाधि॥२३॥ कबीर मूर्ष संगनहीं जिय
॥ लोहा जलि मतिराजु॥ कदली सीपभुवंगमुषि॥ एकबूंदतिहुंभाइ॥२४॥ कुसंगमयलकुमनलगी
॥ मोनअंगममति नास॥ अबा नाह जियजरवरू॥ नरककुंममहिवास॥२५॥ सुसंगति अबकी जिए॥ सुम
ति होइ पुकास॥ जगनाथ जग मेजो मिथै॥ हरिसाधनि महि बास॥२६॥ जगनाथ इहि गनी चकै॥ दीर
घलुधेजाइ॥ अंगसंदतनननकस॥ दर्पणमैं दरसाइ॥२७॥ गंगा जमुनां सरस्वती॥ मिलें जब साथ
मां हि॥ षारा पांणी केगए॥ दाहमीगनोहि॥२८॥ साषी॥ मीठे सों मीठा भया॥ षारे सों षारा॥ दाइ औरसा जी
ह रे॥ एकुरंगदमा रा॥२९॥ साषी गंधी सौं गंध भया॥ यौं गंधासबको इ॥ दाइ लागे पूज सौं॥ तौ पूजस
रीषा होइ॥३०॥ साषी॥ दादू मा ग्ण मन पांहण भया॥ माया रस पीया॥ पांहण मन मांषण भया॥ रोमर
सलीया॥३१॥ साषी॥ कुरूस जगनाथ तजि॥ सत संगति मन लाइ॥ आमृत अवतै अमर ह्वै॥ बिष
षायें मरिजाइ॥३२॥ कुसंगति के ते गए॥ तिनका नां वनगांव॥ दाइ तेकं वधरैं॥ साध संगी जिसगां
व॥३३॥ सकल जोगु बिनताबिनां॥ करि डरि राम संभारि॥ जगनाथ सत संगमिलि॥ कुसंगति सा
बेटारि॥३४॥ कुसंगति दुषकूपके॥ एकपलक जो होइ॥ होइ सुसंगति जनम लों॥ सुषकुषनां हिं नकी २८५
॥३५॥ साध समागम सीतली॥ मुक्ति कि पाट॥ जगनाथ आनि आमसों॥ सुमहोतहरिबाट॥१२ राम

सुसंगति कुसंगति०

द्वाप्रतिसंपूर्ण॥१६६॥ ४०॥२४॥ संगति सुआव्ह अपन्नर्टण॥ साषी॥ प्रेमघटे बढिं जनमभरि॥ उत्तमस
नसौं लागि॥ जौ जुग भरि जलहि मैं रहै॥ चकमक बुझै न आगि॥१॥ साध नांव संसार मैं॥ मझत कहावे
का आज॥ तासमीप की जिए॥ सरै न जियको काज॥२॥ वे साधक रिजांनिये॥ दरसन सुब सुख होइ
प्रसन्न लोहा कनक करि॥ पारस कहिए सोइ॥३॥ संगति दोष लगै सब न॥ कदे न साधै बैन॥ कुटिल
वंक भुवंग सग॥ कुटिलवंक गति मैंन॥४॥ संकर बुद्धि सरीर जिहि॥ रहन तजु संगकु सँग॥ मलयाग
गिरनहिं बिष तजै॥ बसत भुवंगम अंग॥५॥ परि निपियारी आपनी॥ सबकौं सुमम सु भाइ॥ मवर फू
लपिकफल दिये॥ गैंवर गी ला बाइ॥६॥ जगनसमांन सुबनै मुष॥ अंतर अधिक सुभाइ॥ चितवी तै के
हर न पर॥ सिंघ मले गहि जाइ॥७॥ षलकी प्रकृति पिराग कहि॥ मिटै न मेटी जाइ॥ स्वांन पूछ बहु
तन तैं॥ टेढी सरल न होइ॥८॥ अंगप घार हि गमहि॥ सब जग देषत लोइ॥ मछी अछी लीन
डे॥ कर्म कटै यो मुहिं को इ॥९॥ चोर रहत दिग माहुकी॥ मनमुसो ह तकदा षूषे॥ मूसा पक स्यो मिनषा
टी॥ हारिया थै तैं हकै॥१०॥ संगति सुमति न पाय ही॥ परे कुमति के धंध॥ राषे मेलि कपूर मैं॥ हींग न होवै
हिं सुगंध॥११॥ बुरे भले संगमिलि गए॥ रंग न बदलै मूरि॥ मीन रहत जो जलमहिं॥ दुर्गंध जात क धाइ रि
॥१२॥ को रिजतन कोऊ करौ॥ परैं न प्रकृति बीच॥ नव बलजल कैं चैं चहैं॥ अंत नीच को नीच॥१३॥ पर

गुण गं १९६

मो धे काल कहै॥ पंडित आइ हजार॥ परकी रति जाकी जिसी॥ जाइ देह की लार॥४॥ बाजीद
सुध बुध आतम॥ पघ रि जा इन्म छीव॥ छस्ता कूप हिं मां रंजे॥ग्यो न देम मछ जो जी॥५॥ बुरी बात
गाही मही॥ मली सु मूरी छोरि॥ घाट मेव दले दुष्ट को॥ साध मिलाहि जो को रि॥६॥ साध संगति क
जक दाक रै॥ जो पंदह इन दे इ॥ सप्प सुम मिं गुन मोमिहै॥ मसि गुंन सरप्पन लेइ॥७॥ बाजीद संग
ति साध की॥ सब को वे से आमि॥ घाट न बूद छे जीय को॥ जो जंफ ग जोनि॥८॥ जे सीय दसंगत
करै॥ ते सो हीय हहो इ॥ तन संगा जा जां मे मरै॥ हरि संग सनमल धोइ॥९॥ इति संगरं गा॥ रह
॥ पर्थ उ॥ पर हो सुबिधिछिप॥ साषी॥ जे जा छ करै रे बिचार बिन॥ नंद और की रीस॥ तैन मूरख
करै हैं॥ जे की ज नि कालं की स॥१॥ देषा देषी सु हि बिनो॥ कत मतल हीं षाइ॥ जलप छोम को
पेषि कें॥ कौ कू सुधि मिराइ॥२॥ कि मह्र अगम सु गम है॥ सुगम अगम आनि होइ॥ बड़ो बड़ी ज
गनाथ जन॥ होम करै जिमि कोइ॥३॥ सोर ठा॥ जगनाथ जन होम॥ काहू की करि यन हीं॥ अन
लि पंछि कौ जोइ॥ काहू जम कहि को सकै॥४॥ साषी॥ होइ रो महीं टूटि है॥ योम फूटि हैं लोइ॥
जगनाथ जन संघ की॥ सार न सर सरि सोइ॥५॥ मी मर्द मां जल मां॥ समि करि जो नैं सोइ॥ ज
लम केमी नां मद॥ जाति के डषम कोइ॥६॥ सेतनि की सर सरि करै॥ सुध बुध नहीं बवेका जो हैं गम १९६

त

पं॥ छी गरू रहि कहैं॥ दम हलं पंछी एक॥७॥ साध सु बुधी मिमिटि कै॥ वे हेत नमन मारि॥ तिन की स
मिं जगनाथ करि॥ चलें केंध जनु चारि॥८॥ जनतनु की गति जपिली॥ देषि इन रहें ताहि॥ जगनाथ
ते मां मलै॥ परें न पलट रहाहि॥९॥ होम नकरि और की॥ चलि एक लगन मांनि॥ जगनाथ गुर
साध कै॥ सब्द सत्य करि मांनि॥१०॥ सेवा सुमरन दान तप॥ आपणी सक्ति करि कोइ॥ जगनाथ जन पु
नि कहै॥ सुष सो पावति सो इ॥११॥ इति संग पूरो॥२६८॥ पद॥ वैष बिसमीप॥ चौपाई॥ पूर
न पैंठन बहिं कै सती॥ जुवती भये कहा है जती॥ धन बिन से बैरागी त्यागी॥ नाथ कहै ते बड़ा अ
भागी॥१॥ साषी॥ बिन संगति बल समकि को॥ पावति बिनांज दार॥ बिन दृव्य मधन को बहै॥ तिन
की मति मंद छार॥२॥ हाइ टोटा टाल दी॥ लाषों का व्योपार॥ पैका नांही गांठडी॥ सिरै साहुकार॥
॥ ३॥ साषी॥ नू॥ मही॥ बगनी मेगा बाइ करि॥ मनि आले मां की॥ पैका नांही गांठडी॥ पाति सादी पांजी॥४॥ साषी
॥ सो लिं ही गद मरी जिति॥ मांगत ल्यार कपूर॥ मनि बिसनी तन भेष रच॥ जगनाथ जन कूर॥५॥ लौं
गपई साधा न की॥ चाषिय मारी गोद॥ भगत कहैं हैं मुक्ति कौ॥ जगनाथ मनि मोद॥६॥ धरा भगत क
हावई॥ भगति न हीं लवलेस॥ जगनाथ जन जो रिहें॥ माइ पड़ा पर देस॥७॥ भगति नहीं॥ बे षा स हे॥ बि
मन पो बई लोइ॥ जां जानि गम तिका बुरी॥ कियें कहा सिधि होइ॥८॥ दादू भगत कहावैं आपको॥ भग

गु०अं० २६७

तिन मांनें भेद ॥ सुषि नें ही समझि मही ॥ कहै बषे गुरदेव ॥ ९ ॥ ब्याइ सेन गमांन कुलाइए ॥ मेरा सुषि नें
मांहि ॥ नांव धरायें काम न एप ॥ जिप कन ही मन मांहि ॥ १० ॥ नांव धरायें ब्यास का ॥ व्यासातनें ते छुरि ॥ व्या
इ का जी के र सेरे ॥ हरि सुं नहीं हजूरि ॥ ११ ॥ जगतन सूं सौंवै भगति बिन ॥ व्यासा तन बिन दास ॥ बिन से
वा सेव ग न ही ॥ व्याइ कुहुगी आस ॥ १२ ॥ दास हरांम भगति मांहें न ही ॥ आप मीं अग नि का न्याव ॥ राम भग
ति मुष सों कहे ॥ येते अप णा न्याव ॥ १३ ॥ मन नमांहिं नाव रि सु गाति ये ॥ स्वर्ग लोक के सुष ॥ जगनाथ
नाहिं षाहिं वा ॥ जाइ जनम की भूष ॥ १४ ॥ बात नि बिसमन न पोषि ए ॥ बासतन ही बिन दाम ॥ करत
बिता कौ ये मरे ॥ जगनाथ जन कों मा ॥ १५ ॥ करत बिना क छु वे न ही ॥ भगता ई मनि कोड ॥ जे रवे तन
दिया सा ह की ॥ हट हो न्यो करि होम ॥ १६ ॥ गुर साध नि के संग ह्वे ॥ कहे सु करई सो ह ॥ हरि ॥ जिये बे
बि सन कौ ॥ जगनाथ जन को ह ॥ १७ ॥ इति संपूर्ण ॥ २६४ ॥ पद २१ ॥ विकट के अंग ॥ साषी ॥ कथा
सुधा स्रवन नि सुमन त ॥ सुषि बरमन कछु आन ॥ नाते हरि मायाप लेत ॥ जे सब कोर हे धा न ॥ १ ॥ अम
ली म सब न हि सिंग न नकरि ॥ फिरि पि छे हे ति लीन ॥ जेर जू हा जंत साधिके ॥ बिर धापे गृह कीन ॥ २ ॥
अरचा आदरि पर हरे ॥ स्व मा समाधि ल मांहि ॥ जगनाथ निहचौ नहीं ॥ विकबिन कोउ रहां हि राम
३ ॥ सही ॥ अरचा आरंभ सब लग माहि ॥ जन्म लगे है सु धि बारी ॥ गाड़ी गोविंद की रांमति ते ज्यों ॥ ज्यौ २६७

वेयवेबिमनी०

लौकिक व्योंक धारी ॥ ४ ॥ साषी ॥ अरचा न ही अनादि युक्ति ॥ एकत्व ते उपचार ॥ जगनाथ जह चिरक हैं ॥ मां
न तबि मां विचार ॥ ५ ॥ अरचा आदि अग्पांन के ॥ जगनाथ अधिकार ॥ अचिर जगपां मीत जिगहैं ॥ एज
बिधि अचार ॥ ६ ॥ उरवि कके लौ निर व है ॥ बिन विक न ही निं बाह ॥ मेहवे नहिं ता तें परे ॥ असम म ही
परवाह ॥ ७ ॥ सिरजे सिरजें मन हार को ॥ हौतउपा सिक आन ॥ जगनाथ ते वेतजू ॥ हो ता हू लन परांम ॥ ८ ॥ स
ध म सब द स्मृक्ते न ही ॥ भमें आगि ली स्हल ॥ जगनाथ जन अनुगति बिन ॥ के में निक मे सूल ॥ ९ ॥ छाड़त बे
रम आदरें ॥ श्रेम में हा अपत्र ॥ जगनाथ विकबाह रे ॥ तिन मौंक है सपत्र ॥ १० ॥ रव नीरस नीरस कहैं ॥ त
जैं जे भगति हीन ॥ ते न रवर जगनाथ जन ॥ नहीं पेव मि हे लीन ॥ ११ ॥ परब विता हि स्नार बित ॥ मवे त जि
होम अतीत ॥ जगनाथ फिरि मन थंले ॥ हिं कु लल जें पलीत ॥ १२ ॥ बैरागी के बास मैं ॥ सेग कौरे ज्यो को इ ॥ ज
गनाथ तिज्ञ लोक मैं ॥ ना कव जाव न हो इ ॥ १३ ॥ वीक मवें द्धा ऊपरें ॥ मांहिं आहिं नगाणि ॥ विकबिन ज
न जगनाथ ते ॥ बामो लौ ऐ मारि ॥ १४ ॥ विकबिन वोरक फन ही ॥ जहां जहां जनम जाइ ॥ जामहिं विक मो आ
तमां ॥ आप सुषी सुष दाइ ॥ १५ ॥ इति संपूर्ण ॥ २६५ ॥ पद ८६ ॥ अथ सूरातन को अंग ॥ साषी ॥ गुर साधनि कौ कहैं
जिनि ॥ किये न हीं जगनाथ ॥ सौ सरबी तैं तें नरा ॥ सिरधुनि मिस सेरे हाथ ॥ १ ॥ जत तत सेवा साध गुर ॥ उपदे
श हित लाइ ॥ समरण करि जगनाथ जन ॥ पीछे किया न जाइ ॥ २ ॥ समरथ सुमन नि सेव कि ॥ समरण सतन सत म

विकट्क०

hundred ten

DMV 14 B

P 198

पुंष्यांग
१९६

थि॥ रा त्रियरैंत निजपंडे॥ जन जग नाथ न पाथि॥ जंनी जत सो नांम धौ॥ हिर ध्यो पैं बलछौं नम्रौ
सरज बदै तोम दी॥ फिरि पछिता वो कौन॥ मन मे न्रा सम मछ तां॥ आरसमैं दिन खोइ॥ जगनाथ ज
गिजन मिकैं॥ काजै कियो मको इ॥ सकल सिरोमनि देहलहि॥ अस अरोगि पगमाथ॥ मनमें गति द
रिसन नाहिं॥ श्री मरहु किजग नाथ॥ सुकृत कि शोनन तजि नह रि॥ नरतन माया पाइ॥ जगनाथ
श्री मरयाये॥ अनु समै पछिताइ॥ जीमरबू के सरबो॥ बकुरि कोरे सधान॥ श्री मरहू कोमनत्र कंदि
कबउ जनमन ई बान॥ दीवांयो बसत रछिनो॥ सरग मैं बिनदथि यारि॥ माधुद सेनि नेटबिमग लौ
मायै मारि॥ ममरि सुमरन नांकरै॥ अंतकालि नररोइ॥ जगनाथ दशा केथ जेप्प छिनाये का दोइ
॥१०॥ सुसंत सेवा भजन की॥ उरि जगनाथ न पाइ॥ बिन सेबलि जं बिलं बतें॥ कोरे सुन्दर करा इ॥
सुमरन सत संगधर्म करि॥ करौ करौ बैनांहि॥ बीमरजे जगनाथ जन॥ रहै मनोरथ मांहि॥ दाइ
श्री मरबु जिगया॥ बरियां गई बिहाइ॥ करछिटकैं कसोपाइ॥ जनम अमोलि कुजाइ॥ चाबैप
ई॥ जि मिजि नि टीलकरी शुभ संतकी॥ तिनतिन कैउ रिरहै बसाइ॥ जगनाथ तेनर कैं भुगति कैं ऐ
रामी अरमैंबसि काल॥ माषी॥ जगनाथ करिलीजि ये॥ उनमांमसत संग॥ टीलकिरि टंग नांहिंमैं
॥ दिन दिनतत मकामंगा॥५॥ कांमधेनि निदे कलपतरु॥ चिंतामनि नर देह॥ सोलहि कैं जगनाथ जन

राम
१९८

द ॥ श्री मरबु किन यों॥२६॥ जो छिनमैं बेसो ई लहै॥ फेर सार न हिंकोइ॥ जगनाथ नीके बुरै॥ जै सीमन न सा
दोइ॥२७॥ ऊषा सोई कलपना॥ गो मनि नर नरदेह॥ बुराबछियै आपकौ॥ कौन सगा नपरेह॥ ॥
॥ नल्याआपनों बछर्ड॥ तौ श्री मरह कि नबीर॥ जगनाथ कहे पाइ यो॥ श्री मो इलन सरीरा॥२७॥ बहुरि न
मतेन पाइये॥ जगनाथ लगि नांइ॥ आवत है दिन अंतका॥ श्री मरहू केकोइ॥२०॥ सुर जनकहै बे
कोरै॥ भजन सेवउ पगार॥ जगनाथ तेजगतमें॥ श्री मरजीतन हार॥२१॥ इति सिमर्ण को अंग॥२०॥ का
गोरतामू हक मीया॥ साषी॥ जे जगतमो हिंपगोनकौ॥ जनम गयो सबबीच॥ नषमषलौं दृष्यो रह्यो॥ पे
रानपर मों की च॥१॥ कबीर साध संगतिका कौंनगुन॥ जे मनमरै कबीर॥ जो नैं आपा मी चहै॥ तकनमी
जे कोइ॥२॥ बाजी दउ वि औदेषिये॥ नैकनवाम हिं नीर॥ चनमा सबरषै कदा॥ बासन मंधो बीर॥३॥ ज
न जगनाथ कबीरला॥ जिय कैं सदारहाइ॥ बिरदैका सच्चीकौ नै॥ बंदन बैबदराइ॥४॥ यों मिनां
हिन गुन पां नमैं॥ सबदन सुरति गहेंन॥ जगनाथ जसगु मटपारि॥ बरियाजलन रहैन॥५॥ सरसर अ
तकासकै॥ बोधै गुरपनपालि॥ बदन बारिलबग हैरे॥ जनजगनाथ न चालि॥६॥ नित दिनसत्यम
नमनिका॥ करतबबैकी संग॥ कहिहै कौ नबिसोयतें॥ नांहिं मल्यागत रंग॥७॥ मनकौ अरपन अ
संतरै॥ तन साधनिकै संग॥ बिन बेगार कौ रीगजी॥ नांहिं नलाग तरंग॥८॥ कबीर समसगुर मिल्या तका

नयां॥जेम विंयारी मोल्ह॥पास बिनं गाकय ड॥॥ क्या करै बिचारी सो ला॥१६॥ कबीर सीतल ता के कार
णे॥ नाम बिलं बे आ इ॥ रोम रोम बिष अ रि रह्या॥ अंम्रत कहां समाइ॥१०॥ परस सिंच दन बाव नो॥
बिषन हिं तज त भुयंग॥ ते गुब धेगुन आपनो॥ कहा करै सत संग॥११॥ संगति कोइ सुमन म है॥ मिटै न
आ सा अ स॥ जग नाथ न हि नी पजे॥ चंदन संग अं बस॥१२॥ चंप चीप ई॥ बप व मिन दी मगोन अगं
ये॥ मन ब सिन मुक्ति की वाहि॥ का यद ल तरी ता सु करि वट से॥ मो तन महा सु बाइ मा हि॥१३॥ मोरबा
॥ बेद्या ने दम गं द॥ जाइ आ षर बोला ह॥॥ सुदि दी जे मो सह॥ कि रियारी सो पूजि या॥१४॥ बाला बे ष
के रा बै रो जाइ बै धे नहीं॥ के दे क हा रे रा॥ उगि ला व सी मा मि ये॥१५॥ इ हा हा मी ते रा॥ ... त गइ बनो रे
नहीं॥ बह रे सो बै से द॥ फि सो रो ग यगु ला॥१६॥ साषी॥ बाजी द समझि जो देष इ॥ बह रे सो तो बा
त कहि॥ कहा सुष पाबै कोइ॥१७॥ श्रवन बिधाता हरि लये॥ बाते समक त मैं न॥ बहरे आगे बाव
रे॥ बिरथा बकै॥ दिन रैन॥१८॥ कबीर सत गुर बपुरा क्या करै॥ जे सिष ही मो दो स का॥ मो बेतूं पर
मोधिए॥ जौं बां सि बजाइ फूक॥१९॥ कह त सुन त सब दिन गए॥ उर झिन सुरक्या मन॥ कह
कबीर चेत्या नहीं॥ अजहू पहिला दिन॥२०॥ उत्तम को उपदेश गुंन॥ ते जब द निधि माति॥ म
न सी पजग नाथ रु॥ सो बा रू मे बाति॥२१॥ मूरष कौं उपदेस कहा॥ साहिब जी को सौंह॥ ज्यूं बरकौं

दी आरसी॥ मोक दे षत मोंह॥२२॥ फूं न्यब हे मे वा र की॥ कापर मोधे कोइ॥ बाजी द बाम न षो ष
रे॥ पांन्यों रस त मलो इ॥२३॥ राइ क हि कहि मेरी जी भरही॥ सुणि सुणि तेरे कांन॥ सत गुरु स्ब ड ग
क्या करै॥ जे बेला मूढ अमोंन॥२४॥ सांडी भरी चिनै य कहि॥ दे ष्यो सी तृट टो रि॥ ए के बिदे न म्र रषा
हे॥ बा तै कहो कहो रो रि॥२५॥ सोरठा॥ पग ल गपा षर जो ह॥ आ छे श्र स जा णे त एं॥ सो गणि यां स र त
ह॥ तापी तोइ लागे नहीं॥२६॥ साषी॥ संजो प हिरै मार की॥ कहा सु मैं जो कांन॥ पाइ अ टपटे तौ परे॥
जौ कोन भेदे बांन॥२७॥ बांनी ना हि न बे ध ई॥ बप सो बज र समान॥ जगनाथ न ष सष जि रह॥ बंनै कु
हा नि हि बांन॥२८॥ सतगुर साध जु कहत है॥ बचन निरमो लिक सार॥ आदि कप च जगनाथ कम
॥ ता हि म क रत प्र हार॥२९॥ करनी कपट अग्यांनता॥ उर तें धरे उतारि॥ ततसीर जगनाथ लगि॥
बप बास बां बि मारि॥३०॥ सतगुर सरा क्या करै॥ सिष का बज्र सरीर॥ मारे पंछ चै पांन करि॥ पां हन
भेदे न तीर॥३१॥ मोई कौं बांई दई॥ माया मो दो लो इ॥ नकि त कि तीर न बाहि है॥ बांन न भेदे कोइ॥
३२॥ बैंन बांन जारि दे लगुत॥ दूर द त्या ग ज प जा इ॥ जगनाथ निहि मो निदे॥ उर पाषांन पराइ॥३३॥
जगनाथ जाका रि दे॥ दे पाषांण पराइ॥ सबद बांण भेदै नहीं॥ लाग मन फाटि जाइ॥३४॥ हिया
सकौं काबज्र मैं॥ लागे करम अनेक॥ जगनाथ ताजी यकौ॥ शबद मलागे एक॥३५॥ जं निषं गषा स्वी

ग्रं०७५ २०० केरो ॥ सुनि प्रो हिम रवा हि ॥ मारस बद जग मा थई ॥ बिरघा मुंढ क दिता हि ॥ बक्षा सुनि तु निं बोतें साधक
॥ नैं कन जब दस्यो मनु ॥ बा जी द बांग निर्मोल है ॥ हण गावा गजे ना ॥ ३३ ॥ मिथा दिनु परयो पुकार नैं ॥ जीव
कुती जियपी श ॥ बादे स कल्ह खिले गया ॥ एक न लाम्यो ती रा ॥ ३८ ॥ बाजी द बहिरो जनम को ॥ कहिं क्यौं
सुनकां न ॥ भ्रम कध रयो गुलारि कै ॥ बादि गवा य बांन ॥ ३९ ॥ बेकां मौं कं स रजिनि बादे ॥ सांधी बोवे सु
लगा द्वांवे ॥ हा स कबीर सांही कीं बादे ॥ कारि स नाद मन सुष सर सा है ॥ ४० ॥ साषी ॥ कहै कबीर कयो रके
॥ बदन लागे सार ॥ सुष सुष के हिर दे जि है ॥ नपजि बिबेक बिचार ॥ ४१ ॥ साधक कहै हुं ही कै रा ॥ केत
कारज होइ ॥ जगमा थ सब भ्रघ कटै ॥ फल पाप ति कि सो इ ॥ ४२ ॥ सुरि कहियो र हियो हिय ॥ नन दी
नौं जाप ॥ निर्मध कै नि मैं छि मिलै ॥ जगना थ सु लि पाप ॥ ४३ ॥ इति मंग ली ॥ २३ ॥ परपण ॥ नर बिर
मनु दी मया सुंत ॥ ॥ बदर बि च बिरा जां या ॥ १ ॥ सुंदर सु घड म बीला ॥ जै मल दरि का ना ब बिना ॥ ए मा
बकौ मी मो ला ॥ २ ॥ रांम बिमां बा जीव कै ॥ सति न ब्रम ई रवा ला ॥ मां नौं स्वो न य लेटि या ॥ मो या स दं दी म
ला ॥ ३ ॥ रूपे दी मैं रु बडा ॥ बो लैं कि कौ न कर मि ॥ जा गौ टी र प लेहि यो ॥ मो ग स दे दे बंमि ॥ ४ ॥ बाजी दप
श्रही आं बि दे ॥ जुतो औ सं दे भं छ ॥ का दा भ यो जो नां हि नें ॥ नर कै मी गरु पूछ ॥ ५ ॥ का मों क हि प द रे क राम २००

थ ॥ ६ ॥ सुष ज्ञली सुष श्र ञ्छ ॥ मी सैं मि र प रत हिं नैं ॥ श्रोर मौं जदे स ञ्छ ॥ ७ ॥ पे स मिथ र षट घटि न दी ॥ मे र थो
क न हिं वा रि ॥ पो षी रा घ म बि न प श्र ॥ दी मैं न रत न दा रि ॥ ७ ॥ सुधि बिश्व र जित दे स ही ॥ श्रा गा बिहन ब
न श्रैं न ॥ परगा ट सु धि का हिये का ॥ ९ ॥ श्रे श्र गुरी मैं ना ॥ ॥ मति सुधि बिबे क बिचार ॥ बिन गमां स सप स
सम्य ना ॥ सस का या ममकै न दी ॥ दाइ परम जियो मा ॥ १० ॥ साध चा ब द म सकै न दी ॥ नो गौ बि द सु न गा श्र
उग ना थ वे न रड ही ॥ जै स ज नम मो भा ॥ ११ ॥ श्रन हि मनां हि नु म निं ष कै ॥ दे ह भ री मो को ह ॥ मो न कूं का ल
जे त को ॥ को लत म र के मो ह ॥ १२ ॥ हरि बिन बन नु र बा न दी ॥ वं च ल चि त च क चा ला ॥ म र कट मा कर स
मिष ते ॥ मि ल भर म सत म म डा ला ॥ १३ ॥ बस्ती जा नौं ति सी घटि ॥ जि स घटि क सू बबे का ॥ बाकी सक लग
आरि है ॥ म नि घन दी क कं र क ॥ १४ ॥ श्रथा ई अजि गाउ ढौं ॥ मूनें मुध मि रोह ॥ लो सुधि म ना द ल क डैं ॥ साइ
र बंध्ये जे ह ॥ १५ ॥ ग्रज्या सुत स मी लहे ल ॥ बांइ स म बद र मा ल ॥ ता न र कौ बे यो कहा ॥ प ले पा छि ले ल्या ल
॥ १६ ॥ कौ णं श्रा पि क मां गा ॥ स कौ सं गा ॥ श्र रु थी वां की मे ह ॥ स प्पे ह सु धरि की कथा ॥ उ हि नि हिं का लि ग
हे या ॥ १७ ॥ ह मी स्वा स्वां त नि ल्वाडि म सा ॥ स प्प मि का र सु जो ह ॥ जे सु कि मो ह र पा क डा ॥ स्कूं प्रकार ष ष दे
ह ॥ १८ ॥ श्र प रा ह भर म ब मे रैं ॥ श्र कर स्वां म बिला वा ॥ म नि म म सम स यौं दी ग यो ॥ गोजी सू जो भा व ॥ १९ ॥ मो
म स का श्रा का र है ॥ चिह म चो पं दी चा ल ॥ ता नैं फि रि फि रि प ह रई ॥ चौ रा सी की चा ल ॥ २० ॥ भरम्या जकी गत

नरमदी॥ स्वदेसमत्त तैं जो निंग्रि॥ जगन्नाथ थर मैं सदी॥ चोरासी वक्रु धोविं॥२०॥ सोभी॥ छिचा नवाजर
बाजा॥ स्वस्तन स्वा भूषन सजैं॥ मोसन स्वा वे काजं॥ मोन सके गुन सुमरि ग॥२१॥ वधवोपई॥ नरसो
विपट खुरीप सहनिते॥ जो खुकत सुमर मन न दिरांम॥ चोपद तत न जग मा थ स्वरथि सव॥ गाको क
छुन स्वा वत कोमा॥२२॥ नरस्व वृतार नलो जो भजिए॥ जगन्नाथ जन सिरजु न द्वार॥ नो नर कर
कोम को मांदिंन॥ रामम या ति बिन बा इक भार॥२३॥ साषी॥ कहां लो व रनों नम स्वसुचि॥ कहि
एक हाव ना इ॥ जो कप रत्त च मा जती॥ सदै नो स्व गन गुड़ा इ॥२४॥ देखै छरि मनरि ताइ ग॥ मिलि ए क
हि कि हि मूत॥ स्वादमु को स्वाकार दे॥ भोम तरि ना व दिन्न त॥२५॥ वधवोपई॥ जा दे दी मो देव लोक
लहि॥ स्वभिक भजन तें भगत सपाइ॥ जगन्नाथ मो साजपप॥ जं गो या वि र थाग ए विल॥ स्वारह मा
मी॥ भुमि वि वेक जानी विल॥ सारा सार वि वा र॥ जगन्नाथ या जगत मैं॥ तेई नर स्ववतार॥२६॥ जो मैं सु
कत माध को॥ जपै जगत पति ईस॥ जगन्नाथ जन दे सदी॥ तेन र वि सवा मी सा॥२७॥ सव जिय प्रानी॥
भूतदे॥ साध मिलै तव देव॥ छस्व मिलै तव ब्रह्मदेव॥ दाहु स्व लष स्वभेव॥२८॥ इति संपूर्णी॥२९॥
रा पर युध्ध॥ स्व र स्था स्व घरसह मण॥ साषी॥ वंच लता घर न निंजनी॥ बाल राजके जोर॥ जोबन नृपत
स्वद गतै॥ वहतम द्दग जोर॥१॥ सोरठा॥ जस थे हरियरषेत॥ दरमी वर बांध रेग हो॥ स्वव स्वपंवसुर

रवेत॥ डोर ढंढोर त मसस बांध॥२॥ जव नस्वपत निप्ततजो॥ फिरि पतो न जमाल॥ तिन तैं तरवर स्व तिमले
॥ स्वप तेप लहि तमाल॥३॥ कावा स्वधिक स्व नृपदे॥ पादर मुरा मि गाइ॥ सम्मन वदफल कौन दे
पा के ते कइ गाइ॥४॥ कावाली जे लषदे॥ कमस्यो कोडि विकाहि॥ ते फल पाका न वल कहि॥ कोडी
कै नल हो सि॥५॥ जव स्वाए पंभर चिकुर॥ नरदि विचित्र गोविडि॥ चो थि चवथा बदजरा॥ र दीम रुम
मुष मोडि॥६॥ सम्मन के सो सोकरी॥ वेरी छन क राहि॥ दस गावन मृगलोचनी॥ वा वाका हि का हि
हि॥७॥ छवि विछुटे फुटे तिमर॥ पति जुग ए पति ढांमि॥ मस वपां न जुरहत तदे॥ कौन सत्र पन आंनि॥
८॥ गय का मर का ले चिकुर॥ हरि सुमरत स्वघ हांगि॥ सम मन पां ग जुरहत न दे॥ ए हे स त्र पण आंया
९॥ सोरठा॥ स्वो सरग पै जु स्वाव॥ सुपिन संपति जो मिलै॥ पाही नदी यां नाव॥ कौन काजक हि माव
या॥१०॥ साषी॥ स्वो रजुती स्वोर जु॥ विन जोवन तन हारि॥ जगन स्वार सी स्वार सो॥ स्वजहे निहारि निहारि
॥११॥ नैंन वैंन करत स्वरस॥ छवि विनि रषत स्व कलु स्वाव॥ मैं नन य सजुक अरगो रहे वो रस संनान॥१२॥ कहुँ
जोय नकासं लहलव हि॥ नई स्वान की स्वान॥ मैं नम गरब मिक जस्यो॥ दढ्ढ दहि निसां न॥१३॥ जोवन गये
जु कां भमी॥ सर्वे मिंगार सु वोर॥ मिलु गये तैं पूछि ए॥ मिछ मदे की गोर॥१४॥ जो वन वा तो हय तन॥ स्वा स्व
न कि हि हि त॥ मन मथ छ कजरा इ की॥ सम कि भे भोरे हो त॥१५॥ सेक कच स्वधियार मैं॥ वक्र के कि ये इ पाइ

गुं०मं० नरम हीं॥ अहं मम तत्व तैं जोनिं॥ जगनाथ अवर मैं सही॥ चौरासीय कुं षांनिं॥२०॥ जोगी ज्वाला नवा जस
२०१ वाज॥ अस्तन आ मुषम सु जौ॥ मो मन आवे काज॥ मोनम के गुन सुमरिए॥२१॥ चव चौपई॥ नरसो
विपट खुरी पस म्र्यिते॥ जो सुकृत सुमरन नहिं रांम॥ चौपद तन जगनाथ अरथि सब॥ सा कोक
छुन आ वतन कांम॥२२॥ नरस अवतार न लो जो भजिए॥ जगनाथ जन सिर जुन ह्यार॥ नो तर कहे
कांम को नांहिंन॥ रांम अयानि बिनु बाद कुभार॥२३॥ साषी॥ कहा लों बरनों तन अत्र सुचि॥ कहि
एक दाव ना ह॥ जो कुपर तुच मो जानी॥ सके तौ खग गनु दुहा॥२४॥ देषें छारि मुरि ताइ एग॥ मिलि एक
दिकि हिं मूत॥ आदम को आकार है॥ मोम रिना व हिं मूत॥२५॥ चव चौपई॥ जा दे ही सौं देव लोक
लहि॥ अधिक अजन तैं भगवंत पाइ॥ जगनाथ सो साज पए जं॥ पोया बिरथा गए बिलाइ॥२६॥ सा
म षी॥ बुधि विवेक सांगी बिल॥ सार सार विचार॥ जगनाथ या जगत मैं॥ तेई नर अवतार॥२७॥ जो नैं सु
कृत साधकी॥ जपैं जगतपति ईस॥ जगनाथ जन दे सही॥ ते नर बिसवाबीस॥२८॥ सब जिय प्रांणी॥
भू मंडे॥ साध मिलें नव देह॥ छुस्य मिले तन बहु लहे॥ दाहु अलष अभेव॥२९॥ इति नैं संपूर्ण॥ श्री
गु॥ पट छ॥ अनु स्या अ षरस यण॥ साषी॥ चंचल तंता परनगिं जती॥ बाल राज के जोर॥ जोबन नृपत राम
अदंगनै॥ बहत तन ईहय डोर॥१॥ सोरगा॥ जब थे हरियर षेत॥ हरमी चरनी धरि गई॥ अब बन एगमसु २०१

खेत॥ ढोर ढंढोरत मसस मांय॥ जुबन अपत निपतन जो॥ फिरि पतीन जमाल॥ तिन तें तरवर अति भले
॥ अपते पत हित माल॥३॥ कावा अधिक अनूप है॥ दरस राम मिगाइ॥ सम मन व दफल कौं न है
पाके तें कड़वाइ॥४॥ कावा ली जेल षा दे॥ कसस्यो कोडि विकाहिं॥ ते फल पाका न वल कहि॥ कोडी
फ्ले नल सा सि॥५॥ जब आए पंमर चिकुर॥ नर हिं विद्रम गो बोडि॥ चोटि चवणा चंदजा॥६॥ रही मरम
मुष मोडि॥७॥ सम्म न के सौ सोकरी॥ बेरी लन करांहिं॥ हंस गावन भृग लोचनी॥ चाबाक दिकाहिं जे
हि॥८॥ छवि छुटे फुटे तिमर॥ मातिक्रुमए पतिहांमि॥ मस व पांन जुर हत दे॥ कौन म छप नजांनि॥
८॥ मयका मरकाले चिकुर॥ हरि सुमरत अघहानि॥ समम प्राण जुर हत दे॥ यह लछप एग जांय
॥९॥ सोरठा॥ श्री सरग ये जु आाव॥ सुपिने संपति जो मिले॥ चाढी नदी यं नाव॥ कौन काज कहि माल
या॥१०॥ साषी॥ और कृती और कछु॥ बिन जोबन जन हारि॥ जग न आरसी आरसी॥ अजहूं निहारि निहारि
॥११॥ मैं न बैन कर तरवर॥ छवि निरषत मकलु आवा॥ मैं ननय सरूप कुमरगो॥ रहे गौर महजोन॥१२॥ कहं
लोय नक सांवरदन भी॥ अई आन की आन॥ मैं मन गरब मिकल स्यौ॥ दृह रहे निसां न॥१३॥ जोबन गये
जे सुकं मनी॥ सौं सिंगार सु बोर॥ सिंढ्या ये तें पूजिये॥ सिंहमद की मौर॥१४॥ जोबन बीते हयतन॥ आ
न कहि ऐता॥ मन मथ रज जनाइ की॥ समधि मिसंगरे हेत॥१५॥ सेकक चम्र कियारे मैं॥ न काल किये रापाइ

ग्रं०सं० मेतचिकुर केचा दिनें॥ चोरी करी न जाइ॥२६॥ अरु आजिव धाइयां॥ नेंनें निरषि पुलेस्॥ जो बन आ
२०२ यरलंघियां॥ कतरियाक्रु मेखेस॥२७॥ इति संपूर्ण॥२७॥ म.१॥ अरथैस॥ मनिषदेह सहि मांण साषी॥ न
मोन मोग रदेवकों॥ पुरव साषि सुनाइ॥ सहिमांम निवादेहकी॥ जगनाथ स्तुति गाइ॥१॥ अरुसवाय
चौगनां॥ ताकु परिलषवा रि॥ इन मीप रीखा मिके॥ अरु यो मिरैसं मारि॥२॥ अरथ षंम महिसों तेरी॥ बा
न मूलदेन र देहा॥ अग अरु छंद अरे गितां॥ संत संगानि सौ नेहा॥३॥ पापति पुरब कुन्यते॥ भीं जासिरो मा
९ नये॥ हरिभजि और सरजीतई॥ जगनाथ धनि ते हा॥४॥ सुखलदे देह पापति भजो दई सुख सजे मारि॥ अ
गनाथ मनि मोलबिना॥ सव दव करि सो हारि॥५॥ जगनाथ तन अरु वजु॥ मनिष जन मयुं पे ह्रिजै
दरषो वस्त धन गांमां॥ मूंसे पग मौंदे ज्ञि॥६॥ रतन एक मोलका॥ महिं अरु माइ दिं भीड॥ हिसि जोगक
रिपाइयां॥ सबनें तस्प मसोइ॥७॥ जनजनन मनि नहिराविया॥ मरम वे ना षो ५ म दमामीन॥ मारियो॥ जग
नाथ कहि कोइ॥८॥ रतन जतन साटे लहे॥ आदि अंत नहि गाम॥ जगनाथ तिय जांनिकें॥ मूल गवाया
ल्याम॥९॥ मनिषजनम जगनाथ सो॥ निंज चिंता मनिपाइ॥ हरिचित तव नवि वे चित मवे॥ औनिषि महि
जरमा झर॥१०॥ वृक्ष आ वरदा दांनि बक्र॥ वामक्रु लेषा नाहिं॥ जगनाथ याजनमका॥ निरने संत निमां
हिं॥११॥ बडी हानि हरि बिसरिये॥ वाम जनम हरि नाम॥ जगनाथ ताजनम कों॥ नर षरच तवे कांम

॥१२॥ मनिषदेह मदं गी घरी॥ सुमरि सिरो मनि नाथ॥ एक स्वास की मिति नहीं॥ मिर मोलिक जगनाथ
॥१३॥ आव अरु लप बकु मोलकी॥ मक्ष गाग कै हाथ॥ आधी घोई मींद निसा॥ आधी अरुक में साथ॥१
४॥ आव अरु आध निस नी दमें॥ ता आधी हद बाल॥ जगनाथ ते नी बिषे॥ घोवत मुल्लक रूमाल॥१५॥
जनम झारियम खोदियरे॥ सदेसा स नां साल॥ मर अचेत विषिबी सरी॥ चित नकरे क जकाल॥१६॥ पाइ
मनिष तन करतहे॥ हरि बिन चितहू न और॥ ते बेतूर मी मदी में॥ परत नसुषमकु वी रा॥१७॥ मरत नम
रि बोमिंटे॥ ओभजि एम गावंत॥ हरि बिन यादी देह सों॥ मरम वइतरअने ता॥१८॥ पापतियाही पमसों॥
देव अन सबदेह॥ अोसर यज जगनाथजन॥ करन मत करि लेह॥१९॥ जगनाथ नर देह सों॥ पापति
यो निअनेका॥ याही तनतें होतहै॥ जनम मरन बिछि ठेक॥२०॥ नहीं नकलून र देह सो॥ सुरो नया समझो
॥ जगनाथ जन सुरसिरै॥ मरक संकीर मगो राय॥२१॥ वोय अघ मि का मरदे॥ मनत रष्ट रजगनाथ॥ पो
ध जनम बजोनि दें तब जंइ कामे साथ॥२२॥ मनिषदेह सब तें भली॥ ओतम पति मषही रि॥ जगनाथ
जो मन मरना॥ ये है योरि कों मोरि॥२३॥ देह बी हीरी करत है॥ वो सदिवारी लार॥ जगनाथ अ कहो इत
बालब बरि लिन अहार॥२४॥ देही देह न बसि करै॥ लंबी देह के नेस॥ का हे कों जगनाथ जन॥ दोष दे
ह कों देह॥२५॥ तन बसि पापति भजन तें॥ अगा सत जन जगनाथ॥ जनम मरन से से मिटै॥ कहत साध

गुं॰ग्रं॰ २०२ सब गाथा॥२६॥साहीत सबै तै पर्मै पद॥पावत आवत मांहिं॥ जगनाथ सो सुमरते॥ सब सुख ना सुख
ष मां हिं॥२७॥ इति संपूर्ण॥ १६४॥ पर रज॥ उपदेश चिंतावनी ण सामी॥ कबीर तो बति आय मैं॥ स
नद दयाले जु बडा हा॥ पुरप्हेन गत्ती॥ बडा रिम देश आ जा॥ कबीर हिन के मै मति आउ ता॥
मै गल्व बधते बारि॥ एके हरि के नां वबिना॥ पापजम सब हारि॥२॥ पदम संपत्ति लछमी॥ उदेश रतनै
राजा॥ मूसन जो निज सूरन दे॥ तोय कु सब किहिं काज॥३॥ बिशेष बटेयो हरि बिमुष को॥ हिंगे गोपुहद
मा॥ स्वरुदरा छकटट मै॥ स्य के नै कां सु॥ कबीर थोरा जीवणो॥ मांडै बहुत मडान॥ सब ही अ
भामे छिग या॥ राम रंक सुलतान॥५॥ जैव जगनाथ विना वनी॥ माधक रत सब की इ॥ जो स्वा या
संसार मै॥ जुवत बउ दे मो आढ॥ करते श्वबन न सिंध मनबाधे रक्त रचा किहि दिरा इ॥ जगा॥ प्रथ्रे मे
वली॥ कतहै गर्व रिवा इ॥७॥ उपटन पर बत पंडु है॥ चामिनाश्री परवान॥ निजगनाथ कहां गये॥
नां दिन काहू सां दिनान॥८॥ सकसरी बेस सिकिये॥ हरि जी ते के बार॥ जगनाथ जो धाइसे॥ तिन
की नहीं संसारा॥९॥ मेना सहत न दी सहीं॥ मकन बंधी व कारत्या॥ जगनाथ है सा थि कों॥ मस दी गये मर
पति॥१०॥ कहां पंडों के रौ कहां॥ कहां जादौ कुल वइस॥ कहा रांम रावन कहां॥ जुआ बीस दस स
मार॥११॥ कहां देव दांन व कहां॥ जी पव जनवरीस॥ जगनाथ जे कुरे बहे॥ जे ते देह धरीस॥१२॥ दे

मु

राम २०३

दधरी सो मां रहै॥ जगनाथ सब साज॥ यजुन वसेष गति जाँ निये॥ जगत जगतपति का ज॥१३॥ बहुत
जीयो बहुते बदेयो॥ सहे सेव रकि हिं काज॥ जगत जीव वे थोरै जी ये॥ नेह निरपखु जनाजा॥१४॥ जल
स्वप्नां बुद बुदा तेका व धना॥ खादर सांद हि आसा॥ और सकल सुष रांम बिना॥ जे मैदे वे कांस॥१५॥
जो बा विछो आति बहुत दे॥ तोरा थी यह चीतना॥ एतो न्यू नवि सारिये हिं॥ हरि आरि अपने मीत
त ह॥१६॥ हरि परि अरि आवध अंक॥ मैत्र मन गुन गान॥ स्वर सिमन्न लीजे इत्या॥ सुजन स्व युन १
अब सांन॥१७॥ हरि तजि जीव सकों मता॥ देष कुया हि अगपांन॥ छिन भंगुर तन पोष लागि॥
मूलत जीव निधान॥१८॥ रूपा भंडी दीकरी॥ पसु विरति तिन लीन॥ केसा यो के परिरष्यो॥ यातसुप
रकी कीन॥१९॥ बो बा त्या॥ गुन व्याप हिंत्स पालनां॥ मूढा वेतम न त्योटि॥ घाट जने की मै मया हिं॥ पु
हीन धुर हिं कोहि॥२०॥ दांनां पां नी मा इके॥ हरि भजि अरसी नां हिं॥ निलपलु कबहुं न ही सर
मरसो है तिरि जां हिं॥२१॥ पार समंद हि ते गए॥ पोरस जिनि के देह॥ चिंतामनि व्यापी नहीं॥ क
लपतर हे अनहीं॥२२॥ साषी॥ जगनाथ जगदेखि करि॥ प्रीति करी मन मोर॥ उदि ल्वी बरियां हरि धन
॥ जगत न बांहे थोरा॥२३॥ किहिं घरि रोइ पये भिय॥ आति इचा विण रोइ॥ काहि संसन ताम कल्मदि
॥ सुख कहां ते होइ॥२४॥ उर सी घर के थिरमे॥ यरी घरी तन छीना॥ नमनवन कबहुं नौ फिरयो॥ कारक

रसा कोपी ॥ २५ ॥ कबीर मानि षा जनम दुर्लभ है ॥ देह न बारं बार ॥ तरवर तैं फल झड़ि पड्या ॥ ब
हुरि न लागै डार ॥ २६ ॥ कबीर हरि की भगति करि ॥ तजि माया बिषै जोर ॥ बार बार नहिं पाइए
मनिषा जनम की मोज ॥ २७ ॥ बारे बार यह जनम न नहीं ॥ नर नारा इण देह ॥ दाद्व बहुरि न पाइए ॥ जे
न मन्या मोक्ष किया सु ॥ २८ ॥ कबीर यह जनम न जात है ॥ सकहि तहां सरल्या इ ॥ के सेवा करि साध की ॥ के
गुन गोविंद के गाइ ॥ २९ ॥ कबीर यह जनम न जात है ॥ सकहि तलै जूबी होइ ॥ प्रीति बहां बहु राम
सों ॥ यम मन ति सुब्बा होइ ॥ ३० ॥ कबीर यह जनम न जात है ॥ सकहि तले जब होइ ॥ मागे पांछेते गए
जिन केला षक रोइ ॥ ३१ ॥ आगे पीछे जाइ तन ॥ ता का कहा जतन ॥ जे भलमी का राखिये ॥ हरि
दे रोम रतंन ॥ ३२ ॥ जब तब जाइ न तन रहै ॥ मनिषा अमोल रतंन ॥ दाद्व हरि लग विरोध ॥ जु ॥ या का
यह देह जतन ॥ ३३ ॥ दाद्व अब तन होइ यो ॥ चेत नि सो चित लाइ ॥ मन वासना सो दुरि ॥ सांई संगि
जगाइ ॥ ३४ ॥ आपा पर सब दूरि करि ॥ राम नाम रस लागि ॥ दाद्व औसर जात है ॥ जागि सकै तौ
जागि ॥ ३५ ॥ काल्हि करंता सु अब किया ॥ अब करता सु इतावा ॥ पिय नां अवधिन की जिये ॥ मो तप
डी है भाले ॥ ३६ ॥ पिय नां सांई सुमिरिये ॥ कब हुंबि मुरि न जाइ ॥ जुराम जो बन लीमकै ॥ काल कया नां
दषाइ ॥ ३७ ॥ एक हैं पांणी दा किया ॥ संतो करहु बिचार ॥ सर मा सर मीं पचिम रहा ॥ काल यह जु सम्मा २०४

राषुण सो भी ॥ जगनाथ जग जो इ ॥ धन जो बन सब जाइ सी ॥ यह सुख दिन के दो इ ॥ जरा अवैं नी आइ
सी ॥ ३९ ॥ पांणी पहली पाहि ॥ पाणी जो बांधी नहीं ॥ मो च रहकड़ी न्हालि ॥ जु बन न थकां ले आइसी ॥ ४०
॥ साषी ॥ सीत बात कफ कंठ को ॥ जब हिरे कि है आइ ॥ जगनाथ जगदीस का ॥ मो लिया नहिं जाइ ॥ ४१
वा ॥ या औसर देही प कां ॥ मो बन का दे लेत ॥ जगनाथ दिन छै हंलै ॥ जं कै हरि सौं हेत ॥ ४२ ॥ चिर
वी ता रंब करसा ॥ कम कम सो जु जाइ ॥ दिन पोरे कं मनु कहि ॥ कछ धम कि सहिं सुराइ ॥ ४३ ॥ नदी आव
वा रागा जल ॥ इख सुख लहरि अपार ॥ मैमेरी के अंतर में ॥ दूव्यो सब संसार ॥ ४४ ॥ हिगल यो निक सत
नदी ॥ वाल अचे औ मोहि ॥ मोह नदी की धार में ॥ बीच परत कहू तो हि ॥ ४५ ॥ मीरखा ॥ थकि जुर देह रखा
रा ॥ जिनि सिरि आरी आर था ॥ अहम दूत नेरे पार ॥ आर कौ किके आर महिं ॥ ४६ ॥ सा षी ॥ आ सापा स
जु बिमल जल ॥ छु कि छु कि मरत बपछ ॥ परस निपात पतंग जं ॥ पधु धरि गये बय छ ॥ ४७ ॥ मो लह स
हस सहे लियां ॥ उरी अगार हल रव ॥ मांडे अपने कारने ॥ छो म्या सहर ख छ ॥ ४८ ॥ सुर पुर नर पुर ना
ग पुर ॥ राज कारत सु गाइ ॥ नवल निरासहि के सुख हि ॥ पलपटं नर नबिद्धा इ ॥ ४९ ॥ इत के अप म
न को ॥ वा व म स म की छु का ॥ जब सत चेत व अंधरे ॥ जब अंधे तब सुझ ॥ ५० ॥ इत काल की करणी न जी
उत नन अपो अगहां न ॥ उर सी रावि कि भण ॥ जं बधूर के पान ॥ ५१ ॥ निरधन के तप नां करे ॥ धन वंत देषमा

गुं०ग्रं० न॥ संतो षोज बीरिये पारे बांधि पांवांन॥ ५४॥ निरषत तो मुं मे गि ल्पा॥ गरहि गिल्पा धन वंत॥ इन कंडे
२०५ मैं सो जब रे॥ सुमिरे राम न चिंत॥ ५५॥ सुबन कां कन कप कंदे॥ धन मीकं पजन ऊका॥ अां दे जां दे दो हं
डे॥ इसे अक न ऊक॥ ५६॥ स्पा हम पे दो बदिच ले॥ ना आ उरत जि सैं न॥ मां न ज्ञा गरू रहि छा फिके॥
श किये कस्म जी यों न॥ ५७॥ अग मांग जो बरी॥ पांमोपिर सो तीम॥ केरों किरपन मागही॥ माने बसु
श्र दी न॥ ५८॥ को द्रव बरन प ल्हा हि के॥ स्व पदं स का लीन॥ सेवगा रा जा धर्म के॥ तिनि पकरि आपु बी
सकी न॥ ५९॥ आ लि म रा सम जो दबिन॥ हण्ये सु क्ष जग म्ना पां॥ उमे पल टिनि ह कम न ये॥ ते ह रिप
करे हाय॥ ६०॥ वो सुषी॥ बारी आ ई बाल मां॥ प्यारी सपा त बोरि॥ पारी गर बसु मां न म दि॥ प्यारी धर मम म
को रि॥ ६१॥ मा था बिछरें साथ को॥ आथी चले न माथ॥ साथी हे के पार को॥ साथी भजि जग॥ ६२॥ ह० म
साषी॥ मा या रहे न मन रहे॥ जो ब न रहे न जिं दा॥ मोजगा जी वन जि नि करे॥ एक बाड ष डंदा॥ ६३॥ कबी 1
र मू लि सम टि करि॥ पु डी जन बंधी षेह॥ दिव स च्यारि का पेषनां॥ अंति षे ह की षेह॥ ६४॥ कबीर जे
धंधे तो धूलि॥ बिन धंधे धूले न ही॥ ते नर बिनासा मूलि॥ धंधा में ध्यायो न ही॥ ६५॥ साषी॥ कबीर रहि रे की
म या तिविम॥ ध्या जी व न म सारा॥ सू सां के रा धो लहरा॥ जा त न लागे बार॥ ६६॥ कबीर सुपिनै रैनि के॥ राम
अध रि आ ए नैन॥ जीव परया बड लूटि मैं॥ जागे तो लेन न देन॥ ६७॥ कबीर सुपिनै रैनि के॥ परा स २०५

जप मैं छेक॥ जे सो कंती दो इ जनो॥ जे मागो ली एक॥ ६८॥ कबीर य देहि चितां वनी॥ जिनि संसारी जाइ॥ जे प
हली सुष सो गया॥ तिन का गुड लेषा द्याइ॥ ६९॥ ऊपर बे ढो जे सु बनो॥ तुमु ते सो दर गोता॥ लो भ बडाई का
रने॥ ल रै दरै द्वे होत॥ ७०॥ आप ड़ा अम नी आपन हि॥ अप ना व त सब आं न॥ या ही तें पावत स ज्ञा॥ जां
मन मरन अ जांन॥ ७१॥ मन बा ध जन म कंहि म हा न कहि॥ को का हू की नांहि॥ पार प डूं ची नाव ज्यूं॥ आ
र बाट के जांहि॥ ७२॥ सोरठा॥ जामा दी मैं म तो इ॥ जे जा तो जी वे न दी॥ मरि मरि दैन म बरो इ॥ कोरि
का यर का बो हियो॥ ७३॥ य ह संसार सराइ॥ सो या मां हि महा न कहि॥ सब को जग तरे आइ॥ राति बसे स ि
न उ ठि चले॥ ७४॥ साषी॥ जग मांन जग न जन न का म का॥ जग म सा म न मन त्या इ॥ प्री ति मि रत रि पी त मा॥ यो वि
द अं तरि गाइ॥ ७५॥ सुषी॥ य ह जग गुध मध म रिध न जे सा॥ मीन को ट सल फि हा॥ पाट ल नी र प ज्य पू से
बह के॥ बाल संद रजे दा॥ ७६॥ साषी॥ भले अमिद संसार मूं॥ मिल हि टू टते हैं॥ सा की बां ध्य म बहि मू
ल॥ अ स कत्यार का कंटा॥ ७७॥ कबीर य ह अमे सा संसार है॥ जे सो सें ब र फूल॥ दिन दस के व्योहार को॥ झू ग्रा
ठे रंगि न भूल॥ ७८॥ कबीर राम बिसारिया॥ अ चिर ज की एहा॥ धन जो बन ने चालि जाइगा॥ दे ह हो इ गे धू
घर॥ आलम य ह जग यां नि ध सा॥ भर बै आ इ क रो रि॥ इ क पां नि पल घ रि ग इ॥ इ क गाइ ग गरी या फो रि॥
उस षी॥ सबो म ही संसारि॥ दिनि विनि दी आं बेरी॥ मिर मे सो इ मि संक॥ हर ष मैं हस्यो करो री॥ ७९॥ साषी

गु०गा० २०६ क

जिन्हीं कं प्रीमां हिं गुरणा ॥ तिके मड़े बिसारि ॥ प्रभि मरगिं द्या णी पैसें ॥ रखां रोयें दरबारि ॥ १७ ॥ सब सुषे ते सुष
ग्रषिक हे ॥ सम संग तिसंसारि ॥ मो हमोक के माण की ॥ न ती मलगे बयारि ॥ १८ ॥ अंब रिमारि तिचां मक्ते
बुंध नहीं लेहोइ ॥ सम सकि सम कि जनम्रि तिसों ॥ सह जेम क्षा सो घ ॥ १९ ॥ ग्रात मग पां न बिचार सों ॥ कोरे
सो पुर हार ॥ जमा माण सत संगा मिलि ॥ ओ जलम तरे पार ॥ २० ॥ इति सं पूर्ण ॥ १७६ ॥ ॥ काल चिंता
बनी ॥ साषी ॥ घड़ी जु बाजी राजदर ॥ कहु समक्या चित्त ॥ ग्रा सघटे ज बलमषि मे ॥ बूद समका
वे मित्त ॥ १ ॥ घरी कहत गोपाल सों ॥ चेते को न ग्रचेत ॥ उदि टेरत कंथ किरदी ॥ निसदिन देता दे
ता ॥ २ ॥ टेरि टेरि ज्ञं बुक कहे ॥ आइ हा ब्रदिन आइ ॥ कहि गुपाल चेतें नहीं ॥ काल मसा क कन्नाइ ॥ ३ ॥
कांइंकां इं कऊ वा कहे ॥ हंस्रा यो यह दे षु ॥ तक गुपाल सम कई ॥ मन में यह दे परि ॥ ४ ॥ केसक
मोती जलेले ॥ कंदि सम न कि दिनाइ ॥ मोत सदे मा टेम क्यों ॥ कं निबिल बे ग्राइ ॥ ५ ॥ के सज्ज मे सप्त
टियां ॥ सेध बंध छोड़ी मोर ॥ दहब बिमारा लु छिगया ॥ ग्रां निंद्र था ग्रो राइ ॥ ६ ॥ कम्म कि लोली क रिगये
बमाब यू ते सिरि मह्रि ॥ सं बद्ध घिं नफ रे हसे ॥ वजण ग्रजक ककलि ॥ ७ ॥ दाइ देषत ही नयां ॥ स्यां सबमि
तें सेता ॥ तम मन जोबन सब गया ॥ ग्रजहूं न हरि सो हेत ॥ ८ ॥ संमन चुगि चुगि जमि गये ॥ बेर निपते क २०६
मा ॥ ग्राये सम प्रजु बाउरे ॥ सदा संग नहीं बम्मा ॥ ९ ॥ सब कछु गाह ॥ रे ग्रंत मय परा इं ॥ बिडरत कयां पहु ॥ राम

रावे सं ॥ छंडे सक लसु मनायं ॥ छिन छिन दी यं तिजु राब कड़ु पचर ॥ १० ॥ की यह रमे तें बर कया ॥ ई पदे बिम
गारा व ग्रंत ॥ जमि गिसु ची बिहरत जिम ॥ जो हि बें अग वंत ॥ ११ ॥ साषी ॥ बिरध भिहारत माघ को ॥ जग
नत हो लगि कादि ॥ जोबन नग धर सी मिस्यो ॥ पग पग दे हत नाहि ॥ १२ ॥ बिरध सम में नै जांबये ॥ चरि
नरिग्र बुजले ता ॥ मां नकुजु बन न पत न मत्र ॥ बिंब कर ग्रंनुदे ता ॥ १३ ॥ के सां को नां लोइ गा ॥ कर गोडं ॥ १
दो तां ह ॥ इन कों जा घो ग्राइ सी ॥ तर णा पी जा मां ह ॥ १४ ॥ जब जोबन को रूप हे ॥ तब ते कां गर ग के स
ग्रब कागार के रंग न णा ॥ गरक्षि सो ग्रदेस ॥ १५ ॥ जो बनि मिक दारी न जी ॥ चले निसो न ख जाइ ॥ सिरप
रि सेत सिराइया ॥ दिया बुढापे ग्राइ ॥ १६ ॥ बुले हार हा पिंजरा ॥ ता महिं पंछी पौन ॥ मो हिं ग्रच ग्रोर खन
कौ ॥ जात ग्रचं ग्रो कोम ॥ १७ ॥ चंच ल मन बा चे तिरि ॥ सो बहि कहा ग्र गयां मा ॥ यम जम धरले जाइ या ॥ परया र
देगा म्यां म ॥ १८ ॥ काल श्वेवें सिरक्रु परे ॥ नर सुत्र बाई ढीला ॥ ग्रचानक ले जाइ गा ॥ मूस मा स ज्यं चील्ह ॥ १९ ॥ १
ग्रो मुषी ॥ बाज जगत पति नमि ई ॥ बाज रूबि जप बाइ ॥ बाजत बाजे काल सिरि ॥ बाज जे मले जाइ ॥ २० ॥ सा
काल मस्तक धपरि ॥ मन चिंते बड़ ग्रास ॥ पाइ मीचु जाणें नहीं ॥ केमि का ल की पास ॥ २१ ॥ जहां तहां
दाहण गमेरे ॥ तहां काल का फंध ॥ सिर ऊपरि मा थे षड़ा ॥ ग्रज हूं न चेते ग्रंध ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ जो सो दे नां जाग
सोवण ग्रमो घी घणों ॥ यह ग्रमरी सु त्याग ॥ का देन दी में मजण ॥ २३ ॥ साषी ॥ सुती बैन सुणं दियां ॥ जो जम्म हे मे

जमप॥ औरतो औरपिछि या॥ मरणा हि औ गोआप॥२४॥ बाजी दतैरे सी मपरि॥ मर सांधे है काल॥ जागि मदे षहि अंध
लौ॥ क्या सोवै हि अमराल॥२५॥ जिसके सिर पर रै नि दिन॥ यम सांधे है तीर॥ सो कहा सो वै नीद सुष॥ कहत मैरे
बीर॥२६॥ बाजी दगु थि कै धावै है॥ पाइप मासिन सी॥ बार परबुरी फिराइ है॥ जीव न छाडै कोइ॥२७॥ दादू का
लह मारे कंध चढि॥ सदा बजा वै तूर॥ काल हरण कर्ता पुरिस॥ कोनसं भाले सूर॥२८॥ साषी॥ दादू मरि
राम बका कहिए॥ काल रहै सी इ॥ काल रहत सुमरन सहा॥ बिनो भिरा म न दीइ॥२९॥ साषी॥ दादू मरि
राम बिना जीजै राम संभाल॥ अमृत पीवै आतमा॥ यं साध बंचे काल॥३०॥ कबीर राम कहो ति निकहि लि
यो॥ जुरा पहूंची आइ॥ मंदिर लागा द्वार तैं॥ कुछ का ढ न्यो न जाइ॥३१॥ सांई सुमरि महत्त कारि॥ जा सम्है ते ला
ग॥ अति औसर कैं कहि ये॥ कुछ जंजाल का भार॥३२॥ डबरी मोटी ना भि मैं॥ रहैं कि बिगरड बीस॥ ल कस
ई कर खुरी॥ काटन दी सी मैं कीया॥३३॥ जीवन घोटी मोस की॥ घस्चत पाल घटी का॥ पशु के बरसे छत बैये
माचसु निपट न जी का॥३४॥ देष्यो सो चिवि चारि जे॥ जाके बचतन अंबु॥ परे काल के माल मैं॥ जीव ज
गत के सब्ब॥३५॥ नदी क्षार बिषधर वहै॥ भी मन कत्तासुष मोहि॥ सो चाहे माषी गिल्यो॥ यं जीयु समकत न
हि॥३६॥ अतिसु थाह भो समुद्र जग॥ काल व्याल बिकराल॥ जग नाथ त मुष मंदि॥ नर सो वै अमराल॥
॥३७॥ वारि यो म सो वत मग ही॥ बिसा मां सबि म चालि॥ जग नां चेत्या न दी॥ आंनि चिंता या काल॥३८॥ यजांव न

हरिया देषि करि॥ फल्यो फिरै गवार॥ दादू यह मन मृग चलि॥ काल अहेडी लार॥३९॥ सब ही दी सैं काल
मुषि॥ आपै गहि करि दीन॥ बिन सै घट आकार का॥ दादू जे कुछ कीन॥४०॥ पलक न सुमरै पीव को॥ मै
तो पूजे पाइ॥ यम के मुष मैं सुषि मो वै॥ ऐसो बुरी बलाइ॥४१॥ जन जग नाथ असार है॥ आरिस करि न अं
म॥ बिलासु ल्यायें आइ है॥ यमते सैं महि मां न॥४२॥ पांन एक रिलै जाइ है॥ जब तब सांफ बिहांन॥ आ तिबल
वंत बचें न ही॥ बिनसं जगति अग वांन॥४३॥ पढि ताबे पांनी तबे॥ अंत काल बिरक्षार॥ सगुन संगी को नहीं
जग नाथ तिहि वार॥४४॥ काल परासे जीव कौं॥ पल पल सासें सास॥ पग पग मांहे दिन घडी॥ दादू लषै
न तास॥४५॥ मूरिष आदि भाग दिवस॥ ऐ जु आयु हरि॥ छिन भंग रतन आव कौं॥ मूरष मांन न हरि॥४६॥ दाद
इ यह घट काचा जल भरया॥ बिनसत नांही बार॥ यो घट फूटा जल गया॥ समझत नहीं गवार॥४७॥ साषी॥ फू
टी काया जाजरी॥ नौ ठाहर का णी॥ ता मैं दादू क्यूं रहै॥ जीव सरीषा पांणी॥४८॥ साषी॥ बाद मरी इस घालू का
कूडा गर्व गुमांन॥ दादू बिन सै देषतां॥ तिस का क्या अभिमांन॥४९॥ पशु पंछी कवा पर त॥ नर फ तन कि
मन का ज॥ भव सागर मठ न र परेयो॥ मन हं कर तन आ ज॥५०॥ जन म होइ जे ताति करै॥ जां ने होइ न मीच॥ जि
हिं कर नी छूटै जनम॥ सो न करै यह जीव॥५१॥ सोरठा॥ आ औ सौ आ जां ण॥ कालो का लहै गोकहै॥ पर हथे
परियां ण॥ मरण न देषै मद सो॥५२॥ साषी॥ कछि मते सो आ जकरि॥ सकाल सो अब है मा ष॥ कारण कहत है का ल

गुणगं० कैं॥ काल्हि काल्हि के साथ॥ ५२॥ कबीर आज कहै हरि काल्हि भजौंगा॥ काल्हि कहै फिरि काल्हि॥ आज ही का
२०८ ल्हि करंतड़ां॥ औसर जासी चालि॥ ५४॥ कबीर पाव पलक की सुधि नहीं॥ करै काल्हि का साज॥ काल अ
चिंता झड़पसी॥ ज्यूं तीतर कौं बाज॥ ५५॥ पाव पलक की सुधि नहीं॥ मासनूं कहा होइ॥ करम ष मांहि
मेल्हतां॥ आइ पहूंतै न कोइ॥ ५६॥ पलै होइ सु तत्तखि करि॥ ह्यां होइ सु देह॥ आगै हट न बांणीयां॥ नांनू काले
दांहींड़ सु लेहि॥ ५७॥ एक दिहाड़ै मारसी षसु मि॥ जो हे लवा से ष॥ करैं करैं कहु मति केरै॥ की या की साहेब॥ ५
साध संगम ८॥ सोरठा॥ अवधू छोड़ै आपती सांइ है॥ मां म्हांणा नर मेजै थया॥ या दं रागा मोरेना है॥ बेदरैं धीमो बगा त गो॥ ५९॥ साषी सवेनी
॥ कबीर टगाटगा चोघतां॥ पलपल गई बिहाइ॥ जीव जंजालां न छाड़ई॥ यम दिया दमामां आइ॥ ६०॥ संकर हूं द
भिरहरसी॥ कालवजावत षाल॥ मुरदहु सों अेसी करी॥ ज्यं दहु सौं कहा हाल॥ ६१॥ षाडि गुआई ॥ देकी॥ मा
रै मैंगल मद्ध॥ वंदन झे है मोंह का दे॥ छिपगसु माटीनद्ध॥ ६२॥ परत षि आंविपेलिकै॥ पर मन दई साक॥ छू
टैलां हब छत्र की॥ छूटै लायष निमांक॥ ६३॥ कहा सुपडू नर बापुरो॥ एक मीस बहे हाथ॥ लंका पति रांवन
गयौ॥ बीस भुजा दस माथ॥ ६४॥ सोरठा॥ आप एकी केर॥ जम सो हजी देसा कोरे॥ देषै दस माथि हा॥ रां वणहे
रहि गो नहीं॥ ६५॥ साषी॥ दाहू देही देषतां॥ सब कि सहीं की जाइ॥ जब लग सास सरीर मैं॥ गोविंद के गुं रामसनेही
गाइ॥ ६६॥ दाहू सब को पांडुणां॥ दिन सचारि संसार॥ औसरि औसरि सब चले॥ हम भी ये है विचार॥ ६७॥ २०८

दाहू है॥
दाहू दस्तां रोती पांडुणा॥ कांई छाडि न जाइ॥ काल षडा सिर ऊपरै॥ औ सिण दाराआइ॥ ६८॥ साषी॥ दाहू हे
रोबैरी काल है॥ सो जीव न जांणे॥ सब जग सूता नींद भरि॥ इस नाते मो पी॥ ६९॥ साषी॥ दाहू करणी काल क
॥ सब जग परले होइ॥ राम बिमुष मर मरि गए॥ चेति न दैषै कोइ॥ ७०॥ साहिब कौं सुमिरै नहीं॥ बहुत उमावै
भार॥ दाहू करणी काल की॥ सब परले संसार॥ ७१॥ जम सु कलै काल कौ॥ मन मांनै कहा संका॥ अजरा इल कै
पेकसे॥ रोपां ते सोरे का॥ ७२॥ पग मीएग धरते नहीं॥ चलत सुघास न मांहि॥ जां पै डे परजा गई॥ सांही पैडे
जांहि॥ ७३॥ बट सा कमरि कपर को॥ टोफर होते हाथ॥ को मनिक कुंडल फल कते॥ माफे गरी बनि सा
थ॥ ७४॥ सुषक स्तूरी मद कती॥ बगुल्ला पते बास॥ हरि षमा सोकैं गए॥ ऊपरि उग्यौ घास॥ ७५॥ बांकै
गढ कौ तोरते॥ तरकस मी सो तीर॥ ति नसिर षेटे का गए॥ चंच सवार तबीर॥ ७६॥ जहां जाइ तहां मारई॥
सोड जम पहिं बचे न कोइ॥ अब सब ही तें यह भली॥ चरण सरन रहि॥ ७७॥ काया मी सी काव की॥ ता सों तेरो
नाइ॥ सब को लेयो न बाह रो॥ राजा रांनां राव॥ ७८॥ कियो अंधेरा सम से की॥ काल न देषत मीचि॥ तब जांणोगे
बावरे॥ परे मलेरा पीछि॥ ७९॥ मारे तब लब आई के॥ यम पहिं बचे न कोइ॥ या जी दहू सेक हा बावरे॥ मूरा
करिकर रिहाइ॥ ८०॥ केते मरि माटी हुये॥ बहुत बडे बलि बंत॥ दाहू केते है गये॥ दांनां देव अनंत॥ ८१॥ दाहू ध
रती करते एक डगा॥ दरिया करते फाल॥ हाकों परबत फाड़ते॥ सो भी षाये काल॥ ८२॥ पांणी मिलो तिरां ते

गु०अं०
२०५

॥परमेंलेजेजाइ॥जेमलखग्यंजीयंजतेः॥ देषरियापाविलाइ॥६३॥ इंद्रलीकामेमांमनते॥ नरनामेषपलाहि॥जेम
लेंवेमेमखलाली॥कीतेखायेकाला॥८४॥खाइककांसुमरमदमीरथा॥सवनविंयोमिरताजा॥सोअमरिम
टीइनहा॥अमरखलहकारजा॥८५॥धरियोडाहाथीघणां॥निति प्रतिफेरेंनिसांन॥कमिपकडिछिय
यमदेखतां॥नवकछुकियानपांन॥८६॥छत्रपतिभोपतिसवनें॥राजारांणारायइ॥जेमराजीवनएकरांमविन॥को
वन॥छिप्राएविणाखाइ॥८७॥असपतिगजपतिनरपती॥चेंजाधपरीमीरा॥जगमांजीवनएकरांमविना॥को
रहतनदेख्याथीरा॥८८॥सुरपतिनरपतिफणिपति॥स्वर्गमृतिपाताला॥जगमांजीवनएकरांमविन॥को
छ्वंबवेकाला॥८९॥छत्रसिंघासनराजवरी॥ऊंचिआलमकाराजा॥जेमजविरजेतांमविन॥सच्याक
वनकाकाजा॥९०॥जेमलक्षैकवूनथेंक्यासरूपा॥मोटांमांवधराइ॥चककेवैराजामंडलीकाछिके छिग
पविलाइ॥९१॥चककेवैराजामंडलीका॥पिरथीथंभणराइ॥जेमलकेतेंछिगयेकरियेपि॥कापाव॥९२
जेमलसेरावकरतेबज्जतनर॥षंडप्रचंडाआंरा॥मेजसुयसमसुंदरी॥सबसजिअपएमसोणा॥९३॥वइडदिशि
पकाकोटथा॥मंदरखगारसंकारि॥विइ कीविइ कीपाइका॥गजबंधेदरवारि॥९४॥दसौंदिसाजोधष
डाखयिलियांनरखारि॥जेमलसबहीदेषतां॥काललेयामारि॥९५॥नरजीवेकौंगढकेरो॥दोवर
तेवरकोट॥९६॥टवजनमबेंवेबही॥जगवाथयमबोटा॥९७॥बजतजतनवाहरिकेरो॥मेनांसांवतसूरा॥वि

राम
२०५

रखेभिकटवजावई॥जगमाथयमहूरा॥९८॥षबरदारहाजरिरहे॥अदांतसांवजकंहडा॥जगमाथसबदेष
तां॥भीवृमसोसेमंम॥९९॥पांनफलजेएमतां॥रहेमरांमांराव॥जगमाथमोटाबली॥सबपरयमनके
दाव॥१००॥मघवासेलपुरांणएा॥वारकालकीताब॥सुरनरअछिराषिसदहै॥रहेकोनमुषिन्रा
व॥१०१॥लंकापतिमेकालबसि॥किएसजीधारइ॥जगमाथओदोहतेयमओरावरिआइ॥१०२॥कै
रोंसकलसंघारिके॥पंडोंपरलेकीन॥जगमाथकोकवरे॥कसकरदकरलीन॥१०३॥देवसकालवसक
लके॥बस्यादिकहरिहर॥जगमाथजगदीसविना॥बंधेसदांमसबकुडा॥१०४॥पंचतत्वगुनमीनिलों॥लो
कालुकंतरसोइा॥एकभगतभगवंतबिन॥सकलकालबसिहोइ॥१०५॥मीनिलोकावरदससवत॥कालस
बमिकोंषाइ॥जेमकीटगलरगिल्यो॥माछरकरसांरहाइ॥१०६॥धरअंबरगिरतरन॥सराथरनरसकरि
आछिंयमदरकारलगेंनदरा॥धरपुरसहिथरहाइ॥१०७॥सबलनमाचेकालकी॥घटफूनांचेजाइ॥जगमा
बनमुरपतरहै॥मनकाइंस्लोमेआइ॥१०८॥मांमनरषेमुलाहिजा॥कालसबनिकोंषाइ॥रावरेकलजरावडं
मारिणायपलेआइ॥१०९॥कालकारसबअपरे॥बीयूं आमिरदार॥देषिपवादारांमकाजेसाधंसंकार॥१
१०॥मखीधरमिपवनखाकाआसूरसमि॥पंडेसबोकीलार॥गंणगोधवेसुविजहिंदेवता॥किनहेंस्वरीसु
वार॥१११॥साधी॥सबकीसौंप्याकालकों॥जेनायणआकार॥राआरांणांछत्रपति॥पंडेसबोमिरिमार॥११२॥स

गुं०अं० इस सब जग कंपै काल तैं ॥ ब्रह्मा बिसन महेसा ॥ सुर नर मुनि जन लोक सबा स्वर्ग रसातल लिसेसा ॥ चंद सूर ध
२१० रणि सब चलता ॥ ब्रह्मंड षंड परलैसा ॥ सो काल डरै करतार तैं ॥ जे अैसु म आदेसा ॥ २२२ ॥ काल सब न कौं दहत है ॥
काल दहण करतार ॥ जे मल को ई न कबीरा ॥ बिना सुमिरण न छार ॥ २२३ ॥ कहि जगजीवन काल तैं ॥ सकल र
हे है प्रीत राम जपा मैं साध कै ॥ सो मन निबसे मन चीत ॥ २२४ ॥ तीन संगी देह को ॥ नीद भूष अरु काल ॥ कत ह्वै
जावो पर स्यांम ॥ एन मिटैं लग वाल ॥ २२५ ॥ यम रांणी रूडी करी ॥ जिम राजा तिम रंक ॥ धनवंत धन देहट
तै सिरथम पु देसरंता ॥ २२६ ॥ मरिण सब कार सार सो ॥ जि मि काल दीया फुरमाइ ॥ एक घडी तलि आवन करां
कादेरक सराइ ॥ २२७ ॥ कबीर अज क काल्हि क पंच दिना ॥ मारगि मालहै तोह ॥ काल सिरांणैं ऊभौ र चिको
चौकड अचिंता ॥ २२८ ॥ कबीर काल सिरांणैं मौ मिरिषरा ॥ जागि पियारे मिंत ॥ रांम सनेही बाहुरा ॥ मूं कर
सौवे निचिंत ॥ २२९ ॥ कबीर सब जग सूता नींद भरि संत न आवै नींद ॥ काल षडा सिर ऊपरै ॥ ज्यूं तोरन
आया बीद ॥ २३० ॥ ज्यूं सरीर संग छांदरी ॥ त्यूं जोरा जिय मालि ॥ कहि मैं को करंदे ॥ जगम सब षि दे काल ॥ २
१ ॥ काल सुलई क मांस क रा ॥ त्रक्रित कि मार तहीरा ॥ कारे मिर को आदमी ॥ कोइ देन चतन बीरा ॥ २३२ ॥ काहे राम
कपरि फलि के ॥ बैठी देक हि मोहि ॥ अबधि बिचारै दिन गिनें ॥ यम सुमन छिमरत तोहि ॥ २३३ ॥ जीवन जो तत २१०
वावरै ॥ औरा को लस माय ॥ चोट पोट के आइ पा ॥ सो हे मु दिरहा ॥ २३४ ॥ जेनप आपा मो बिम मिसे ॥ कोइ थिर

नरहाइ ॥ दाहवारी आपणें ॥ जो दासै सो जाइ ॥ २२५ ॥ दाह सब जग गम रिमरि जात है ॥ अमरतु पांव महार ॥ र
हता रमिता रांम मेंहि ॥ बहता सब संसार ॥ २२६ ॥ सब जग आता देषि करि ॥ दाह करी पुकार ॥ घडी महूरत च
लतां ॥ राषे सिर अमहार ॥ २२७ ॥ बिष सुष मांहे मेलतां ॥ काल पहूंच्या आइ ॥ उपजे बिनसे देषतां ॥ यकु आ
गासंही जाइ ॥ २२८ ॥ रांम नाम बिन जीव जे ॥ किते मुये अकाल ॥ मीच बिना जे मरत है ॥ ताते दाह सांभ ॥ २
टे ॥ सही ॥ जे दिन जाइ सब कुरि न आवे ॥ आव घटै तन छीजे ॥ अंत काल दिन आइ पहूंता ॥ दाह हाल
न कीजे ॥ २३० ॥ दाहु जो मर चलिया या ॥ बरिया गाई बेहाइ ॥ कर छिटकैं कत पाइया ॥ जनम अमो
लिक जाइ ॥ २३१ ॥ अजौं पाछे आहि सब ॥ चढे तरणौ बाला ॥ जगजीवन जन मैं मेरे ॥ फिरि फिरि आसे काल ॥ २२
औरा के ब मि जीव सब ॥ कहा राजा कहा रंक ॥ जगजीवन यम ग्रासता ॥ मैं कम मांने संक ॥ २२३ ॥ निसा दिन
औरा द्रम गिरेणे ॥ जीव न जाणे अंध ॥ जगजीवन न जे कुछ करे ॥ राम बिना सब धंध ॥ २२४ ॥ चोपडे जो देषो मोव
न मनु स्वारा ॥ काहे भूला जम संसारा ॥ जग सुष बिनसे पहिर को न रहाई ॥ जो तन पजे सो नहीं समाई ॥ २२५ ॥ काल केम
चोपडे ॥ अंब डार पर बैठा तोता ॥ अपनें जीक सो कै मैं सोता ॥ फिरि जो आइ निहारे नारी ॥ सांवद लीता मांव समार
२२३ ॥ जीरा करत चिरी डुक मारा ॥ पंषी सघ न न्हां दह छक मारा ॥ जो फिरि तातन न देषे नारी ॥ सांवद चिरिया
मांवदे झारी ॥ २२४ ॥ समरा म्हतिम वलमदिर हि ॥ सो कवल्ला कम न हि फिरिया हिया ॥ जित बेसुं दरि अरेवि

कोई खिरष काल व सिहत वा॥ फिरि फिरि पूंछै मूवा म हार। योंही
पु०अं० वारा॥ मांवरह कमल न तौ रम हारा॥२४८॥ कोई खिरष काल व सिहत वा॥ फिरि फिरि पूंछै
२२१ विन सै सब संसारा॥ मांवरह रोज मरो व म हारा॥२४९॥ काइ एक जौ रिधन की नो॥ आप न षाइ न अवर दि
दी नां॥ फिरि हि यदेषै वे अंमारा॥ मांवरह लछिम संच न हारा॥२५०॥ नगर एक म दिं बा दर बारा॥ कोई बा हम
कोई गाव म आरा॥ विन सत या दिन लागी बारा॥ मांवरह नगर न बाइ न हारा॥२५१॥ लेले ली कण रिपज वा
बाल तटि ना ब ब जरेओं फिरि आ वा॥ का बहीं म याम न ईधु सक्षरा॥ मांवरह ना वन षेव न हारा॥२५२॥ पार ब्री पै
तिले ची वन ध्यावा॥ मृगन लेअ स घंट व जा वा॥ फिरि हि य देषे व न हिं म का रा॥ मांवरह मृगन मार न हारा॥२५
न॥ माषी॥ एक एक का रिसव चले॥ अंतर बर की पात॥ जाजी वन अिय जग तन को॥ मो किम ईधन अं ॥ जान
२५४॥ न हिंपरा गान दिं मधुर रस॥ न हिं वि गा सति हिं काल॥ आजली कली कैं व स मय यो॥ आपी कोन दवाल॥ २
२५५॥ कबीर सब सुष रांम दे॥ और दुषां की रासि॥ सुर नर मुनियर अमुर सब॥ परे काल की पासि॥२५६॥ कब
रकू वे सुष कौ सुष कहे॥ मांन त है म न मोह॥ जगत च बी नो काल कौ॥ कछु मुष में कछु गोद॥२५७॥ कबीर कं बी
दी सहि राबदी॥ नी ची दी शा हिं पोलि॥ रांम बिना सब बहि गये॥ परीक्षु यम की शोरि॥२५८॥ कबीर कं चा मंदर
झेल हरा॥ मांडी चित री पोलि॥ एक रांम के नांव बिन॥ यम पारे गो रोलि॥२५९॥ कबीर कांइ चि सांवे मालिया राम
चूनां मांटी लाइ॥ मी च सु मैं मी पापनी॥ दहारे गी आइ॥२६०॥ कबीर कांइ चि णांवे मालिया॥ लो ही मीत सम्हार २२१

घर तौ सादा सी निराधा॥ घनां तय यो भो चारि॥२६१॥ कबीर कहा गरवियो॥ काल गहै कर केश॥ नां जांनों कत मा
रिसी॥ कैं घर कै पर देश॥२६२॥ करगा दिम्मूछ म रोर ते॥ हसि हसि यावे पांन॥ कहि गुणा लता वदन तें॥ लागी म
तसरांन॥२६३॥ नि स दिन विरषत देह कौं॥ सुषमंजत दिन आइ॥ जत्न धोडे का दीं घ यो॥ न जाजिन इसर
झ॥२६४॥ चौ सुषी॥ यांनत नी कें देह कौं॥ जांमत मो मो कौ न॥ मांनत मो तन आइ है॥ सांनत आटे लौन
॥२६५॥ साषी॥ नैन न रूप वडु देषते॥ श्रवनां सुनते राग॥ रसन स्वाद सुष से जवी॥ सिर पर टेही पाग॥२६६॥ पाक पये
ना सा वास सुफला दिस॥ सिलक रन की बाग॥ जग नाथ जियु काल बसि॥ काया कृप कौ का ग॥२६७॥ साल काल माय
मोंकर तही॥ इक दह टि वेवत आइ॥ अंतक अजमार सुषमरी॥ परे सुजाइ खिलाइ॥२६८॥ कीरी कू जर आदि दे॥ यमू
रसव॥ ब्रांबी दइप सारि॥ मसी मोन जगनाथ जन॥ लामन लिस संघारि॥२६९॥ आप न पी सबहैमरई॥ काल न बि
की नजर त्यां मांहि॥ जग नाथ सो सबनि कौं॥ कबहूं बिसरत नांहि॥२७०॥ जग जीव न कौ कच्चेरै॥ दह दिस घेरै कलि
मेरे कांहि॥ जगनाथ पल पल मि मैं॥ पल कन यलट तआ हि॥२७१॥ कोटी मो गो क मकतौ॥ स दीन सकतो साल॥ अब जगजीव
॥ पांण पसारा करि रह्या॥ मूरख माया जाल॥२७२॥ जगजीव न माटी पड्या॥ मांहि मास न वास॥ काया तरवर ढहि गया
सनेह कल गेधे॥ देषो तन का हाल॥२७३॥ ॥ आंवन जो नांधे रह्या॥ जं कीरी का मा
पेषी न बैठ्यो दास॥२७४॥ कबीर बेटा जायां तन का भया॥ कहा बजाबे थाल॥

मु०ग्रं०
२२२

रा॥२६५॥ कबीर जिनि हम जाये ते मूए॥ हम भी चलनहार॥ जे हम कं आगे मिले॥ तिनि भी बंध्या भार॥२६६॥ कबी
र रोवन हारे भी मुए॥ मुये ते जालन हार॥ हा हा करते ते मुये॥ कासनि करौं पुकार॥२६७॥ कबीर जो काल्हि सो आ
ज है॥ फलियासो कुमिलाइ॥ जो चिणियां सो ढहि परे॥ जो आया सो जाइ॥२६८॥ जो पहरया सो फाटसी॥ नांव धरया सो
जाइ॥ कबीर सोई तत गहि॥ जो गुरु दिया बताइ॥२६९॥ जो उगा सो अंथवे॥ फूल्या सो कुम्हलाइ॥
कबीर सब स्थिर साच गहि॥ कूड़ सु आवै जाइ॥२७०॥ ...हरि सों ...जो जीया॥ ...
सज्जन संभाल॥ ...कीजिये॥ ...काल॥२७१॥ ...मरणं ...
न की वोट॥ ...कबीर... चोट॥२७२॥ ... मनीतै॥ ...
स्वर्गपयाल सब॥ ... काल का सोर॥२७३॥ ... काल के॥ ...माया जाल॥ ... के
पेस्वर्ग पयाल॥२७४॥ ... हि सुमति॥ ... सब॥२७५
॥ का कौ ... करि ... सो गा॥ ... संसार ... लोग॥२७६॥ जिन सों...
... लोग॥ ... जो ...लोग॥२७७॥ ... गवैं ...॥ ...
... नांहि॥२७८॥ ... मारग मद ...॥ ... सत्थ॥ ...
जो ... मांहि॥ ... कबीर मिथ्या ... पारि॥२८०॥ कबीर मिथ्या

राम
२२२

के बेवा रांम बिना॥ चेति न करै पुकार॥ ए कलन जल का बुदबुदा॥ बिनसत नांही बार॥२८१॥ कबीर प
नी केरा बुदबुदा॥ इसी हमारी जाति॥ एक दिनां नछिपि जाहिगे॥ ज्यूं तारे परभाति॥२८२॥ कबीर स
कल सम्ब किरयौ॥ दूटी ... मार॥ पांनी की कल आंनतो॥ गयो ... हार॥२८३॥ कबीर
... रहि गई॥ बुझि गये अंगार॥ ... ॥ ... हार॥२८४॥
कबीर ... ॥ ... तार॥ ... करै॥ ... हार॥२८५॥ क
रही ... ॥ ... ॥ ... ॥ ...॥२८६॥ ...
बार ... ॥ ... मित्र॥ तेरी बारी ... ॥ मेरी ... नित्त॥२८७॥ साखी सिखी॥ दो ...
... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥२८८॥ दो ...
... ॥ ... ॥ ... ॥२८९॥ दों ... ॥ ... ॥ मेरा का
... ॥२९०॥ दों ... ॥ ... ॥ ... ॥ तिस
वांण को पथि॥२९१॥ साखी॥ ... ॥ ... मांहि लोइ॥ ... कहि॥ चिरज
... ॥२९२॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ...
... ॥२९३॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥२९४॥ ... जी॥

गुं.ग्रं. दवटाऊ बप्परा ॥ कि समीं कें रे सने रा रातिबसै दिन तवि चले ॥ श्रांधी पिबैं न मेह ॥ १९७ ॥ कबीर पंथी ऊ आपं थी म

रत्न रि ॥ बुग चाबांधम पूरि ॥ मर बां मुंज श्रागे ष रा ॥ जीवन का सब कूर ॥ १९५ ॥ कबीर यहु जग कछु नहीं ॥ षिन षा

रा षिन मीठ ॥ काल्हि जु बैठे मैंड़ियां ॥ श्राजि मसांनां दीठ ॥ १९६ ॥ कबीर मंदर श्रापनें ॥ बैठे करते श्रालि म

र बहट देष्यां मर पते ॥ चौडै दी नौं बालि ॥ १९७ ॥ कबीर मंदर मांहि कर बकती ॥ दीवा की सी जोति ॥ हंस बटाऊ

चलि गया ॥ काढे घर की छोति ॥ १९८ ॥ जे मलखु रा भला संसार का ॥ कदे न सु णती कां नि ॥ पडदे रहती

पदमणीं ॥ देरन ईसैदा नि ॥ १९९ ॥ बाहरि नषन दिषावती ॥ पड दा चलती संगि ॥ जे मलुहं सा ऊ ड़ि गया

मेल्ही चौडै दंगि ॥ २०० ॥ माधव तन तिणपि सग मुर ॥ बीं चिकडू म मुषि बास ॥ माया दहन दिमो हमैं ॥ काल

ग्र कडू ग्रास ॥ २०१ ॥ मरयन होती मुंह बली ॥ नौ मांण सबुरी बलाइ ॥ श्रोबरि लौमा पाड तो ॥ बत है ॥ ऐसो नहिं आ

इ ॥ २०२ ॥ षमू रांणां जटौ कहै ॥ हमगौं कांइ करै सि ॥ बिणवूटी मरि वौ मटी ॥ छूटी रहण न देसि ॥ २०३ ॥ दाई

बबसैं ते जके ॥ माटी के कि स मांहि ॥ श्रमर लु पांवण हार रहै ॥ हूआ कोई नांहि ॥ २०४ ॥ जा का जीवन सुफल

है पति समर नांभी श्रानंद ॥ हमें जीते देषतो ॥ जिनि सुमरया गोबिंद ॥ २०५ ॥ इति मंसकरी ॥ अंग ॥ ५५ ॥ अथ मनी

राम
निग साषी ॥ जरां जुरा मीच ब्यापे नहीं ॥ मुवा न सुनिय कोइ ॥ चलि कबीर तिहिं देसडै ॥ जहां बेद बिधाता होइ

२२३ इ ॥ १ ॥ चलि सखा तिहिं देसडै ॥ जिथैं श्र सामा मित्र ॥ मोवदमरैम बिछुडै ॥ बैगीफे मोनित्र ॥ २ ॥ कबीर हरि चे

रनौं चल्या ॥ माया मोह तैं टूटि ॥ गगन मंडल श्रासन किया ॥ काल गया सिर कूटि ॥ ३ ॥ दादू जे हं जोगी गुरमुषी ॥ ते

लेणां तत्त बिचारि ॥ गाडि श्रावध गुर मधं न का ॥ काल पुरस कौं मारि ॥ ४ ॥ दादू कहां यम जोरा मंजिषै ॥ कहां

काल कौं दंम ॥ कहां मीच कौं मारि ए ॥ कहां जुरा सत षंम ॥ ५ ॥ रोम रोम लै लाइ धुनि ॥ श्रेसें सदा श्रषंड ॥

दादू श्रविनासी मिलै ॥ तौ यम कौं दी जै डंम ॥ ६ ॥ छमेस हंस हू कीसका ॥ श्रजपा जाप बिचारि ॥ दादू निस

तां सुले ॥ काल पुरस कं मारि ॥ ७ ॥ यह तच कापड़ नां फिरै ॥ छमैस हंस हू कली सा ॥ जोगी श्रमर यम कंदंदै ॥ दादू

बिस सा बीस ॥ ८ ॥ साषी ॥ श्रमर भैरव श्रविनासी श्रासण ॥ तहां निरंजन लागि रहै ॥ दादू जोगी जुगि जुगि जीवै

॥ काल ब्याल सब सहजि गए ॥ ९ ॥ साषी ॥ मन मनसा दो ऊ मिलै ॥ पंच पां मथिर होइ ॥ जग नाथ यम डर न हीं ॥ स

दा सजीव निसोइ ॥ १० ॥ साषी ॥ नाद बिंद मों घट भरै ॥ सो जोगी जीवै ॥ दादू का हे कौं मरै ॥ जे रांम रसपीवै ॥ ११ ॥ सा

षी ॥ जब हिं नाद निश्चल रहै ॥ बिंद न बाहरि जाइ ॥ जग नाथ जीवैं सदा ॥ मजीव निल्पी लाइ ॥ १२ ॥ बिषिया बिष

जेपरहरै ॥ लिहश्रमी हरि नांउ ॥ मास मास श्रचवतलै ॥ श्रजरा वरका गांउ ॥ १३ ॥ कबीर जोगी बनि बस्या ॥ षनि ष

ए कंदमूल ॥ नां जांनौं कि सजडी तें ॥ श्रमर लया श्र स्थूल ॥ १४ ॥ रांम नांम जीवनि जरी ॥ पलइ ड़ी बसि राषि ॥ ले

त श्रमर है जनम ण ॥ कहि कबीर श्रुति साषि ॥ १५ ॥ कबीर कहत पुरांन सुष ॥ रांम सजीवनि मूरि ॥ जांणैं ये हे

स यां न पलै ॥ काल कहत तैं हरि ॥ १६ ॥ श्रजरा वर कै लेत हीं ॥ बिजडी षद हरि नांउ ॥ कहि कबीर कैते भए ॥ अ

गुं०थां० सि अविनासी संग॥२७॥ जीवैं जोगी जतन करि॥ पीवै अंमृत पांन॥ जगनाथ यम जीतई॥ केवल गुर के ग्यांन॥२८॥
२३४ अंमृत नांम अलेष का॥ सदा सजीवन जिसा होइ॥ कहि जगजीवन रांम रसि॥ सजतां होइ सु सोइ॥२९॥ साध सजन की
सा सनां॥ दादू रहै संसार॥ सो आतम ले मिले॥ अमर भया सद्दार॥३०॥ रांम सरीषे है रहै॥ यह नांही उपा
धार॥ दादू साध अमर रहै॥ बिनसे सब संसार॥३१॥ जे को सेवै रांम कौं॥ सो रांम सरीषा होइ॥ दादू नांमा कबीर
ज्यूं॥ साषी है सो सोइ॥३२॥ साहिब जी महिमा बंदे॥ सब सुक्ष्म पकरि सीर॥ कहि जग जीवन मिलि रहे॥ अमर
मसरी गलि नीर॥३३॥ सो जन अमर रूप रांम कै॥ नष सुष लौं सब अंग॥ जगनाथ बिनसै नहीं॥ अबिनासी
के संग॥३४॥ अबिनासी के आसिरै॥ अजरावर की वोट॥ दादू सरणैं साच कै॥ कदे न लागै चोट॥३५॥ चिरंजीव
जगनाथ सो॥ मिलै थिर जीव जाइ॥ एक मेक अंतर नहीं॥ यम का काल न खाइ॥३६॥ अमरावर दूसर सदा
॥ दरसिस जीव निथा न॥ काल रहत जगनाथ गति॥ या बिन नांहि न आन॥३७॥ जे मन मन सांई की आ
सैरे॥ जो जन तरे अजर॥ सो ना काल न ही सकै॥ काल कि सी बिधि माइ॥३८॥ देह रहै संसार मैं॥ जीव रांम के पा
स॥ दादू कछु ब्यापै नहीं॥ काल का दुष त्रास॥३९॥ काया की संगति तजे॥ बैठा हरि पद मांहि॥ दादू निर
भय है रहै॥ कोई गुण ब्यापै नांहि॥४०॥ दादू तजि संसार सब॥ रहै निराला होइ॥ अबिनासी के आसिरै॥ का
ल न लागै कोइ॥४१॥ काल गरासै तब बहि जैस॥ जब जंग अंतर सोइ॥ जगनाथ एके भया॥ तब जो षां न दिकौ॥ राम
२३४

५२ जे मल जिन कोई नहिं॥ निर बिमै॥ जोगी समझै जाल॥ साध संगति मन थिर सदा॥ जिन संघरै काल॥ दाद
॥ एक थिर जग नायक का॥ आतम बज्र तन अथार॥ जे मल ज्या सं का नहीं॥ जपिए जे मी नार॥५४॥ जब लग
हरि बसु मरि सि॥ तब लग का ल न षाइ॥ जे मन आतम अबरे॥ ते कबहूं बिसरि न जाइ॥५५॥ अमर न साधै वो
पवी॥ तें तन मन मरि साइ॥ जगनाथ जीव न तजै॥ हरि रस पांन करा इ॥५६॥ जन जगनाथ सब कहै॥ जग
के आलिम की वोट॥ तबै हरि आसिरै॥ निज संतनि की वोट॥५७॥ सु नैं सुरति सो हरि कथा॥ निरति निरं
जन सुष संत॥ मिटै त्रास गर्भ बास की॥ जगनाथ न बिछ्रत॥५८॥ बज नजीये जीत बकता॥ बिनां न याति मन तिम मत
ता॥ प्यो से ही जीवन अबै॥ जन न सदन मय पंत॥५९॥ इति श्री यम परी॥ २३८॥ सषया॥ हरि जन अबिहड नाम साषी॥ कबीर मथ मतसिंह
सो किया॥ ता के सुष दुष मांही कोइ॥ दिष्टि मिलि मिकी कारि ये लिलि॥ कदे बिछोह न होइ॥१॥ हरि सांमैं तन मंडाण मैं॥ ता हिन कहुं का
बीर॥ जन न बिसरै बिसरै नहीं॥ साध बिमं सधीरा॥२॥ दादू संगी सोई कीजिये॥ जे कलि अजरावर होइ॥ नां वह मरै न बीछुटै
ना दुष ब्यापै कोइ॥३॥ दादू संगी सोई कीजिये॥ जे अस्थिर इहि संसारि॥ नां वह षिरै न हम षपैं॥ ऐसा लेहु बिचारि॥४॥ स
मुप दादू संगी सोई कीजिए॥ जे दुष का साथी॥ दादू जीवन मरण का॥ सो सदा संगाती॥५॥ साषी॥ दादू संगी सोई कीजिये॥
जे कबहूं पलटि न जाइ॥ आदि अंति बिहडे नहीं॥ ता सनि यह मन लाइ॥६॥ जगमल्या जासो प्रीति करि॥ जो जगि अंत पर
सा॥ नां वह मरै न बीछुरै॥ नां वह सोइ निरास॥७॥ कबीर सिरजनहार बिन॥ मेरा हित न कोइ॥ गुंन अवगुंन बिहडै नहीं॥ स्वार

गुं० ग्रं० २२५ षबंधी लौ होइ॥ ७॥ कबीर जन प्रमारथी॥ कब हूं न बिहरै मांहि॥ दैमैं सुषतं दुष समदी॥ स्वार्थ को रटै रस तांहि॥ १॥ स्वार्थी
साथी जगत सब॥ बिन स्वार्थ नहिं कोइ॥ बाजीद राम बिन स्वार्थी॥ प्रमार्थी नहिं कोइ॥ २॥ प्रमारथ सदी सो मंत है॥ सज्जन
स्वारथ मांहि॥ सार्थी अबिहड जो निकौ इ॥ बाजीद सुख धाम मांहि॥ ३॥ प्रनदित बिहरै स्वार्थी॥ प्रमार्थी हित मांहि॥ जगन
थ सब जो इरा॥ सज्जन सगम जग मांहि॥ ४॥ सोयी॥ नामों की जे नेह॥ नाम से दुरजन थिर रहे॥ साधन कों न सनेह॥ टूटे का चेम
त जन नर त्रसाथी॥ प्रीत्म सो ई जो निपे॥ प्रीति निरंतर होइ॥ आदि अंति बिरिस मज्हे॥ सुष दुष अबिहड सो इ॥ ५॥ घटै बढै
जु सबिकल्प॥ प्रीति पुरातन मांहि॥ जगनाथ नित एक रस॥ हित अबिहड नहिं जांहि॥ ६॥ जाके प्रथी हिये॥ फेरै न
बिहरै सो इ॥ प्रासिद्ध के आगरा॥ अवत न प्रगट होइ॥ ७॥ नेह निरंतर निरबहै॥ मित्रा ई मरवंत॥ जगनाथ बिहरै नहीं॥ जे
ई सज्जन संत॥ ८॥ कब हूं न बिहडै सो मत्ना॥ सो प्रदित मत होइ॥ सदा एक रस॥ बांधि मांबडी सो इ॥ ९॥ तपित सुम
मांन जैं सुमत॥ कृति नमांहि॥ कबीर जन बिहरै नहीं॥ हरि के मैं बिसरांहि॥ १०॥ सज्जन साम समार मैं॥ के सांई के संत॥ बाज
दा बिहुरै नहीं॥ हक संग आदि रु अंत॥ ११॥ मिलि बिछुरै सो मंत नहिं॥ सज्जन सदई संग॥ बाजीद सुष दुष मारिया॥ संप्रति बिपत्ति अ
संग॥ १२॥ दादू माया बिहडै देषतां॥ काया संगि न जाइ॥ कृत्म बिहडै बावरे॥ अजरावर ल्यौ लाइ॥ १३॥ मित्र भिन्न यां बिहडै
ष्टि॥ अल्प न बिहडै रांम॥ कहि जगजीवन प्रेम सुरा॥ अबिहड देस बगांम॥ १४॥ दादू अबिहड आप है॥ अमरापुर मा
सार॥ अबिनासी आप रहे॥ बिनसै सब संसार॥ १५॥ दादू अबिहड आप है॥ साचा मेरा सिरजनहार॥ आदि अंति बिहडै नहीं॥ बिनसै म
राम २२५

गुं० ग्रं० २२६ त अकार॥ १६॥ दादू अबिहड आप है॥ अबिचल रह्या समाइ॥ निहचल रमिता रांम है॥ जो दीसै सो जाइ॥ १७॥ दादू अबिहड आप है॥
कब हूं न बिहडै मांहि॥ घटै बधै नहिं एक रस॥ सब उपजि षपैं उस मांहि॥ १८॥ अबिहड अंग बिहडै नहीं॥ अपलट पलटि न जा
इ॥ दादू अघट एक रस॥ सब मैं रह्या समाइ॥ १९॥ आदि मधि अरु अंत लौं॥ अबिहड सदा अभंग॥ कबीर उस करतार का॥
सेवग तजै न संग॥ २०॥ प्रीतम सो करि प्रीतरी॥ अबि॥ हड सदा अभंग॥ जगनाथ बिहुरै नहीं॥ हरि स्या
म के संग॥ २१॥ कहि जगजीवन रामजी॥ अबिहड॥ बिहडै नांहि॥ आवै न्नि सो नाम ज जि॥ मन राषि
मन मांहि॥ २२॥ हरि अबिहड॥ अबिनासदे॥ मिरजै की प्रतिपाल॥ जगनाथ बिसरै न दे ॥
षड्दुष सब दी काल॥ २३॥ अबिहड अबिगत रामजी॥ अबिहड सत गुर साध॥ कहि जगजी
वन गाइ गुण॥ प्रेम अल्प अगाध॥ २४॥ सज्जन स॥ जन नातै जे॥ अहि रहै थिर होइ॥ जगनाथ गुर सा
धहरि॥ प्रीत अबेहर सो इ॥ २५॥ परअबिहड संजानि॥ ये॥ आप जे कीला ज॥ जगनाथ ओसिंध की॥ सम थि अ
बिहड जा न॥ २६॥ घट दम नव मैं बैनो॥ को अकर जम लंब॥ जगनाथ पलटै नहीं॥ साध सरीषो आप॥ २७॥ जनम मर
सं पलटै नहीं॥ सो न के सुपल टाइ॥ जगनाथ जो दीस ज्य॥ करै सु सकल सम दाइ॥ २८॥ जगनाथ जगदीस जन गुरम
जबस्त सरीषा॥ के मैं रहे दैरै नहीं॥ ये न साधियरी बाच॥ ३९॥ सि॥ ऐ जे सो अहि मा महे॥ मिज्या सबके साथ॥ प्रगट गुप्त पलटै नहीं
अपलटन जगनाथ॥ ४०॥ अपलट सो पलटै नहीं॥ अबिहड बिहरै न जाहि॥ हरिजन निज जगनाथ प॥ जे अबिहड जग मांहि॥ ४१॥ इति अबिह
अं० ग्रं० ड अंग संपूर्ण॥ इति श्री गुंन गंजनांमा कां स मस्त संपूर्ण समाप्त॥ अंग॥ १७२॥ साषी॥ समस्त॥ ५५२४॥ संबत्॥ १८७४॥ बैसाष सुदि मासे ह
त्न पक्षे तिथि नवमी बुधवासरे॥ श्री मन्नागपुरे स्थाने तलाब का तीरे पश्चिम दिसि॥ श्री मदादू पंथि उदराम बावाजी श्री चरणदास जी ति
न सिष बाबाजी श्री ठाकुरदास जी तिन सिष्य रामजीदास दामांजी तिन सिष्य बालकनाथ पौत्र शिष्य लिखितं॥ सुपवनाथ॥ हरि अंकित राम॥ राम २२६
पोथी गुनगंजनामा की छबड़ा मजीठ घल्यावाला नैंदीनी जिसकी निछरावल रुपया ७) दीन
नी राजा बाजी दीकोइ रंग डोगरे डो करते कुगादस वास जे वान दास का गां जि० जोगीदास जी साध